जाति अन्वेषण

प्रथम भाग

RESEARCHES

INTO

HINDU CASTES & CREEDS.

(First Part)

वेद वेदाङ्ग व उपनिषदों तथा सरकारी रिपोर्टों
के आधार पर हिन्दू धर्म वर्ण
व्यवस्था मण्डल के
महामन्त्री श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्मा
ने मण्डल के निर्णयार्थ व लोकोपकारार्थ
प्रकाशित किया

पं० चुन्नूलाल रावत के प्रबन्ध से कान्तातम
प्रेस फर्रुखाबाद में छपा ॥

प्रथमबार २००० } १९१४ ईस्वी { मूल्य

Subject to the addition and alteration if proved wrong.

[Ma]ndal Series No. 1 मण्डल माला नं० १

जाति अन्वेषण

(प्रथम भाग)

अर्थात्

जाति निर्णय ग्रन्थ, बीस वर्ष के परिश्रम द्वारा व निज व्यय से वेद वेदाङ्गों के साथ २ बड़े बड़े आनरेबल व सिविलियन अफसरोंके ग्रन्थों के तथा अनेकों सरकारी रिपोर्टस के आधार पर राजपूताना हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मण्डल के

महामन्त्री श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्म्मा ने रचकर

मण्डलस्थ धर्म्मव्यवस्था सभाके महामहोपाध्याय व शास्त्रियों की सेवा में व्यवस्थार्थ व निर्णयार्थ अर्पण ।

RESEARCHES

INTO

Hindu Castes & Creeds chiefly Based

On Hindu Shastras as well as on Government Records & works of Hon'ble & Civilians.

Submitted to the Dharm Vyavastha Sabha for final decision.

BY

SROTRIYA PANDIT CHHOTEY LALL SHARMA.

General Secretary Hindu Dharam V. V. Mandal, PHULERA.

प्रथम बार २००० | संवत १९७१ | मूल्य १॥) Price Rs. 1-8-0

❀ सूचना ❀

पाठक वृन्द ! नमूने का यह पुस्तक सेवा में भेंट हूं आशा है कि हिन्दी साहित्य प्रेमीगण आदर स्वीकार करके हमारे उत्साह को बढ़ावेंगे इस पुस्तक में य कोई अंश किसी के विरुद्ध मिथ्या जान पड़े तो कृपया पु प्रमाणों द्वारा उस का Defence समाधान मण्डल को शीघ्र भेज दीजियेगा, जिस से मण्डल के निर्णय के पूर्व सुधार कर लिया जासके। जैसे २ निर्णय होता जावेगा तैसे तैसे ही वह विवर्ण " हिन्दू जाति वर्णव्यवस्था कल्पद्रुम " नामक सप्तखंडी ग्रन्थ में मासिक रूप से प्रकाशित होता जायगा च कि ग्रन्थ कम से कम पान प्रान सौ पृष्ठ के सात भागों में व अधिक से अधिक १० खण्डों में पूरा होगा और जिस का मूल्य अनुमान ३५) रुपैये होंगे अतएव ऐसे बड़े ग्रन्थ को एक साथ छपवाना व खरीदना एक साधारण बात नहीं है अतएव ३०० ग्राहक हो जाने पर यह ग्रन्थ मासिक रूप से निकलेगा अतएव केवल कार्ड भेज कर ग्राहकों में नाम लिखाने वालों से वार्षिक २॥) व अङ्क निकलने के पश्चात् ग्राहक होने वालों से ३॥) वार्षिक लिया जायगा पत्र व्यवहार नीचे लिखे पते पर होना चाहिये।

निवेदक महामन्त्री
हिन्दू धर्म्म वर्णव्यवस्था मंडल
फुलेरा—जयपुर

॥ विशेष दृष्टव्य ॥

विदित हो कि पहिले हमारा विचार इस पुस्तक को २४० पृष्ठ परही पूर्ण कर देनेका था तदनुसार इसका मूल्य १॥) रख कर टाइटिल पेज छपवालिया गया था, पश्चात् इस पुस्तक में चार फोटो देने पड़े तथा पुस्तक की पृष्ठ संख्या २४० से ३२५ के लगभग बढ़ानी पड़ी अतः पुस्तक का मूल्य भी १॥) रुपये से २) रु० करने पड़े परन्तु मण्डल के मेम्बरों से २) रु० की जगह १॥) रु० ही लिया जायगा और राजा महाराजाओं से उनके सन्मानार्थ १०) रुपये लिये जावेंगे।

निवेदक

महामन्त्री
हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मण्डल
फुलेरा—जयपुर
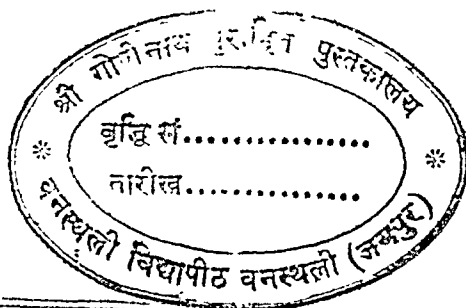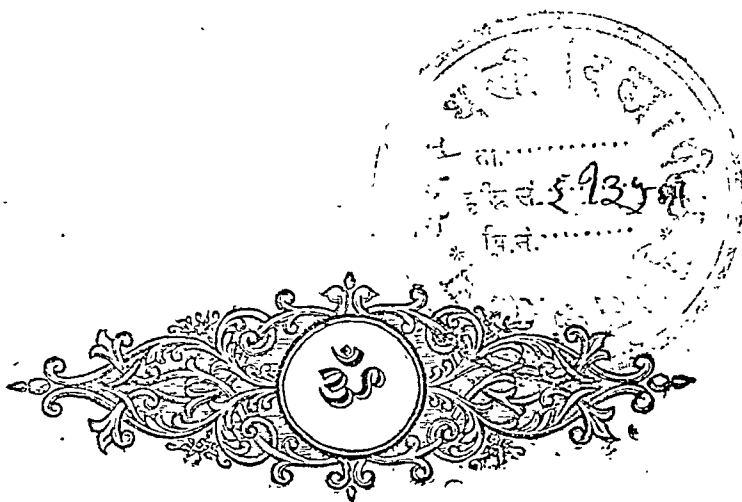
समर्पण

ओ३म् सच्चिदानन्देश्वराय नमो नमः ।

हे स्वातंत्र्य प्रद ! हे सम्पूर्ण ऐश्वर्य्यों के दाता !! हे राज राजेन्द्र महाराजाधिराज ! ! ! अनन्य भाव से आपके चरणार्विन्द में मस्तक टेकता हुआ, मैं दीन दुखिया अपने २० वर्ष के अतुल परिश्रम व जात्युत्पत्ति अनुसन्धान आदि विषय के अनुभव का यह छोटा सा "जाति अन्वेषण" पुस्तक प्रथम भाग आपकी सेवा में भेट करता हूं । भगवन् ! शास्त्र मर्य्यादा है कि-

" खाली हाथ राजा, वैद्य और बालक से न मिले. तदनुसार आप तो राजाओं के राजा महाराजाओं के महाराजाधिराज हैं अतएव मुझ दीन के पास आप की भेट के लिये केवल यह छोटी सी पुस्तक है, अतएव जिस प्रकार से सुदामाजी के तंदुल व शवरी भीलनी के बेरों को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर के उन का मान्य बढ़ाया था तैसे ही इस तुच्छ भेट को स्वीकार कीजिये, क्योंकि मुझे आप से दृढ़ आशा है कि आप ऐसा अनु-

ग्रह करेंगे कि जिस से भारत की असहाय हिन्दू जातियों का उद्धार मुझ दीन हीन मति मन्द के द्वारा हो।

भगवन्! आप के इस भारत में शूद्र जाति के साथ वड़ा अन्याय हो रहा है सैकड़ों जातियें जो यथार्थ में उच्च हैं वे आज वड़ीही घृणित दृष्टि से देखी जारही हैं और प्रायः नीच जाति कही जाकर पुकारी जाती हैं, अतएव हे प्रभो! इस अन्याय से मेरा जी जलता है, कलेजा फटता है, अतः सविनय निवेदन है कि भारत की हिन्दू जातियों के उद्धार का जो संकल्प मैंने कर लिया है उस को पूरा करने कराने वाले एक मात्र मेरे लिये आप ही हैं।

हे करुणानिधे! मंडल की धर्म व्यवस्था सभा तथा हिन्दू सार्वभौम प्रवंधकर्तृ सभा के सभ्यों को भी वह निर्मल बुद्धि प्रदान कीजिये! जिस से उत्तमोत्तम लाभदायक व्यवस्थायें पास हों!

निवेदक—

पं० छोटेलाल शर्म्मा

श्रोत्रिय।

मा० रघुनन्दनलाल के प्रवन्ध से यू. पी. आर्ट प्रिंटिंग वर्क्स कासगंज में छपा।

Hindu Dharam Varan Viyavastha Mandal

PHULERA-JAIPUR.

My dear Countrymen !

I dedicate this essay to you in the hope that it will be of some service. If it succeeds in covincing even one of you of the nature and consequences of the system of castes prevailing in the Hindu Society, I shall have reason to consider that I have not laboured in vain.

Further I beg to draw your kind attention to consider the Efforts and Labour done by me, with a view to complete a great difficiency in Hindi Sahitya, for which you are cordially invited to encourage me for the further publications on the Subject of Hindu Castes & Creeds.

Believe me, as ever,

My dear Countrymen,

Your Humble Servant,

SROTRIYA PANDIT CHHOTEY LALL

Sharma.

प्रिय स्वदेश-बान्धवो !

यह जातिविषयक छोटा सा निबन्ध सेवा में इस आशा से अर्पण करता हूं कि यह देश के लिये उपयोगी सिद्ध हो, जातिभेद, जाति महत्त्व, जातिदम्भ, ऊंचता, नीचता के भावों का फल, देशस्थिती पर क्या हुवा, इस का दिग्दर्शन इस पुस्तक में दिखला कर हिन्दी-साहित्य की एक बड़ी भारी कमी को पूरी की है, जातिस्वरूप वास्तविक क्या है ? तथा तज्जनित परिणाम देश पर क्या हुवा व होगा ? आदि आदि लाभ आप को प्राप्त हुये तो मैं समझूंगा कि मेरा अतुल परिश्रम व्यर्थ नहीं हुवा है क्योंकि एक एक अक्षर की कितनी कितनी जातियों का पता मैंने लगाया है यह इस पुस्तक से भले प्रकार विदित होगा अतएव आप महानुभावों से आशा की जाती है कि पुस्तक को हाथों हाथ खरीद कर मेरे उत्साह को बढ़ावें जिस से भविष्यत् में छपने वाले हिन्दूजाति वर्ण-व्यवस्था कल्पद्रुम नामक सप्तखंडी ग्रन्थ सेवा में भेट किया जाय । क्योंकि कहा है कि:-

गज मुख से तन्दुल गिरा, घटा न तासु अहार ।
सो ले चली पिपीलिका, पालन को परिवार ॥

अर्थात् हाथी के भोजन में से एक चावल के गिर जाने से उस का आहार कुछ कम नहीं हो जाता है उस से चींटी अपने कुटुम्ब का पालन कर लेती है । तैसे ही यदि हमारे देश के हिन्दी-साहित्यप्रेमी एक एक हमारी पुस्तक मंगवा लें तो मण्डल को एक बड़ी भारी सहायता प्राप्त होगी ॥

आप का अतिनम्र अभीष्टचिन्तक

श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्मा

महामन्त्री, हिन्दू धर्मवर्णव्यवस्था मण्डल,

फुलेरा—जयपुर.

पाठक वृन्द !

सम्पूर्ण सभ्य तथा उन्नतिशाली जातियों की उन्नति व उनकी शक्ति तथा उनके गौरव का पता उन के इतिहासों से लगता है, प्रत्येक जाति व उस के देश की उन्नति अवनति किन २ कारणों से हुई, यह जानने का साधन एक मात्र ऐतिहासिक पुस्तकें हैं, आज कल के उन्नतिशाली देश व जातियों के इतिहासों से हमें अपने देश के लिये नाना प्रकार की शिक्षायें लेनी हैं, परन्तु जब हम अपनी मातृभूमि भारतवर्ष तथा हिन्दू जातियों के इतिहास की ओर दृष्टि देते हैं तो मालुम होता है कि हम लोग एक बड़े अन्ध कूप में हैं, क्योंकि हिन्दू जातियों का सांगोपांग पूर्ण विवर्ण युक्त इतिहास हमें कहीं नहीं मिलता है, कारण कि पूर्वकाल के ऋषि मुनियों की रुचि प्रायः प्रवृति मार्ग से हट कर निवृति मार्ग में रहती थी, तदनुसार महर्षि व्यासजी ने श्री कृष्ण भगवान का, तथा वाल्मीकि व तुलसीदासजी महाराज ने मर्य्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजी का इतिहास लिखना ही पर्य्याप्त समझा। अठारहों पुराणों के रचयिता तथा स्मृतिकारों ने भी भारत की प्रत्येक जाति का आद्योपान्त इतिहास लिखने में विशेष श्रम नहीं किया। हां बड़े २ पुराण व स्मृतियों में अन्य अन्य विषयों के हज़ारों श्लोक हैं तो दो चार श्लोक किसी जाति के सम्बन्ध में भी कहीं २ मिलते हैं परन्तु वे आज कल की जागृति व देश की आवश्यक्ता के अनुसार पर्य्याप्त नहीं हैं प्रथम उन पुराण व स्मृतियों में उन श्लोकों का पता लगा लेना ही एक साधारण बात नहीं है तथापि वे देश स्थिति व देश की आवश्यक्ताओं को पूरा करने के लिये पर्य्याप्त भी नहीं हैं।

अतएव हिंदू जातिवर्ण व्यवस्था कल्पद्रुम के ७ भाग व इस जाति अन्वेषण नामक पुस्तक के अनुमान तीन भाग छपवाकर सेवा में भेट किये जावेंगे यदपि जाति अन्वेषण नामक तीन भाग निकालने का हमारा विचार नहीं था किन्तु एक मात्र हिन्दू जाति वर्ण व्यवस्था कल्पद्रुम नामक सप्तखंडी ग्रन्थ को ही सेवा में भेंट करने का संकल्प था परन्तु भाषा भाषियों के लाभ, व सम्पूर्ण जातियों को अपने २ विरुद्ध पक्षका समाधान (Defence) मंडल को भेजने व मंडल की धर्म्मव्यवस्था सभा को जाति निर्णय करने में सुभीता हो तथा पाठकों को अल्पमूल्य पर यह पुस्तक प्राप्त हो जाय, तथा हिंदू पबलिक को हमारे ऊपर विश्वास हो कि जैसे २ विज्ञापन अखबारों में मंडल की ओर से छपे हैं तदनुसार ही हमने पुरुषार्थ किया है ॥

अतएव इस पुस्तक की उत्पत्ति व प्रकाशन के मुख्य कारण ये भी हैं कि आर्य्यमित्र जनवरी सन् १६१४ के पत्र में हमारे नोटिस के छपते ही जनवरी फरवरी और मार्च इन तीन महिनों के भीतर २ हमारे पास हिन्दू जातियों के सैकड़ों पत्र आये जिन में से सम्पूर्ण के मर्म्म इस प्रकार के थे :—

(क)-हमारा नाम ग्राहक श्रेणी में लिख लीजिये।

(ख)-हमारी जाति को आप ने किस वर्ण में रक्खी है ?

(ग)-हमारी जाति का विवर्ण आपके ग्रन्थ में आया है या नहीं ?

(घ)-आपने हमारे विषय में क्या २ व कैसा २ लिखा है ?

(ङ)-आपने हमारी जाति का विवर्ण किन २ ग्रन्थ व इतिहासों के आधार पर लिखा है।

(च)-यदि यह सत्य है तो आपने देश के लिये एक वड़ा भारी काम किया है ऐसा इतिहास भारतवर्ष में कोई व कहीं नहीं था। मंडल के नियम व उद्देश्य क्या क्या हैं।

(छ)-आपने अपने मंडल के जाति निर्णय में हमारी जाति को भी सम्मिलित की है या नहीं ? इत्यादि इत्यादि

प्यारे भ्रातृगण ! इस तरह के पत्रों से मंडल का दफ़्तर भर गया उपरोक्त प्रकार के आशयों के पत्रों में से "ख" व "घ" की श्रेणी के

पत्रों का उत्तर देना मंडल के नियम विरुद्ध जान कर बन्द रक्खा बाक़ी सब के उत्तर देते रहे जिस से ता० ८ जनवरी सन् १९१४ के आर्य्य मित्र में नोटिस छपने से आज तारीख १७ मार्च सन् १९१४ तक के यानी २ मास व ९ दिन के थोड़े समय में हमारे Letter despatch register उत्तर देने के रजिस्टर में पत्रोत्तरों की संख्या ३४९ होगयी अतएव ऐसा करने से पत्रों की आमद प्रति दिन और भी बढ़ने लगी बहुत से सज्जनों ने हमें यह भी लिखा कि "यदि आज्ञा हो तौ हम सेवा में आकर आप के ग्रन्थ को देखें" इस आज्ञा का भी पालन हम ने कतिपय सज्जनों के साथ किया, वे लोग आये सम्पूर्ण देख भाल कर के हमारे बड़े कृतज्ञ हुये, परन्तु ऐसा करने से प्रायः दिन २ भर हमारा समय नष्ट होने लगा और ग्रन्थ के कार्य्य में बाधा पहुंचने लगी तब आने वाले मनुष्यों को भी रोक देने का हमें प्रबन्ध करना पड़ा।

अतएव पठित समाज को यह निश्चय होजाय कि हमने देश हित के लिये क्या क्या उद्योग किये हैं तथा कहां २ व क्या क्या अन्वेषण किया है इस लिये नमूने मात्र को भाषा भाषी पाठकों की तृप्ति के लिये यह एक छोटी सी पुस्तक सेवा में भेट की है जिस से उपरोक्त प्रकार के सम्पूर्ण प्रश्नों के उत्तर भले प्रकार से मिल जायेंगे।

इस के अतिरिक्त इस पुस्तक के छपाने का मुख्य कारण यह भी है कि मंडल में भिन्न २ स्थानों के महामहोपाध्याय, विद्यावाचस्पति, श्रोत्रिय, आचार्य्य, संस्कृत प्रोफेसर्स, नैय्यायिक, वेदान्ताचार्य, प्रधाना-ध्यापक, ज्योतिर्विद्, व्याकरणाचार्य्य, न्यायरत्न, धर्मशास्त्री तथा अन्य अन्य शास्त्री गण व पौराणिक विद्वान जो मंडल की "धर्म व्यव-स्था सभा के सभासद हुये हैं, उन की यह आज्ञा हुयी है कि "आप के लिखित महान् ग्रन्थ का निर्णय तो बरसों में भी न हो सकेगा और उसके प्रत्येक अक्षर को पढ़ना व देखना भी हम लोगों के लिये असम्भव होगा, अतएव जिन २ संकेतों पर सम्मतियें लेनी हैं उन Points संकेतों को बहुत ही सरल भाषा में सूक्ष्म रीति से छपवा दीजिये जिस से अवकाश में सब कुछ देख भाल व विचार कर निश्चय कर लिया

वर्ण व्यवस्था कल्पद्रुम नामक ग्रन्थ कम से कम पान पानसौ पृष्ठ के सात खण्ड व अधिक से अधिक दस खण्ड में पूर्ण होगा जिस सम्पूर्ण का मूल्य अनुमान तीस व पैंतीस रुपये होंगे अतएव ऐसे वृहत ग्रन्थ को एक दम खरीदना व छपवाना एक साधारण बात नहीं है इसलिये ग्राहकों को खरीदने में सुभीता हो अतएव मासिक अंक निकलने से पूर्व केवल कार्ड भेजकर ग्राहकों की श्रेणी में अपना नाम लिखाने वालों से वार्षिक मूल्य २॥) पश्चात् ३॥) लिया जायगा।

इस ही मासिक निकलने वाले ग्रन्थ में मंडल की धर्म व्यवस्था सभा का निर्णय किया हुआ जाति विवर्ण तथा समयानुकूल पास हुयी व्यवस्थावों का संग्रह भी होगा।

हिन्दू मात्र का, विनीत सेवक —

पं० छोटेलाल शर्म्मा

श्रोत्रिय

महा मन्त्री,

राजपूताना हिन्दू धर्म्म वर्ण व्यवस्था मण्डल

फुलेरा-जयपुर

यू० पी० आर्ट प्रिंटिंग वर्क्स कासगंज में
मास्टर रघुनन्दनलाल जी द्वारा मुद्रित

S.

बादशाह पंचम जार्ज।

महाराणी मेरी।

चौपाई
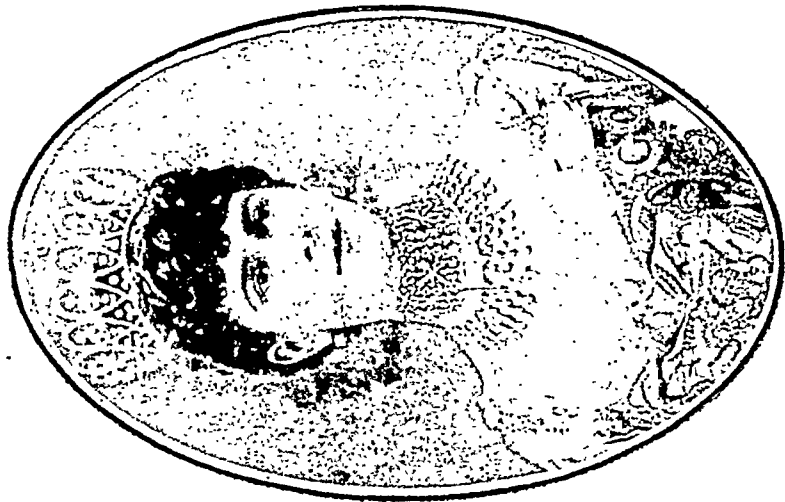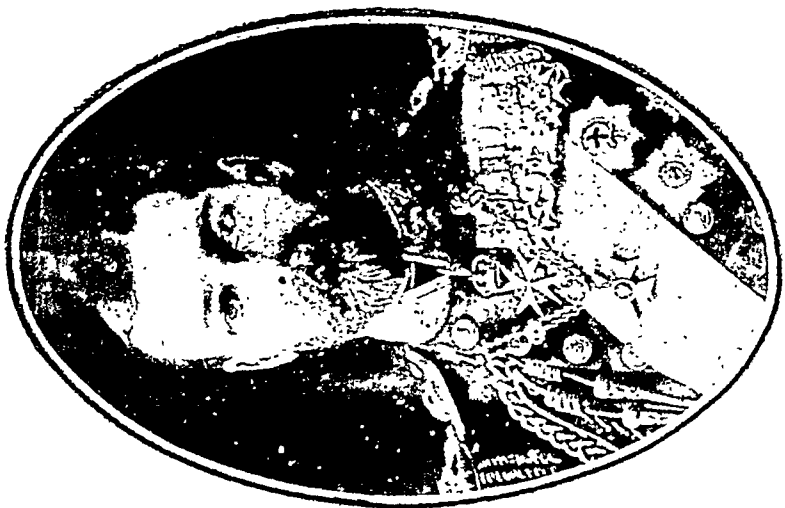
रक्ष रक्ष तू हे जगदीशा ।
पञ्चम जारज भारत ईशा ॥
चिरंजीवहु इच्छत उर अन्दर ।
अटल रहो तव राज निरन्तर ॥
रण संग्राम शत्रु दल बंका ।
विजय पताका अरु जय डंका ॥
तेज प्रताप विभव सुख रासी ।
रहो सदा अविचल अविनाशी ॥
सन्तत रहो मुदित मनमाहीं ।
परमानन्द अनन्द सदाहीं ॥
दिन दिन बढ़ो प्रताप तुम्हारो ।
इच्छत है मिल मण्डल सारो ॥

* यह चौपाई रामायण के स्वर से पढ़ी जा सकेगी ॥

मण्डलस्थ हिन्दुसार्वभौम प्रबन्ध कर्तृ सभा
तथा
धर्म-व्यवस्था सभा के सभासदों के अर्थ

सूचना

सशोक!!! सूचित किया जाता है कि भारत के श्रीमान् बड़े लाट His Excellency मिस्टर चार्लीज़ हार्डिंज महोदयकी बीबी श्रीमती His Excellency मिसेज़ लेडी हार्डिंज सदा के लिये इस संसार को छोड़ कर तारीख़ ११ वीं जुलाई सन् १६१४ को मध्यानोत्तर के समय स्वर्गलोक को सिधार गयी थीं अतएव सर्व सम्मति से मण्डल की ओर से सहानुभूति सूचक जो तार लाट साहब की सेवा में भेजा गया तथा उस का जो कुछ उत्तर आया उन की नक़लें मण्डल के सभासदों के अवलोकनार्थ यहां मुद्रित की जाती हैं ॥

मंडलकी ओरसे तार दिया गया

(उस की नक़ल)

To

His Excellency The Viceroy Delhi

From

Srotriya Pandit Chhotey Lall Sharma
General Secretary,
HINDU DHARAM VARAN VYAVASTHA MUNDAL
PHULERA.

Hindu Dharam Varan Vyavastha Mandal Deeply mourn extraordinary loss of Her Excellency's death, and convey their most respectful and heart-felt Sympathy, and pray God Peace to Her Excellency's Soul.

भाषार्थ

श्रीमान् हिज़ एक्सेलेन्सी बड़े लाट साहब की सेवा में—दिल्ली
हिन्दु-धर्म-वर्णव्यवस्था मण्डल (फुलेरा—जयपुर)

श्रीमती His Excellency लेडी हार्डिन्ज की असामयिक मृत्यु पर हार्दिक दुःख प्रकाश करता है और अन्तःकरण से अति प्रतिष्ठा पूर्वक सहानुभूति सेवा में अर्पण करता है तथा मण्डल परमात्मा से प्रार्थी है कि स्वर्गवासिनी महारानी जी की आत्मा को शान्ति प्राप्त हो ॥

निवेदक
श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्म्मा
महामन्त्री

श्रीमान् बड़े लाट महोदय का तार द्वारा उत्तर

To

Srotriya, President
Hindu Dharam Varan
Vyavastha Mandal
PHULERA.

His Excellency Is most grateful for your kind message of Sympathy.

Private Secretary
The Viceroy.

भाषार्थ

श्रीयुत श्रोत्रिय प्रधान हिन्दुधर्म-वर्णव्यवस्था मण्डल-फुलेरा

हिज़ एक्सेलेन्सी बड़े लाट साहब आप के भेजे हुये सहानुभूति सूचक तार के लिये बड़े ही कृतज्ञ हुये हैं ॥

आप का
प्राइवेट सेक्रेटरी
H. E. The Viceroy.

श्रीमान् हिज़ हाइनेस सरमद्दे राजा हाये हिन्दुस्तान राजराजेन्द्र श्री महाराजाधिराज सवाई सर माधवसिंह जी बहादुर जी. सी. एस. आई. तथा जी. सी. आई. ई. जयपुर

भगवन् ! राजतिलक जी की जय हो ! ! !

आप को वर्त्तमान काल में अति कर्मेष्टी, सदाचारी व भगवद्भक्त तथा राजभक्त जान कर यह छोटा सा निबन्ध सेवा में अर्पण करता हुआ आशा करता हूं कि आप कृपा पूर्वक इस ग्रन्थ को हिज़ मेजेस्टी पञ्चम जार्ज ग्रेट ब्रिटेन व इङ्गलैंड के बादशाह तथा भारतवर्ष के शाहनशाह की सेवा में अपने मार्फत भिजवादें । जिस प्रकार आप का मौज मन्दिर धर्म सम्बन्धी मामलों पर शास्त्रोक्त व्यवस्था देता है तैसे ही भारतवर्ष भर के हिन्दुओं के धर्मसम्बन्धी विवाद का निर्णय यह मन्डल किया करेगा ॥

श्रीमानों ने जो समय समय पर ब्रिटिश गवर्नमेंट के साथ सहानुभूति व मैत्री प्रकट करके व लाखों रुपयों की सम्पत्ति द्वारा ब्रिटिश सरकार की सहायता करके जो कीर्त्ति प्राप्त की है उस के लिये मण्डल भी आप की जय मनाता है ॥

चूँकि मण्डल की स्थापना आप ही के राज्य में है अतएव "अराजकता और हमारा कर्त्तव्य" नामक लेख जो इस पुस्तक में शाहनशाह के चित्र के पास ही छपा है उस ओर श्रीमानों का ध्यान आकर्षण करते हुये आशा की जाती है कि आप मण्डल की सदा सहाय करके हमारे उत्साह को बढ़ावेंगे जिस से भविष्यत में यह मण्डल हिन्दूधर्म की उन्नति व आप को धन्यवाद तथा ब्रिटिश सर-कार के प्रति सदा कृतज्ञता प्रकट करता रहे ॥

श्रीमानों का शुभचिन्तक

श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्मा

महामन्त्री हिन्दूधर्म वर्णव्यवस्था मण्डल

फुलेरा-जयपुर

हिज़ हाइनेस सरमदे राजा हाये हिन्दुस्थान राजराजेन्द्र श्रीमहाराजाधिराज सवाई सर माधोसिंहजी बहादुर जी. सी. एस. आइ. तथा जी. सी. आइ. ई. जयपुर राजतिलककी जय हो।

निवेदन

* कवित्त *

जै जै हो तुम्हारी याही आशिश है हमारी,
याचना हमारी पर कान देहु ध्यान लेहु,
करा के सुधार हिन्दुजाति का।
ब्रिटिश सरकार की सहानुभूति कराय लेहु,
पुस्तक छपवा छपवा विगाड़ को दूर कराय,
धन सम्पति से दीजिये भराय गेहू ॥
मण्डल सुरीति प्रचारे शास्त्र युक्त सम्मत जो,
गोपाल पद पङ्कज सों लगाय नेहू,
विनती है मण्डल की या सुन के कृपानिधान.
धन द्वार सहायता कराय देहू ॥

* दोहा *

जस जाहर जस जाहु को, जाने जन मन आन।
जशो जवाहिर जुक्त जो, जयपुर नगर सुजान ॥ १ ॥
माधव में मन मग्न है, मुख में माधव लाल।
मान्य महा महिपाल सों, माधवसिंह नृपाल ॥ २ ॥

विनीत निवेदनम् ।

(ग्रन्थकर्तारस्य परिचयम्)

राज पुत्रायण प्रान्ते, राज्ये जयपुराभिधे ।
परागपुर संज्ञोऽस्ति, ग्रामो द्विज कुलाश्रयः ॥१॥
तत्र मुद्गल गोत्रीया, बभूवुः श्रोत्रियाः पुरा ।
प्रसिद्धास्ते पुनश्चासन्, बावल्या मिश्र संज्ञया ॥२॥
तेषामेव कुले तत्र, यज्वा धर्म परायणः ।
मगनीराम मिश्रोऽभूत, वेद शास्त्र विशारदः ॥३॥
तस्या भवत्सुतस्सर्वैः, पितुः शुभ गुणैर्युतः ।
शिवसहाय मिश्राख्यो, ब्रह्म कर्मरतः सुधीः ॥४॥
आस्तां कुलावतं सौद्वौ, पुत्रौ तस्य महात्मनः ।
ज्येष्ठो मङ्गल दत्ताख्यो, ज्योतिर्विन्मंत्र शास्त्रवित् ॥५॥
कनिष्ठः करुणानन्दः, सत्यवादी जितेन्द्रियः ।
स समीक्ष्य बहून्धर्मा, नार्य्यधर्मरतोऽभवत् ॥६॥
तस्यार्य कर्मठस्याऽस्मि, पुत्रः सद्धर्म पालकः ।
श्री छोटेलाल शर्म्माह मार्य्यमित्रोपनामकः ॥७॥
बान्धव क्लेश सन्तप्तो, वासन्त्यक्त्वा पुरातनम् ।
जीविकार्थी कृतावासः, फुलेरा रैल सद्मनि ॥८॥
यत्रास्ति वास्ययानानां, संगमस्थान मुत्तमम् ।
प्रत्यहं यात्रिणो यत्र, समायान्ति समन्ततः ॥९॥
ततः पश्चिम दिग्भागे, क्षेत्रं शाकम्भरं शुभम् ।
शाम्बरं नगरं यत्र, विस्तृतो लावणो ह्रदः ॥१०॥
चातुर्वर्ण्य व्यवस्थार्थं, मण्डलं स्थापितं मया ।

वर्ण जाति विवेकाख्यो, ग्रंथः संगृह्यतेऽधुना ॥११॥
सङ्कीर्णताम्परित्यज्य, मण्डलस्य सहायकाः ।
अवेयुर्यदि विद्वांस, स्तदाजात्युन्नतिर्भवेत् ॥१२॥
पण्डितानां सहाय्येन, सारमादाय सर्वतः ।
वर्ण जाति हितार्थाय, यत्नोऽयं क्रियते मया ॥१३॥
दश भाग भविष्यन्ति, ग्रंथस्यास्य पृथक् पृथक् ।
तान् विलोक्य बुधाः, कुर्युस्सफलं मे परिश्रमम् ॥१४॥
यथा शक्ति सहाय्येनाऽनुगृहीतोऽस्मियैरहम् ।
तान् कृतज्ञतयासर्वान्, धन्यवादैः प्रपूजये ॥१५॥

(ग्रन्थकार का परिचय)

भाषार्थः—राजपुताना प्रान्तर्गत जयपुर राज्य में प्रागपुरा नामक एक ग्राम है जहां द्विजकुल समुदाय की विशेषता है ॥ १ ॥ उस ग्राम में मुद्गल गोत्रोत्पन्न ब्राह्मणों का निवास है फिर वहां के ब्राह्मणों की "बावलिये मिश्र" ऐसी संज्ञा हुयी ॥ २ ॥ उस ब्राह्मण कुल में धर्मपरायण वेद शास्त्र के ज्ञाता एक मगनीराम मिश्र थे ॥ ३ ॥ उन मगनीराम जी के पुत्र शिवसहाय जी मिश्र थे जो ब्रह्मकर्म में रत व पिता के सदृश गुणज्ञ थे ॥ ४ ॥ उन महात्मा शिवसहाय जी के दो पुत्र थे जिन में ज्येष्ठ पुत्र का नाम मङ्गलदत्त था जो ज्योतिष व मन्त्रशास्त्र के ज्ञाता विद्वान् थे ॥ ५ ॥ उन शिवसहाय जी के कनिष्ट पुत्र करुणानन्द नामक एक जितेन्द्रिय व सत्यवादी पुरुष हैं जो भिन्न भिन्न मतमतान्तरों में सत्यग्राह्यता व जिज्ञासु रूप से रह कर अन्त में आर्य्यधर्म* में रत हो गये ॥ ६ ॥ उन का पुत्र मैं (श्रोत्रिय छोटेलाल शर्मा) सनातन वैदिक धर्मानुयायी हूं मेरा प्रसिद्ध नाम श्रोत्रिय छोटेलाल तथा उपनाम आर्य्यमित्र शर्मा है ॥ ७ ॥ परन्तु गृह दुःख अर्थात् बन्धु आदिकों के व्यवहारों से क्लेशित होकर पुरातन निवास (जन्मभूमि) को छोड़ कर कुछ समय के लिये जीवकार्थ फुलेरा रेलवे जंक्सन स्टेशन पर अपना निवासस्थान नियत किया यहस्थान चौतरफ़की रेलों का मुख्य जंक्सनस्टेशन होनेके कारण एक उत्तम स्थल है ॥ ८ ॥ प्रतिदिन चहुंओर से यहां यात्रियों का आवा गमन होता रहता है ॥ ९ ॥ इसके पश्चिम भाग में शाकम्भरी

* आर्यसमाज ।

देवी का क्षेत्र है जहां शाम्बर नगर† और नमक की झील है ॥ १० ॥ चारों वर्णों के वर्णाश्रमधर्म की ठीक ठीक व्यवस्था करने के लिये मुझ ग्रन्थ कर्ता ने मन्डल की स्थापना कियी है क्योंकि वर्ण जाति विवेक के सम्बन्ध में मैंने बहुत कुछ संग्रह कर लिया है ॥ ११ ॥ अतएव मेरी विनती है कि मण्डल के विद्वान् सङ्कीर्णता Narrow mindedness को त्याग कर मण्डल के सहायक हों ऐसी दशा में मण्डल द्वारा जातियों की उन्नति होगी ॥ १२ ॥ बड़े २ विद्वानों की सहायता से यत्र तत्र भ्रमण कर के मैंने यह यत्न किया है ॥ १३ ॥ यह जाति-वर्ण-विवेक सम्बन्धी ग्रन्थ दश भागों में छप कर पूर्ण होगा । अतः उन को विद्वान् लोग देख कर मेरे परिश्रम को सफल करेंगे ॥ १४ ॥ जिन विद्वानों ने अनुग्रह करके मेरी सहायता कियी है उन को मैं धन्यवाद अर्पण करता हूं ॥ १५ ॥

---

† आज कल का प्रसिद्ध नाम सांभर है ।

जाति निर्णय निदान।

मंडल के विद्वानो! जाति निर्णय के सम्वंध में निम्नलिखित संकेतों का भी निपटारा हो जाना चाहिये क्योंकि कोई इन बातों को धर्मानुकूल मानता है, तो कोई धर्म विरुद्ध, अतएव इनका निर्णय हो जाना भी अत्यावश्यक है। और यह निपटारा भी होजाना चाहिये कि नीचे लिखे संकेतों का होना या न होना जाति के उच्च वर्णत्व का पोषक व बाधक है या नहीं?

१–क्या विधवा विवाह करना शूद्रत्व बोधक तथा न करना द्विजत्व बोधक है? अथवा विधवा विवाह प्रणाली का द्विजत्व तथा शूद्रत्व से कुछ भी सम्वंध नहीं है?

२–मांस का खाना वर्णत्व से सम्वंध रखता है या नहीं?

३–शराब पीना धर्मशास्त्रों में महापाप माना है अतएव कायस्थ व राजपूत आदि जातियें जो शराब पीती हैं वे द्विजान्तर्गत लिखी व मानी जाय या नहीं?

४–मर्य्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी महाराज के एक स्त्री श्रीमहारानी सीता जी थीं अतएव आज कल जो एक एक पुरुष के सौ सौ व दो दो सौ स्त्रियें, रानियें, पासवान, दरोगणें, व रंडियें हों वे जातियें किस वर्ण में मानी जांय?

५–मांस खाने व शराब पीनेवाली जातियें किस वर्ण में लिखी जांय?

६–भारत के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, रईस लोग जो मुसलमान रंडियों के तथा गोरी वीवियों के अथवा मैमों के मुंह से मुंह मिलाकर थूक चाटा करते हैं वे किस वर्ण में लिखे जांय?

७–जिन द्विजों में मांस मदिरा का प्रचार है वे किस वर्ण में लिखे जांय?

८–जिन द्विजों के यहां खान पान में कच्ची पक्की रसोई का विचार नहीं है अर्थात् जो एक जगह की बनी दाल, रोटी, चावल आदि दूसरी जगह ले जाकर खाते हैं वे किस वर्ण में लिखे जांय?

९–जिन द्विजों के यहां हाथीदांत का चूड़ा पहिना जाता है वे किस वर्ण में माने जांय?

१०–जिन द्विजों में कांदा लहसुन खाया जाता व चमड़े के डोल का पानी पीया जाता है वे किस वर्ण में लिखे व माने जांय ?

११–ओसवाल जाति में चंडालियां, तेलियां, फेरचिया भुगड़ी; बलाई, और बांभी आदि २ जो गोत्र हैं वे किस वर्ण में माने जांय ?

१२–जब परशुराम जी महाराज ने २१ बार पृथ्वी निक्षत्रिय कर डाली तो फिर क्षत्रियवंश कहां रहा और आजकल जो जातियें सूर्य्यवंशी चन्द्रवंशी होने का दावा करती हैं वे क्षत्रिय कैसे कही व मानी जासक्ती हैं ?

१३–सोडावाटर, लिमिनेट, बर्फ, विलायती मिठाई, सिगरेट, चुर्ट विलायती दूध दही दवाई आदि आदि वस्तुओं को काम में लेना व न लेना वर्णत्व का बाधक व पोषक है या नहीं ।

१४–वे उक्त जाति के हिन्दू जेण्टलमैन जो कोट पतलून पहिनते, खड़े खड़े पेशाब करते, कुत्ते पालकर कुत्तों के साथ सहवास करते, तथा जूते पहिने मिठाई आदि अनेक पदार्थों को खाते देखे जाते हैं उन का यह कृत्य उन के उच्च वर्णत्व का बाधक है या नहीं ?

यदि है तो हजारों ग्रेजुएट्स बी. ए. एम. ए. महाशयों का समुदाय जिन में कोई आप का भाई है, कोई पुत्र है, कोई मित्र है, कोई साला है आदि आदि जिन से आप का घनिष्ट सम्बन्ध है, वह सब समुदाय नीच वर्ण में माना जाकर आप से अलग हो जायगा, ऐसी दशा में आप के देश को बड़ी हानि पहुंचेगी और यदि कहो बाधक नहीं है, तौ खुल्लम खुल्ला व्यवस्थायें पास कर के निबटारा क्यों नहीं कर दिया जाता है ? अथवा उन की ऐसी स्थिती में आप के बालकों की शिक्षा आप स्वयमेव स्वतंत्र रूप से क्यों न करते, करवाते हैं ? क्योंकि जब आप के बालकों के गुरू, आचार्य्य व शिक्षक ईसाई, मुसल्मान तथा अंग्रेज हैं तो आप के बालकों को वैसी ही शिक्षा मिलेगी जैसी कि उन के शिक्षकों के सिद्धान्त व देश प्रणाली है, अतएव मंडल को दीर्घदर्शिता के साथ व्यवस्थायें निकालनी चाहियें ।

मा० रघुनन्दनलाल के प्रबन्ध से यू० पी० आर्ट प्रिंटिंग वर्क्स कासगंज में छपा।

जाति यात्रा

पाठक वृन्द ! आज १४ वर्ष पहिले याने सन १९०१ की मनुष्यगणना के समय भारतवर्षीय मनुष्यगणना विभाग के कमिश्नर की ओर से एक सर्क्यूलर नं० $\frac{५२४}{C\text{-}६०}$ तारीख २५ फरवरी सन १९०१ को हिन्दू जातियों की वर्ण व्यवस्था विषयक निकला था जिसको देखकर हिन्दू जाति समुदाय में बड़ा हाहाकार मच गया था उस के खण्डन में सर्वत्र सभायें होकर Regulation रेग्युलेशन पास होने लगे थे व बड़े२ मेमोरियल्स गवर्नमेंट की सेवा में जाने लगे थे तथा युक्तप्रदेश के सम्पूर्ण समाचार पत्र भी एक स्वर से चिल्लाने लगे थे उस समय युक्तप्रदेशीय गवर्नमेंट के Census Superintendent सेन्सेज़ सुपरिन्टेण्डेन्ट मिस्टर आर. बर्न. आई. सी. एस की ओर से (Revised Scheme) दूसरा सर्क्यूलर नम्बरी $\frac{८०४}{C\text{-}६०}$ तारीख २५ अपरेल सन् १९०१ को निकला जिसमें पूर्व की अपेक्षा बहुत कुछ घटत बढ़त की गई थी और युक्तप्रदेश के सम्पूर्ण जिलों में जिला कमेटियें स्थापित की जाकर तथा उस सर्क्यूलर पर विचार करके तद्विषयक रिपोर्ट गवर्नमेंट ने मांगी

थी तदनुसार पश्चिमोत्तर व अवध प्रान्त की प्रत्येक जातियें अपनी

निर्माण कारण

घोर निद्रा से जाग पड़ी थीं और गवर्नमेंट के सर्क्यूलरोंके अनुसार सब जातिवालों को इस बातकी आवश्यक्ता पड़ी थी कि अपनी २ जाति की उत्पत्ति, गोत्र, प्रवर, शाखा, शिखा, सूत्र, वेद, उपवेद, देवता कुल की रीति भांति, जाति का वर्ण पूर्व व वर्तमान की स्थिति आदि २ विषयों की सम्यक् जांच करके गवर्नमेंट को सूचना दीजाय कि जिससे भविष्यत में जातियें उचित क्रमानुसार लिखी जांय। तदनुसार उस समय लोग, नहीं नहीं अपनी २ जाति के बड़े २ मुखिया व अग्रगन्ता लोग इधर उधर महान उद्योग कर रहे थे कि अपनी २ जाति विषय में पुष्ट प्रमाण एकत्रित करके Memorials मेमोरियल्स पेश करें परन्तु शोक ! उस समय लोगों को किञ्चित काल की अवधि में जैसे चाहियें वैसे प्रमाण नहीं मिल सके अतएव बड़े २ पण्डित व कथक्कड़ विद्वानों ने भी यह ही उत्तर दिया था "कि सम्पूर्ण जातियों का विषय क्रम से किसी शास्त्र व पुराण में नहीं लिखा है वरन किसी २ जाति विषयक कुछ कुछ लेख कहीं २ किसी २ शास्त्र में मिल सकता है अतएव साधारण एक कोई भी विद्वान् इसका उत्तर भले प्रकार नहीं देसकता, क्योंकि इसके लिये अनेकों विद्वान् व, अनेकों संगृहीत शास्त्र व बहु काल की आवश्यक्ता है अतएव उस समय विचारी जातियों को हताश होना पड़ा था। इस लिए ऐसा ग्रन्थ रचने की हमें आवश्यक्ता पड़ी, क्योंकि इस ग्रन्थ की रचना से हमारा अभिप्राय भी

अभिप्राय

यही है कि पाठक गण जाति पांति के महत्व को भले प्रकार समझलें कि जाति पांति का भेदाभाव परमेश्वरीय नियमानुसार है व कृत्रिम, क्योंकि लिखा भी है कि:—

ज्ञान सेवाश्रयेद्विद्वान् जातिं दोषं विनाशयेत्।

जातिं दुःख विनाशेन सर्व दुःख विनाशनम् ॥

पद्मपुराण सह्याद्रिखंडे अ० ४ श्लो० ३५

अतएव जातिपांति के भेदाऽभेद के कारण आज तक भारत वर्ष को क्या क्या लाभ पहुंचे हैं, और भविष्यत में क्यां २ पहुंचने की सम्भावना है ? जिन देशों में जाति पांति का भेद नहीं है आज वे किस दशा में हैं और हमारा भारत वर्ष किस गति को पहुंचा हुआ है, हमारे देश की स्थिती आज कल कैसी है और भविष्यत् में कैसी हो जायगी सृष्टि की रचना के समय जातिपांति व वर्ण व्यवस्था की दशा क्या थी बीच में कैसी व क्या हो गई ? जाति दम्भ व उच्चता नीचता के भावों का फल देश स्थिती पर क्या हुवा ? देश में विद्या का अभाव, कला कौशल की अतिन्यूनता, व्यापार की कमी, सुहृदता व सख्य भाव का अदर्शन और निस्तेजता क्यों फैल गयी ? आदि २ विषयों का उल्लेख इस ग्रन्थ में आया है ।

इस के अतिरिक्त बहुत सी उत्तम जातियें जिन को हिन्दूधर्म व्यवस्था के अनुसार उत्तम से उत्तम कर्म करने का अधिकार है वे परस्पर के द्वेष भाव के कारण घृणित दृष्टि से क्यों देखी जांय ? तथा उत्तम कर्म करने से क्यों रोकी जांय ? नीच से नीच जातियें जो उत्पत्ति तथा अपने कर्म धर्म व आचरणों से भी भ्रष्ट हैं वे अनाधिकारापैन स वेद व शास्त्रों की आज्ञाओं का क्यों उल्लंघन करें जो जातियें अपनी उन्नति करने को उठती हैं वे क्यों दबोच कर रक्खी जांय तथा उन की पीठ क्यों न ठोकी जांय ? शूद्र जाति के साथ अन्याय क्यों किया जाय ? हिन्दुधर्मावलम्बि उच्च जातियें जो श्राद्ध तर्पण करती हैं उत्पत्ति व गोत्रादि के मर्मांश से अनभिज्ञ हैं वे अपने गोत्र, प्रवर, शाखा, शिखा, सूत्र, वेद उपवेद अल्ल, निकास निवास कुलदेवता, अधिकार, जातिस्थिती, तथा जाति प्रचलित रीत भांति को भले प्रकार से जान कर कर्मकाण्ड में क्यों न संलग्न

हा जांय ? वे जातियें जो अपनी उत्पत्ति, गोत्र प्रवरादि तथा अपनी वर्ण व्यवस्था के जानने के लिये यत्र तत्र भटकती फिरती हैं और सैकड़ों रुपैये खरच करने पर भी जिन्हें पता नहीं लगता वे इस ग्रन्थ द्वारा अपनी जाति का विवर्ण जान सकें, वर्ण व्यवस्था की दशा प्राचीन काल में कैसी थी और आज कल कैसी मानी जाती है इत्यादि ये सब कारण ग्रन्थ लिखने के हमारे अभिप्राय हैं।

आदि स्थिती

सृष्टि की रचना के समय केवल एक मनुष्य जाति थी उस समय न वर्ण व्यवस्था थी न आज कल का सा जाति भेद ही था किन्तु केवल एक मात्र मनुष्य जाति थी; वहुकाल तक मनुष्यों के सम्पूर्ण व्यवहार परस्पर अभेद भाव से चलते रहे परन्तु जब मनुष्यों को विना किसी प्रातिवंधक नियम के सांसारिक कार्य्यों में कष्ट होने लगा तव ऋषियों ने गुण कर्मानुसार वर्णव्यवस्था स्थापित की और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र ये चार वर्ण प्रसिद्ध हुये यदि पुराणों को देखा जाय तो सृष्टि की आदि से आज तक कई बार वर्णव्यवस्था नष्ट हुई और कई बार पुनः स्थापित कीगई परशुराम जी महाराज ने पृथिवी को २१ बार निःक्षत्रिय कियी और जब २ उन्हों ने पृथिवी निःक्षत्रिय की तव २ ही वर्णव्यवस्था पुनः स्थापित की गई आज कल जो वर्ण व्यवस्था चल रही है वह राजा वेन के पुत्र पृथु की स्थापित की हुई है राजा वेन जाति पांति के भेदाऽभाव को नष्ट भ्रष्ट कर चुके थे अतएव ब्राह्मणों ने उसे मार कर उस के पुत्र पृथु को गद्दी पर विठाया जिस ने पुनः गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था स्थापित कियी अतएव जाति पांति पर वल देने की अपेक्षा वर्ण व्यवस्था के सुधार की विशेष आवश्यकता है क्योंकि जाति पांति तो मनुष्यों की कल्पित हैं यथाः—

मनुष्याणां न रक्तस्य न मांसस्य न चास्थिनः ।
प्राणस्य नात्मनो जातिर्व्यवहारोहि कल्पितः ॥

आ० मे० चि० सा० पृ० १७४

अर्थात् मनुष्योंकी हड्डी, मांस, रक्त, प्राण व आत्मा आदि जाति नहीं हैं किन्तु ये सब व्यवहार से कल्पितकी हुई हैं अर्थात् जैसा जिसका व्यवहार देखा गया वैसी ही उसकी जाति लोक में प्रसिद्ध हुयी क्योंकि आज कल की जो प्रचलित सैकड़ों जातियें हैं वे सब परमात्मा की ओर से नहीं हैं किन्तु अपने २ व्यवहार, धन्दे, व पेशे के कारण से हैं अतएव उस धन्दे व पेशे को जो करे वह ही उस जाति के नाम से कहाया जा सकता है, हां कुछ जातियें पुराण व स्मृतियों में ऐसी भी मिलती हैं कि जिनकी संज्ञायें ऋषियों ने उनके नियम विरुद्ध विवाह व आचार अनाचार को देखकर निर्धारित की हैं, बहुत सी जातियें आजकल ऐसी भी हैं जिन्हों ने परशुराम जी के भय से कम्पायमान होकर व मुसलमानों के भय से सतायीजाकर अपनी उच्चता को त्यागती हुई छोटी २ व नीच पेशेवर जातियों में अपनी जीव रक्षार्थ जामिली थीं वे ही समय पाकर बहुकाल के उपरांत उस ही नीच जाति श्रेणी में समझी जाने लगी यद्यपि उन के आचार विचार शुद्ध भी हैं तथापि वे उन्नति मार्ग से विमुख रक्खी जाकर दबोच दी जाती हैं।

कारण यह है कि भारत में आजकल अविद्या अन्धकार छाया हुआ है तिससे मनुष्यों के हृदय कलुषित तथा मैले सङ्कीर्ण भावों के केन्द्र बने हुए हैं जिससे परस्पर ईर्ष्याद्वेष फैला हुआ है पिता पुत्र का शत्रु, भाई भाई का दुश्मन होरहा है ब्राह्मण वर्ण के लोग चाहे कैसे भी मूर्खानन्द निरक्षराचार्य्य, पापी, अजितेन्द्रिय, दुष्कर्मी, अनाचारी लोलुप क्यों न हों वे भगवानके एक मात्र इकलौते बेटे अपने को समझते हैं परन्तु दूसरे मनुष्य चाहे वे कैसे भी जितेन्द्रिय, साहसी, धैर्य्यवान्, सत्यवादी, वेदज्ञ तथा ब्रह्मज्ञानी क्यों न हों पर वे ईश्वरके बेटे तो क्या, किन्तु कीट व पतंगके बराबर भी नहीं माने जाते हैं यह सब देश में अविद्या की प्रसारता का मुख्य फल है। प्राचीन समय में न आजकल का सा जाति दम्भ ही था, और न ऐसा अविद्या ही फैली हुयी थी न कोई अपने को

बड़ा व दूसरे को छोटा ही समझता था, किन्तु शास्त्रविधि के अनुसार सब को सब काम करने के अधिकार थे क्योंकि मुक्ति का सुख, परमात्मा का ज्ञान व भगवद्भक्ति करने का जो अधिकार एक ब्राह्मण को है वही एक शूद्र व अति शूद्र को भी है ऐसी ही व्यवस्था राजा भोज के समय तक इस देश में प्रच-लित थी तब ही देश में सुख सम्पदा का सञ्चार था उस समय यह नियम नहीं थे कि अमुक शास्त्र पढ़ने का अधिकार तो केवल ब्राह्मण को ही है और अमुक शास्त्र पढ़ने व अमुक कर्म्म करने का अधिकार अमुक २ वर्ण को नहीं है उस समय इस देश में कोई मूर्ख ढूंढ़ने पर भी नहीं मिलता था यहां तक कि उस समय के धोबी तेली चमार कोली व भंगी आदि भी पढ़े लिखे होते थे और परस्पर संस्कृत बोलते थे, यथा साहसाङ्क चम्पू जो महाराज विक्रमादित्य के विषय में लिखा गया है सरस्वती कण्ठाभरण के द्वितीय परिच्छेद में रतनेश्वर मिश्र ने साहसाङ्क पद से विक्रमादित्य का ग्रहण किया है और आढ्यराज पद से शालिवाहन का ग्रहण है उस समय इस देशमें संस्कृत ही बोली जाती थी यथा:—

केऽभूवन्नाढ्यराजस्य राज्ये प्राकृत भाषिणः ।
कालेश्री साहसाङ्कस्य के न संस्कृत भाषिणः ॥

अर्थात् इस देश में राजा भोज व विक्रमादित्य के समय तक सब लोग संस्कृत ही भाषण करते थे महाराज विक्रम के समय में ही कालीदास वाराह मिहर आदि नवरत्न थे जो सब संस्कृत भाषी थे परन्तु शालिवाहन के समय में सब लोग भाषा बोलने लगे थे राजा विक्रम व भोज के समय यह कानून था कि:—

विप्रोपि यो भवेन्मूर्खः सपुराद्बहिरस्तुमे ।
कुम्भकारोपि योविद्वान् सतिष्ठतु पुरेमम ॥

अर्थात् राजा भोज व विक्रम का कहना था कि मेरा प्यारा भी हो और वह मुर्ख हो तौ वह मेरे राज्य में न रहे परन्तु कुम्हार भी हो और वह यदि विद्वान है तौ निस्सन्देह रूप से मेरे राज्य में रहे आज विक्रम सम्वत १९७० है तदनुसार शालिवाहन का शाका सम्वत १८३५ है ईस्वी सन् १९१४ है अतएव इस प्रमाण के आधारानुसार आज से १८३६ वर्ष पहिले इस देश में संस्कृत ही बोली जाती थी तत्पश्चात भाषा का प्रचार हुवा।

राजा भोज के समय पनिहारियें ही नहीं, किन्तु कोलिन तक भी पढ़ी हुयीं होती थीं, राजा भोज एक २ नये श्लोक के लिये ब्राह्मणों को एक एक लाख रुपैया देते थे उस को देख कर एक कोलिन ने राजा भोज से कहा कि:—

काव्यं करोमि नहि चारुतरं करोमि
यत्नात् करोमि पट चारुतरं करोमि।
भूपाल मौलि मणि मण्डित पादपीठ
हे शाहसाङ्क कवयामि वयामि यामि॥

हे राजन्! मैं काव्य करती हूं परन्तु अत्युत्तम काव्य नहीं करती हूं किन्तु यत्न से कपड़े बुन कर जीविका करती हूं हे भूपाल मणि! मण्डित पादपीठ शाहसाङ्क महाराज! मैं कविता तथा जुलाहापन दोनों प्रकार की विद्या जानती हूं अतएव मैं दोविद्यावों का पुरस्कार पाने योग्य हूं इस पर प्रसन्न हो कर राजा ने कोलिन का धन द्वारा बड़ा सन्मान किया इस का यही भावार्थ है।

पुस्तकालयों का नाश

भारतवर्ष की अविद्या व अवनति का एक मुख्य कारण यह भी है कि मुसल्मान बादशाहों ने हमारे ऋषियों के प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ व वेद वेदाङ्ग, उपाङ्ग, शास्त्र, कलाकौशल व साहित्य ग्रन्थों के प्राचीन विशाल २ पुस्तकालय व ज्योतिष

शास्त्र के यन्त्रादि तथा विश्वविद्यालयों को जलाते हुये नष्ट भ्रष्ट कर दिया जिस का परिणाम यह निकला कि हमारा देश विद्याशून्य हो गया यहां तक कि वेदों का मिलना भारतवर्ष में कठिन होगया महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने शतपथ ब्राह्मण व वेद जर्म्मनी से मंगवाये और तब से वेदों का प्रचार भारत में बढ़ता जाता है हमारे देश में किस २ मूल्य की विशाल लाइब्रेरियां थीं और मुसलमान बादशाहों ने उन्हें कैसे नष्ट भ्रष्ट कर डालीं ? इस के विषय अनेकों प्रमाणों का देना अत्यावश्यक नहीं है क्योंकि रायसरतचन्द्रदास बहादुर सी० आई० ई० का अंग्रेजी व्याख्यान जो साहित्य सभा कलकत्ते में, Sir Roper Lethbridge सर रोपर लेथ ब्रिज की प्रधानता में हुवा था और जो प्रयाग के हिन्दू रिव्यु अंक मार्च १९०६ में छपा है वह विवर्ण इस प्रकार से है:—

"The temple of Udantapuri Vihar which is said to have been loftier than either of the two (Budha-Gaya & Nalanda) contained a Vast collection of Budhist and Brahmanical works, which, after the manner of the great Alexandrian Library was burnt under the orders of Mahommed Ben Sim General of Bakhtiyar Khilji in A. D. 1202 (The Hindu Review March 1906 page 187)

भा० उदन्तापुरी विहार का मन्दिर जो बुद्ध गया तथा नलन्दा के मन्दिरों से बहुत ऊंचा व विशाल था उस में असंख्य ग्रन्थ हिन्दू तथा बौद्ध धर्म्म के एकत्रित थे वह महान पुस्तकालय जिस तरह अलेकज़ेन्ड्रिया की प्रसिद्ध लाइब्रेरी जलायी जाकर नष्ट कियी गयी थी उस ही तरह यह पुस्तकालय भी सन् १२०२ ई० में बख्तियार खिलजी के जनरल मुहम्मद बेनासियाम ने जला कर नष्ट भ्रष्ट कर दिया पाठक ! एक दूसरे इतिहास वेत्ता का कथन है कि इस लाइब्रेरी की आग एक महिने तक जलती रही थी इस से अनुमान कर लीजिये कि वहां कितने ग्रन्थ होंगे ?
(हि० रिव्यु मार्च १९०६ पृ० १८७)

During the reign of the son of king Mahipal there were 1000 monks of the earlier School of Buddhism called Hinayana etc. about 5000 monks of the Mahayana School at Udantapuri. The Pal Kings had established a monastic University at Udantapuri, with a splendid Library of Brahmanical and Budhistics works, which was distroyed at the Sack of the Monastery and the massacre of its monks by the Mohamedans in A. D. 1202 (The Hindu Review March 1906 page 190)

भा०—यह हि० रिव्यु मार्च सन० १९०६ के पृष्ट १९० का लेख है, कि महाराज महिपाल के पुत्र महाराज महापाल के समय उदन्तापुरी में बौद्धों की प्राचीन हीनायन सम्प्रदाय के १००० एक हजार साधू तथा नवीन महायान सम्प्रदाय के ५००० पांच हज़ार साधु वहां निवास करते थे उन विद्वान महात्मा साधुवों के अर्थ वहां पालवंशी राजावों ने एक विश्वविद्यालय स्थापित किया था जिस में साधुवों के लाभार्थ एक महान् पुस्तकालय था परन्तु जनरल मुहम्मद वेनसियाम ने सन् १२०२ ईस्वी में उसे जला कर नष्ट करवा दिया और साधुवों को क़त्ल करा डाला।

इस ही तरह " तवकति नासरी ,, नामक मुसलमानी ग्रन्थ में लिखा है कि कुतवुद्दीन एवक बादशाह के जमाने में जब शहर बिहार फतह हुवा तौ एक लाख के करीव तौ सिर्फ ब्राह्मण ही क़त्ल किये गये थे और हिन्दुवों का एक कदीमी कुतुवखाना जिस में वहुत पुरानी २ कितावें मौजूद थीं जला दिया गया।

पाठक ! जब देश की यह दशा थी तो ऐसे समय में प्राचीन समय के जातिविषयक संस्कृत ग्रन्थ क्यों मिलने लगे थे ? मैं देश २ में अन्वेषण करते २ थक गया पर वड़ी २ लाइब्रेरियों में भी उन ग्रन्थों के दर्शन न हुये साथ ही में मैं अंग्रेजों के लिखे व छपाये उन

ग्रन्थों का भी खोज करता रहा कि जो रजिस्ट्री कराये हुये हैं और आज कल उन के रचयिता Authors लेखक भी इस संसार में नहीं हैं और उन की रजिस्ट्री होने के कारण उन को आज कल कोई छपा भी नहीं सकता है और जो सौ २ या पचास २ वर्ष पहिले की निष्पक्ष तहकीकात के ग्रन्थ हैं अतएव ऐसी दशा में मैंने सैकड़ों पोस्टकार्ड व लिफाफे खरच कर डाले पर वे भारत वर्ष में ही नहीं किन्तु सम्पूर्ण एशिया खंड में भी न मिले यह ही नहीं वे विलायत के प्रसिद्ध शहर लंदन में भी न मिले तब अन्वेषण (तलाश) करते २ उन ग्रन्थों का पता युरोप में लगा जैसा कि नीचे के पत्र से प्रमाणित होता है:-

No. 62604 Calcutta 21-10-13

To,

Pandit C. L. Sharma, Esqr.

PHULERA.

Dear Sir.

With reference to your inquiry we beg to report as follows.

Sherring H. C. & S. 3 Vols. cloth	Rs. 75-0-0
Daltons D. E.	,, 175-0-0
Bems F. & D. of Races 1869 cloth	,, 20-0-0
Oppert C. I. of Bharatvarsha	,, 7-0-0

The copies reported are in Europe and the prices are only conditional to the books not being sold meanwhile.

We are, Dear Sir
Yours Faithfully.
T. S. and Co. Ltd.

भापार्थ

नं० ६२६०४ कलकत्ता । २१-१० १९१३

महाशय पं० सी. एल. शर्म्मन्—फुलेरा.

आप के पत्र के उत्तर में निवेदन इस प्रकार से है कि—

शेरिंग एच. सी. एण्ड एस. नामक ग्रन्थ तीन जिल्दों में है
मूल्य ७५)
डाल्टन डी. ई. " १७५)
बीम एफ. एण्ड डी. आफ रेसेज़ सन १८६९ का छपा मू० २०)
ओपर्ट ओ. आई. आफ भारतवर्ष मूल्य ७)

ये ग्रन्थ जिन के लिये आप को लिखा जाता है युरुप में हैं और इन का मूल्य जो दिया गया है वह अभी खरीद लेने की दशा में है क्योंकि ये ग्रन्थ इस मूल्य पर भविष्यत में मिल भी न सकेंगे।

आपका—
टी० एस एन्ड को लिमिटेड

प्यारे देशहितैशियो! इन ग्रन्थों का मूल्य सुनकर एक दम सन्नाटा सा छा गया और वर्षों की आशालता मुरझाने लगी परन्तु भगवान पर भरोसा करके व कलेजा खोलकर उन ग्रन्थों को भी मंगवाकर उनके प्रमाण भी मैंने प्राप्त कर लिए हैं और ग्रन्थों का वहुत कुछ विषय भी उन्हीं के आधार पर है परन्तु लोग इस मेरे ग्रन्थ के अलग २ टुकड़े करके न छपालें अथवा मेरे परिश्रम को नष्ट करने के लिए मेरे संघटित प्रमाणों को न उड़ालें अतएव कहीं २ तो मैंने वात व प्रमाण तो लिख दिये हैं परन्तु उनका पता कहीं २ सङ्केत मात्र लिखा है और कहीं २ उनका पता लिखा ही नहीं है कि जिससे पढ़े लिखों की चोरी का सहज ही में पता लगजायगा!

हमें विश्वास है कि जव हमारे लिखित ग्रन्थ को देखकर ही लोग मुग्ध हो जाते थे और उसे उड़ाने का प्रयत्न करते थे तव छपने पर कोई पढ़े लिखे लोग इसके भावार्थ व प्रमाणों को क्यों न उड़ालें यह समझ में नहीं आता है अतएव ऐसा करने वाले महाशयों के वारे में जो सज्जन हमें सूचना देंगे उन को हम ५०) पचास रुपये इनाम देने को तय्यार हैं।

इस ग्रन्थ की पूर्ति के लिये जहां प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों का अभाव इस देश में निकला तैसेही भारत की प्राचीन स्थिति के सैकड़ों वर्षोंके छपे जातिविषयक अंग्रेजी ग्रन्थोंकी भी अलभ्यता होगई, बड़े २ सिविलियन अंग्रजों के लिखे आज से सौवर्ष पहिले के जाति विषयक ग्रन्थ जो अदर्शनीय हो रहे थे उन की प्राप्ति के लिये सैकड़ों रुपैये खरच भी किये पर वे न मिले और जो ग्रन्थ मिले उनमें से एक ग्रन्थ१७५)में दूसरा ७५)में तीसरा १२४) में और चौथा २०)में आया अतएव उनके प्रमाण व पृष्टाङ्क सहित हवाले प्राप्तकरनेमें जो अतुल व्ययतथा प्रयत्न करने व कष्टसहने पड़ेहैं उनकी निश्चयात्मकता लंडन तक की चिट्ठियां जो मुद्रितहैं उससे कियीजासकती है जिन२ अंग्रेज महाविद्वानों के नाम आगे लिखे गयेहैं उन में से अनेकों के ग्रन्थ मूल्य पर भी नहीं मिले, मूल्य पर ही नहीं किन्तु बड़ी २ लाइब्रेरियों तक में भी एक आध को छोड़कर सबके सब एक जगह न मिले अतएव उन ग्रन्थोंकी सूची बनाकर हमने भारतवर्ष के प्रसिद्ध २ बुकसेलरों को लिखा उन के जो २ उत्तर आये उनमें से दो एक की नकल यहां उद्धृत करते हैं यथाः—

अंग्रेजी ग्रंथों की अलभ्यता

Higginbotham and Co. Madras.

No. E. 4/3057

Madras
Dated 17-4-1913.

Dear Sir,

In reply to your Post card of the 12th instant we have to inform you that Ethnographical Hand Book for N. W. P. & Oudh is not available either Second-hand or new.

We are, your's faithfully
Higginbotham & Co.

भापार्थ

नं० ई० ४—३०५७ मदरास

ता० १७ अपरेल सन् १९१३

प्रियवर ! आप के कार्ड तारीख १२ के उत्तर में लिखा जाता है कि " एथनोग्राफीकल हैन्डबुक फार ऐनडवल्यु पी और अवध " न वो नयी ही है और न पुरानी कापी ही मिल सकती है।

आप का हिगिनवोथम अन्ड को

दूसरी चिट्ठी

Thacker Spinks and Co.

No. 62604 Calcutta.

D/ 18-8-1913

In reply to your post card dated the 10th instant, we have to inform you that all the books asked for are now out of print & very scarce.

भापार्थ

थेकर स्पिंक अन्ड को कलकत्ता

नम्बर ६२६०४ ता० १८-८-१९१३

आप के पोस्टकार्ड तारिख दस अगस्त के उत्तर मे निवेदन है कि आप ने जो जो किताबें मंगवायी हैं उन सबों का छपना अब बन्द हो गया है अतएव अलभ्य हैं।

पुनः थेंकर स्पिङ्क एण्ड को० ऐसा लिखते ह—

No. 85377 Calcutta

D/ 25-10-1912

In reply to your post card dated the 19 th instant sherings, H. C. & T is not in stock & now out of print. We could probably procure a Second hand copy for you for about Rs. 50-0-0 to Rs. 60-0-0 may we do so.

भाषार्थ

नं० ८५३७७ कलकत्ता

ता० २५—१०—१९१२

आप के कृपा कार्ड तारीख़ १९ के उत्तर में कथन है कि शेरिंग की एच सी एन्ड टी स्टाक में नहीं है और अब इस का छपना भी बंद हो गया है। हम पुराना एक जिल्द कहीं से लेकर ५०) से ६०) तक में भेज सकते हैं क्या भेज दें ? ※

आपका थेकर स्पिङ्क अन्ड को

थेकर स्पिङ्क एण्ड को. शिमला से लिखते हैं।

Simla D/ 22-10-1912

Dear Sir,

In reply to your inquiry of the 19th instant we beg to report that price of shoring H. & T. published in 1872 in 3 Vols. We have a Second hand copy which we can supply for Rs. 47 Post free. The book is now quite out of print & scarce. On receipt of the amount we shall be happy to send it.

Your's Faithfully
Thacker Spink & Co.

भाषार्थ

पं० सी० एल० शम्मन् शिमला

फुलेरा ता० २२—१०—१९१२

महाशय आप के कृपा पत्र तारीख़ १९ के उत्तर में कथन है कि शेरिंग की जाति विषयक किताब तीन जिल्दों में छपी है और

※ नोट:—पाठकगण इस ग्रन्थ की तीन जिल्दें हैं अतएव तीनों जिल्दों में से एक पुरानी सेकिन्ड हेन्ड कापी याने बरती हुयी फटी पुरानी एक जिल्द ही की कीमत ५०) से ६०) है अतएव तीन जिल्दों के इस हिसाब से १५०) से १८०) रुपैये होते हैं सो भी तीनों जिल्दें एक जगह न मिली तब शिमले को लिखा वहां का उत्तर ऊपर देखिये.

हम एक जिल्दें पुरानी ४७) सैंतालीस रुपैयों में भेज सकते हैं रुपैये आने पर भेज देंगे। ❀

आपका थेकर स्पिङ्क अन्ड को लंडन की चिट्ठी

Broadway House
68 | 74 Carter Lane
London D/ 28-11-1912

Mr. C. L. Sharman Phulera.

Dear Sir,

In reply to your letter o' the 4th. instant, we regret that we are unable to supply sherrings C.&T. As the works is quite out of print & very scarce it was published in three Volumes as overleaf.

			L S. D.
Volume	I	1872	4— 4—0
„	II	1879	2— 8—0
„	III	1881	I—12—0

We do not think you will be able to obtain a copy.

Yours faithfully
Kegan Paul Trench Trubner & Co. Ltd.

भाषार्थ

ब्राडवे हाउस
६८—७४ कार्टर लैन
लंडन ता० २८-११-१९१२

महाशय सी० एल० शर्म्मन फुलेरा

आपके कृपापात्र तारीख ४ नवम्बर सन् १९१२ के उत्तर में

❀ नोट:—जब भारतवर्ष में इन किताबों के पूरे सेट का मिलना कठिन हुवा तो तलाश करते २ म्युजियम लाइब्रेरी लखनऊ के Curator क्युरेटर साहब ने हमें लंदन का पता बतलाया तदनुसार हम ने लंदन को लिखा वहां से जो उत्तर आया उस की नकल यह है।

शाक के साथ लिखाजाता है कि शेरिंग की सी० एन्ड० टी० किताब हम नहीं भेज सकते क्योंकि वे अब बड़ी महंगी हैं और छपने से बन्द हैं ये तीन जिल्दों में छपी थीं यथा:—

			पौंड शि० पैं०		रु० आ पा
पहिली जिल्द	१८७२	में मूल्य	४ –४—०	=	६३ –०–०
दूसरी ,,	१८७६	,, ,,	२ –८—०	=	३६ –०–०
तीसरी ,,	१८८१	,, ,,	१ –१२–०	=	२५ –०–०
		जोड़	८ –४—०		१२४ –०–०

जब इस प्रकार १२४) खरच करने पर, व सम्पूर्ण एशियाखंड में ढूंढते २ लंडन तक में भी जाति विषयक प्राचीन ग्रन्थ न मिलेतब "टी एस एन्ड को" नामक प्रसिद्ध कम्पनी ने युरोप के भिन्न २ भागों से तलाशकरके हमें चार ग्रन्थ जिसमें से एक का मूल्य १७५) रुपये दूसरे का मूल्य १२४) रुपैयें तीसरे का मूल्य ७५) रुपैये और चौथे का मूल्य २०) रुपैयों में मंगवाकर दिये अतएव ३६४) रुपैये खरच करके उपरोक्त चारों ग्रन्थों के हवाले हमने संग्रह किये हैं।

महान उद्योग करने व सन् १६०१ के पूर्व से आज तक अनुमान बीस वर्ष के इस महाकाल में हम सदा यह ही विचार करते रहे कि यह हमारा ग्रन्थ सर्वथा सर्वदा सदा के लिये सब को लाभकारी हो तथा इस बात का भी विशेष ध्यान रखते रहे कि इस ग्रन्थ में जो कुछ लिखा जाय वह आत्मा के अनुकूल तथा शास्त्र व अन्य ग्रन्थकारों की सम्मत्यानुसार लिखा जाय। यह विचार सोते जागते उठते बैठते खाते पीते प्रत्येक समय हम अपने चित्त में रखते थे कि यह ग्रन्थ किसी की मानमर्य्यादा व प्रतिष्ठा भंग करने वाला न हो वरन सब को रुचिकर व लाभ पहुंचाने वाला होना चाहिये।

महा काल

यद्यपि यथाशक्ति मैंने इस ग्रन्थ को पक्षपात रहित लिखा है तथापि मैं अल्पज्ञ हूं अतएव यदि Through misunderstanding अज्ञानवश कोई भूल मेरे ग्रन्थमें हुई हो तो मैं उन विद्वानों व सभा सम्मिती व जाति के सज्जनों का अत्यन्त कृतज्ञ होऊंगा जो विद्वान लिखकर मेरी भूल दुरुस्त करादेंगे इस ही कारण से इस ग्रन्थकी मैंने बहुत थोड़ी कापियें, नमूने के लिये पहिली जिल्द छपवाई है ताकि दुवारा वृत्ति में सुधार किया जा सके।

सङ्कीर्णता

हमारी पब्लिक तहकीकात की यात्रा में हमें दो स्थानों में बड़ी कठिनता पड़ी एक तो आगरे दूसरी अजमेर में। अर्थात् आगरे में मुझे एक पेंशनयाफ्ता खत्री महाशय का पता लगा जिन के विषय लोगों ने मेरे सन्मुख प्रशंसा कियी थी क्योंकि आपने एक जाति विषयक ग्रन्थ छपाया था मैं बहुत परिश्रम के साथ उन से मिलने के लिए उनके मकान पर गया और उनसे मिलकर मैंने अपना कर्तव्य प्रकट करते हुए उनसे जातिविषय में कुछ ऐसे प्रश्न किये जिस से मेरे संग्रह किये हुये Ethnological Survey नामक ग्रन्थ में सहायता मिलती साथ ही में मैंने उन से उनकी बनायी पुस्तक भी मूल्य पर मांगी परशोक ! भारतवासी किसी को कोई गुण सिखलाने में अपनी सङ्कीर्ण हृदयता का परिचय दिये बिना नहीं रहसकते तदनुसार उन महाशय ने न मुझे कोई बात बतलानी ही चाही और न मोल पर अपना ग्रन्थ ही मुझे दिया मैंने आपसे लंडन, अमेरिका तथा जर्म्मनी के छपे उन ग्रन्थों के नाम व पते लेना चाहे जोकि उनके पास थे पर महाशोक ! के साथ लिखना पड़ता है कि उन खत्री महाशय ने जिनका नाम कदाचित् श्रवणराम था मुझे कोरमकोर बातों में टरकादिया यहां तक कि न मूल्य पर पुस्तक ही दियी और न लंडन जर्म्मनी व अमेरिकाके छपे जातिविषयक ग्रन्थों के नाम पताही नोट करने दिये।

इसही तरह अजमेर में एक पेंशन यापता सारस्वत महाशयसे साबका पड़ा जिन्होंने जातिविषय में कुछ अनुभव प्राप्त किया है और कुछ जातिविषयक मसाला भी थोड़ा सा आपके पास है आप की प्रशंसा भी ऊपर के लेखानुसार ही जाननी चाहिये आपके पास एक सिविलियन आफीसरकी छपायी हुई, जातिविषयक एक पुस्तक थी जिस का मूल्य २॥) था मैंने उस पुस्तक में से उनके स-मच ही कुछ नोट्स ले लेने की प्रार्थना कियी पर उन महाशय जी ने मेरी प्रार्थना पर तनिकसा भी ध्यान न दिया और चट वार्तालाप करते २ उस पुस्तक को अपने कब्ज़े में ले लियी तदर्थ मैं कई बार उनके पासगया पर मेरा जाना निष्फल ही हुवा। यद्यपि यह पुस्तक जब छपी थी तब २॥) में मिलती थी पर अब तो वह २५०) ढाई सौ रुपयों में भी नहीं मिलती है।

हाय ! बार बार लिखते दुख होता है कि आगरे में मुझे एक राजपूत महाशय कुंवर जी मिले जिन्होंने अपना एक लेख छपवायाहुआ भूमिहार ब्राह्मणों के विषयमें दिखलाया उसको देखकर पाठक मेरी तबियत फड़क गयी मैंने उस लेख की एक कापी लेनी चाही पर उन्होंने छपे लेख की कापी देना तो दूर रहा उसमें मुद्रित प्रमाण जिन ग्रन्थों के थे उन ग्रन्थों के नाम तक भी मुझे नोट न करने दिये मैंने उन से अनेकों प्रकार से प्रार्थना कियी पर कुछ फल न निकला तब मैं ने उस लेख को उनके समक्ष देखते २ ही उन ग्रन्थों के नाम हृदय में धारण कर लिये और उनके स्थान से बाहिर निकलकर उन हृदयस्थ ग्रन्थों के नामों को मैंने अपनी नोटबुक में नोट करलिये और उसही दिन से उनका ढूंढना आरम्भ कर दिया मूल्य पर तो वे भारतवर्ष में कहीं नहीं मिले और अनेकों लाइब्रेरियों में भी न मिले परन्तु लखनऊ की पबलिक लाइब्रेरी में मिले जहां से हमारा कार्य्य बनगया।

परन्तु भगवान का धन्यवाद है कि युरोप से हमें अपने इच्छित चार ग्रन्थ ३६४) में प्राप्त होगये जिनसे हमारे जातअन्वे

षण में बड़ी भारी सहायता मिली है जो सर्वसाधारण के लिये असम्भव थी ।

सज्जन गण ! मैंने जो जातियों की पबलिक तहक़ीक़ात की [illegible] वह ऐसी नहीं समझना कि मैंने हमा तुमा [illegible] अन्वेषण [illegible] से ही पूछकर जुबानी जमा खरच के आधार [illegible] आधार [illegible] खुशामदी बातों से भरकर जाति अन्वेषण [illegible] निर्माण किया है बरन प्रत्येक शहर में व्याख्यानादि द्वारा जाति विषयक आन्दोलन मचाकर व पबलिक नोटिस हिन्दू जातियों को देकर तथा मण्डली को एकत्रित करके प्रत्येक विषयों पर सम्मतियें लियी हैं और साथ ही में अनेकों विद्वज्जन मण्डलियों से सार्टीफिकट व प्रशंसापत्र प्राप्त किये हैं जिन में से किसी २ की नकल आगे को दियी गई हैं अतएव हमारे जातिअन्वेषण का विशेष सम्बन्ध युक्तप्रदेश व राजपूताना की जातियों से समझना चाहिये ।

हमारे पबलिक तहक़ीक़ात का आधार गवर्नमेन्ट निर्धारित २९९ प्रश्नों के प्रतिफल पर किया है जो कि सन् १८८५ के करीब युक्तप्रदेशीय गवर्नमेंट ने जातियों की तहक़ीक़ात के लिये निश्चय किये थे अतएव हमारा ग्रन्थ भारत के लिये कितना उपयोगी होगा यह पाठक स्वयं विचार कर सकते हैं। उन प्रश्नों में से बहुत से प्रश्न हमने अनुपयोगी जाने तथा बहुत से प्रश्नों में कुछ न्यूनाधिकता करने की भी आवश्यकता पड़ी तथा कई उपयोगी प्रश्न मुझे अपनी ओर से और मिलाने पड़े क्योंकि ऐसा न करने से प्रत्येक जाति की वर्णस्थिति जांचने में काठिनता पड़ती थी अतएव मैंने कई प्रश्न ऐसे मिलाये हैं कि जिससे जाति सिकंजे में खिंचजायगी और उनकी वर्णस्थिति व उत्पति आदि का विवर्ण याज्ञवल्क्य स्मृति मिताक्षरा तथा मनुधर्म्म शास्त्र के कथनानुसार मुझे लिखने का सौभाग्य प्राप्त होजायगा । गवर्नमेंट के चुने हुये २९९ प्रश्न थे पर वे घटाये तथा बढ़ाये जाकर भी केवल २५१ प्रश्न रक्खे हैं जो अन्वेषणार्थ रिजर्व (गुप्त) रक्खे गये हैं

❀ विज्ञापन ❀

विदित हो कि आज कल वे हिन्दू जातियें जो शूद्र ही नहीं किन्तु शूद्रों की भी दादा गुरू जिन की उत्पत्ति दोगली, संकर, वर्ण संङ्कर, लोमज व प्रतिलोमज आदि हैं वे भी आज अपने को शर्म्मा, वर्म्मा, व गुप्त लिखती हैं तथा जिन कर्म्मों का उन्हें अधिकार नहीं है उन्हें वे धींगा धींगी द्वारा शास्त्र व ब्राह्मणों को आज्ञावों को उल्लंघन करके कर रही हैं और अपने को ब्राह्मणों के बराबर मानती हैं और जो असल में उच्च जातियें हैं और जिन्हें उत्तम से उत्तम कर्म करने का अधिकार है वे आज अपने अज्ञान वश बड़ी ही घृणित दृष्टि से देखी जाकर उत्तम कर्म्मों से वञ्चित रक्खी जाती हैं कारण यह है कि बहुकाल से इस देश में पक्षपात ईर्ष्या, द्वेष अहङ्कार व दम्भयुक्त उच्च नीच के भाव उत्पन्न हो गये हैं अतएव प्रत्येक जाति अपने को ऊंच और दूसरे को नीच मानती है और इस धींगा धींगी द्वारा भारत में परस्पर वैमनस्य की वृद्धि होती चली जा रही है ऐसे अन्याय व पक्षपात युक्त व्यवहार देखकर मेरे चित्त को विचार उत्पन्न हुवा है कि उच्च जातियें नीच क्यों समझी जाय ? और उत्तम कर्मों के करने से क्यों दूर रक्खी जाय ? तथा नीच जातियें अनधिकारी पन से शास्त्र मर्य्यादा को क्यों उल्लंघन करें ? इस आशय को लेकर मैं ने सम्पूर्ण जातियों का इतिहास लिखा है तथा अन्वेषण (तहकीकात) करता हुवा उस में की त्रुटियों को दूर करता चला आ रहा हूं और इच्छा है कि प्रत्येक जाति का आद्योपान्त अलग २ इतिहास तैयार हो जाय।

विशेष विचार की आवश्यकता इन जातियों पर है। कायस्थ, कुर्मी; जाट, खत्री, गूजर, बड़गूजर, भट्टी, चमारगौड़, चन्द्रवंशी दीक्षित, गहलोत, गहरवार, गौड़, सनाढ्य, गोतम, अहार, अग्रवाल जादों, जैसवार, किरार, वैसवार भाटिया, महाजन माली, तेली गड़रिये, दर्जी, लुहार, कुम्हार, सुनार, बढ़ई, नाई, सेना, काछी, मुराव, कोरी, लोधा, किसान, तम्बोली, बारी, सारस्वत, दाधीच,

छीपा, पटुवा, दूसर, भार्गव, कलवार, कलाल, लूनियां, लवणिया, भूमिहार, महेश्वरी, ओसवाल, सरावगी, खंडेलवाल, आदि २१।

नोट—शुद्ध ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्यों के अतिरिक्त वे वे जातिय जो खड़ाऊं पहिनती; जनेऊ धारण करती और अपने को कोई ब्राह्मण कोई क्षत्रिय और कोई वैश्य वतलाती हैं उन्हें मैं चेलञ्ज देता हूं कि वे शास्त्रार्थके मैदान में आकर लेखबद्ध शास्त्रार्थ द्वारा अपने को ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य सिद्ध कर दें तिस से सर्व साधारण पर विदित हो जाय कि उनकी असलियत क्या है ? पाठक गण ! आप स्वप्न में भी यह न विचार करें कि मैं किसी का जी दुखाना चाहता हूं वरन पुस्तक के छपजाने पर उस में का लेख अचल हो जायगा अतएव छपने के पूर्व उस में की त्रुटियें भूल आदि दूर हो जांय इसही अभिप्राय से आप के नगर में आया हूं आशा है कि विद्वान् ब्राह्मण गण जिन की आज्ञा व मान मर्य्यादा अन्य जातियें भंग करहीं हैं वे इस महत्कार्य्य में सहायक होंगे क्योंकि मैं अपने को विद्वानों से छोटा समझता हूं।

आप का शुभचिन्तकः—

आगरा ता० २८ $\frac{५}{१२}$ } श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्म्मा पवलिक हिन्दु जाति इन्कायरर

पुस्तक के छपने व तैयार करने में जो करीब २० वर्ष का समय लगगया उस का भी अभिप्राय यह ही था कि इस ग्रन्थ से किसी जाति विशेष का जी न दुखे अब भी मेरा विचार ऐसा ही है और भविष्यत में भी ऐसा ही रहेगा।

भ्रमण वृत्तान्त

मैं अपने उपरोक्त अभिप्राय को ही पूरा करने की इच्छा से इस सातों जिल्दों के लिखित महान ग्रन्थ व पूर्वोक्त २५१ प्रश्नों को लेकर Public inquiry पवलिक तहकीकात करने के लिये भी निकला और आगरा सरीखे महान शहरों में पवलिक

नोटिस व शास्त्रार्थ के लिये पबलिक चेलेंज सम्पूर्ण जातियों को दिया और जाति विषय में अनेकों लेक्चर भी दिये पर कोई साम्हने न या। इस नोटिस के आगरे में बटने पर व हमारे लेक्चर होने पर माहोर सुनार जग पड़े जिन्होंने सभा करके यह नोटिस छपवाया।

॥ ओ३म् ॥

विज्ञापन

सर्व मान्यवर महाशयों की सेवा में निवेदन किया जाता है कि आज हम अपने को बड़ भागी समझते हैं कि श्रीयुत महाशय वानप्रस्थ छोटेलाल जी ने हम लोगों को नींद से उठाया। श्रीमान् जी ने जो मनकामेश्वर नाथ जी में लेक्चर दिया था उस में आप ने फर्माया था कि स्वर्णकार क्षत्रिय नहीं है। पण्डित जी ने यह अनुचित कटाक्ष हम लोगों की अनुपस्थिति में किया सो हम पण्डित जी से निवेदन करते हैं कि हम अपनी सभा के अधिवेशन में क्षत्रिय होने का सुबूत पेश करेंगे। धार्म्मिक विषय पर भी व्याख्यान होंगे। मैं आशा करता हूं कि पण्डित जी कृपा कर सभा में पधारें और श्रीयुत पण्डित गां० प्रसाद जी कानपुर के वचनों को श्रवण करने की कृपा करें और अन्य सभ्य महाशय भी पधारने की कृपा करें सभा बुधवार ता० १९ जून सन १९१२ को मन्दिर दाऊ जी मोती कटरा आगरा में शाम के ६ बजे से होगी।

आपका दर्शनाभिलाषी—
रघुनाथ प्रसाद वर्मा
(६-६-१२) माथुर स्वर्णकार क्षत्रिय सभा, आगरा

नोटः—सुनार जाति के विषय में हमारे पास बहुत कुछ लिखा हुवा रक्खा है अतएव गवर्नमेंट की राय व विद्वानों के हस्ताक्षर युक्त "सकार की जातियें लिखी जायगी उस" जिल्द में सुनार

जाति का विवर्ण मिलेगा हम अपनी पुस्तक को निर्विवाद रखने के लिये ही सम्पूर्ण जातियों को पंचर क्रमानुकूल लिखना आरम्भ किया है।

सुनारों की ओर से नोटिस के छपते ही हम ने तत्काल एक पत्र बाबू रघनाथप्रसाद जी मंत्री माथुर स्वर्णकार सभा आगरा को शास्त्रार्थ के लिये नियम तारीख १६-६-१२ को लाला हरनारायण जी रईस व लेट म्यूनीसिपल कमिश्नर के समक्ष कन्हैयालाल माथुर सुनार की मार्फत भेजे परन्तु शास्त्रार्थ के लिये कुछ उत्तर नहीं आया जब दो दिन तक शास्त्रार्थ के नियमों पर कुछ कार्य्य वाही नहीं हुयी तब दूसरा पत्र सुनार सभा को भेजा गया उस की नकल यह है :—

शास्त्रार्थ चरचा

पत्र आगरा
ता० २१-६-१२

श्रीयुत बाबू रघनाथप्रसाद जी मंत्री माथुर स्वर्णकार सभा
आगरा

आप के छपे नोटिस के उत्तर में तत्काल आप के पास शास्त्रार्थ के लिये एक रफ मसोदा नियमों का श्रीमान् लाला हरनारायन जी की कोठी में लाला कन्हैयालाल जी सुनार जो बैठते हैं उन के द्वारा भिजवाया था परन्तु आज तीन दिन हो गये शास्त्रार्थ के लिये कुछ भी निश्चय नहीं हुआ मेरे चले जाने के पश्चात् आप की जाति मेरे विरुद्ध कुछ कहेगी अतएव मैं सूचना देता हूं कि मैं शास्त्रार्थ के लिये सर्वथा सर्वदा उद्यत हूं इस का उत्तर आज सांय काल तक अवश्य दीजियेगा नियमों में कुछ न्यूनाधिक करने की भी आवश्यकता है अतएव आप किसी समय आज ही उपरोक्त लाला जी की कोठी में पधार कर नियम निश्चय करके उद्यत हो जाइयेगा।

उत्तराभिलाषी
पं० छोटेलाल शर्म्मा

पाठक वृन्द ! जब तारीख २१-६-१२ का दिन भी खाली गया और सुनार जाति के लोग यत्र तत्र हमारे विरुद्ध कहने लगे कि " पंडित डरगया " " पंडित भग गया ,, " पंडित तो खुद् मुवाफी मांगता है ,, इत्यादि जब इस प्रकार जितने मुहं उतनी ही बातें सुनने में आयीं तो हम ने उन्हें रजिस्ट्री पत्र रसीद न० ४६४ दिया उस की नकल इस प्रकार से है।

आगरा

ता २२-६-१२

श्रीयुत बाबू रघनाथप्रसाद जी माथुर स्वर्णकार सभा आगरा

आप के छपे हुये विज्ञापन के उत्तर में आप के पास एक रफ मसौदा शास्त्रार्थ के नियमों का श्रीमान् लाला हरनारायण जी रईस फरेंवालों की कोठी में बैठने वाले कन्हैयालाल माथुर सुनार द्वारा ता० १६-६-१२ को भिजवाया और कल एक पत्र उस कोठी से मैं ने भिजवाया उस का उत्तर भी सायकाल तक चाहा था पर कुछ फल नहीं निकला आज चार दिन हो गये शास्त्रार्थ के विषय में कुछ भी निश्चय नहीं हुवा वरन शहर में आप की जाति वाले हमारे सम्बन्ध में नाना प्रकार की मिथ्या बातें बना रहे हैं क्या ही अच्छा होता यदि आप अपनी सभा की ओर से क्षत्रिय वर्ण होने के प्रमाण लेखबद्ध प्रेषित करते तो भविष्यत में मुझे अपने ग्रन्थ में उन्हें सम्मिलित कर और भी उचित सम्मति लिखने का अवकाश मिलता यदि आपकी सभा ने लिखित शास्त्रार्थ द्वारा अथवा डाकद्वारा स्वर्णकार जाति के क्षत्रिय वर्ण होने विषय में प्रमाण पेश नहीं किये तो मैं समझूंगा कि स्वर्णकार जाति के विषय जो कुछ मैं ने श्रीमान् कामेश्वर जी मंदिर नावतपाड़ा में कहा वह सच्चा है और ऐसी दशा में ग्रन्थ छपने पर आप की जाति मात्र को हम पर दोषारोपण करने का अवकाश भविष्यत में न होगा क्योंकि हम अन्तः करण से किसी पर मिथ्या दोष

नहीं लगाना चाहिये। वरन Public inquiry द्वारा सत्य का सत्य लिखना चाहते हैं मेरे पत्रों व रफ मसोदा नियमों का आप के पास भेजे जाने के साक्षी श्रीमान् लाला हरनारायण जी रईस तथा कतिपय अन्य सज्जन भी हैं यदि शास्त्रार्थ द्वारा निश्चय कराना चाहते हैं तौ नियमों को किसी भी वकील व प्रतिष्ठित रईस के समक्ष निश्चय करके हस्ताक्षर कर दीजिये।

आप का शुभचिन्तक

श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्म्मा

प्रिय पाठक महाशयो !

जब इस पत्र का भी उत्तर पांच दिन तक नहीं आया तब दूसरा रजिष्ट्री शुदा पत्र नं० ६७५ तारीख २७-६-१२ को दिया गया उसकी नक़ल इस प्रकार से है।

आगरा

ता० २७-६-१२

श्रीयुत बाबू रघुनाथप्रसाद जी मंत्री माथुर स्वर्णकार सभा आगरा

आप को नियमों का कच्चा मसौदा ता० १६-६-१२ को व एक पत्र तारीख २१-६-१२ को तथा एक रजिष्ट्री शुदा पत्र ता० २२-६-१२ को, भेजा पर उत्तर कुछ नहीं आया आप मेरे छप हुए नोटिस ता० २०-५-१२ को पढ़ चुके हैं कि यदि आप मेरे संग्रह किये प्रमाणों को शास्त्रार्थ द्वारा असत्य सिद्ध कर देंगे तौ मैं सहर्ष आप की जाति को क्षत्रिय वर्ण में लिखदूंगा क्योंकि मेरा आप की जाति से तनिकसा भी द्वेष नहीं है वरन निष्पक्ष भाव से निर्णय कर के लिखना चाहता हूं यदि आप इस विषय में नियम निश्चय कर लिखित शास्त्रार्थ द्वारा निर्णय करें अथवा स्वर्णकार जाति के क्षत्रियत्व विषय लिखित प्रमाण डाक द्वारा ही भेजदें तो उन्हें मैं उचित सम्मति सहित अपने ग्रन्थ में सम्मलित कर दूंगा अन्यथा भविष्यत में पुस्तक छपने पर आप को मुझ पर दोषा

रोपण करने का अवकाश भी न होगा हमारे विपत्र आप की जाती वाले अनेकों अफवाह उड़ाते हैं अतएव यदि आपने उत्तर नहीं दिया तो विवश सम्पूर्ण वृत्तान्त प्रकाशित करके हम चले जावेंगे।

आपका—छोटेलाल शर्म्मा
सनातनधर्म्मोपदेशक

पाठक ! इस प्रकार से मैंने बहुत ही चाहा कि सुनार जाति के विषय जो अपने को क्षत्रिय बतलाते हैं निश्चय होजाय तो क्या ही उत्तम हो परन्तु जब सुनारों की ढोल की पोल निकल गई तब वृथा समय जाते देख हमें चले आना पड़ा इसके पूर्व भी जब कलकत्ते में सुनारों का यज्ञोपवीत हुवा और वहां की गौड़ बिरादरी में हलचल मची तथा वीरभारत भारतमित्र व वंगवासी आदि समाचार पत्रों में चरचा छिड़ी तब मैंने भी कई लेख श्रीवेंकटेश्वर में इस विषय पर छपवाये थे कि "सुनारों का यज्ञोपवीत,, इस पर हमारे पास कई पत्र सुनार जाति के अगुवों के आये उनमें से गोरखपुर का पत्र इस प्रकारसे है।

गोरखपुर
ता० २५-१०-१६०६

श्रीमान श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्म्मा जी

मान्यवर महाशय

यथोचित सत्कार के पश्चात् निवेदन यह है कि आपने बाबू नन्दलाल जी वर्म्माधार के " भारतमित्र का भ्रम,, शीर्षक लेख के उत्तर में तारीख २-३-०६ के श्रीवेङ्कटेश्वर समाचार में " सुनारों का यज्ञोपवीत ,, शीर्षक लेख में श्रीधर, दयाराम, केशवदास, गागाभट्ट और गोपीनाथ आदि विद्वानों के जातिविषयक पुस्तकों का हवाला दिया था सो कृपाकर आप यह बतलाइये कि उपरोक्त महाशयों की बनाई पुस्तकें कहां मिलसकती हैं ? और उनके क्या दाम हैं? यदि ये पुस्तकें आपके पास हैं तो क्या आप अनुग्रहकर देखने के लिये भेज सकते हैं यदि विश्वास के लिये आपकेपास रुपये भेज

दियेजाय इसके अतिरिक्त उस लेख के उपसंहार में आपने अपनें सञ्चित जातिविषयक पुस्तक भंडार का भी हवाला दिया था सो विशेषकर उस के देखने की बहुत ही लालसा है आशा है कि आप हमारी वान्छा को पूर्ण करेंगे कृपया शीघ्र उत्तर से बाधित कीजिये

लोको आफिस } भवदीय कृपाकांक्षी
गोरखपुर } रघुनन्दनप्रसाद

मान्यवर सज्जन गृहस्थो !

इस प्रकार महान् उद्योग और असह्य परिश्रम के साथ जातियों की पबलिक तहकीकात भी किये परन्तु प्रायः लोग अपनी २ जात्युत्पत्तिविषयसे अनभिज्ञ जानपड़े मैंनेजहां General Challengo शास्त्रार्थ का चेलेंज सम्पूर्ण जातियोंको आगरे सरीखे शहरों में दिया वहां भी कोई साम्हने नहीं आया,मैं भी अपने चेलेंज में मुद्रित जातियों के नामी विद्वान् व वकील तथा रईसों से भी मिला परन्तु सबों ने यह ही कहा कि" महाराज जी हमें अपनी जाति विषय में स्वयमेव ही टटोल है परन्तु आपका लिखा सुनकर उसमें भूल निकालने के लायक हमें मालुमात होती तो अब तक हम पुस्तक ही छपवा डालते हम बहुत ढूंढते हैं पर हमें सन्तोषजनक प्रमाण कहीं नहीं मिलते हैं ,,

जब इस प्रकार का उत्तर हमें प्रायः मिले तो लाचारन हमें आगरे से लौटना पड़ा। वहां से हमें अनेकों सार्टीफिकेट मिले उन में से दो चार की नकल अविकल यहां उद्धृतकरते हैं

प्रतिष्ठा

सार्टीफिकेट सनातनधर्म सभा आगरा

इहखलु संसारे धर्म्मोपदेशक छोटेलाल शर्म्मा गौड़ब्राह्मणः एक मद्भुतं ज्ञातिनिर्णयं ग्रन्थन्निर्माय देशे देशे पर्य्यटन्नगरपुर मत्रत्य जनान् पत्रंदत्वाऽहूतवान्। एतज्जातिविषये सन्देह निवृत्तये आगच्छन्तु,

वहुपरिश्रमेणतज्ज्ञातिनिर्णयस्संगृहीतोमयास्वज्ञात्युत्पत्तिन्दातुमागन्तव्य मितिपरन्तु नागता:कोपि ।

ह: श्रोत्रिय पं० युगुलकिशोर शर्म्मा वेदपाठी
(प्रधान सनातनधर्म सभा)
तथामुख्यसंस्कृत कक्षाध्यापको विक्टोरिया कालेज आगरा
ता० २६—५—१९१२

भाषार्थ

विदित हो कि धर्म्मोपदेशक छोटेलाल शर्म्मा गौड़ ब्राह्मण एक अद्भुत ज्ञातिनिर्ण ग्रन्थ तय्यार करके देश देश में भ्रमण करते हुये इस आगरा नगर में आकर एक छपा हुवा नोटिस सर्वत्र बाटा कि जाति विषय का एक ग्रन्थ में बड़े परिश्रम से तय्यार करके लाया हूं कि जाति विषय में मेरे ग्रन्थ में कोई त्रुटि न रह जाय अतएव कृपापूर्वक सज्जन गण पधार कर अपनी २ जाति विषय निश्चय करलें परन्तु कोई भी साम्हने नहीं आया ।

ह० श्रोत्रिय पं० युगुलकिशोर शर्म्मा वेदपाठी
(प्रधान सनातन धर्म सभा)
व मुख्यसंस्कृत कक्षाध्यापक
विक्टोरिया कालेज आगरा

Agra
Dated the 25-5-1912

From, Honorary Secretary.
Sri Sanadhya Maha Mandal Agra.

This is to certify that Pandit Chhotey Lall ji Srotriya Hony. Sanatan Dharmopdeshak resident of Phulera R. M. Ry. circulated a notice here to make inquiries regarding the present Castes and Creeds of these Provinces. I am glad to give him certain books of my own community which may

be embodied in the History he intends to prepare. I regret to hear that no other community come forward here to help him in this matter, which could be very useful to all in time if thoroughly completed.

I hope that the said Pandit ji will continue his zeal & energy as ever.

GANGABALLABH.
Hony. Secretary Sanadhya Maha Mandal
Late Tahsildar
and Government Pensioner Agra.

भापार्थ

आगरा
ता० २५-५-१९१२

मैं इस बात का सर्टीफाई करता हूं कि श्रोत्रिय पंडित छोटेलाल जी आनरेरी सनातन धर्म्मोपदेशक फुलेरा के रहने वाले ने यहां एक नोटिस जात्युत्पत्ति विषय तहक़ीकात के लिये सर्वत्र बांटा मैं प्रसन्नता पूर्वक अपनी जाति विषय में कुछ किताबें भेंट करता हूं कि जातियों के इतिहास जो आप लिख रहे हैं उस में सम्मलित कर दी जावें। मुझे शोक के साथ कहना पड़ता है कि अन्य जाति समुदायों ने इस कार्य्य में आप की कुछ सहायता नहीं की ग्रन्थ पूरा होने पर किसी समय बड़ा लाभकारी होगा। मुझे आशा है कि पंडित जी अपने कार्य्य व उद्योग को सदा करते ही रहेंगे।

गंगाबल्लभ
आनरेरी सेक्रेटरी
श्री सनाढ्य महामंडल व
लेट तहसीलदार गवर्नमेंट
पेन्शनर आगरा

हस्ताक्षर दाधिमथ पण्डित गोवर्धन शर्म्मा प्रज्ञाचक्षु

,, ,, ,, कल्याणदत्त शर्म्मा

,, ,, ,, मिश्र बच्चूलाल शर्म्मा
(मैनेजर गोशाला)

,, ,, ,, रामानन्द शर्म्मा

हस्ताक्षर श्रवदीच्य पण्डित सुवालाल शर्म्मा वैद्य

,, पण्डित रामनाथ मिश्र

,, ,, रघुनाथ शर्म्मा

,, ,, मथुरादास मिश्र

,, ,, शिवप्रताप शर्म्मा

,, ,, लालचन्द शर्म्मा

,, दाधिमथ पं० नन्दलाल शर्म्मा

,, पंडित भट्ट व मन्त्रशास्त्री बालेश्वर शर्म्मा

—o—

From, The Proprietor Rajputana
Telegraph Sohool
Jodhpur.

To, Pandit Chhotey Lall Sharma,
Public Inquiror & Leader of
Hindu Castes & Tribes.

Dear Pandit ji,

I cannot express my ideas in my letter to you that what I have got pleasure by hearing your Lectures of yesderday etc. etc.

This is no doubt in the bottom that the Almighty God or say " Eshwar, Ram" has given you a good power of explaining and of course you are a jelous mind in the way of Castes and Creeds. The materials what-ever you collected with your personal own try on the lines of religion for the beni-

fit of our brethren is commandable, and have had a good effect to repulse the bad ideas, what are surrounded over the minds of Human body. Nothing add you: Sir! except to send me a copy of your books when published.

S. L. Dassania

भाषार्थ

श्रीमान् पंडित छोटेलाल जी शर्म्मा

पबलिक इन्क्वायिरर हिन्दू जाति व कौम

प्रिय पंडित जी !

मेरी लेखनी में सामर्थ्य नहीं है कि मैं पूरी रीति से आप के कल के व्याख्यान के विषय अपना आनन्द प्रकट करसकूं इस में कोई सन्देह नहीं है कि सर्वशक्तिमान परमात्मा ने तुम्हें एक अद्भुत शक्ति दियी है अतएव जाति व कौमो के अन्वेषण में आप तन मन व धन से लगे हुये हैं इसके सम्बन्ध में जो कुछ आपने संग्रह किया है वह सब प्रशंसनीय है जिस से सर्वसाधारण को बड़ा लाभ पहुंचेगा। अब विशेष न लिखकर आशा करता हूं कि आप पुस्तक छपने पर उसकी एक प्रति मुझे भी भेजेंगे।

ह: एस० एल डसानिया प्रोप्राइटर टेलीग्राफस्कूल

जोधपुर

॥ श्रोत्रिय विद्वज्जन मण्डल्या प्रशंसा पत्र मिदम् ॥

स्वस्ति श्रीमत् पण्डित वर्य्य छोटेलाल शर्म्मणः सेवाया मुपायनभूत प्रशंसा पत्रमिदम् दाधिमथ कुलोद्भवेन पण्डित गोवर्द्धन शर्म्मणा प्रीत्या समर्पितमिति ज्ञात्वा भवद्भिरादरेण स्विकर्तव्यम्। ७४॥ सर्वैः वर्णाश्रमिभिर्विदितं भवतु, तथे तैरपि अस्मिन् ग्रामे पण्डित वर्य्य श्रीमान् शम, दम, तप, शौच चांत्यादि ब्राह्मण धर्मान्वित श्रुति स्मृति पुराणेतिहास संहिता पुराण तन्त्रादि परामर्श परिश्रमान्वितश्च युरोपीय, यवनानि महाराष्ट्रीय गुर्जरदेशीय वङ्गदे-

शीयादि भापास्वपि निपुण बुद्धि श्रीयुत छोटेलाल शर्म्मा कृपया स्वयं समागत्य पूर्वोक्त वृन्दान्वेषण कृतपरिचय प्रमाणयुतम् जाति वर्णव्यवस्था कल्पद्रुम संज्ञकम् पूर्वोक्त सर्वशास्त्र प्रमाणसिद्धम् जात्यन्तरावान्तर गोत्र प्रवर शाखा भेदादि युतम् स्वसंग्रह कृत स्वलिखितं स्वयं चादाय तत् ग्रन्थ सारं सर्वजनान् त्यादरेण कृपया च संश्राव यामास, वयमपि सर्वे श्रोतृजनाः भवान् मुखारविन्दनिसृतं वचनामृतमास्वाद्य तृपाजातास्म ।

भवदीय परिश्रम कृतं ग्रन्थ कल्पद्रुमं अन्य जनैः कर्तुं सुदुष्करं ज्ञात्वा सर्वे श्रोतृजनाः परस्परं समाभाव्य अस्मै पण्डित वर्य्याय कृतग्रन्थ परिश्रम परितोपयास्माभि किं देयमास्ति इति विचार्य्य निश्चितम् कृत्वासु प्रणाम पूर्वकं मंजली पुटादन्यद धिकं त्रैलोक्यां देयम् नैव दृष्टव्यम् । न दृश्यतेवा अतएव सम्मति पूर्वकं चेदं प्रशंसा पत्रं उक्त पण्डितवर्य्य सेवायामुपायन्भूतं ।

भो ! पण्डित वर्य्य धन्यतमोसि भवान् पक्षपात रहितेन निगमागम सर्वशास्त्र युरोपियादि कृत विचार्य्य बहुपरिश्रमं कृतं अतः धन्योसि धन्योसि । परञ्च शास्त्र समाप्ति पर्य्यन्तं दृढपरिकरेण घा स्यावसानंकर्तव्यं ईश्वर ब्राह्मणानां कृपया निर्विघ्न पूर्वक ग्रन्थ समाप्ति भवतु इत्याशा वर्तन्ते ।

॥ भाषार्थ ॥

श्रोत्रिय विद्वज्जन मण्डलि का प्रशंसापत्र

श्रीमान् विद्वद्वर्य्य पंडित छोटेलाल शर्म्मा जी की सेवा में समर्पित आशा है कि आदर सहित यह प्रशंसापत्र स्वीकार होगा।।

सम्पूर्ण वर्णाश्रमियों को विदित होकि यहां पण्डित वर्य्य श्रीमान् शम दम तप शान्ति आदि ब्राह्मण गुणों से विभूषित तथा वेद वेदाङ्ग व उपाङ्गादि इतिहास पुराणों के ज्ञाता तथा अंग्रेजी, उर्दू, मरहाटी गुजराती और बंगला भापा के निपुण बुद्धि श्रीयुत छोटेलाल शर्मा कृपापूर्वक यहां पधारकर अपने रचित जातिवर्ण

व्यवस्थाकल्पद्रुम नामक लिखित ग्रन्थ जिसमें बड़े २ दृढ़ प्रमाणों के साथ उत्पत्ति गोत्र प्रवर व शाखा आदि लिखी हैं उस ग्रन्थ को सम्पूर्ण विद्वानों को श्रवण कराया। अतएव हम सब श्रोत्रिय विद्वान् लोग आपके मुखारविंद के वचनामृत को सुनकर अति मुग्ध होगये और हमारी ऐसी सम्मति हुई कि ऐसा ग्रन्थ जिसमें इतना कठिन परिश्रम कियागया है उसका बनाना एक साधारण काम नहीं है अतएव ऐसे ग्रन्थ के लिये क्या पारितोषिक पं०जी को देना चाहिये? ऐसाविचार करने से सर्व सम्मत्यानुसार निश्चय हुवा कि प्रणाम पूर्वक हाथ जोड़ने के अतिरिक्त त्रिलोकी में इनके लिये देने को कुछ भी दृष्टि नहीं पड़ता है अतएव सर्वसम्मत्यानुसार यह प्रशंसापत्र भेंट किया जाता है। पुनः हे पण्डित वर्य्य आप धन्य हैं कि आप पक्षपात रहित होकर वेद शास्त्र तथा अंग्रेजों के ग्रन्थाधारानुसार बड़ेपरिश्रम से यह ग्रन्थ तय्यार किया है इस लिये ये धन्य हो धन्य हो! परन्तु आप ग्रन्थ समाप्ति तक साहस पूर्वक दृढ़ बने रहें ऐसा ईश्वर व ब्राह्मणों के आशीर्वाद से निर्विघ्नतापूर्वक यह ग्रन्थ पूरा होजायगा ऐसी ही हमारा आशाय है।

हम ने जहां अनेकों शहरा व जिलों में भ्रमण करके व्याख्यान दिये वैसे जयपुर में न देसके केवल गुप्तरीति से ही वहां जातियों का अन्वेषण किया क्योंकि वहां व्याख्यानों की मनाई थी यथाः—

जयपुर

ता: ४—३—१९०९

श्रीमान् पण्डित छोटेलाल शर्म्मन्
सद्धर्म्मोपदेशक कृपालु महाशयाः प्रणामाः

भवत्कृपा पत्रं प्राप्यातीवानन्दितोऽस्मि, अवश्यं धन्यवादार्हाः सन्ति भवन्ते। परन्तु सशोकनिवेदयामि यदत्र जयपुरे वर्त्मान समये व्याख्यानादि कार्य्यं सर्वथा वर्ज्यमस्ति, अतः सर्वसाधारण दृष्टिगोचर भवितुं न शक्यते।

किञ्चित्कालानन्तरमवसरे प्राप्ते सति यदि श्रीमता मत्रागमनं यथेच्छा व्याख्यान प्रदानैः परम लाभोत्पादन कार्य्यश्वस्यादरमिति प्रतिभाति।

इति निवेदको भवद्दर्शनाभिलाषी
मथुराप्रसादः वकील जयपुर

भावार्थ

श्रीमान् पण्डित छोटेलाल शर्म्मा सद्धर्म्मोपदेशक कृपालु महाशय प्रणाम।

आप का कृपापत्र सानन्द प्राप्त हुवा अवश्य ही आप धन्यवाद के पात्र हैं, परन्तु सशोक निवेदन करता हूं कि यहां जयपुर नगर में आज कल व्याख्यान देना सर्वथा राज्य से बन्द है अतएव सर्व साधारण पबलिक एकत्रित नहीं हो सकेगी। किञ्चित काल के पश्चात् यदि आप पधार कर व्याख्यानादि देंगे तो बड़ा लाभ होगा।

निवेदक मथुराप्रसाद वकील जैपुर

हमने युक्तप्रदेश व राजपूताना के कई ज़िलों में घूमकर व व्याख्यानदेकर तथा सम्पूर्ण जातियों को चेलेंज देकर जातिअन्वेषण किया उन सब स्थानों के पूरे २ छपे नोटिस व विवर्णों को इस जाति अन्वेषण में देने से यह ग्रन्थ बहुत बढ़ जायगा अतएव कानपुर, कलकत्ता, भरतपुर, अलवर, अजमेर, व्यावर आदि २ शहरों में जातिअन्वेषण के सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्य्याप्त होगा कि कानपुर में मारवाड़ी कपड़ा कमेटी ने श्रीमान् लाला फूलचंद जी मोहनलाल के पेच में तथा महाराज प्रयागनरायन जी के मन्दिर में व्याख्यान कराये थे, परन्तु सर्व साधारण ने कोई प्रमाण पेश नहीं किये।

कलकत्ते में, तुलापट्टी में हमने श्रीमान् सेठ शिवलाल जी मोतीलाल जी की कोठी नं० १२५ में व्याख्यान दिये तथा पं० राधाकृष्ण जी गुप्त टीबड़ेवाले महाशय के हस्ताक्षरों से नोटिस

निकले थे। परन्तु वहां जाति विषय में सुशुप्ति थी।

भरतपुर में श्रीमान् महाराज किशनसिंह जी की वर्षगांठ में हमारा जानाहुआ और सनातन धर्म सभा में पं० मधुसूदन दास जी की प्रधानता में कई व्याख्यान जातिविषयक दिये परन्तु जाति विषयक प्रमाण किसी ने भी पेश नहीं किये अलवर में हमारे अनेकों व्याख्यान सनातन धर्म सभा में जातिविषयक हुये तहां किसी ने भी अपनी जातिविषय में कोई प्रमाण नहीं दिये इस सभा के सभापति श्रीमान् रायबहादुर ठाकुर दुर्जनसिंह जी रईस जावली व सीनियर मेम्बर कौंन्सिल अलवर थे।

अजमेर में हमारे कई व्याख्यान सनातनधर्म सभा की तरफ से पट्टीकटले के लक्ष्मनिारायण जी के मन्दिर में जातिविषय पर हुए तहां अनेकों जातियों के भद्रजन जाति संबन्ध में विचारार्थ समय २ पर आकर हमसे मिले। परन्तु जबानी जमाखर्च की वार्तो के अतिरिक्त किसी ने कोई लिखित पुष्ट प्रमाण नहीं दिखलाया

ब्यावर में हमारे व्याख्यान सनातन धर्म सभा की तरफ से श्रीमान् सेठ दामोदर दास जी राठी एजेन्ट कृष्णामिल कम्पनी व्यावर के सभापतित्व में जातिविषय पर हुए थे तहां एक दिन हमारा व्याख्यान सुनार जाति के विरुद्ध हुवा तिसके सम्बन्ध में वहां के ब्राह्मणिये सुनारों से विवाद पड़ा और परस्पर प्रीति के साथ व बड़े वादानुवाद के पश्चात् निश्चय हुवा कि ब्राह्मणिये सुनार असल में उपब्राह्मण हैं जो अपने जीविकार्थ सुनारपने का कार्य करते हैं इनके विरुद्ध किसी विद्वान के पास प्रवल प्रमाण हों तो मंडल के निर्णयार्थ हमारे पास मंडल के दफ्तर फुलेरे भेजदेवें ताकि जातिनिर्णय के समय मण्डल भले प्रकार से व्यवस्था दे सके। हमारे पास ब्राह्मणिये सुनारों के विषय में भी बहुत कुछ संग्रह है अतएव समयानुसार प्रकाशित किया जायगा।

युक्तप्रदेश में हिन्दू तेली जाति की संख्या करीब साढ़े तास लाख के है राजपूताने में भी इस जाति की संख्या कुछ कम नहीं है। बंगाल में तेल का व्यापार करने वाली जाति "कालु,, कहाती है वहां इन की लोक संख्या डेढ़ लाख के करीब है विहार भी इस जाति से खाली नहीं है दक्षिण में भी यह जाति बहुत है परन्तु सर्वत्र की स्थिति एक सी नहीं है युक्तप्रदेशीय व विहार प्रदेशस्थ तेली जाति तथा अन्यप्रान्तों की तेली जाति की स्थिति में पृथ्वी और आकाश कासा भेद है अर्थात् राजपूताने में तेलियों से इतना परेहज़ नहीं किया जाता है जितना कि विहार व युक्त प्रदेश में।

अतएव युक्तप्रदेश की "साहू वैश्यमहासभा,, फयजाबाद* का निवेदन पत्र हमारे मण्डल को प्राप्त हुवा जिस में सभा की इच्छा थी कि हमारी जाति को यज्ञोपवीत पहिनाते हुये वैश्यत्व की उपाधि दे कर हमारा खानपानादि खोल दिया जाय परन्तु सहसा मण्डल की ओर से ऐसा किया जाना नियम विरुद्ध था तदनुसार मण्डल की ओर से सभा को, मण्डल की "वर्णव्यवस्था कमीशन द्वारा अन्वेषण कराने को लिखा गया जिस के उत्तर में इस सभा ने वर्ण व्यवस्था कमीशन को बुला भेजा परन्तु तत्काल अल्पसमय में वर्णव्यवस्था कमीशन जाने को असमर्थ थी तदनुसार मण्डल की ओर से उत्तर दे दिया गया।

परन्तु सभा के बहुत आग्रह करने पर स्वामी रामेश्वरानन्द जी तथा मण्डल के महामंत्री जी फयजाबाद गये। यद्यपि सभा ने हमारे + साथ उचित व्यवहार नहीं किया तथापि इस सभा के कुबर्ताव पर दृष्टि न रखकर सभा की अकर्तव्यता को परमात्मा के न्याय पर छोड़कर हम इस जाति से द्वेष भाव न रखते हुये कह सकते हैं कि यह जाति ऐसी घृणित व नीच नहीं है जैसी कि बिहार व युक्त प्रदेश में मानी जा रही है अर्थात वहां इस जाति

* यह तेलियों की सभा का नाम है।

+ महामन्त्री जी के साथ

के हाथ का पानी पीना व पक्वान्न खाना तो दूर रहा पर लोग इनके बर्तनों में भी खाने से परहेज करते हैं हमने अपने संगृहीत प्रमाणों के साथ २ इस जाति का फयजाबाद में अन्वेषण किया और हमें प्रमाणित हुआ कि तेली जाति के हाथ की मिठाई खाने व जल पीने में कोई दोष नहीं है।

फयजाबाद में तेलीसभा ने सम्पूर्ण हिन्दु जातिमात्रको छपवाकर नोटिस भी दिया कि जिस किसी के पास अपने २ विषय में कोई प्रमाण हों तथा तेली जाति के विरुद्ध कोई किसी प्रकार का प्रमाण रखते हों तो महामंत्री जी के समक्ष पेश करें परन्तु इस नोटिस के अनुसार किसी ने चूं तक नहीं की अतएव तेली जाति के साथ ऐसा घृणित व्यवहार करना सरासर अन्याय मूलक है क्योंकि जब कहारों के हाथ का जलपान व पक्वान्न भोजन ग्रहण किया जाता है तो तेली जाति क्या इन कहारों से भी बुरी है कदापि नहीं ! हां कहारों की अपेक्षा वैश्यों की तरह प्रायः तेली जाति धनाढ्य है अतएव ही सर्व साधारण लोग इन के वैभव को देखकर द्वेष करते हुये वैमनस्य प्रकट करते हैं ऐसा निश्चय होता है।

इस जाति सभा में प्रायः आर्यसमाजी पुरुष ही कर्ता धर्ता हैं आर्यसमाजिकों का ही पलड़ा भारी है अतएव प्रत्येक कार्य्य आर्य्यसमाजिक क्रम से किया जाता है ऐसी स्थिति में इस जाति को आर्य्यसमाज से वर्ण व्यवस्था व जनेऊ ले लेने चाहिये क्योंकि वहां ही बिना खरच के इन को जनेऊ सहज ही में मिल सकती है। हम अपने व्याख्यान में इस जाति को उपदेश कर आये हैं कि एक स्थान में दो तलवार नहीं रह सकती हैं अथवा A man cannot serve two masters, अर्थात् एक मनुष्य एक ही समय में दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता है, यह सभा आर्य्यसमाजिकों से भी व्याख्यानादि दिलवाती थीं तथानाम मात्र

के लिये हिन्दू धर्म्म वर्ण व्यवस्था मगडल का भी आश्रय लिये हुये थी॥

इस जाति के सम्बन्ध में हमने पता लगाया है कि इस जाति में राठौड़, चौहाण, जैसवार, राठी, श्रीवास्तव और भदौरिया आदि २ भेदवाले तेली भी सम्मिलित हैं जो भी भेड़ियाधसान की तरह सभा में वैश्य माने जाते हैं परन्तु ये भेद उच्चतम क्षत्रिय समुदाय के हैं जो किसी समय विप्रसिवश जीविकार्थ तेल निकालने व बेचने का काम करने लग गये थे ऐसा प्रमाणित होता है। अतएव ये क्षत्रिय समुदाय वैश्य मानने वाले तेली समुदाय में मिलकर वैश्य क्यों कहावें यह हमारे समझ में नहीं आता है विशेष विवर्ण बड़े २ प्रमाणों सहित अन्य भाग में लिखेंगे।

पाठक वृन्द ! इस सभा ने बड़ी सफाई व चालाकी से काम किया अर्थात् महामन्त्री जी के वहां पहुंचने पर सभा ने एक नोटिस छपवाया जिस में अपनी ही ओर से यह लिख दिया कि "तेली जाति को वैश्य वर्ण में महामगडल ने बतलाया है", परन्तु जब इस का प्रूफ हमारे पास आया तब हमें यह देख कर आश्चर्य्य हुवा कि हमारे मगडल ने तेली जाति को वैश्य वर्ण की कोई व्यवस्था नहीं दियी है अतएव हम ने नोटिस में से उस वाक्य को बड़े वादानुवाद के पश्चात् निकलवाया बस यह ही कारण था कि "तेली सभा", हम से रुष्ट हो गयी। जिस का प्रति फल यह हुवा कि मार्गव्ययादि के खरचे सम्बन्ध में भी हमें आपत्ति भोगनी पड़ी जिस का विवर्ण आवश्यक्ता हुयी तो भविष्यत में प्रकाशित करेंगे। हमारे मगडल का नियम था कि "जब तक कोई जाति मगडल की वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नोद्वारा तहकीकात न करवा लेगी तब तक सहसा किसी जाति को वर्णव्यवस्था नहीं दी जासकेगी हम केवल व्याख्यानादि देने के लिये बुलाये गये थे तदनुसार हम ने अपना कर्तव्य पालन किया। परन्तु तेली सभा ने अपना क्या कर्तव्य पालन किया वह

विवर्ण " तेली जाति ,, प्रसङ्ग में किसी समय लिखेंगे ।

फ़यज़ाबाद से चल कर जाति अन्वेषण के अर्थ हम लखनऊ ठहरे और रामयश कीर्तन के प्रधान डाक्टर पाठक जी से मिले । आनरेबल बाबू गंगाप्रसाद जी से भी मिले, स्वर्गवासी मुन्शी नवलकिशोर जी सी० आई. ई. के प्रेस में गये और सर्वत्र यह ही चाहा कि खत्री, दूसर व भार्गव तथा कायस्थ कुर्मी आदि २ जातियों के बारें में अन्वेषण किया जाय तथा व्याख्यानादि द्वारा अपना लेख सर्व साधारण पर प्रकट किया जाय परन्तु शोक ! लेजिस्लेटिव कौंसिल की तय्यारियों के कामों में लखनऊ के नेतागण लगे हुये थे तथा भार्गव कुल शिरोमणि बाबू प्रयागनरायण जी रईस हज़रतगंज लखनऊ भी नवाब रामपुर के यहां गये हुये थे अतएव हमारी लखनऊ यात्रा निष्फल हुयी ।

लखनऊ से चलकर हम सीधे फरुखाबाद आये जहां सनातन धर्म महामण्डल फरुख़ाबाद के महामन्त्री विद्वद्वर्य्य पण्डित लालमनजी भट्टाचार्य्य बी० ए० वकील महोदयने हमारे जाति अन्वेषण सम्बन्ध में एक नोटिस छपवाकर सर्वसाधारण की विज्ञप्ति के लिये नगर में बटवा दिया जिसमें कायस्थ कुर्मी, खत्री, जाट, अहीर, गूजर माहौर, माली, मुराव, कोरी नांई, बारी, रस्तोगी बड़गूजर, भट्टा, चमरगौड़, चन्द्रवंशी, अग्रवाल, जादों, जैसवार, किरार, बैसवार, भाटिया, महाजन, तेली, गडरिये, दर्जी, लुहार, कुम्हार, सुनार बढ़ई, काछी, ओझा कोइरी, मोची लोधा, किसान, तम्बोली, कसेरे, ठठेरे, उमरे, गहोई, अयोध्या वासी, बाथम, दर्जी, दधीच, छीपा पटुआ, डूसर, दूसर, भार्गव कलवार, कलाल, लूनिया लवणिया, भूमिहार, महेश्वरी, ओसवाल, सरावगी, रोहितगी, चौसेन कुमारतलें, खंडेलवाल महावर और साध आदि आदि सम्पूर्ण जातियों को छपवाकर श्रीमान् पण्डित वर विद्या वाचस्पति महामहोपाध्याय शिवकुमार शास्त्री जी के सभापतित्व में यह नोटिस छपवाकर सभा में बांटा और हम फ-

रुखाबाद में अनुमान १५ दिवस तक टिके भी रहे पर किसी जाति ने अपने कोई प्रमाण पेश नहीं किये। इस सब कर्तव्य से हमारी यह ही मनसा थी कि हमारे ग्रन्थ में कोई बात किसी के जी दुखाने वाली असत्य न छपजाय; इस सभा के प्रधान आपण कर्ता हरद्वार ऋषिकुल ब्रह्मचर्य्याश्रम के संस्थापक कूर्म्माचल भूषण ॥ पं० दुर्गादत्त पन्त जी थे, तथा गायन विद्या के आचार्य पं० घनश्याम जी शर्म्मा थे।

पाठक वृन्द ! इस प्रकार मैंने भ्रमण करके सैकड़ों प्रशंसा पत्र सार्टीफिकेट, सन्मानपत्र, पण्डितों की सम्मतियें तथा अनुमति पत्र प्राप्त किये परन्तु यदि वे सब के सब यहां मुद्रित कराये जाते तो इस जिल्द का बहुत कुछ भाग उन्हींसे भर जाता अतएव यहां केवल दिक्दर्शन (नमूने) मात्र के लिये थोड़े से छपवाये हैं बाकी सम्पूर्ण इस ग्रन्थ के दूसरे भाग के साथ अथवा अलग पुस्तकाकार छपवाकर प्रकाशित किये जायंगे।

सज्जन गृहस्थो ! मेरे इतने उद्योग व स्वच्छाभाव से कार्य्य करने पर भी यदि इस ग्रंथ में कोई त्रुटि जान पड़ी तौ मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मेरे चित्त को महान दुःख होगा अतएव ऐसी दशा में आप सम्पूर्ण सहानुभावों से निवेदन करता हूं कि आप लोग इस ग्रंथ की त्रुटियां सप्रमाण निकाल मुझे सूचना देवें और मैं सहर्ष दुबारा वृत्ति में, उन्हें ठीक करने को तय्यार हूं।

साथ ही में निवेदन यह भी है कि आप लोग अपनी २ सम्मतियें इस ग्रन्थ को देखकर मेरे पास लिख भेजेंगे तो मैं आपका धन्यवाद ग्रन्थ में छपवादूंगा।

सद्गृहस्थो ! भारत के जिन २ भागों में भ्रमण करके मैंने जिन २ लाइब्रेरियों को देखा उन उन की प्रशंसा मैं आपके सामने क्या करूं ? क्योंकि इन लाइब्रेरियों की सूची ही तैय्यार कराने में गवर्नमेन्ट के हजारों रुपये खरच होगये अर्थात् भारत गवर्नमेंट ने एक लाइब्रेरी का सूचीपत्र तैय्यार कराने के लिये

मेरा उद्योग

श्रीमान् बाबू राजेन्द्र लाल मित्र एल. एल. डी. और सी० आई० ई० तथा आनरेरी मेम्बर आफ दी रायल एशियाटिक सोसाइटी आफ ग्रेट ब्रिटन एन्ड आयरलेन्ड, आफदी फिज़ीकल क्लास आफदी इम्पीरीयल अकेडेमी आफ साइन्सेज़, विआना, एन्ड आफ दी बाम्बे ब्रांच; आफ दी रायल एशियाटिक सोसाइटी आफ ग्रेट ब्रिटन कारेस्पान्डिंग मेम्बर आफ दी जर्मन एन्ड आफ दी अमेरिकन ओरियान्टल सोसाइटीज़ आफ दी अकेडेमी आफ साइन्स हंग्री, एन्ड आफ एथनोलोजीकल सोसाइटी आफ बर्लिन, फेलो, आफ दी रायल सोसाइटी नार्दर्न अन्टीकेरीज़ कोपेन्हेजन आदि आदि गुण सम्पन्न महानुभाव को नियत किया था अतएव आप अनुमान कर सकते हैं कि जिस लाइब्रेरी का केवल सूचीपत्र तैय्यार कराने के लिये गवर्नमेन्ट के हजारों रुपैये खरच हो गये और उपरोक्त उपाधियें सम्पन्न पंडित राजेन्द्रलाल मित्र ने जिस पुस्तकालय की सूची बनाई तो वह लाइब्रेरी कितनी बड़ी व महान होगी यह आप स्वयं विचार कर सकते हैं ?

मेरी पबलिक तहकीकात की यात्रा में, व मेरे २० वर्ष के समय

नागरी भवन

में जहां, मैं बड़ी बड़ी लाइब्रेरियें देखता था तहां के नागरी भवन भी मेरे से न बचे होंगे क्योंकि इसमें मेरी मनसा यह ही थी कि आया हिन्दी साहित्य में जातिविषयक कोई ग्रन्थ जैसा मैं बनारहा हूं वैसा है या नहीं ? परन्तु दुःख के साथ कहना पड़ता है कि हिन्दी साहित्य में मुझे ऐसा कोई ग्रन्थ नहीं मिला अतएव इस प्रकार का ग्रन्थ बनाकर मैंने हिन्दी साहित्य की सेवा कियी है कि जिससे हिन्दी प्रेमियों को लाभ हो।

मैंने इस ग्रन्थ में जातियें अक्षर क्रमानुकूल लिखी हैं जिससे किसी जातिवालों को हम पर आक्षेप व दोषारोपण करने का अवकाश न हो तथा पाठकों को भी जिस जाति का विवर्ण

देखना हुआ उस वे सहज ही में निकाल सकेंगे इसही लिये इस ग्रन्थ में जातियों का क्रम डिक्सनेरी की तरह दिया है अर्थात् मेरे इस ग्रन्थ की सम्पूर्ण जिल्दों में अ से लेकर ज्ञ तक की सब जातियें मिल जायेंगी । इस क्रम को देखकर अनेकों विद्वानों ने यह कहा है कि:

This Varan Vyavastha Kalpadrum can be nominated as the Encyclopedia of Hindu Castes and Tribes.

अर्थात् यह वर्णव्यवस्था कल्पद्रुम नामक ग्रन्थ हिन्दूजाति और कौमों का एक महाकोप कहा जा सकता है।

जहां कहीं सम्पूर्ण ग्रन्थ में दिये हुये संस्कृत शास्त्रों के प्रमाणों के अर्थाऽअर्थ में विवाद आ पड़ा व पक्षा पक्ष जान पड़ा है तहां वड़े२ महा महोपाध्यायों से परामर्श करने के अतिरिक्त प्राचीन

अर्थ विवाद

भाष्य व मान्यवर पंडित भट्टगोविन्द राजीया नामदार रावसाहव, तथा कम्पेनियन आफ दी स्टार आफ इण्डिया, इत्युपदधारिणा, भारतवर्षीय गवर्नरजनरल कौन्सलाभिध नीतिशास्त्र व्यवस्था प्रणेतृ मण्डलान्तः पतिना, रायल एशियाटिक सोसाइटी, रायल जियाग्राफीकल सोसाइटी, स्टेटिस्टिकल सोसाइटी त्यभिधानां विद्वत्परिषदां सभासदाऽऽद्यपरिपदो मुम्बापुरस्थ शाखाया, उपाध्यक्षेण, मुम्बापुरगत युनिवर्सिटी नामक सर्व विद्योपचय विचार मुख्यस्थानस्य व्यवस्थापकानां, सिण्डिकेट नामक मण्डलान्तर्गत मुम्बापुरस्थ हायकोर्टाभिधन्यायाधिष्ठानगत गवर्नमेन्ट वकील संज्ञक आदि आदि गुण सम्पन्न विद्वानों के भाष्य से निर्णय करके लिखा है।

जिस तरह निरी संस्कृत में जाति विषय के ग्रन्थ किसी किसी विद्वान के बनाये हैं उस ही तरह अंग्रेज़ी भाषा में जातिविषयक ग्रन्थ अनेकों हैं परन्तु वे सब ही नागरी व भाषा जानने वालों के लिये उपयोगी नहीं हैं इस लिये हम ने इस ग्रन्थ को भाषा का

जातिविषयक ग्रन्थ बनाया है अतएव हम ने विशेष रूप से जगह २ संस्कृत व अंग्रेज़ी प्रमाण न दे कर केवल भाषा में उन का भावार्थ लिख दिया है यदि हम ऐसा न करते तो यह ग्रन्थ चार महाभारतों का जितना बड़ा हो जाता जिसे न कोई पढ़ ही पाता और न खरीद ही सकता होता, साथ ही में न वह ग्रन्थ अंग्रेजी का रहता, न संस्कृत का रहता और न भाषा ही का रहता वल्कि सातधान की खिचड़ी हो जाती अतएव इस ग्रन्थ का विशेष भाग भाषा में लिखा गया है परन्तु जो कुछ हम ने लिखा है वह सब दूसरे ग्रन्थ व विद्वानों की छाया लेकर लिखा है।

इस ही विवाद को मिटाने के लिये मैंने राजपूताना हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मण्डल की स्थापना किया है जिस का विवर्ण आगे को दिया गया है।

मैं ने अपने स्वरचित ग्रन्थ हिन्दू जाति वर्णव्यवस्था कल्पद्रुम

निष्पक्षता

नामक ग्रन्थ को निष्पक्ष रखने तथा किसी जाति की मानमर्यादा भंग करने के दोष से मुक्त होने के अभिप्राय से ही मैं ने समय २ पर अख़बारों में रुपैये खरच करके पबलिक नोटिस दिया था सब से प्रथम मैं ने इस ग्रन्थ को मासिक पत्र द्वारा निकालना चाहा और उस का नोटिस " आर्य्यावर्त ,, नामक हिन्दी भाषा के साप्ताहिक पत्र में अनुमान दो मास के लिये छपाया और यह नोटिस अपरेल सन् १९०१ के आर्य्यावर्त में छपता रहा उस समय इस ग्रन्थ को " वेदभास्कर ,, नामक पत्र द्वारा मैं प्रकाशित करने को २५० ग्राहक होने से निकालने का नोटिस छपाया था और कुछ ग्राहक भी हो गये थे।

इस नोटिस के छप चुकने के पश्चात् इस ही पत्र का नाम कतिपय अपने मित्रों की सम्मति से वेदभास्कर से बदल कर " वर्ण व्यवस्था दर्पण ,, और मासिक पत्र से पाक्षिक पत्र रख कर भारतवर्षके प्रसिद्ध श्री वेङ्कटेश्वर समाचार में जून सन् १९०१ में पुनः नोटिस छपाया और ३०० ग्राहक होने पर पत्र निकालना

निश्चय किया जिस का मर्मांश व अन्तिम भाग यह था कि:—

"ताकि ज्ञात हो जावे कि दूसर, कायस्थ, खत्री, कुर्मि, माहिष्य ओझे, बढ़ई, ठठेरे स्वर्णकार, कलवार, अहीर, गूजर, माली, पटवे, जाट, महाजन, काछी, आदि असल में कौन वर्ण में हैं,,।

पाठक! यह सब प्रयत्न करने पर कुछ ग्राहक भी हो गये थे परन्तु इस योग्यता के ही कारण से हम श्री वेङ्कटेश्वर समाचार मुम्बई में कार्य्य करने के लिये बुला लिये गये जिस से इस पत्र को हम नहीं निकाल सके परन्तु तब से आज तक इस विषय का अन्वेषण सर्वथा सर्वदा चलता ही रहा और जब लिखित एक महान ग्रन्थ तय्यार कर लिया तब मैं ने एक नोटिस सर्व साधारण की विज्ञप्ति के लिये अखबार में छपवाया जो तारीख ८,१६ और २४ जनवरी सन् १९१४ के आर्य्यमित्र नामक पत्र में छपता रहा है उस की नकल इस प्रकार से है:—

हिन्दू जाति वर्ण व्यवस्था कल्पद्रुम।

विदित हो कि उपरोक्त ग्रन्थ सात जिल्दों में छपने को तैय्यार है, जिस में प्रत्येक हिन्दू जाति की उत्पत्ति, गोत्र, प्रवर, शाखा, शिखा, सूत्र व वर्ण अधिकार रीति भांति, दायभाग आदि ९ विषय वेद, वेदाङ्ग उपाङ्गो के प्रमाणों के साथ २ गवर्नमेन्ट गजट्स अनेकों सरकारी रिपोर्ट्स, अदालतों, के फैसिले व बड़े २ सिविलियन तथा आनरेबल स्वदेशी व अंग्रेज़ों के निष्पक्ष ग्रन्थों की रायों का संग्रह किया गया है इस के अतिरिक्त ग्रन्थ कर्त्ता जी ने १५ वर्ष से घूम कर देशों में पठित समाज व जाति समुदायों से २५१ गूढ़ प्रश्नों द्वारा जातियों की पबलिक तहकीकात की है व अनेकों प्रशंसा पत्र, सर्टिफिकट व अनुमति पत्र तथा सम्मति पत्र प्राप्त किये हैं, ग्रन्थ की पूर्त्ति के अर्थ सैकड़ों रुपैयों के खर्च से जाति भंडार नामक एक पुस्तकालय स्थापित

करके एक ग्रन्थ १७५) रुपैयों में और दूसरा ग्रन्थ १२४) रुपैयों में सम्पूर्ण एशिया खण्ड में न मिलने के कारण युरोप से मंगवाये हैं। इतने पर भी ग्रन्थकर्त्ता जी वर्णव्यवस्था सभा स्थापित करके हिन्दु मात्र को नोटिस देते हैं कि ता०२०-१२-१३ई०से २०-२ १६१४ याने २ महिने के भीतर २ जिस किसी के पास जाति विषय में जो प्रमाण हों उसे सभा के निर्णयार्थ नीचे लिखे पते पर भेज देवें कि जिस से ग्रन्थ में कोई बात किसी की मान मर्य्यादा भंग करने वाली न छप जाय। अन्यथा ग्रन्थ कर्त्ता दोष का भागी न होगा, ग्रन्थ छपने पर प्रथम भाग का मूल्य ३॥) रु० होगा परन्तु २ मास के अन्दर २ कार्ड भेज कर ग्राहक होने वालों से ३॥) वी० पी० द्वारा लिया जायगा।

पताः-श्रोत्रिय पण्डित छोटेलाल शर्मा महामन्त्री

राजपूताना हिन्दूधर्म वर्णव्यवस्था मण्डल, फुलेरा-जयपुर

पाठक ! इस नोटिस के प्रकाशित होते ही चहुंओर खलबली मचगयी और प्रत्येक स्थानों से पत्रों पर पत्र आने लगे जिनमें से कुछ तो ग्राहक होने के लिये थे और विशेष यह पूछते थे कि,, हमारी जाति को आप ने किस वर्ण में लिखा है,, परन्तु ऐसे प्रश्नों का उत्तर ग्रन्थ छपने से पूर्व दे देना नियमविरुद्ध रक्खा गया था। बहुत सी जातियों के हमारे पास ऐसे भी पत्र आये जिनका मर्मांश यह था कि,, हमारी जाति को लोग बाग बड़ी घृणित दृष्टि से देखते हैं कोई लिखता था हम वैश्य हैं और वैश्य माने जाते हुये परस्पर के द्वेष के कारण लोग हमारे हाथ का जल भी नहीं ग्रहण करते हैं, किसी जाति ने हमें यह भी लिखा कि भारत में शूद्रों के साथ में बड़ा अन्याय किया जाता है, क्या शूद्र परमात्मा की सृष्टि में से नहीं हैं ? किसी ने लिखा उच्चजातियें हमारी जाति का बड़ा तिरस्कार करती हैं, किसी ने लिखा हिन्दू सन्तान का हमारी जाति के साथ बड़ा अत्यांचार हो रहा

है, किसी ने लिखा पुराने ढचरे के लक़ीर के फक़ीर लोग, हमारी जाति की जो अमुक २ लेखानुसार अमुक वर्ण में है उसकी कुत्ते के बराबर भी प्रतिष्ठा नहीं की जाती है बल्कि बलात् हम लोग पैरों के नीचे कुचले जाते हैं अतएव हम प्रार्थी हैं कि हे महा-मन्त्री जी ! आप हमारी जाति का अनुसन्धान विशेष ध्यान के साथ कीजियेगा और हमें विधर्मी होने से बचाइये,,

भारतकेGenoologists
हिन्दू उत्पत्ति
लेखक समुदाय

इसके अतिरिक्त कई स्थानों में खासतौर से हम इस निमित्त गये कि वहां जाकर हिन्दू जातियों का कुर्सीनामा व वंशवृत्त रखने वाली प्रसिद्ध जातियें भाट; राव व राव, कापड़ी, जागे वड़वे और चारण आदि ये जातियें रहती हैं उन के वहीखाते से इस ग्रन्थ में कुछ संग्रह करें क्योंकि इन्हें इस ही काम की रोटी खाने को मिलती है ये लोग अपने २ यजमानों के विवर्ण के हजारों वर्षों के वही-खाते मितीवार मय उनके जीवन की मुख्य २ घटनावों के रखते थे जिसके लिये इन्हें बड़ी २ आजीवकायें मिलती थीं उन लोगों के ग्रामों में भी हम जाकर उनके समुदाय से मिले और उन्हें दक्षिणायें देकर बहुत सी बातें हमने उनके वहीखाते के आधार पर बहुत सी बातें संग्रह कियी हैं प्रथम तो वे लोग हमें लिख-वाने को ही राजी न हुये परन्तु अन्त को बहुत समझाने बुझाने से उन्होंने हम से यह प्रतिज्ञा करायी कि,, आप हमारे वही खाते का नाम अपने ग्रन्थ में न दीजियेगा क्योंकि जब हमारे वहीखाते का विवर्ण आप के ग्रन्थ में छपजायगा तब वह ग्रन्थ सर्वत्र सुलभ हो जायगा तब जिस वहीखाते को दिखादिखा कर व सुना २ कर हम हजारों रुपैया पैदाकरके, अपना कुटुम्बपालन करते हैं उसमें हमें बाधा पहुंचेगी अतएव इस प्रतिज्ञा के आधार पर हम भी उनके नाम प्रकट करना नहीं चाहते हैं।

पाठकों को यह जतला देना आवश्यक है कि हम ने इस

सूचना

ग्रन्थ में अपनी ओर से मन घड़ंत एक अक्षर भी नहीं लिखा है और न लिखेंगे वरन ग्रन्थ का विशेष भाग स्वदेशी व विदेशी अन्य विद्वानों के रचे हुये अङ्गरेज़ी, संस्कृत, उर्दू, मरहाठी और गुजराती आदि भाषावों के ग्रन्थों के आधार पर लिखा जायगा साथ ही में बड़े२ सिविलियन गवर्नमेण्ट अफसरों की बनायी हुई "जाति और क़ौम,, नामक अंग्रेजी ग्रन्थ, भिन्न भिन्न समय की सरकारी मनुष्यगणना रिपोर्टें, गवर्नमेण्ट गजट की कापियें, सेटलमेन्ट रिपोर्ट्स तथा मुंसिफ व जजों की रायों का विशेष संग्रह इस ग्रन्थ में कूट कूट के भरा है ॥

हां इस सब के अतिरिक्त हम ने अपनी Public inquiry पबलिक तहक़ीकात का मर्मांश भी जैसा कुछ प्रमाणित व विश्वास योग्य जान पड़ा निष्पक्ष भाव व ऐतिहासिक दृष्टि से लिखा है यदि अनायास वह मेरा लेख किसी जाति के विरुद्ध मिथ्या जान पड़े तो तत्काल प्रमाण सहित सूचना आने पर उस की स्वीकृती की जायगी ।

प्रमाण

यद्यपि अपने सप्त खण्डी ग्रन्थ को श्रुति, स्मृति, पुराण, उपपुराण आदि के प्रमाणों पर ही निर्भर रख कर निर्माण किया है तथापि यह जान कर कि जमाना अंगरेजी का है, राज्य अंग्रेजों का है, कायदा कानून अंग्रेजी है, व्यापार, रोज़गार, नौकरी चाकरी सभी आजकल अंग्रेजी की है, कहां तक कहें भारत का जीवन ही सर्वथा सर्वदा अंग्रेजों की दया पर निर्भर है इसलिये हिन्दू धर्म शास्त्र से मिलती हुयीं बड़े २ अंग्रेज अफसरों की रायें, गवर्नमेण्ट रेकर्ड्स के हवाले, अनेकों सेटलमेण्ट रिपोर्ट्स तथा गवर्नमेन्ट मनुष्यगणना रिपोर्ट्स के प्रमाण भी दिये हैं, साथ ही में गवर्नमेंट गजट्स के के प्रमाण व हाईकोर्ट के फैसले भी यथा संभव दिये हैं, एशि-

यांटिक जर्नल्स के प्रमाण भी संग्रह किये गये हैं। जहां अनेकों गवर्नमेन्ट अफसरों की सम्मतियें हम ने दिथी है तहां अनेकों सिविलियन अंग्रेज विद्वानों के जाति विषय ग्रन्थों की सम्मतियें भी लिखी हैं अतएव अंग्रेज विद्वान व अफसरों की सम्मतियों को एकत्रित करके इस ग्रन्थ को हमने सोना और सुगन्ध के समान आदरणीय किया है।

वेद, शास्त्र, स्मृति, पुराण और इतिहासादि के प्रमाणों के अतिरिक्त महाराष्ट्रीय जाति भे० वि० सा० के रचियता विद्वान् पांडोवागोपाल जी पं० हरिकृष्ण जी शास्त्री,

महत्व

सनातन धर्म महामण्डल के महामहोपदेशक पंडित ज्वाला प्रसाद जी मिश्र मुरादाबाद, पंडित नवीनचन्द्र राय फेलो आफदी पंजाब यूनिवर्सिटी, पं० श्यामाचरण श्रीमान् महामहोपाध्याय पंडित गंगाधर शास्त्री सी० आई० ई० संस्कृत प्रोफेसर क्वीन्सकालेज बनारस तथा व्याकरणाचार्य्य. काशीराजकीय पाठशालाध्यापक पंडित नागेश्वर पन्त धर्म्माधिकारी, पंडित काशीनाथोपाध्याय-मीर, महामहोपाध्याय शिवदत्त जी शास्त्री प्रोफेसर लाहौर, पंडित द्वारकाप्रसाद जी त्रिपाठी फतेहगढ़, पंडित रामवरव चौबे पंडित जनार्दनदत्त जोशी डिपुटी कलेक्टर बरेली, पं० बल्देव-प्रसाद डिपुटी कलेक्टर कानपुर, बाबू राजेन्द्रलाल मित्र एल० एल० डी० एन्ड सी० आई० ई० कलकत्ता. पंडित योगेन्द्रनाथ एम० ए० भट्टाचार्य्य प्रेसीडेन्ट संस्कृत कालेज नदिया, बाबू अम्बिकाचरण वकील, बाबूललित मोहन अवधिया मुंशी महादेव प्रसाद हेडमास्टर जिला स्कूल पलीभीत, मुंशी आत्माराम हेडमास्टर हाई स्कूल मथुरा, मुंशी वासुदेव सहाय हेडमास्टर जिला स्कूल फरुखाबाद, सेठ मोतीलाल बी० ए० डिप्टी इन्स्पेक्टर आफ स्कूल आगरा, बाबू सांमलदास, डिपुटी कलेक्टर हरदोई, मुंशी चुट्टनलाल डिपुटी कलेक्टर उन्नाव, मिर्जा इहफान अली वेग डिपुटी कलेक्टर, मुंशी कर्म अहमद डिपुटी कलेक्टर झांसी,

राजा लछमन सिंह, मुंशी भगवती दयाल सिंह तहसीलदार, छिबरामऊ, बाबू छोटेलाल आर्चीलाजीकल सर्वे लखनऊ, मुंशी गोपालप्रसाद नाइब तहसीलदार फफूंद, मुंशी फैजुद्दीन अहमद डिपुटी कलेक्टर बनारस, बाबूबदरीनाथ डिपुटी कलक्टर खेड़ी मुंशीराधा रमन डिपुटी कलक्टर झांसी; बाबू राजेन्द्रलाल मित्र मेमोरीज़ एन्थ्रोपालाजीकल सोसाइटी लंडन, मुंशी किशोरीलाल जी रईस व मुंसिफ दर्जे दोयम, मुंशी देवीप्रसाद जी रिटायर्डजज आदि आदि महानुभावों की रिपोर्ट व ग्रन्थों के आधार पर इस ग्रन्थ की रचना हुयी है।

विशेष महत्व

जहां अनेकों स्वदेशी विद्वानों के ग्रन्थ व रिपोर्टों का सर्मास समप्रलगड़ी ग्रन्थ में लिखा जायगा तहां अनेकों अंग्रेजों के लेखों के भी हवाले होंगे जैसे:—
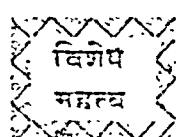
Mr. C.S. William Crooke B.A., Hon'ble Mr. H.H. Risley I.C.S.&C.I.E., Census Commissioner for India Mr. R. Burn I. C. S. Census Superintendent Allahabad., Mr. Maclagan Census Superintendent., Mr. C.J.O. Donnell Esqr., & Mr. Bailee Esquire Census Superintendent.,

Mr. Hoey C. S. Gorakhpore., Sir H. M. Elliot Colonel Dolton., Mr. George Compbell., General Cunningham., Dr. Oppert., Dr. J. Wilson F. R. S. & Hony. President of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society., Sir C. Elliot., Mr. Ibbotson Esqr., Sir W. W. Hunter.

Mr. Atkinson., Mr. J. C. Nesfield M. A., Mr. Lubbock., Mr. Westmark., Mr. Driver. Dr. Buchanan., Rev. Mr. Sherring M.A., L.L.B. Mr. C.S. Crows Collector., D.S.P. Mr. Segrave., Colonel., Mr. James Todd., Sir Monier William., Mr. Arthur Steel. Mr,

Wheeler., Mr. Dowson., Mr. Muir., Mr. Clouston. Mr. Balfour., Mr. Gunthorpe., Mr. J. H. Monks., Mr. Oldham., Mr. Grant Duff Esqr. Mr. R. Greeven C.S. Beneras Mr. Blockman Mr. Jhon Beams M. I, Dr. Wise. Mr. Highland and Professor H. H. Wilson etc.

भाषार्थः—मिस्टर सी० एस विलियम्स फ्ऱ्फ बी० ए लेट कलेक्टर फयरुखाबाद, आनरेबल मिस्टर एच एच रिस्ली आई० सी० एस अन्ड सी० आई० ई० मनुष्यगणना के कमिश्नर, मिस्टर आर बर्न आई सी० एस सुपरिन्टेन्डेन्ट अलाहाबाद, मिस्टर मेकलेगन मनुष्यगणना सुपरिन्टेडेन्ट मिस्टर सी० जे० ओ डानेल सुपरिन्टेन्डेन्ट मनुष्यगणना, मिस्टर बेली एस्क्वायर अधिष्ठाता मनुष्यगणना विभाग, मिस्टर डोए सी० एस गोरखपुर, सर एच एम. इलियट कालोनियल डाल्टन, मिस्टर जार्ज केम्पबेल जनरल कनिघाम, डाक्टर ओपर्ट, डाक्टर जे विल्सन, अफ, आर, एस अन्ड आनरेरी प्रेसीडेन्ट आफदी बाम्बे रायल एशियाटिक सोसाइटी, सरसी इलियट, मिस्टर एबेटसन, एस्क्वायर सर डब्ल्यु डब्ल्यु हंटर, मिस्टर एटकिन्सन, मिस्टर जे० सी० नेस्फील्ड अम० ए० डाइरेक्टर आफ पबलिक इन्स्ट्रकशन्स आफ अन डब्ल्यु पी० अन्ड अवध, मिस्टर सह्राक, मिस्टर वेस्टमार्के, मिस्टर ड्राइवर डाक्टर बुकानन रेवरेन्ड मिस्टर शेरिंग अम० ए० एल० एल० बी० मिस्टर सी०एस ग्राउज् कलेक्टर, डी० एल० पी० मिस्टर सीग्रेव

कालोनियल मिस्टर जेम्स टाड, सरमानियर विलियम मिस्टर आर्थर स्टील मिस्टर, ह्वीलर, मिस्टर डाउसन मिस्टर म्युअर, मिस्टर क्लाउस्टन, मिस्टर बाल्फोर मिस्टर

जे एच भान्क्स, मिस्टर श्रोल्डम, मिस्टर ग्रान्टडफ एस्क्वायर मिस्टर आर ग्रीवन सी० एस बनारस, मिस्टर ब्लाकमेन मिस्टर जाहन बीम्स अम आई, डाक्टर वाइज, मिस्टर हाइलेन्ड और प्रोफेसर एच एच विल्सन आदि आदि अनेकों महानुभाव अंग्रेजों के ग्रन्थों के मर्मांश के अतिरिक्त नीचे लिखे ग्रन्थों के भी प्रमाण लिखे हैं यथा

Dalip Versus., Ganpat Indian Law Reports and Sheosingh Rai Versus Dakho Indian Law Reports Allahabad., Popular Religion and Folklore, Cronicles of Unao., Brief View., Papers on Mina Docoits & other Criminal classes of India and Report Inspector General of Police N. W. P. of 1818.

भाषार्थः— दलीप वर्सेस गनपत इन्डियन लारिपोर्ट, शिउसिंहरायवर्सेज दाखो इन्डियन लारिपोर्ट इलाहाबाद पापूलर रिलीजन और फाकलोर, क्रानिकल्स आफ उनाव ब्रीफव्यु, पेपर्स आन मीना डकैती और दूसरे जुल्मी पेशा करने वाली जातियों पर इन्सपेक्टर जनरल आफ पोलिस अन डबल्यु० पी० आफ १८६८ आदि २ ग्रन्थों की भी बहुत कुछ सहायता लियी है।

आदि महानुभावों को मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूं कि जिन के परिश्रम के आधार पर नागरी में यह ग्रन्थ निर्माण करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुवा। क्योंकि हिन्दी भाषा में आज तक ऐसा ग्रन्थ ही कोई नहीं था कि जिस एक ग्रन्थ में ही शास्त्रीय प्रमाणों के साथ साथ अंग्रेज विद्वानों की सम्मतियें तथा राजकीय कानून द्वारा निर्धारित जातिस्थिती का निर्णय हो अतएव इस अभाव को दूर करने में तथा उपरोक्त अंग्रेज विद्वानों के ग्रन्थ जिन में से बहुत सों का छपना भी बन्द हो चुका है और जो भारतवर्ष में

ही नहीं किन्तु लंडन तक में भी नहीं मिलते हैं अथवा जो मिलते हैं उन का भी सौ सौ व सवा सवा सौ रुपैया तक एक एक सेट का मूल्य था उन सब ग्रन्थ व उन ग्रन्थों के प्रमाण एकत्रित करने में कितना परिश्रम व कितने सौ रुपैया मुझे खर्च करना पड़ा होगा यह अनुमान पाठकगण स्वयं अपने २ हृदयों में कर सकते हैं साधारण जातीविषयक अंग्रेज़ी ग्रन्थ जिन के प्रमाण इस ग्रन्थ में दिये हैं वे सब के सब आठ आठ सात सात व छः छः रुपैयों से कम कोई भी नहीं आये जातिविषयक संस्कृत ग्रन्थ व पुराण आदि के एकत्रित करने में जो मेरा व्यय हुवा वह भी मैं ने अपने शक्ति से बाहिर काम किया है।

ग्रन्थ विस्तार

पाठक वृन्द ! जब मैं जातियों की खोज कर रहा था तब बड़े २ इतिहास व जाति विषयक ग्रन्थ व सरकारी मनुष्य गणना रिपोर्टों में एक २ जाति के सैकड़ों ही भेद व उपभेद मिले यथा:—

एक एक जाति के सैकड़ों भेद।

नाम जाति			तादाद किस्म	
अग्रवाल	...	...	४०	तरहके होते हैं
अहर	...	...	८७६	,,
अहीर	...	...	१७६७	,,
उपब्राह्मण	...	...	२८७	,,
ओझा	...	...	७७	,,
ओसवाल	...	...	८४	,,
औदिच्य	...	...	२८६	,,
		क		
कत्थक	...	...	६२	,,
कन्दू	...	...	३७८	,,

कन्नौजिये ब्रा०	...	८४	,,
कढेरा	... ...	५५२७	,,
कपड़िया	... ...	२७	,,
कन्फटा	... ...	२५	,,
कन्वोह	... ...	८५	,,
कलवार	... ...	६५९	,,
कसरवानी	... ...	८६	,,
कसेरा	... ...	५३	,,
कहार हिन्दू	.. ...	८२३	,,
,, मुसलमान	...	२४	,,
काछी	... ...	५६०	,,
कायस्थ	... ...	२१	,,
कुर्म्मी	... ...	१४८८	,,
कुम्हार हिन्दू	...	७७३	,,
,, मुसलमान	...	२४	,,
केवट	... ...	२९६	,,
कोइरी	... ...	१४७	,,
कोल	... ...	७८५	,,
कोरी	... ...	२५७	,,
कोरवा	... ...	१५	,,
कंजर	... ...	११२	,,

ख

खटीक	... ...	८१६	,,
खपरिया	... ..	२७	,,
खरादी	... ...	१७	,,
खत्री	... ...	७६१	,,

खांगी	...	...	१३५	,,
खांगर	...	...	८४	,,
खाखर	...	...	३४	,,
खुमड़ा मु०	...	...	१४	,,
खंडलवाल	...	...	७२	,,

ग

गद्दी	...	..	२५५	,,
गड़रिये	...	...	१०१३	,,
गहोई	...	...	७१	,,
गूजर हिन्दू	...	...	११७८	,,
,, मुसलमान		...	३८०	,,
गोला पूरब	...	...	३७६	,,
गौड़ ब्राह्मण	...	...	१४४४	,,

च

चमार	...	...	११५६	,,
चूड़ीहार	...	...	१११	,,

छ

छीपी	...	...	२०२	,,

ज

जांघड़ा	...	...	२०	,,
जाट	...	...	१८९७	,,
जांगी	...	...	४५	,,
जोगी	...	......	४५१	,,
जुलाहा	...	...	२४४	,,

ठ

ठठेरे ... ... ३१४ ,,

ड

डफाली ... ... ६७ ,,
डलेरा ... ... ४४ ,,
डंगी ... ... ६७ ,,

ढ

ढांगर ... ... १८ ,,

त

तम्बोली ... ... २४४ ,,
तागा हिन्दू ... ... १५५ ,,
,, मु० ... ... ५५ ,,
तेली हिन्दू ... ... ७४२ ,,
,, मु० ... ... २३९ ,,

द

दर्ज़ी ... ... ५२६ ,,

ध

धानुक ... ... ३२० ,,
धाड़ी ... ... ४० ,,
धोबी ... ... ९११ ,,

न

नट हि० ... ... ३८६ ,,
,, मु० ... ... २०५ ,,
नाई हि० ... ... ८८८ ,,
,, मु० ... ... १९७ ,,
निरोला ब्रा० ... ... २६ ,,

प

परवाल बक्खिया ...	१४४	,,
पटुवा	१०	,,

ब

बनिये	१८२७	,,
बढ़ई	८५९	,,
बराई	१४५	,,
ब्राह्मण	९०२	,,
बाँदी	२४	,,
बारी	५०३	,,
बुलाहर	८५	,,
बेरिया	२५०	,,
बंगाली ..	५४	,,

भ

भड़भूजा	३६४	,,
भाट	२९	,,
भाटिया	८४	,,

म

मझवार	७७७	,,
महेश्वरी	७२	,,
मालवी ब्रा०	१४	,,
मारवाड़ी बनिये ...	१७२	,,
मल्लाह हि०	६२५	,,
,, मु०	२२	,,
माली	८५३	,,

मनिहार हि० ...	... १२७	,,
,, मु० ...	... १३०	,,
मेर	८७	
मेवाती	३४७	,,
मैथिल	५७	,,
माली हि०......	१५०	,,
,, मु०.....	२७	,,
मुराव	२३२	,,
मुसाहर	१३७	,,

र

रगेया	२५	,,
रंघड़	३७	,,

ल

लूनिया	८०८	,,
लोधा	५१५	,,
लुहार हि० ...	... ७३६	,,
,, मु० ...	... ११४	,,

स

सारस्वत ब्रा० ...	४६९	,,
सुनार	१६२७	,,
सोलंक	१६	,,

ऐसी ही दशा सब जातियों के साथ समझना चाहिये इस लिये एक २ जाति के इतने २ भेद होते हुये यदि एक ही जाति का विवरण पूरा २ व सम्यक रीति से लिखा जाता तो एक २ जाति के विवरण की ही एक २ बड़ी जिल्द अलग २ होती और ऐसा

करने में मैं विश्वास करता हूं कि यह काम मेरे जीवन में पूरा न होता क्योंकि सम्पूर्ण जातियों का पूरा २ विवर्ण लिखने में कम से कम १०० जिल्दें होती जिन का पूरा होना मेरे जीवन में असम्भव सा था, मेरी इस ही जिल्द में करीव एक सौ जातियों का विवर्ण है यदि उन का ही विवर्ण पूरा २ लिखता तो मेरा अनुमान है कि इस एक जिल्द की पचीस जिल्दें होती अतएव ऐसे बड़े कार्य्य को करने के लिये एक वड़ी भारी सहायता की आवश्यकता होती परन्तु सहायता का अभाव जान कर ही हम ने प्रत्येक जाति का विवर्ण बहुत ही सूक्ष्म रूप से लिखा है तिसपर भी सम्पूर्ण जातियों का इतिहास कम से कम पांच व ६ जिल्दों में पूर्ण होगा अतएव यह वात सर्वसाधारण को भले प्रकार विदित है कि इस समय भारतवर्ष की हर एक

जागृति

समाज में धर्म व उन्नति की जागृति पैदा हो रही है जिस प्रकार आज कल नयी २ कला कौशल व यन्त्रों के नवीन २ अविष्कार हो रहे हैं तैसे ही प्रत्येक छोटी छोटी जातियें भी अपने को उच्च वर्ण मानती हुयीं उन्नतिमार्ग को जाती हुयीं दृष्टि पड़ती हैं परन्तु उन का मार्ग वड़ा अगम्य तथा कटीला है उन्हें इस संसार में वड़ी २ विपत्तियों का साम्हना करना पड़ता है तथापि जातियें लुढ़कती पड़ती हुयी चहुं ओर वर्म्मा, शर्म्मा और गुप्त वनने का प्रयत्न कर रही हैं परन्तु उन की पीठ को ठोकने वाला तथा सत्य पथ प्रदर्शक उदार भाव परिपूर्ण कोई ग्रन्थ व कोई संस्था नहीं थी अतएव यह अभाव राजपूताना हिन्दू धर्म्म वर्ण व्यवस्था मण्डल फुलेरा जयपुर द्वारा दूर किया जाकर मनुष्य मात्र के उद्धार का उद्योग किया जायगा।

आज कल के चहुं ओर विद्या प्रचार से सर्वत्र खलवली मच गयी है और सर्वत्र प्रकट व अप्रकट दो प्रकार का समुदाय दृष्टि पड़ रहा है जिस में पुराने समुदाय का कहना है कि आंख मींच कर लीक के फकीर वन कर चुपचाप अन्धे की तरह चले जावो पुरानी लकीर को छोड़ कर नयी लकीर करना ही धर्म

विरुद्ध है। परन्तु दूसरा दल विचार शील जिज्ञासुवों का है जिन का कहना है, कि ऐसा कोई भी धर्म वाक्य नहीं है। कि धर्म व जातियों की अवनति ही अवनति सदा होती रहेगी और बीच २ में अवनति रूपीगाड़ियों का इन्जिन कहीं भी पानी लेने को न ठहरेगा आजकल सर्पिणीकाल है अतएव सर्प की तरह सम्पूर्ण बातों का चढ़ाव उतार अवश्य होगा। हमारी शान्तिमयी बृटिशगवर्नमेंट के राज्य में सम्पूर्ण चिन्ह उन्नति के हैं अतएव जाति समुदाय भी अपनी २ उन्नति करें यह कोई नवीन बात नहीं है अतएव ऐसी दशा में पुरानी अनावश्यक लीकों को त्यागकर आचार्य्यों के निर्दिष्ट पथ में नवीन दृढ़ लीकें बनानी चाहिये और इन्हीं लीकों पर चलने के लिये द्रव्यक्षेत्र काल और भाव के अनुसार वाहन और ही प्रकार के बनाने चाहिये, पुराने जरजर वाहन बिलकुल ढीले ढाले होगये हैं अतएव Mail Speed डाकगाड़ी की रफतार से चलने में चकनाचूर होने का डर है क्योंकि उनके इस चकनाचूर होजाने की दशा में पैदल रास्ते बन्द होजाने की भी सम्भावना है।

अछूत जातियें

आजकल भारत के मुख्य नेता आनरेबल पण्डित मदनमोहन मालवी जी तथा लाला लाजपतराय जी के उद्योग से सर्वत्र यह चर्चा फैली हुई है कि भारत की अछूत जातियों का उत्थान किया जाय उनके साथ सहानुभूति दिखलायी जाय जिससे हिन्दूधर्म को लाभ होगा।

इस ही को Support सपोर्ट याने अनुमोदन करने वाले भारत के एक दो प्रसिद्ध समाचार पत्रों को छोड़कर सबकी ऐसी ही सम्मति है। हमारी जातियात्रा के भ्रमण में हमारे देश के सनातन धर्मी समुदाय में से प्रायः लोग हमसे इस विषय में सम्मति मांगा करते थे, अतएव मेरी निज सम्मति यह है कि "हमारे खान पानादि विषय पर हस्तक्षेप न किया जाकर अन्य सब प्रकार की सहानुभूति अछूतजातियोंके साथ दिखलायी जावे, वे पढ़ायीं

जावें तथा मुसल्मान व ईसाइयों से हजार दर्जे ऊंची मानी जांय जब एक चमार ईसाई व मुसल्मान हो जाता है तो हमें उसे छूना पड़ता है अतएव जब वह गोभक्षक तथा वेद निन्दक श्रीराम व श्रीकृष्ण का द्वेषी बनजाता है तो सम्पूर्ण उसे बिनारोक टोक छूलेते हैं अतएव यदि वही चमार गोभक्ति है वेदों पुराणों को मानने वाला है और श्रीकृष्ण व श्रीराम के नाम से मुक्ति मानता है तो उस से क्यों घृणा की जाय ? यह कुछ समझ में नहीं आता ॥

भारत में गोवध के समय जब २ झगड़े होते हैं तब २ मुसल्मानों का पक्ष हिन्दुओंकेपक्षका सिर नीचे करदेताहै कारण यह है कि हिन्दू सम्प्रदाय में विशेप उच्चजातियों के लोग पढ़े लिखे व समृद्धि शाली हैं अतएव वे अपना आगा पीछा विचार कर चुपके से पिट रहने के सिवाय कुछ करना नहीं चाहते हैं अतएव हिन्दुवों के लिये इस बात की आवश्यकता नहीं है कि वे परस्पर ईर्षाद्वेप व घृणा उत्पन्न करें वरन अछूत जातियोंके साथ सहानुभूति प्रकट करें ।

शुद्धि हम जाति अन्वेषण के अर्थ जहां २ गये तहां २ प्रायः सर्व साधारण हिन्दू समुदाय ने मुसल्मान ईसाइयों की शुद्धि का प्रश्न हमारे सन्मुख रक्खा अतएव इस विषय में हमारी निज की सम्मति यह है कि ईसाई व मुसलमान शास्त्रोक्त प्रायश्चित विधि से शुद्ध किये जाकर हिन्दू करलिये जांय और उन्हें कंठी व तिलक देकर उनकी एक नई जाति बना दी जाय तो इसमें कोई हानि नहीं है । हमारी इस सम्मति से सहानुभूति रखनेवाले भारत के कई प्रसिद्ध संस्कृतज्ञ ब्राह्मण विद्वान्हैं अतएव ऐसा होने में देशका बड़ा भला होगा इस विषय में विवर्ण युक्त व्यवस्था मण्डल से निकलने की सम्भावना है क्योंकि ऐसे कार्य्यों के लिये शास्त्रोक्त प्रायश्चित पद्धति,, तैय्यार

करने व व्यवस्था निकालनेके लिये मण्डल को बहुत से बहुमूल्य ग्रन्थों का संग्रह करना व खरच के लिये सहायता की आवश्यकता है इसलिये धनके अभाव से कार्य्य में विलम्ब अवश्य होगा ऐसा प्रतीत होता है।

राजपूताना हिन्दू धर्म्म वर्ण व्यवस्था मंडल के उद्देश्य.

१ हिन्दू जाति निर्णय पर विचार, २ मंडल की सम्मत्यानुसार मासिक "व्यवस्था पत्र" निकालना, ३ हिन्दू धर्म के विरुद्ध आक्षेपों का उत्तर, ४ अल्पतम मूल्य पर व धर्मार्थ पुस्तक प्रचार, ५ देश स्थिति व राज्य स्थिति के अनुसार व्यवस्था विचार, ६ हिन्दू जाति वर्ण व्यवस्था कल्पद्रुम नामक ग्रन्थ पर सम्मतियें, ७ देश देशान्तरों से पूछी हुई जात्युत्पत्ति आदि अन्य धार्मिक विषयों पर व्यवस्था प्रकाशित करना, ८ हिन्दू धर्म ग्रन्थों का संशोधन वेदों का प्रचार व हिन्दू शास्त्रों के प्रक्षिप्त विषयों पर परामर्श।

॥ नियमोपनियम ॥

१-मंडल में दो सभायें होंगी एक का नाम "धर्म्म व्यवस्था पक सभा" और दूसरी का नाम "हिन्दू सार्वभौम प्रबन्धकर्त्री सभा" होगा और इन दोनों का समुदाय नाम "हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मंडल" फुलेरा–जयपुर होगा।

२—धर्म्म व्यवस्थापक सभा में केवल परिक्षोत्तीर्ण शास्त्रज्ञ ब्राह्मण विद्वान् शामिल होंगे अथवा परिक्षोत्तीर्ण न होने की दशा में जिस की संस्कृत विद्या के लिये धर्म व्यवस्था सभा के ४ सदस्य सिफारिश करें।

३—भारत के प्रसिद्ध २ स्थानों के चुनिन्दा विद्वान धर्म्म व्यवस्थापक सभा में सम्मलित किये जायेंगे।

४—सेवा में पत्र भेजकर समय २ पर सदस्यों की सम्मतियें

एकत्रित कियी जाकर मासिक व्यवस्था पत्र द्वारा प्रकाशित कियी जाया करेंगी ।

५—गूढ़ व कठिन विवादास्पद विषयों के निर्णयार्थ धर्म्ममहोत्सव किया जाकर सदस्य एकत्रित किये जावेंगे और बहुसम्मत्यानुसार निर्णय होगा ।

६—प्रबन्धकर्त्रीसभा में उदारभावों वाले दीर्घदर्शी कोई भी योग्य पुरुष सभासद हो सकेंगे ।

७—धर्म व्यवस्था सभा में वह ही विषय व्यवस्थार्थ प्रविष्ट किये जा सकेंगे जिन को प्रबन्धकर्तृ सभा पास कर दे परन्तु यह नियम उद्देश्य संख्या ७ का बाधक न होगा ।

८—प्रत्येक विषयों को विचारार्थ दोनों सभाओं में महामंत्री प्रविष्ट किया करेंगे तथा महामंत्री को अधिकार होगा कि किसी विषय को किसी कारण विशेष से हानिकारक समझ कर प्रकाशित व प्रविष्ट न करे प्रबन्धकर्त्री के सदस्यों को अपनी आय का शतांश मंडल को देना होगा और मंडल के धन की स्थिती के अनुसार धर्म व्यवस्था सभा के सदस्यों को भेंट दियी जावेगी ।

मण्डल की दोनों सभायें यानी हिन्दूसार्वभौमप्रबन्धकर्त्री सभा तथा "धर्म व्यवस्था सभा,, का काम विलायती पार्लियामेन्ट के क्रमानुसार होगा अर्थात् जैसे प्रथम विषय House of Commons सर्वसाधारण महा सभा में पास होकर House of Lords याने लाट महासभा में जाता है तैसे ही मण्डलमें प्रत्येक विषय पहिले हिन्दू सार्वभौम प्रबंधकर्त्री सभा से पास कियाजाकर ही धर्मव्यवस्था सभा में जायगा। अतएव जो जातियें व्यवस्थायें चाहें उन्हें मण्डल की हिन्दूसार्वभौम प्रबंधकर्तृ सभा के मेम्बर होना चाहिये। जिससे उनकी जाति के निर्णय के समय वे अपनी२ जाति के सम्बन्ध में Defence याने प्रमाण दे सकें तथा अपनी जाति के पक्ष में समर्थन कर सकेंगे। अन्यथा बहुसम्मत्यानुसार निर्णय हो चुकने पर पछताना पड़ेगा ।

१० जब तक २५१ प्रश्नों द्वारा वर्णव्यवस्था कमीशन किसी जाति का पब्लिक अन्वेषण न कर लेगा तब तक मंडल से उस जाति को व्यवस्था नहीं दी जा सकेगी ।

११ उपरोक्त वर्णित २५१ प्रश्न रिज़र्व रक्खे जांय याने मुद्रित न कराये जांय वरन वर्णव्यवस्था कमीशन ही उनके द्वारा अन्वेषण करसकती है ।

१२ वर्णव्यवस्था कमीशन की रिपोर्ट को देखकर ही मंडल की धर्मव्यवस्था सभा द्वारा व्यवस्था दी जा सकेगी ।

१३ वर्णव्यवस्था कमीशन में मंडल के महामन्त्री, दो शास्त्री तथा एक क्लार्क होगा इन चारों का समुदाय वर्णव्यवस्था कमीशन कहावेगा

जिस जाति को मंडल से वर्णव्यवस्था चाहिये उन्हें वर्ण व्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्न द्वारा पब्लिक तहकीकात करानी होगी ।

१४ कमीशन बुलाने वाले सज्जनों को कमीशन के दुतर्फे मार्गव्ययादि के अतिरिक्त यथाशक्ति मंडल की सहायता करनी होगी ।

१५ सम्पूर्ण प्रकार का पत्रव्यवहार)।। टिकिट भेजकर मंडल के महामन्त्री—फुलेरा जंक्सन रियासत जयपुर से करना चाहिये

१६ प्रश्नावलि घर बैठे किसी जाति को नहीं भेजी जायेगी वरना वर्णव्यवस्था कमीशन स्वयं जाकर जाति अन्वेषण करेगी अतएव जातिनिर्णय के २५१ प्रश्न रिज़र्व याने गुप्त रक्खे गये हैं

महामण्डल के कतिपय सभ्यों की नामावलि

१ श्रीमान् पण्डित शिवदत्त जी शास्त्री महामहोपाध्याय
व हेड संस्कृत प्रोफेसर ओरियान्टलकालेज—लाहौर
सभापति

२ श्रीमान् पं० बुलाकीराम जी शास्त्री, पंजाब भूषण विद्यासागर, मेम्बर रायल एशियाटिकसोसाइटी और संस्कृत अध्यापक मेयोकालिज-अजमेर उपसभापति

३ श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्मा आनरेरी सनातन धर्म्मोपदेशक-फुलेरा महामन्त्री

४ श्रीमान् विद्वद्वर्य्य दाधिमथ पं० गोवर्धन शर्म्मा—नावां मन्त्री

५ श्रीमान् परिव्राजकाचार्य्य स्वामी आत्मानंद जी गौड़ाचार्य्य-पुष्कर संरक्षक

६ श्रीमान् पूज्यपाद ब्रह्मचारी कृश्नानंद जी सरस्वती—पुष्कर सभासद

७ श्रीमान् पं० कल्याणदत्त जी ज्योतिषी-नावां ,,

८ श्रीमान् पं० लक्ष्मीनारायण जी वैय्याकरण-नावां ,,

९ श्रीमान् पं० गणेशदत्त जी पौराणिक-नावां ,,

१० श्रीमान् पं० नरायनदास जी ज्योतिषी अधिष्ठाता व रचयिता सम्राट पञ्चाङ्ग-अजमेर सभासद

११ श्रीमान् स्वामी भास्करानन्द जी सरस्वती-नरायना ,,

१२ श्रीमान् पं० शिवचन्द्र जी वैय्याकरणी-सांभर ,,

१३ श्रीमान् पं० धन्नालाल जी मिश्र बी.ए. एल.एल बी. वकील हाईकोर्ट-आगरा ,,

१४ श्रीमान् राजमान्य पं० वशिष्ठ जी धर्म्मशास्त्री महाराजाश्रित-कृश्नगढ़ ,,

१५ श्रीमान् स्वामी आत्मानन्द जी आकाशी--मारवाड़ जंक्सन ,,

१६ श्रीमान् महात्मा बजनदास जी महाराज-नरायना ,,

१७ श्रीमान् पं० वंसीधर जी शर्म्मा वैद्य सेवा (नरायना) ,,

१८ श्रीमान् पं० श्यामलाल जी भागवती व वेदपाठी- नारेड़ा (चूरू) ,,

१९ श्रीमान् पं० भागीरथ जी स्वामी वैद्य आयुर्वेद विद्या पीठ तथा आयुर्वेद महामंडल द्वारा सन्मानपत्र प्राप्त व उपमन्त्री सनातनधर्म्म महासभा-फरुखाबाद ,,

२० श्रीमान् पुजारी मुकुन्दरामजी गौतम वंशोद्धारक-फरुखाबाद ,,

२१ श्रीमान् पं० भवदेव जी शास्त्री हेड संस्कृत प्रोफ़ेसर
गवर्नमेन्ट कालेज-अजमेर ,,

२२ श्रीमान् पं० विष्णुदत्त जी शास्त्री संस्कृताध्यापक सरकारी
स्कूल--रिवाड़ी सभासद

२३ श्रीमान् पं० आनन्दीलाल जी मिश्र भागवती—साखून
(जयपुर) ,,

२४ श्रीमान् पं० तेजोनरायन जी शास्त्री— फरुखाबाद ,,

नोट:— अन्य बहुत से स्थानों के पण्डित गणों से पत्रव्यवहार चलरहा है अतएव निश्चय होने पर उनकी नामावलि इस पुस्तक के द्वितीय भाग में प्रकाशित करेंगे।

हा ! भारत में महा कष्ट

राजपूताना हिन्दूधर्म वर्ण व्यवस्था मंडल
फुलेरा—जयपुर की सेवा में
व्यवस्थार्थ व निर्णयार्थ
सादर अर्पण

हे महामहोपाध्यायो, हे विद्यावाचस्पतियो, हे संस्कृत प्रोफेसरो हे प्रधानाध्यापको, हे श्रोत्रियो, हे आचार्य्यो, हे शास्त्रियो, हे काव्य-तीर्थो, हे साहित्य व वेदान्ताचार्य्यो हे नैय्यायिको तथा व्याकरणा-चार्य्यो हे वेदपाठियो, हे ज्योतिर्विदो, हे धर्मशास्त्रियो, हे पौरा-णिको, हे सकल के अन्यसम्पूर्ण विद्वानो, हे वर्तमान काल के ब्राह्मण ऋषियो ! मैं भारतीय हिन्दूजातियोंकी ओरसे क्षेपित होकर इस जाति अन्वेषण नामक छोटी सी पुस्तक के प्रथम भाग द्वारा सेवा में अपील सादर भेंट करता हूं या यों समझिये कि सम्पूर्ण हिन्दू जातियों का निष्ट व अनिष्ट; भला व बुरा, उपकार व अनुपकार अच्छा व बुरा सब कुछ आप सभासदों के हाथ में निर्णयार्थ व व्य-वस्थार्थ सौंपता हूं और आशा करता हूं कि सङ्कीर्ण हृदयता को छोड़कर तथा उदार भावों के साथ शास्त्रोक्त विधि से व्यवस्थायें पास होनी चाहियें जिससे सम्पूर्ण हिन्दू जातियों का उद्धार हो, आप के देश में परस्पर वैमनस्य का नाश और ऐक्यता की वृद्धि हो

और सदा के लिये आपका नाम हिन्दूजातियों के हृदयों में अङ्कित हो जाय ?

आपके मण्डल का पांचवा उद्देश्य यह है कि:-

देशस्तिथी राज्यस्थिती के अनुसार व्यवस्था प्रचार

अतएव इस उद्देश्य का पूरा होना एक मात्र आप महानुभावों के हाथ में है अपनी जातियात्रा में जहां जहां व जिस २ देश में गया वहा २ के देश हितैषी कट्टर हिन्दुओं ने जो २ मुझे देश की आवश्यकतायें बतलायी हैं उनमें से कतिपय यहां लिखी जाती हैं जिनको विचार कर शास्त्रानुसार आप निर्णय करें जिससे देश का भला हो!

(१)मैने अपने करीब २० वर्ष के अतुल परिश्रम व जातिअन्वेषण द्वारा एक सप्तखण्डी ग्रन्थ लिखकर के तथा हजारों रुपैये निज खरच करके पतालगाया है, कि आज भारत में अनेकों जातियें ऐसी हैं जो ब्राह्मण, क्षत्री तथा वैश्य वर्ण में हैं परन्तु परस्पर के मिथ्या जातिदम्भ व ईर्ष्याद्वेष के कारण लोग इन्हें उच्चजातियों की श्रेणी मे ही नहीं मानते वरन् उनके द्विजत्व विषयक कोई कार्य्य करने पर उनका अपमान करते हुये उनके साथ घृणा प्रकट करते हैं आवश्यकतायें ये थीं, कि उन उन्नतिशील जातियों को दबोचा दबोची न देकर उनका साहस वढ़ाया जाय।

२ वहुत सी ऐसी जातियों का पता लगाया है कि जिन की उत्पत्ति दोगली, वर्णसंकर, लोमज, प्रतिलोमज, अनुलोमज, हरामज़ादी व नुत्फेहराम हैं तथा वे कर्म धर्म व आचार से भी भ्रष्ट हैं वे जातियें आज धर्म शास्त्रों की आज्ञावों को उल्लंघन करके व ब्राह्मणों का अपमान करते हुये अपने को ब्राह्मण, क्षत्रिय, व वैश्य मानती हैं तथा लिखती हुयी अनाधिकारीपन से पालागन के स्थान में ब्राह्मणों के साथ नमस्कार करती हैं ये धींगाधींगी रोकी जानी चाहिये। मानमर्य्यादा सम्बन्धी ऋषियों के नियम अटल रहने चाहिये।

३ कुछ नीच जातियें ऐसी हैं जो कर्म से भी महा भ्रष्ट हैं पर चार पैसा चन्दा आर्य्यसमाज को देकर नमस्ते नमस्ते करती

हुयी वर्म्मा, शर्म्मा, व गुप्त झट पट बन जाती हैं और दो दो पैसे में जनेऊ अनेक पहिन लेती हैं। इस के प्रति बंधक उपाय होने चाहियें।

४ कुछ जातियें भारत में ऐसी हैं जिन की उत्पत्ति बड़ी निकृष्ट व नीच है तथा शास्त्रधारानुसार उन के हाथ का जल भी पीना नहीं चाहिये वे आज धड़ाके से सर्व सम्मति से द्विज मानी जा रही हैं। तब वे प्रमाण व उत्पत्तियें माननीय हैं या नहीं ?

५ कुछ जातियें ऐसी हैं जिन की व्रात्य संज्ञा है जैसे अग्रवाल, परन्तु उन के साथ व्रात्यों का सा व्यवहार नहीं किया जाता है तब शास्त्राज्ञा कहां रही ?

६ आज सम्पूर्ण हिन्दू जातियें जनेऊ पहिनने को तय्यार हैं अतएव ऐसी व्यवस्था निकलनी चाहिये कि वर्तमान काल की प्रचलित हिन्दू जातियों में अमुक २ जातियें जनेऊ पहिन सकती हैं तथा अमुक अमुक जातियें नहीं।

७ ऐसी व्यवस्था पास हो जाने पर जिन जातियों ने अनाधिकारीपन से जनेउ पहिन लिये हैं राज्यबल द्वारा उन के जनेउ उतरवाये जावें तथा जिन्हें जनेउ पहिनने का अधिकार है उन जातियों को निधड़क रूप से जनेऊ पहिनाये जावें।

८ अब तक भारत का हिन्दू जाति समुदाय यह कहा करता था कि हमारी जात्युत्पत्ति का कहीं पता ही नहीं लगता है परन्तु अब आप के साम्हने अकार से लेकर क्षकार तक की सम्पूर्ण जातियों का पूर्ण विवर्ण युक्त ग्रन्थ तय्यार है उसे देख कर आप निर्णय कर सकते हैं।

९ भारत में जब धर्मज्ञ क्षत्रिय राजावों का राज्य था वर्णाश्रम धर्म की परिपाटी यथार्थ चल रही थी उस समय के बने धर्मशास्त्रों की व्यवस्थायें उस समय उपयुक्त व हितकर थीं न कि आज कल। अतएव आज कल समयानुसार व्यवस्थायें निकलनी चाहियें।

१० आज कल सरकार अंग्रेज़ का राज्य है आप की छूत

छात के नियम जो चले आरहे हैं उन में परिवर्तन होने की आवश्यकता है ?

११ आप के चारों वर्णों के हजारों भाई अंग्रेज़ सरकार के नौकर हैं उन्हें वैसे ही नियम पालने पड़ते हैं तब कहिये आप का धर्म कहां रहा ? जैसे:—

(क) जो सरकारी नौकर विमार होता है तब उसे डाक्टर का सर्टिफिकेट देना पड़ता है और अस्पताल की दवाई पीनी पड़ती है जो सब विलायत की बनी होती हैं तथा यहां भी आप के साम्हने भिस्ती की मश्क का पानी मिलाया जाता है तथा अस्पतालों में सर्वत्र सब काम मेहतर याने भंगी करते हैं ?

(ख) विलायती कपड़ा व विलायती वस्तुयें जो क्रोड़ों रुपैयों की हरसाल आती हैं और आप काम में लाते हैं उससे धर्म जाता है या नहीं ?

(ग) मुम्बई की चीनी जिसके प्रति सम्पूर्ण भारतवासियों को प्रमाणित हो चुका है कि वह हड्डी व खून आदिकों के संयोग से साफ होती है और हरसाल क्रोड़ों रुपैयों की भारत में खपती है और सब लोग निधड़क रूप से खाते हैं तब धर्म कहां रहा तथा पुराने प्रमाणों का क्या महत्व ?

(घ) सम्पूर्ण हिन्दू नल का पानी पीते हैं जिसमें चमड़ा लगता है और उन कारखानों में हिन्दू मुसलमान आदि सब ही छोटी बड़ी जातियें काम करती हैं तब पुराने नियम कहां रहे ?

(ङ) जहाजों में नीच से नीच जातियों तक के लोग नौकरी करते हैं तब उनमें का लदा हुआ व आया हुआ सामान निधड़क रूप से काम में आता है तब पुरानी शृंखलता कैसी !

(च) रेल में भंगी से लेकर ब्राह्मण तक सबही ठूंस ठूंस कर एक जगह भरदिये जाते हैं तब पुराने नियमों का क्या महत्व ?

(छ) रेल में गाड़ियों को धोने धाने का सब काम भंगी करते हैं और सम्पूर्ण हिन्दू उसमें बैठकर यात्रा करते हैं तब पुराने नियमों की उपयोगिता कैसी !

(ज) एक चमार व भंगी जबकि वह ईसाई वह मुसल्मान हो जाता है तब उसे से आपको छूना पड़ता है, पास बिठाना पड़ता है बोलना पड़ता है हाथ मिलाना पड़ता है, पर यदि वह आप का हिन्दू भाई बना रहे , श्रीराम व श्री कृष्ण का उपासक हो और गोमाता की पूजा करे तै। अस्पर्शनीय माना जायसो क्यों?

(११) और आपके भारत में सा मनुष्यों पीछे चार पढ़े लिखे मनुष्य हैं अतएव भारत की ऐसी निकृष्ट विद्या स्थिती होते हुये विद्योपार्जनार्थ जानेवाले विद्यार्थियों के लिये विदेशगमन व समुद्रयात्रा की रुकावट क्यों ?

१२ भारत की ऐसी स्थिती के समय आपके मण्डल के ऋषियों का क्या कर्तव्य है इस पर विचार कर व्यवस्थायें निकलनी चाहिये ।

१३ आपके भारत में हरसाल हिन्दुवों की संख्या घटती जारही है अर्थात् सन् १९११ की मनुष्यगणना रिपोर्ट से प्रमाणित हुआ है कि इस से पहिले दश वर्षो में चालीस सहस्रहिन्दू तथा मुसलमान और कोई एक लाख बीस हजार हिन्दू ईसाई होगये यदि इसही तरह हिन्दू सदा घटते रहेंगे तो कहो हिन्दू धर्म का भविष्यत क्या होगा ? आपके प्रसिद्ध हिन्दू अखबार बंगवासी ता० ६-२-१४ तथा श्रीवेंकटेश्वर समाचार मास फरवरी को देखिये । तब ऐसी दशा में उन अपने भूले हुये लाखों ईसाई व मुसल्मानों को हिन्दूधर्म में आश्रय देना चाहिये क्योंकि वे नाम मात्र के ईसाई व मुसलमान हैं मैंने अपने जातिअन्वेषण में पता लगाया है कि लाखों ईसाई व मुसलमान भारत में ऐसे हैं जो अपने खान पान रहन सहन से पवित्र हैं जो गोमांस के दर्शन तक को भी पाप समझते हैं, सुन्नत भी नहीं कराते हैं और भारतमाता के हिन्दू सुपूतों की ओर टकटकी लगाये देख रहे हैं उनके शुद्ध करने के विषय भी मण्डल को विचार करना

है, पुराणों में गंगास्नान से हजारों जन्मों के पाप दूर होते हैं, श्रीराम और श्रीकृष्ण के महामन्त्र से वैकुण्ठधाम मिलता है तो इन बेचारे नाम मात्र के हिन्दू मुसलमानों के लिये क्या हिन्दूधर्म में जगह नहीं है !

(१४) भारतीय चमार धाणुक, ढेढ, बलाई आदि अस्पर्शनीय जातियों के यहां का घी बाजारों में खुल्लम खुल्ला क्या नहीं बिकता है परन्तु यदि उस ही घी को मुसलमान खरीदकर लाकर अपना कहते हुये बेचजाते हैं तब ऐसी स्थिती पर विचार होना चाहिये ।

१५ मांस खाने वाली जातियें मुसल्मानों के हाथ का मांस खाती हैं वे हिन्दू कैसी ? उसमें गोमांस व गोरक्त का संसर्ग होता ही है तब छूतछात कैसी ?

१६ भारत के अनेकों राजे व महाराजे प्रत्यच्छ रूप से मुसल्मानी होटलों में अंग्रेजों के साथ खाना खाते व कोट पतलून टोप पहिन्ते हैं उन्हें जाति से पतित क्यों नहीं किया जाता है ! विचारे गरीब विद्यार्थियों को ही विदेशगमन व समुद्रयात्रा पर दण्ड क्यों ?

१७ अंग्रेजी प्रसिद्ध अखबारलीडर में ता० १२ मार्च सन् १९१४ का छपा विवरण इस प्रकार है

कल ता० १० मार्च सन् १९१४ को कलकत्ता हिन्दू सोसाइटी में प्रसिद्ध २ तीन सौ पण्डितों की सभा हुई जिसके मुख्यभाषण कर्ता महामहोपाध्याय शिवकुमार शास्त्री तथा महामहोपाध्याय प्रमथ नाथ तर्कभूषण थे यह पास किया है कि व्यापारार्थ विदेशगमन व समुद्रयात्रा में दोष नहीं किन्तु अन्य किसी कार्य्यवशात् कोई विदेशगमन व समुद्रयात्रा करे तो वह प्रायश्चित करने पर भी शुद्ध हो कर जाति में लिया नहीं जा सकता है । अतएव ऐसी बुद्धि विशालता की पक्षपात युक्त व्यवस्था पर भी मंडल को विचार करना है ।

१८ बादशाह अलाउद्दीन के समय जब हिन्दुवों की कुवारी लड़कीयें जबर्दस्ती मुसलमानों द्वारा छीन ली जाती थीं तब ही धर्म रक्षार्थ " शीघ्रबोध द्वारा ,, काशी से स्वर्गवासी पण्डित

काशीनाथ ने बालविवाह की व्यवस्था निकाली थी क्या अब भी उस व्यवस्था के प्रचलित रखने की आवश्यकता है ? रात्रि में विवाह की प्रणाली भी तब ही से चली है अतएव शास्त्रधारानुसार दिन में विवाह होने का विधान है ।

१९ इस बाल विवाह से देश में "पेटमागणिया ,, विवाह होने लगे हैं अर्थात जहां दो स्त्रियों के गर्भ हुवा कि उन्हों ने परस्पर उन दोनों का विवाह निश्चय कर लिया । सन् १९०१ की युक्तप्रदेशीय सरकारी रिपोर्ट से पता लगाया है कि केवल यू० पी० में पेट की पेट में बच्चे बच्चियों के विवाह १९७१ हुये थे तब सम्पूर्ण भारत में कितने ? एक वर्ष की उमर के व्याहे हुये बालक बालिकावों की संख्या २०२९ थी, दो वर्ष की उमर वाले व्याहे लड़के लड़कियों की संख्या ४५९६ निकली, तीन वर्ष तक की उमर वाले व्याहे बालक बालिकावों की संख्या ८८८६ निकली चार वर्ष की उमर के व्याहे हुये लड़के लड़कियों की संख्या १६१०१ निकली, ५ से ९ वर्ष तक की व्याही हुयी कन्यावों का संख्या २९१३७३ अकेले युक्त प्रदेश में थी तो कुल भारत में कितनी ? अतएव ऐसी स्थिती पर मंडल को ध्यान देना चाहिये।

२०. सन् १९११ की सरकारी रिपोर्ट से पता लगा है कि भारत में ५६ लाख निरक्षर भाटाचार्य्य साधू व भिक्षुक है जिन के वृथा खरच का भार देश के गृहस्थियों पर है यदि तीन रुपैये महिना ३) खरचा भी इन का माना जाय तो एक क्रोड़ अड़सठ लाख रुपैया प्रति मास गृहस्थियों का वृथा देश में खरच हो रहा है इतनी बड़ी रकम का सदुपयोग क्यों न किया जाय ?

२१ मिस्टर बेली रिपोर्ट के पृष्ठ २५९ में लिखते हैं कि प्रत्येक दस हजार हिन्दुवों में ३३१ रंडवे पुरुष तथा ३३१ विधवा स्त्रियें केवल युक्त प्रदेश में हैं । पंजाब मनुष्यगणना रिपोर्ट पृष्ठ २२६ के अनुसार १५ वर्ष तक की उमर वाली विधवायें प्रत्येक एक हजार स्त्रियों के पीछे १४५ विधवा पंजाब में हैं इस ही तरह

पता लगा है कि कुल भारत में ६७१३०८७ बाल विधवायें उन उच्च जातियों में हैं जिन में विधवा विवाह मना है ? अतएव मंडल को ऐसी स्थिती पर क्या करना है ? क्योंकि अवसत निकालने से २४००५ फी सैकड़ा विधवा हैं याने चार स्त्रियों पीछे एक विधवा है।

२२ यू. पी. मनुष्यगणना सन १६०१ से पता लगा है कि सन १८६१ से सन १६०० तक दस वर्ष में एक वर्ष से नीचे की उमर के लड़के लड़कियों की मृत्यु संख्या २१२६६८० निकली एक वर्ष से ५ वर्ष तक की उमर के बालक बालिकावों की मृत्यु संख्या १३१२४६८ निकली, ५ से १० वर्ष तक के बालकों का मृत्यु से वह ४४४८३६ निकली, १० से १५ वर्ष तक की उमर के बालकों की मौतें २४५४०२ हुयीं और १५ से २० वर्ष तक की उमर के बालकों की मृत्यु संख्या १४२६३८ निकली अतएव इस से सिद्ध होता है कि जितनी वड़ी उमर में विवाह किये जायेंगे उतने ही बालकों की कम मृत्यु होगी और सहज ही में बाल विधवा संख्या घट जायगी।

२३ भारत में जो लाखों बाल विधवायें पांच पांच, सात सात वर्ष की हैं जिन्हों ने श्वसुराल का द्वारा भी नहीं देखा पतित्व सम्बन्ध क्या वस्तु है ? इस का नाम मात्र संस्कार भी जिन के चित्तों में नहीं है उन के लिये मण्डल को दया युक्त व्यवस्था निकालनी चाहिये। उन के पुनर्विवाह निधड़क रूप से करने तथा किन २ दशावों में उन कन्यावों के विवाह किये जासकते हैं आदि आदि व्यवस्थों पर मण्डल को विचार करना है।

२४ आप के देश की कन्यायें जो विवाह होनेपर एक समय भारत की भविष्यत सन्तानोंकी मातायें होंगी वे भी वड़ी दुखित दशा में हैं। उनका मण्डल के प्रति निवेदन है कि क्या हम अबलायें सदा मूर्ख ही रक्खी जावेंगी क्योंकि देश में कन्यावों का पढ़ाना पाप समझा जाता है।

२५ आप के देश में तमाखू पीने वालों की कुछ कमी न थी पर आज कल सिगरेट व चुर्ट का प्रचार देश में अधिकतर वढ़ गया है। यहां तक कि एक भंगी से लेकर ब्राह्मण तक सब छोटे वड़े लोग विलायती सिगरेट व चुर्ट पीते हैं। जिनकी विक्री आमंद विलायती कंपनियों के क्रोड़ों रुपैयों साल होती है। अतएव वे सिगरेट चुर्ट विलायत में कौन २ से ब्राह्मणों द्वारा वनाये गये हैं और किसके चेप से चुर्टका कागज चिपकायाॐ जाता है ऐसी दशा में हिन्दू धर्म रहा व गया, अथवा पुराने नियमों में कुछ सुधार होना चाहिये वा नहीं!

२६ विलायत से वड़ी२ चटनियें व सिरप याने सिरके तथा दूध की वनी(विलायती मिठाई) Sugar tablet आते हैं और आप की हजारों सन्तान उसे चट कर जाती हैं तौ ऐसी दशा में क्या होना चाहिये ?

२७ आप की लाखों सन्तान आज विलायती चीनी व शीशें के वर्तनों में खाती पीती हैं इस के रोकने का क्या उपाय है ?

२८ आप के हजारों ग्रेजुएटस व उच्चपदस्थ अंग्रेजीदां वावू लोग जो पतलून पहिनते हैं खड़े २ पेशाव करते हैं तौ कहौ कि हिन्दू धर्म रहा या गया ?

२९ आप व आप के भ्रातृगणों में से क्रोड़ों मनुष्य मुसलमान व अंग्रेजों की वनी वर्फ सोडा, लिमिनेट गटकते हुये हिन्दू कहाते हैं तौ आप का पुराना हिन्दू धर्म कैसा ?

३० मंडल के विद्वानों! जहां आप के विचारार्थ व निर्णयार्थ उपरोक्त विषय हैं तहां आप की सेवा में यह छोटी सी जाति अन्वेषण नामक पुस्तक भी है जिस के प्रत्येक अंश पर विचार करके सत्याऽसत्य का निर्णय भी करना है क्यों कि ऐसा मालूम होता है कि जो २ कोटेशन्स हम ने लिखे हैं उन में से कोई २

नोट ॐलोगों ने ऐसा कहा है कि सिगरेट व चुर्टों के कागज अंडे के चेप से चिपकाये जाते हैं।

बातें मिथ्या व द्वेषपूर्ण भी होंगी ऐसा निश्चय हो जाने पर सप्त-खण्डी ग्रन्थ सेवा में भेंट किया जायगा तथा जातिअन्वेषण का दूसरा भाग भी शीघ्र सेवा में भेंट करने का उद्योग किया जयगा हमारा विचार है कि इस पुस्तक में लिखे जाति सम्बन्धी कईएक सङ्केत् भारत के शत्रु व द्वेषियों की मन घड़ंत लीलायें हैं अतएव इन सब का निर्णय हुये बिना इन संङ्केतों को हम अपने सप्तखण्डी हिन्दू जाति वर्ण व्यवस्था कल्पद्रुम नामक ग्रन्थ में लिख कर ग्रन्थ को कलङ्कित करना व देश में वैमनस्य की वृद्धि करना हमारा उद्देश्य नहीं है। इस ही कारण से इन सङ्केतों के हवाले ग्रन्थ कारों के नाम, पुस्तक का नाम व पृष्टाङ्क आदि २ नहीं दिये हैं। ऐसा हम कर सकते थे परन्तु ऐसा करने से भारत के द्वेषी समुदाय को उत्तेजना मिलती और जातियों के चित्त दुखाने के लिये वे लोग उन्हीं पुस्तकों व ग्रन्थों को मंगवा कर जातियों का चित्त दुखाते अतएव उन ग्रन्थ व पुस्तकोंको हम जातिनिर्णय" के समय मण्डल में दिखलावेंगे तहां निर्णय होने पर जो विरुद्ध पक्षके संकेत सत्य सिद्ध होंगे उन्हें हम अपने सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे बाक़ी सम्पूर्ण बातें दूध में से मक्खी की तरह निकाल कर दूर फेंक दी जावेंगी।

३१ भारत में गोवंश की वृद्धि व गोरक्षार्थ क्रय विक्रय सम्बन्धी व्यवस्थायें निकलनी चाहियें।

३२ आपके देश में वूढ़े विवाह प्रणाली विशेषरूप से चलरही है जिससे हजारों कन्यायें विधवा होती जाती हैं और भविष्यत में भ्रूणहत्यायें व गर्भपात आदि करती रहती हैं इसका विचार हो कर प्रतिबन्धक व्यवस्थायें पास होनी चाहिये।

अतएव भारत की ऐसी स्थिती में मण्डल का यह कर्त्तव्य है कि राज्य स्थिती के अनुसार हिन्दूधर्म की कड़ाइयों की शृंखला की कड़ियें ढीली की जावें जिससे हिन्दू धर्म पानी का वुदवुदासा न बना रहे वरन् हिन्दूधर्म की नींव सदा के लिये दृढ़ होजाय।

३३ मगडल का प्रथम उद्देश्य" जाति निर्णय पर विचार" है अतएव जो लाखों हिन्दू जातियें मगडल की ओर आज टकटकी लगायें देख रही हैं उनका सम्यक निर्णय होजाना चाहिये और यथाशक्ति शास्त्रधारानुसार उनका उद्धार करना चाहिये।

३४ मगडल के उद्देश्य संख्या ६ के अनुसार हिन्दू जातिवर्ण व्यवस्था कल्पद्रुम नामक लिखित सप्तखगडी ग्रन्थ पर उदारता पूर्वक सम्मतियें प्रदान करने भी मगडल के विद्वानो का एक कर्त्तव्य रक्खा गया है।

३५ भारतवर्ष में आज कोइ ऐसा मगडल नहीं है जिससे समयानुकूल व देशकी आवश्यकतानुसार व्यवस्थायें निकलें भारत के सम्पूर्ण प्रान्तों से पूछी हुंयी जात्युपत्ति आदि, व अन्यधार्मिक विषयों पर व्यवस्था प्रकाशित करना भी इस मगडल के विद्वानों का एक परम कर्तव्य है।

३६ हिन्दू धर्म्मग्रन्थों में कहीं २ असम्बद्ध प्रलाप, हिंसा कागड प्रक्षिप्त विषय तथा परस्पर पर विरुद्ध जो बातें भरी हैं उनका संशोधन करना भी इस मगडल के महामान्यवर विद्वानों का एक परम कर्त्तव्य रक्खा गया है। क्योंकि ऐसा न होने से हिन्दू धर्म्मावलम्बियों को विपक्षियें के साम्हने शर्माना व आंय, वांय, शांय उत्तर देकर चुप होना पड़ता है जिसका असर भारतीय नव शिक्षित समुदाय पर बुरा पड़ने से नाना रीति द्वारा हिन्दुवों की संख्या कम होती चली जा रहीहै और हिन्दूधर्म की यदि ऐसी ही स्थिती बनी रही तौ हमारा अनुमान है कि एक शताब्दी में भारत में हिन्दू न रहेंगे वरन सम्पूर्णजन ईसाई मुसलमान हो जायेंगे। अतएव समयानुकूल हिन्दूसन्तान के लिये सुदृढ़ पन्थ तय्यार करना भी मगडल का एक कर्तव्य है।

३७ मगडल की ओर से व्यवस्थापत्र निकालकर मगडल की कार्य्यवाहियें तथा व्यवस्थायें प्रकाशित करके भारत का उपकार करना भी मगडल का एक मुख्य उद्देश्य माना गया है।

३८ मगडल के सञ्चालको! महाविद्वानो जातियों के

अग्रगन्तावों हमने अपनी यात्रा से अनुभव किया है तथा नेत्रों से देखा भी है कि आपके देश में ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्यादि उच्च वर्णों में कन्या के माता पितादि आठ आठ वर्ष की कन्यावों के मूल्य के बहत्तर बहत्तर सौ ७२००) रुपैया लेकर बुड्ढे खबीसोंको व्याह देते हैं पर इस कृत्य से उनका उच्चत्व नहीं घटता है अतएव मण्डल को उचित व्यवस्था पास करके देश का कल्याण करना चाहिये।

३९ आपके देश में हरसाल अंग्रेजों के पहिने हुये लाखोंकोट व डवल कोट आते हैं और उनको आपही के देश के भाई वन्धु खरीद २ कर पहिन्ते हैं अतएव ऐसी दशा में आप किस २ को रोक सकते हैं और कौन मान सकता है ? अतएव छूत अछूत के नियमों में कुछ परिवर्तन होना चाहिये या नहीं ? यह विचारणीय स्थल है।

४० आपके देश में गोपालन के स्थान में हजारों लोग जो कुत्ते पालते हैं, कुत्तों को गोदियों में खिलाते हैं, उसे प्यार करते हैं कोई २ उनका चुम्मन भी करते देखे गये हैं पर वे जातिच्युत नहीं किये जाते हैं तथा इससे उनके उच्चत्व में भी कुछ वट्टा नहीं लगता ह ? अतएव कहने का अभिप्राय यह है कि जितनी प्रतिष्ठा आपके देश में कुत्ते की है उतनी प्रतिष्ठा आप अपने हिन्दू भाई चमार, मोची आदि जातियों की भी नहीं करते हैं तो कहिये हिन्दूधर्म का गौरव उनके हृदय में कैसा होगा ! और क्या ऐसी दशा में वे हिन्दू धर्म में स्थिर रह सकते हैं ! क्या वे हिन्दूधर्मकी रक्षा के लिये ऐसी दशा में प्राण गवाने को तय्यार हो सकते हैं कदापि नहीं ! यह ही कारण है कि थोड़े से मुसलमान सदा हिन्दुवों को दवाये रहते हैं।

४१ आप के हजारों देशी भाई अपने हाथों से वड़े २ लाग Long. बूंट पहिन्ते हैं, जूते व चमड़ों की दुकानें करते हैं परन्तु वे अपनी २ उच्च जातियों में सम्मलित हैं अतएव जाति निर्णय

करने व वर्णव्यवस्था देनेके विषय में ही कड़ाई क्यों किया जाती है ? ऐसी अवस्था में मण्डल को उदारभाव ग्रहण करने चाहिये।

४२ भारत के उच्च ब्राह्मण, क्षत्रिय, वश्य, समुदायों में लाखों मनुष्य ऐसे हैं जो अपने शास्त्रोक्त कर्मों के विरुद्ध करते हुये भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य माने जाते हैं अतएव ऐसी दशा में वे जातियें जिन में किसी कारण से किसी काल में कोई शास्त्रविरुद्ध रीति व कर्तव्य कर्म प्रचिलित था परन्तु वर्तमान में वे बड़ी उज्वल तथा कर्म धर्म से पवित्र हैं उन्हें उन की स्थिती के अनुसार वर्ण व्यवस्था क्यों नहीं दी जाय ? और उन्हीं के साथ इतनी कड़ाई क्यों किया जाती है ? अतएव जिस प्रकार प्रचलित प्रणाली द्वारा प्रसिद्ध ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों के शास्त्र विरुद्ध कई एक कर्तव्यों पर विशेष दृष्टि नहीं दी जाती है और उन पर दया किया जाती है तैसे ही कायस्थ, कुर्म्मी, खत्री, जाट, गूजर, अहीर, अहूर, काछी, कोइरी, औसवाल, मुराव, बड़गूजर, भट्टी' अग्रवाल जादों, जैसवार, किरार, वैसवार, भाटिया, महाजन, माली तेली गड़रिये, दर्जी, लुहार, कुम्हार, सुनार, बढ़ई, नाई, बारी, सैनी, काछी, ओझा, कोइरी, कोरी, मोची, लोधा, किसान, तम्बोली, कसेरे, ठठेरे, उमेर, गहोई, अयोध्यावासी, बाथम, रस्तोगी, दधीच, छींपा, पटुवा, दूसर, भार्गव, कलवार, कलाल, लूनिया लवणिया, रोहितगी, चौसेन, कुमारतले, साध, रैन, रार बिश्नोई हलवाई, डंगी, रावा, भतिया, नियारिया, वागवान, कबड़िया, कूंजड़ा, सोइरी, किसान, खागी, गोरछा, कुनेड़ा, घरुक, गोंड गुड़िया, कामकर, घरगाही, तियार, चई, कठेरा, सेजवारी, गंधर्प, लखेरा, चूड़ीहार, मनिहार, बनजारा, कूटा, ओढ़, मेव मीना, डलेरा, भील, सगद्रोप आदि २ जातियें उत्तम हैं और कृपा की अधिकारिणी हैं क्योंकि देशस्थिती व राज्यस्थिती के अनुसार इन जातियों के आचार विचार व स्थिती ऐसी बुरी नहीं है जैसी कि किसी काल में होगी और तदनुसार किसी २ ऐतिहासिक विद्वान ने इन के विरुद्ध लिखा भी है अतएव आवश्यकता यह

है कि इन जातियों को उत्तेजना देकर इनका भाग्य बढ़ाया जाय तब ही देश का कल्याण होगा ।

भारत की हिन्दू जातियो ! मैं आप को विश्वास दिलाता हूं कि इस मण्डल द्वारा आप सब का कल्याण होगा आपके सिर पर आरा चलाने वाले समुदाय को अपनी शैली व क्रम बदलना पड़ेगा, मैं कमर बांधकर तथा बड़ी बड़ी हानियें उठाकर ही आप सब के उद्धार के लिये खड़ा हुआ हूं अतएव आपका भी कर्तव्य है कि आप लोग मण्डल के सहायक हों मेरी पुस्तक व ग्रन्थ जो छपें उन्हें खरीद कर मेरे उत्साह को बढ़ावें तथा मण्डल की " हिन्दू सार्व भौम प्रबंधकर्तृ सभा के सभासद हूजिये जिससे आप को अपनी जाति की वकालत करने का समय मिले ।

१ अकाली:- यह नाम दो शब्दों के योग से बना है अ+काल = अकाल अर्थात् नहीं है काल (मौत) जिनका अतएव जो अपने उत्तम साधन द्वारा अकाल को ग्रहण करे वह कहाया अकाली, दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि धर्म की रक्षा के हेतु जिन्हों ने काल यानें मौत को भी जीवन समझ लिया वे कहाये अकाली पंजाबी में "अकाली पुरुष " परमेश्वर के अर्थ में कहा जाता है हिन्दुवों के परमपुनीत गीता व मनुस्मृति में लिखा है कि जो लोग धर्म की रक्षा के लिये अपने प्राणों की बलि चढ़ाते हैं वे जीवन मुक्त होकर परमात्मा की लौ में लौ मिलजाते हैं अतएव सिक्खों के द्वारा हिन्दूधर्म की रक्षा हुयी इसलिये उस सम्प्रदाय का नाम " अकाली " कहाया जा सकता है । इस सम्प्रदाय के द्वारा का नाम "अकाली" कहाया जा सकता है । इस सम्प्रदाय के द्वारा भारत का बड़ा भला हुआ है ये भारत के और भुकड़ बैरागियों की तरह से नहीं हैं किन्तु मान्य दृष्टि से देखे जाने योग्य हैं ।

ये काले कपड़े पहिनते हैं सिर पर लोहे का चक्र रखते हैं और गुरु गोविन्द सिंह जी को मानते हैं यह एक धार्मिक हिन्दु जाति है इस सम्प्रदाय के आचार्य गुरू गोविन्द जी हुये इस

जाति ने हिन्दु धर्म्म को नाश होने से बचाया अर्थात् मुसलमान बादशाहों के अत्याचार के समय जब कि तलवारके बल से हिन्दु सन्तान मुसलमान बनायी जातीं थीं उस समय परम पूज्य गुरू गोविंदसिंह जी ने अपने शिष्यवर्गों के लिये यह मर्य्यादा बांधी थी कि प्रत्येक को ये पांच वस्तुयें सदा अपने पास रखनी चाहियें।

१– हाथ में लोहे का कड़ा।

२– कंगा बाल सुलझाने को।

३– कच्छ यानी जांग्या।

४– कर्द (छुरा) दुश्मनों से लड़ने को तथा झटका करने को।

५– सम्पूर्ण सिर पर केश रखना।

अकाली लोग इन पांचो ककों को मोक्ष के देनेवाले समझते हैं देवी को पूजते हैं मांस भी खाते हैं परन्तु अपनेही हाथ का झटका किया हुआ खाते हैं न कि मुसलमानके हाथ का, ये लोग सच्चे क्षत्रिय वीर कहलाने के योग्य हैं इस सम्प्रदाय के आचार्य्य गुरु गोविंद सिंह जी थे।

उनकी जीवनी व उनसे देश को क्या २ लाभ पहुंचे आदि आदि विवरण अपने सप्तखण्डी ग्रन्थ में देंगे इस सम्प्रदाय में किसी महाशय के पास इस सम्प्रदाय के आचार्य्यों में से किसी की फोटो हो तो मंडलको भेजदें ताकि उसको हम अपने ग्रन्थमें देवें व इस सम्प्रदाय का विशेष विवरण भी वहां ही देंगे।

(२) अग्निहोत्री:—यह एकप्रकारकी ब्राह्मण जातिका भेद है वैदिकधर्मावलम्बियों के राज्य समय जब यज्ञादि विशेष रूप से होते थे उस समय के वेदपाठी यज्ञक्रिया में कुशल ब्राह्मणों को "अग्निहोत्री,, पदवी मिली थी अथवा जो ब्राह्मण समुदाय नित्य दोनों समय अग्निहोत्र करते थे वे अग्निहोत्री कहाते थे परन्तु ऐसा भी लेख मिलता है कि जो लोग मंत्र शक्ति द्वारा यज्ञारम्भ में अग्नि प्रदीप्त कर सकते थे वे अग्निहोत्री कहाते थे आज कल काष्ठ को मथ कर अग्निप्रदीप्त की जाती है पूर्व मंत्रशक्ति व योग

शक्ति द्वारा अग्नि उत्पन्न की जाती थी इन्हीं अग्निहोत्रियों का वंश आज कल भी अग्नि होत्री ही कहा जाता है परन्तु वर्तमान काल में जो अग्निहोत्री कहाते हैं वे प्राय: कोरम कोर निरक्षर भाटाचार्य्य हैं अन्यथा पूर्व समय के अग्निहोत्री वंश में " गार्ह-पत्याग्नि ,, का सर्वथा सेवन होता था और उन गृहस्थियों के घर में फेरों के समय की अग्नि मरणान्तर तक रक्खी रहा करती थी पर आज कल सब दशा उलट पलट हो गयी पंच गौड़ ब्राह्मण तो सदा से साधारण विद्वान होते थे परन्तु पञ्चद्रविड़ समुदाय कर्मकाण्डी व वेदपाठी सदा से ही होता आया है अतएव अग्निहोत्री जाति विशेष रूप से दक्षिण प्रान्त में है ।

इन लोगों के यहां अपने २ मकान में एक २ छोटा व बड़ा कमरा अलग रक्खा जाता है जिस में ये लोग तीन कुण्ड बनवाते हैं एक कुण्ड में गार्हपत्याग्नि जलती रहती है जो फेरों के समय की अग्नि होती है दूसरा कुण्ड हवनीय कुण्ड कहाता है जिस में ये लोग नैत्तिक हवन करते हैं और तीसरा कुण्ड शमशान कुण्ड कहाता है उस की अग्नि केवल मृतक के अर्थ काम आती है ।

गार्हपत्याग्निकुंड के पास एक १२ अङ्गुल लम्बी चौड़ी वेदी बनायी जाती है जिसमें चार २ अंगुल पर रंगविरंगी की जाकर देवतावों का स्थापन होता है । हवनीय कुंड जितना ऊपर से चौड़ा होता है उसका चतुर्थांश पैंद में होता है अर्थात् पैंदा ३ अंगुल हो तो ऊपर से लम्बा चौड़ा १२ अंगुल यदि पैंदा ४ अंगुल हो तो ऊपर से १६ अंगुल लम्बा चौड़ा बनाया जाता है ये लोग सामवेद व यजुर्वेद के मन्त्रों को पढ़पढ़ कर उस कुंड में आहुतियें दिया करते हैं ।

जब कोई बृहत नैमित्तिक यज्ञ किया जाता है तब यथाशक्ति गार्हपत्याग्नि मंगवायी जाती है और इसके अभाव में अरणी को मथ कर अग्नि उत्पन्न की जाती है कश्मीर के इतिहास से जाना जाता है कि प्राचीन काल में वहां ६० हजार अग्निहोत्री ब्राह्मण थे।

इस जाति के विषय में बहुत कुछ विवर्णसंग्रह किया है वह सब ग्रन्थ में दिया जायगा।

(३) अगरिया:—यह एक युक्त प्रदेश की जाति है इस का काम लोहे का काम करना है यह जाति मिर्जापुर के जिले में विशेष रूप से है इस जाति को युक्त प्रदेश की गवर्नमेंट ने भंगियों की श्रेणी याने १२ वें स्थान में लिखी है कि ये लोग गोमांस तथा कीड़े मकोड़े खाने वाले हैं अतएव अस्पर्शनीय हैं इनकी आबादी युक्तप्रदेश में ११८६ है जिसमें ५५३ पुरुष और ६३३ स्त्रियें हैं स्त्रियें पुरुषों की अपेक्षा विशेष होने का सौभाग्य इस जाति को प्राप्त है मिर्जापुर की ओर इन की स्थिती अच्छी नहीं है।

(४) अगस्त्य ब्राह्मण:—यह एक ब्राह्मणोंका भेद है इनकी उत्पत्ति के विषय में ऐसा लेख मिला है कि वैवस्वतमनु के अनन्तर क्रतु ऋषि निःसन्तान रहे तिन्होंने अगस्त्य ऋषि के पुत्र इध्मवाह को गोद लेकर अपना वंश प्रसिद्ध किया उसकी सन्तान अगस्त्य ब्राह्मणकहातेहैं कहीं ये अगस्त्य ब्राह्मण कहातेहैं कहींपञ्चगौड़ों में ही अगस्त्यगोत्र वाले गौड़, सनाढ्य कान्यकुब्ज आदि आदि मिश्रित होगये हैं ये आचार विचार में बड़े श्रेष्ठ हैं इनका विशेष विवर्ण समस्तखण्डी ग्रन्थ में मण्डल के निर्णयान्तर लिखेंगे।

(५) अगस्तवाल:—यह एक हिन्दू जाति है राजपूत वंश में से है इनका आदि स्थान युक्तप्रदेशान्तर्गत बनारस के जिले में "हवेली" नामक पर्गना है किसी २ विद्वान् ने अपने ग्रन्थ में इस जाति को राजपूत वंशी लिखा है हिन्दी भाषा में प्रायः र व ल परस्पर बदल जाते हैं अतएव ये लोग कहीं पर "अगस्तवार" और कहीं पर "अगस्तवाल" कहे जाते हैं ऐसा प्रतीत होता है कि ये लोग अगस्त्य ऋषि की सन्तान होने से अगस्तवाल व अगस्तवार कहाने लगे हैं।

इनका विवर्ण समस्तखण्डी ग्रन्थ में विशेष रूप से लिखेंगे।

(६) **अगसाला**:—यह एक सुनार जातिका भेद है जो माइसोर राज्य में पायी जाती है इस को अक्साला व अर्कसाला भी कहते हैं ये माईसोर राज्य के पंचसलारों (सुनारों) में शिरोमणि कुल है। इन के आचार विचार भी इन के अन्य स्वजातीय वर्गों की अपेक्षा उत्तम हैं।

इन्हें कोई विद्वान् ब्राह्मण वर्ण में तथा कोई क्षत्रिय वर्ण में लिखते हैं, परन्तु हम इन का विशेषत्व ग्रन्थ में लिखेंगे । यह जाति उत्तम कर्म की अधिकारिणी भी है।

(७) **अगसिया**:—यह एक माइसोर राज्य की धोबी जाति है बंगाल में धोबी को धोया कहते हैं युक्तप्रदेश में धोबी व बरेठा मध्यप्रदेश में वरठी और पत दक्षिण में वनान तथा अगसिया और तैलंग देश में चकली कहाते हैं इन का धन्दा सब तरह के मैले कपड़े धोना है अतएव यह सर्वत्र ही एक अपवित्र जाति मानी जाती है परन्तु तैलंग देश में एक यह विचित्रता है कि वहां यह जाति इस देश के कहार महरों की तरह घर गृहस्थी के कामों के योग्य समझे जाकर रक्खे जाते हैं यह ही नहीं किन्तु वहां ये लोग गवर्नमेन्ट की नौकरियों में भी घुसते जाते हैं।

इन का विशेष विवर्ण धोबी जाति के साथ ग्रन्थ में लिखेंगे।

(८) **अगूरी**:—यह बंगाल प्रान्तीय जाति है ये लोग अपने को क्षत्रिय मानते हैं बंगाल के वर्द्धवान जिले में ये विशेष हैं कोई २ लोग इस जाति को क्षत्रिय नहीं मानते हैं क्योंकि ये इस जाति की उत्पत्ति विषय में लोगों ने ऐसा मान रक्खा है कि:—

क्षत्रियाच्छूद्र कन्यायां क्रूराचार बिहारवान ।

अर्थात् क्षत्रिय के वीर्य्य व शूद्रा स्त्री से जो सन्तान हुयी वह अगूरी कहायी कदाचित् ऐसा हो ! परन्तु वर्णव्यवस्था कमीशन के ७५१ प्रश्नों के उत्तर आने पर ही हम अपने हिन्दू जाति वर्ण

व्यवस्था कल्पद्रुम नामक सप्तखंडी ग्रन्थ में इस जाति के क्षत्रियत्व विषयक निर्णय करेंगे क्योंकि ऐसा प्रतीति होता है कि लोगों ने द्वेष भाव से इस जाति को शूद्र ठहराने की इच्छा से ऐसा लिख मारा है इस जाति ने हमारे जनरल नोटिस के अनुसार हमारे मंडल को अपनी उत्तमता विषय में कुछ भी प्रमाण नहीं भेजे, देखें अब भी कुछ प्रमाण आते है या नहीं ?

साधारण जन समुदाय इस जाति को क्षत्रिय वर्ण में मानता है। विशेष विवर्ण सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे।

(९) अग्रभिक्षु:— यह एक पतित ब्राह्मणों का भेद हैं। ये मृतक के वस्त्रादि का दान ग्रहण करते हैं हिन्दुधर्म शास्त्रों में हाथी घोड़ा, सोना, लोहा, तेल, तिल, चमड़ा, आदि अनेकों वस्तुओं का दान लेना तथा सूतक के अन्दर दान लेना अथवा मृतक का कप्फन आदि लेना, सपिंडी पर जीमना एकादशा व तीये के दिन का दान लेना आदि निषिद्ध माने हैं अतएव ऐसे दान लेने वाला अग्रभिक्षु कहाता है प्रायः ऐसे दान लेने वाले को उच्च जाति समूह जातिपतित कर देती है युक्त प्रदेश में इन्हें महा ब्राह्मण व कट्टया, बंगाल में अग्रदानी, उड़ीसा में अग्रभिक्षु, और पश्चिम में आचारी व आचारज कहाते हैं। प्रायः ऐसे मनुष्यों के साथ व स्पर्श से, उच्च जाति दोष मानती हैं और स्पर्श हो जाने पर स्नान से शुद्धि होती हैं शेष ग्रन्थ में देखना।

(१०) अग्रदानी:— यह एक बंगाल प्रान्तीय कट्टया महा ब्राह्मणों की जाति का नाम है इनका विशेष विवर्ण "अग्रभिक्षु ,, जाति के सदृश समझना।

(११) अग्रवाल वैश्य:— यह भारत की व्यापार करने वाली एक जाति समुदाय है यह लोग आगरा व अग्रोहा के राजा के राजा अग्रसेन की सन्तान हैं ऐसा ही यह कहते हैं तथा ऐसा ही पता लगता है ऐसा ही सब मानते हैं पर यह भी बात सर्व

सम्मति से सिद्ध है कि राजा अग्र क्षत्रिय वंशी राजा थे अतएव इस की सन्तान अग्रवाल भी क्षत्रिय वर्ण होने चाहिये वैश्य वर्ण में कदापि नहीं। यदि इनको व्यापार कर्ता धर्ता समझकर वैश्य माने जाते हैं तो कर्म के अनुसार वर्ण व्यवस्था मानना ये आज कल आर्य्यसमाज का सिद्धांत माना जाता है थोड़ी देर के लिये इस ही आधार को सत्य मानें तो ये लोग सैकड़ों वर्षों से यज्ञोपवीत रहित हैं इन में कठिनता से सौ में पांच मनुष्य यज्ञोपवीत वाले होंगे अतएव इन की व्रात्य संज्ञा है तो व्रात्यों का वैश्य वर्ण कैसे ? व्रात्यों के हाथ का तो जल भी ग्रहण नहीं करना चाहिये यथा:—

अतः ऊर्ध्वं त्रयोऽप्येते यथा कालमसंस्कृताः।
सावित्री पतिता व्रात्या भवन्त्यार्यविगर्हिताः॥
नैतैरपूतैर्विधिवदापद्यपि हि कर्हिचित्।
ब्राह्मान्यौनांश्च सम्बन्धानाचरेद् ब्राह्मणः सह॥

मनु० अ० २ श्लोक ३९, ४०

अर्थात् अपने २ नियत काल से यज्ञोपवीत रहित होने से आर्य्यों में निन्दनीय होते हैं क्योंकि इस की संज्ञा व्रात्य होजाती है इन व्रात्यों का जिनका प्रायश्चित्त विधिपूर्वक नहीं हुआ है उनके साथ आपत्काल में भी ब्राह्मण विद्या व योनि का सम्बन्ध न करे॥

अतएव इस शास्त्राज्ञा के धारानुसार विद्वानों ने अग्रवाल, ओसवाल, जैनी पोरवाल, तथा कायस्थादि यज्ञोपवीत रहित जातियों के लिये व्रात्य संज्ञक होने से आपत्ति प्रकट किया है इस लिये इनका वर्ण क्या लिखा जाय? यह ही विवाद है एक प्रतिष्ठित अंग्रेज विद्वान ने चमारों को " अग्रवालों से निकले " लिखा है अतएव अग्रवालों का व चमारों का भ्रातृ सम्बन्ध × है या नहीं यह भी

× See C. S. W. C. C. and T. Page.

निर्णय होना चाहिये इस की आख्यायिका जो प्रतिष्ठित विद्वानों ने लिखी है उस का सारांश मात्र इस प्रकार से है कि, "एक दफे एक अग्रवाल ने अनजाने अपनी लड़की किसी चमार को ब्याह दी परन्तु कुछ दिन के बाद जब लड़के के पिता ने अपना जाति सम्बन्ध प्रकट किया तब उस अग्रवाल ने अपने जमाई को मारडाला तब वह भूत होगया और अग्रवालों के मुखियों को कष्ट पहुंचाने लगा तब सब ने उसे प्रसन्न करने के लिये उस का पूजन विवाह में किया जाना निश्चय किया। जिसकी विधि इस प्रकार से हैं कि एक चमड़े की थैली लेकर उस में कुछ सूखे फल लेकर मंडप में बांध देते हैं और उसके नीचे दीपक जलाते हैं और फिर देवता की तरह इसका पूजन किया जाता है इस को "ओहर व ओहड़" कहते हैं जिसका फल स्त्रियों का विधवा न होना माना जाता है। इस ही के सम्बन्ध की दूसरी आख्यायिका जो विद्वानों ने लिखी है उसे हम ने चमार जाति के साथ लिखी है यहां देख लेना चाहिये विद्वज्जन इन उपरोक्त शंकाओं पर अपनी २ सम्मति मंडल को सप्रमाण भेजें।

कहीं २ के विद्वानों ने हमारी जाति यात्रा में इनके विषय में प्रायः यह भी शङ्का कियी है कि ये लोग विवाह के निमित्त केवल अपना गोत्र टालते हैं माता का नहीं अतएव माता के गोत्र में ही लड़का भी ब्याह लावे है अर्थात् जिस गोत्र की लड़के की माता है उस ही गोत्र की लड़के की स्त्री भी है, जिस गोत्र की लड़के की स्त्री है उस ही गोत्र के लड़के के लड़के की स्त्री है अतएव ऐसी विवाह प्रणाली को भारतीय तार्किकों ने मौसी का बेटे के साथ विवाह होना बतलाया है। यह कृत्य धर्म्म शास्त्र के नियमों से भी विरुद्ध है अतएव ऐसी दशा में लोगों ने कहा है कि यह नियम तो मुसल्मानों से भी चढ़ कर है।

किसी २ विद्वान ने यह भी लिखा है कि इस जाति में कहीं २ गधे का भी पूजन होता है॥

इन के १७॥ गोत्र होते हैं तथा इन में १२॥ न्यात होती हैं जिन के साथ इन का खान पान एक है पर वेटी व्यवहार अपनी अपनी जाति में ही करते हैं यथा:—

दोहा

खंड खंडेले में मिली साढ़े बाराह न्यात ।
खंडप्रस्त नृप के समय जीमन दाल सुं भात ॥
बेटी अपनी जात में रोटी शामिल होय ।
कच्ची पक्की दूध की भिन्न भास नहीं होय ॥

अर्थात् खंडेलेके राजाखंडप्रस्तके समय वैश्योंकी १२॥ जातियें इकट्ठी हुयीं जिन के वारें में राजा ने यह निश्चय किया कि तुम सब लोग परस्पर कच्ची पक्की में आपस में परहेज मत करो अतएव खाने पीने में सब शामिल रहो, पर वेटी व्यवहार अपनी २ जाति में करो । साढ़े बारह न्यातों के नाम ये हैं:—

१ अजुध्यावासी, २ दूसर ३ दूंसर ४ जैसवार ५ लोहिया ६ माहुर ७ श्रीमाल ८ पल्लीवाल ९ पोरवाल १० ओसवाल ११ खंडेलवाल और १२ रस्तोगी ।

कहां तक क्या क्या लिखें ? इस जाति का बहुत कुछ विवर्ण संग्रह किया है परन्तु स्थानाऽभाव से रुकना पड़ता है अतएव उपरोक्त शङ्कावों का निर्णय होने पर ही निज सम्मति सहित विवर्ण अपने सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे तहां ही किसी योग्य उदार अग्रवाल का फोटो व उन की जीवनी भी देंगे। प्रायः विद्वानों की शङ्का है कि मनु जी की आज्ञानुसार विवाह के समय यह जाति गोत्र व सात पीढ़ियें टाल कर विवाह नहीं करती है ? तथा जब राजा अग्रसैन के यहां से १७॥ बेटे हुये और उन्हीं के नामों से गोत्र चले हैं तो वे परस्पर १७॥ गोत्र वाले अग्रवाल एक बाप के बेटे भाई हैं इस लिये एक बाप के बेटे भाइयों में परस्पर विवाह व योनि सम्बन्ध होना महा अधर्म है ।

(१२) अग्रहारी बनिया } यह युक्त प्रदेश की एक जाति है ये लोग अपने को वैश्य बतलाते हैं और ऐसी ही सम्मतियें प्राप्त होती हैं इन की उत्पत्ति के विषय एक विद्वान ने ऐसा लिखा है कि कोई अग्रवाल महाशय किसी ब्राह्मणी से फस गये तिस से जो सन्तान हुयी वह अग्रहारी कहायी।

एक दूसरे विद्वान की यह सम्मति है कि यह नाम, अग्र + आहारी इन दो शब्दों से बन कर अग्राहारी हुवा और " अकः सवर्णे दीर्घः ,, इस सूत्र से "अग्राहारी,, हो गया जिस का अर्थ नियत समय से पहिले ही खा लेने वाला ऐसा होता है। अतएव ऐसा प्रतीत होता है कि ब्राह्मण भोजन के समय में ये लोग भूखे न रह सके हों और ब्राह्मणों से पहिले ही जीमने लग गये हों तब इन्हें यह कहा गया हो कि तुम तो अग्रहारी हो।

तीसरे विद्वान् की यह सम्मति है कि ये लोग अगर का बहुत ही व्यापार करते थे इस से लोगों ने इन्हें अगर को हरने वाले व अगर * व्यापारार्थ संग्रह रखने वाले ऐसा होता है।

चौथे विद्वान का यह मत है कि ये लोग पहिले अगरोहा वाले व वारे बनिये कहाते कहाते, अमरोहा हारे कहाने लगे जिस का बदल कर अग्रहारी हो गया। आदि आदि अनेकों भिन्न २ मत हैं, यह जाति अपने को राजवंशी वैश्य कहती है और नपत्र पद अग्रवालों से बढ़ चढ़ कर मानती है परन्तु अग्रवाल लोग इस का खंडन करते हैं विद्वान तो इनका पद ऊँचा मानते हैं। यह जाति युक्त प्रदेश के अनेकों जिलों में से विशेष कर बनारस के ज़िले में है इस जाति को युक्त प्रदेश की गवर्नमेन्ट ने प्रसिद्ध २ बनियों के साथ न लिख कर छठी श्रेणी में उन जातियों के साथ लिखी है जो बनियों में आ मिली हैं।

---

* अगर तगर = सुगन्धित काष्ट का नाम है।

इस जाति के १७ भेदों का पता लगा कर विवर्ण संग्रह किया है विशेष कहां तक लिखें इस जाति के विषय अनेकों अच्छे व बुरे प्रमाणों का संग्रह किया है उन्हें यहां स्थानाऽभाव से न लिख कर विज्ञप्तरूप से सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे क्योंकि उपरोक्त विद्वानों की भिन्न २ सम्मतियों पर हमें भी सन्देह है अतएव वर्णव्यवस्था मंडल द्वारा निर्णय होने तथा वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर इस जाति से प्राप्त होने पर ही विशेष रूप से लिखा जाना सम्भव है। देखें ये जाति इन बातों का क्या समाधान करती है ?।

बनारस में इस जाति की स्थिती व मान मर्यादा चढ़ बढ़ कर है आचार विचार व खान पान से भी शुद्ध है व्यापार कुशल है किन्हीं २ विद्वानों ने इस जाति को उच्च वैश्यों की श्रेणी में भी बतलाया है।

(१३) **अघोरी**—ये एक नीच जाति के मनुष्यों के समुदाय का पंथ है यह नाम पंथ के कारण से पड़ा है चाहे जो जाति का मनुष्य इस में सम्मलित हो सकता है। ये लोग बिगड़े हुये औघड़ों में से हैं इन में से अनेकों स्यानपत व झाड़ा फूंकी द्वारा लोगों का धन हरण करते हैं और अपने को सिद्ध बतलाते हैं यह लोग दुकान २ पैसा उगाह कर जीवन निर्वाह करते हैं और जो कोई इन्हें पैसा नहीं देवे तो पाखाना और पेशाब कर देते हैं और उस को खा भी जाते हैं ये लोग प्रायः मसानों में टिका करते हैं और मसान जगाने तथा भूत सिद्धि का भी दावा करते हैं जिन बालक बालिकावों का ये मंत्र तंत्र व झाड़ा फूंकी द्वारा इलाज करते हैं उनका गू व मूत खाते पीते ये लोग देखे गये हैं। जब किसी को महाभ्रष्टता के शब्दों से कोई सम्बोधन करते हैं तो प्रायः ऐसा कहा जाता है कि आप तो बड़े " अघोरी " हैं। इस सम्प्रदाय के विशेष महत्व की बातें जो कि हिन्दूधर्म का एक अङ्ग मानी जाती हैं उन का विवर्ण तथा इस सम्प्रदाय के आचार्य्य की जीवनी और यदि प्राप्त हो सकी तो उन की फोटो आदि २ विवर्ण

विस्तारपूर्वक अपने सप्तखंडी ग्रन्थ में देंगे यहां तो बहुत ही सूक्ष्म सरूप से लिखा है इस पंथ में यदि कोई योग्य मनुष्य हो तो इस सम्प्रदाय के आचार्य्य ठाकुर किन्नाराम जी का फोटो व पन्थ का विवर्ण मंडल को भेज देवे।

(१४) अजमीढ़ सुनार } एककोषमें अजमीढ़का नाम युधिष्ठिरभी लिखा है यह एक क्षत्रिय राजा का नाम है इन्हीं की बसायी हुयी अजमेर है जो पहिले अजमेढ़ कहाती थी, अजमेढ़ कहाते कहाते अजमेड़ कहायी और फिर उसका नाम अजमेड़ से अजमेर होगया इनकी विशेष कथा पुराणों में है इन्हीं के नाम से अजमेर के तारागढ़ को अजदुर्ग भी कहते थे, अजमेर प्रान्त के सम्पूर्ण मेर लोग राजपूत वंश में हैं ये कहीं मेर व कहीं मेड़ कहाते हैं, मेड़ सुनार भी इसही राजा अजमीढ़ की सन्तान हैं यदि असल में देखा जावे तो अजमेर के मालिक मेढ़ सुनार व मेर मेड़ में कुछ भेद नहीं है इन्हीं के नाम से अजमेर का जिला अजमेर मेरवाड़ा कहाता है परशुराम जी के समय में इन क्षत्रिय वंशों पर बड़ी विपत्ती पड़ी अतएव कोई खेती व कोई कृषी करके निर्वाह करने लगे। ये उपरोक्त लेख भाषाभाषी ऐतिहासिकों की भी सम्मत्यानुसार है। ये लोग अपने को क्षत्रिय मानते भी हैं परन्तु साधारण हिन्दूजनसमुदाय ने इस जाति को एक नीच श्रेणी की जाति में माना है धर्मशास्त्रों में सुनारों को बहुत बुरा भी लिखा है पर इस जाति ने वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर भी नहीं दिये और न मंडल के जनरल नोटिस के आधारानुसार कोई प्रमाण ही भेजे ये लोग कहीं जनेऊ पहिन्ते हैं कहीं नहीं, कोई इनको जनेउ का अधिकारी बतलाता है कोई इन्हेंसंकर वर्ण में बतलाता है युक्तप्रदेश की गणना में भी यह जाति क्षत्रियों के साथ नहीं लिखी गयी है। युक्तप्रदेश व राजपूताने में हिन्दूपवलिक मेढ़ सुनार व मेरों के क्षत्रियत्व विषय विरुद्ध भाव रखती है इनके विषय के अच्छे व बुरे प्रमाणों का संग्रह १०० पत्रों में

किया है अतएव निर्णयान्तर स्वसम्मति सहित विवर्ण सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे।

(१५) अजुध्या वासी वनिये } यह एक वैश्य जाति है विशेप रूप से युक्त प्रदेश में पायी जाती है इन का आदि स्थान हिन्दुओं की सप्त पुरियों में मुख्य अयोध्यापुरी तहां ही से इनका निकास होने के कारण ये लोग अन्य स्थानों में "अयोध्यावासी,, नाम से प्रसिद्ध हुये हैं इन की कुछ वस्ती विहार में भी है अयोध्यापुरी से निकास होने के कारण यह वैश्य समुदाय मान्य दृष्टि से देखा जाता है युक्त प्रदेश के फरुखावाद; वारावंकी; वांदा इलाहावाद और अवध में इन की संख्या विशेप है इस ही कारण से ये कहीं २ "अवधिये" भी कहाते हैं इनका विशेप मान्य इस कारण से है कि जव श्री सीता महारानी को रावण हर ले गया और श्री रामचन्द्र जी ने लंका पर चढ़ाई की उस समय के अयोध्या के दुख ये वैश्य सहन न कर सके और आर्द्र चित्त होकर फतेहपुर को चल वसे इस भक्ति स्मर्णार्थ इन का नाम अयोध्यावासी वनियां हुआ यद्यपि इस जाति में धन की स्थिती अग्रवालों की जैसी नहीं है तथापि मान मर्य्यादा व जातिस्थिती इनकी भी अग्रवालों से कुछ कम नहीं है अग्रवालों की १२॥ न्यात में से प्रथम नम्वर पर हैं

जिस प्रकार अग्रवालों में दस्से वीसे दो भेद होते हैं वैसे ही ही इन में भी नीचे ऊंच दो भेद होते हैं ऊंचे वे कहाते हैं जिनकी उत्पत्ति शुद्ध है और नीच वे कहाते हैं जो दूसरी जाति की स्त्री के साथ हराम से पैदा हुये हैं ऐसी एक विद्वान् की सम्मति है पर हमें जो अन्यअच्छे व बुरे प्रमाण मिले हैं उन के तथा वर्णव्यवस्था कमीशन के निर्धारित २५१ प्रश्नों के उत्तर यदि इस जाति के यहां से आये तौ उनके आधार पर निर्णय होने पर ही हम अपनी निज की सम्मति सहित इस जाति का विशेप विवर्ण सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे।

(१६) अट्टालिकाकार मिस्त्री राजकारीगर } यह शिल्प विद्या के जानने वाली जाति का नाम है। अट्टालिका और कार इन दो शब्दों के योग से बनकर अट्टालिकाकार शब्द हुआ है, जिसका अर्थ महलों का व राजग्रह के बनाने वाले के हैं कोषकार ने इनका दूसरा नाम प्रासादकार भी लिखा है इनको भाषा में कारीगर मिस्त्री व राज भी कहते हैं ये लोग मकान बनने व पत्थर घड़ने का भी काम करते हैं। परन्तु कहीं ये कारीगरी करते हैं कहीं मकान बनाते हैं, कहीं पत्थर फोड़ते हैं कहीं पत्थर घड़ते हैं, और कहीं पत्थरों की मूर्ति व अन्य नाना प्रकार के सामान तय्यार करते हैं कहीं व्यापार कहीं ठेके लेते हैं कहीं बड़े ओहदों पर नौकर हैं।

ये लोग अपने को क्षत्रिय बतलाते हैं और किसी विद्वान् ने इस जाति को क्षत्रिय भी माना है किसी २ विद्वान ने इनका वर्ण क्षत्रिय लिखा है अन्य कुम्हारों के साथ इनका किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है यह उन्नतिशील जाति है इनका रहन सहन व व्यवहार भी उच्चवान सुना गया है। इस जाति ने वर्णव्यवस्था कमीशन द्वारा अन्वेषण नहीं कराया अतएव उपरोक्त बातों का यथार्थ सार क्या है वह सब विवर्ण निज सम्मति सहित निर्णयान्तर सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे। वर्णव्यवस्था मंडल इस जाति पर विशेष ध्यान देगी ऐसी आशा है। कुछ विश्वासनीय लेखों से ऐसा भी प्रमाणित होता है कि यह जाति पहिले "राजकुमार" कहाती थी अतएव ये राज व मिस्त्रीगण यथार्थ में क्षत्रिय थे परन्तु परशुराम जी के भय व मुसलमानों के अत्याचार से सतायी जाकर इस क्षत्रिय जाति ने अपनी जीवरक्षार्थ शिल्प कर्म ग्रहण कर लिया और राजकुमार के स्थान में कहीं ये अपने को राज ही कहने कहाने लगे और कहीं ये अपने को कुमार कहने कहाने लगे और कुमार कहाते कहाते ये लोग विद्या के अभाव से अपने को कुम्हार कहने कहाने

लग गये परन्तु हमने विशेषध्यान के साथ राजपूताने में देखा है कि यह जाति गधे रखने वाले व वर्तन बनाने वाले कुम्हारों से अपना योनि सम्बन्ध आदि कुछ भी नहीं करती है इनका समुदाय जयपुर राज्य में बहुत है और ये असल में कुमार हैं जो राजकुमार क्षत्रिय वंश का संकेत मात्र है इनके भेदों पर दृष्टि डालने से भी प्रमाणित होता है कि इनमें कई भेद अद्यावधि उच्च क्षत्रियों के से चले आरहे हैं इनकी जयपुर में बड़ी प्रतिष्ठा कहीं २ ये गजधर भी कहाते हैं अर्थात् राज्य से इन्हें गज मिलती है जो एक प्रतिष्ठा का चिन्ह है बड़े २ उच्च ब्राह्मण इनके यहां विवाह शादी तथा कर्मकाण्ड कराते हैं इनके हाथ का पकवान निधड़क रूपसे ग्रहण करते हैं।

अट्टालिकाकार व इन राजकुमारों का धन्दा एकसा होने के कारण इस जाति को इस स्थल में लिखदिया है अन्यथा राजकुमार व अट्टालिकार इन दोनों में बड़ा अन्तर है। इनके विषय में विशेष विवर्ण प्रमाणों सहित सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे इस जाति की जयपुर में एक सभा भी है जिसका नाम शिल्पवव जात्युन्नति सभा है वर्णव्यवस्था कमीशन द्वारा २५१ प्रश्नों के उत्तर लेकर ही इस जाति का निर्णय होगा।

(१७)अढय- प्रायः धनाढ्य पुरुष का नाम तथा बंगाल प्रान्तीय सुनार बनिया जातिका नाम भी है ये लोग उच्चवर्णीय माने जाते हैं इनका खान पान भी पवित्र है विद्या स्थिती सामान्य है।

(१८) अढाई घर :— यह खत्री व सारस्वत ब्राह्मण दोनों ही का एक २ भेद है इस को कोई २ ढाई घर भी कहते हैं। खत्रियों में अढाई घर समुदाय सर्वोच्च माना जाता है, मेहरे, कपूर खन्ने और सेठ यह चारो भेद अढाईघर कहाते हैं इन के लड़कों का विवाह अढाईघर, चारघर, बाराहघर और बनजाई आदि समुदायों में से किसी के भी व्याहे जा सकते हैं परन्तु चारघर कुल के लड़के चारघर बारहघर और बनजाई कुलों में से किसी

एक में व्याह सकते हैं, चारघर कुल का पद जाति में दूसरे नम्बर पर है, बाराहघर का व जाति पद तीसरे नम्बर पर है इस ही तरह बनजाई कुल का खत्री जाति में पद चौथे नम्बर पर है।

सारस्वत ब्राह्मणों में जो अढ़ाईघर कुल है उस में कुमाड़िये, जैतली, झिंगण, तिक्खे और मोहले इन पांचों तरह के सारस्वत ब्राह्मणों के समुदाय का नाम अढ़ाई घर है परन्तु लुमड़िये पैतली पिंगण, पिक्खे, और बोहले आदि सारस्वत समुदाय भी अढ़ाई घर में अपने उत्तम कर्मों के कारण सम्मलित माने जाते हैं शेष ग्रन्थ में॥

(१६) अतित :— यह एक युक्त प्रदेश की हिन्दू जाति है ये लोग शैव सम्प्रदायी हैं किसी २ विद्वान ने इस जाति को धार्मिक व साम्प्रदायिक भिक्षुक लिखा है ये लोग कहीं अपने मृतकों को जलाते हैं और कहीं मृतक के मुख में आग रख कर जल में फैंक देते हैं ये लोग महापात्र की जगह दसनामियों को जिमाते हैं ये सब के साथ नमो नारायन करते कराते हैं ये तो अपने को ब्राह्मण बतलाते हैं पर ब्राह्मण लोग इस से इन्कार करते हैं ये लोग भंगवे कपड़े पहिनते हैं। इन्हीं का एक भेद गुंसाई है जो गोस्वामी शुद्ध शब्द का बिगड़ कर बना है ये लोग गृहस्थी होते हैं इन दोनों ही का विस्तृत विवर्ण निर्णय करके हम अपने सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे। देखें इस जाति के लोग भी अपने विषय में कुछ सूचनायें मंडल को देते हैं या नहीं और उत्तमता विषय क्या प्रमाण पेश करते हैं?

(२०) अन्त अडियार :— यह द्रविड़ देशीय एक गडरिये जाति का भेद है इनका जाति पद बहुत बुरा नहीं है इस जाति में कई प्रतिष्टित पुरुष हैं गडरियेपने के धन्दे के अतिरिक्त यह जाति व्यापार भी करती है इनका वर्ण क्षत्रिय हैं।

(२१) अथर्ववेदी :—यह उड़ीसे के ब्राह्मणों की एक जाति है वहां ये इस ही नाम से सर्वत्र पुकारे जाते हैं ये लोग अपने को उच्च ब्राह्मण वर्ग में मानते हैं परन्तु किसी २ विद्वान ने इस ब्राह्मण जाति को Inferior and degraded उप ब्राह्मण तथा उच्चश्रेणी से गिरे हुये माना है अतएव इस विवादास्पद विषय का निर्णय कराकर ही विशेषरूप से ग्रन्थ में लिखेंगे।

(२२) अधिकारी ब्राह्मण :—यह एक बंगाल प्रान्तीय तथा उड़ीसा देशस्थ ब्राह्मण जाति का भेद है ये लोग प्रायः चैतन्य स्वामी के चेले होते हैं इन के गले में रुद्राक्ष की मालायें होती हैं और ये लोग यज्ञोपवीत भी पहिन्ते हैं।

इसका शब्दार्थ तो यह है कि किसी भी प्रकार का मुख्य अधिकार प्राप्त मनुष्य अधिकारी कहाता है तथा बंगाल उड़ीसे में श्री वैश्नव सम्प्रदाय का ब्राह्मण जो किसी मन्दिर व मठ का मुख्य कार्य्य कर्ता हो वह वहां अधिकारी कहाता है।

कोपकार ने अधिकारी शब्द का अर्थ " वेदान्तशास्त्रवेत्ता ,, अर्थात वेदान्त शास्त्र का जानने वाला ऐसा किया है। पुनः यह भी लिखा है कि "अधिकृता खिल वेदार्थ नितान्त निर्मल स्वान्तः साधन चतुष्टय सम्पन्नः,, अर्थात् जो सम्पूर्ण वेद वेदाङ्ग व उपाङ्गों के असली तत्व व मर्मांश का जानने वाला साधन चतुष्टय युक्त जो है वह अधिकारी कहाता है। अतएव जो ऐसे गुण युक्त ब्राह्मण थे वे अधिकारी ब्राह्मण कहाये।

पूर्वकाल में ये ब्राह्मण ऐसे ही गुण युक्त थे अतः वही प्राचीन नाम जैसे का तैसा चला आ रहा है परन्तु आज कल संसारचक्र तथा यवन अत्याचार के कारण इस जाति की विद्यास्थिती में बड़ा धक्का लगा तथापि ये उच्च ब्राह्मण हैं ऐसा मानना चाहिये शेष विवर्ण सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे।

(२३) अन्ध्र- यह एक नीचकर्मी जाति है इन की उत्पत्ति के विषय में ऐसा लेख है कि "वैदेहिकान् कारावार स्त्रियांजातो जाति विशेषः,, अर्थात् वैदेहिक पुरुष व कारावार स्त्री के संयोग से पैदा हुयी जाति अन्ध्र कहाती है। शेष सप्तखण्डी ग्रन्थ में देखना।

(२४) अन्ध्रवैश्नव :-यह रामानुज सम्प्रदाय के तैलंग वैश्नव ब्राह्मणों का नाम है यह माधवाचार्य्य के शिष्यों की सम्प्रदाय का एक भेद है इन का विवर्ण प्राप्त होने पर सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे।

(२५) अनाविल-इन का दूसरा नाम भाटेला भी है यह गुर्जर सम्प्रदाय के ब्राह्मण सुनने में आते हैं कोई इन्हें देसाई भी कहते हैं इन की उत्पत्ति इस प्रकार से है कि श्री रामचन्द्र जी रावण को जीत कर आये तब प्रायश्चित्तार्थ यज्ञ व ब्राह्मण भोजनार्थ ब्राह्मणों को बुलाया परन्तु वे न आये तब रामचन्द्र जी ने भिल्लों को उन के स्थान में बुलाया व उन्हें यज्ञोपवीत देकर उन की ब्राह्मण संज्ञा कियी। बहुत से लोग ऐसा भी कहते हैं कि भाटेले पहिले कुणबी थे।

परन्तु एक दूसरे विद्वान स्कन्दपुराण का नाम देकर ऐसा लिखते हैं कि श्री रामचन्द्र जी ने यज्ञ में आये हुये दश प्रकार के ब्राह्मणों को अनादिपुर में स्थापित किया इस ही अनादिपुर का प्रसिद्ध नाम अनावला है और उस अनावला के रहने वाले अनावल कहाये, जिन ब्राह्मणों ने नाग कन्यावों का दान व ग्राम प्रतिग्रह नहीं लिया उनको राम ने कर्म भ्रष्टता व वेद हीनता का श्राप दिया वे भाटेले अनावला ब्राह्मण कहे जाते हैं। लौकिक में कर्म भ्रष्ट की जगह भाटेला अपभ्रंश हुआ है ये लोग यद्यापि कृषीकर्म तथा कन्या का विक्रय करते हैं। कदाचित् ऐसे ही हों? परन्तु हमें तो ये "अनाविल,, शुद्ध शब्द का अपभ्रंश रूप अनावल हुवा जान पड़ता है जिस का अर्थ हलायुध कोष में निर्मल के है अर्थात् वे ब्राह्मण जो अपने कर्म धर्म में तत्पर थे वे "अनाविल,,

कहाते २ अनावल कहाने लग गये उपरोक्त द्वेष पूर्ण बातें हमें तो ग्राह्य नहीं हैं।

(२६)**अन्य ब्रह्मक्षत्रिय**—यह जाति दक्षिण प्रान्तस्थ नासिक पूना आदि जिलों में विशेषरूप से है यह जाति अपने को ब्राह्मण मानती है परन्तु दूसरे लोग इन्हें क्षत्रिय मानते हैं किसी किसी विद्वान की यह सम्मति है कि इन के पूर्वजों ने युद्ध में बड़ी वीरता दिखलायी थी अतएव ये ब्राह्मण से क्षत्रिय कहाने लगगये। विद्वानों का ऐसा मत है कि ब्रह्मक्षत्रिय वंश राजा जयसेन से चला वथा वैवस्वत मनु से भी चला अतएव इनके नामके पहिले अन्य शब्द और जोड़ाजाकर ये अन्य ब्रह्मक्षत्रिय कहाये अतएव इनका निर्णय होने पर हम विशेष रूप से अपने ग्रन्थ में अनेकों प्रमाणों सहित विवर्ण लिखेंगे।

(२७) **अम्बष्ट**— यह एक हिन्दू जाति है युक्तप्रदेश व बंगाल आदि सर्वत्र ही यह जाति है यह कायस्थ जाति का भी एक भेद है। इस जाति की उत्पत्ति विषय एक विद्वान ने लिखा है कि ब्राह्मण व वैश्य की कन्या के संसर्ग से जो सन्तान पैदा हुयी वह अम्बष्ट कहायी किसी २ विद्वान ने अम्बष्टों का वर्णसंकर लिखा है कहीं ये लोग अपने को क्षत्रिय मानते हैं कहीं अपने को ब्राह्मण मानते हैं अतएव इन की उत्पत्ति ऐसी ही है या दूसरी? तथा ये किस वर्ण में माने जाने चाहिये ये मंडल से निर्णय कराकर ही विस्तार पूर्वक संग्रह किया हुवा विवर्ण अपने ग्रन्थ में लिखेंगे।

(२८) **अम्बत्त**— द्राविड़ देशान्तर्गत तैमिल देश की यह एक जाति है जो वहां नाइयों की तरह हजामत बनाने का काम करती है वहां ये नाई ही माने जाते हैं।

(२९) **अम्बलवशी**— यह एक मदरास प्रान्तर्गत ट्रावन्कोर राज्य ब्राह्मण पुजारियों की सामान्य श्रेणी का नाम है कोई २ विद्वान् इन्हे नाम्बुरी जाति में से ही मानते हैं।

(३०) अभांत :—यह बंगाल विहार की जाति है। इन्हें किसी २ ने सतशूद्र जातियों में लिखे हैं इन के दो भेद हैं एक तो "घर बैठ,, और दूसरा "विश्राहुत,,। घर बैठ लोग कृपी करते हैं और विश्राहुत घरेलू नौकरियें करते हैं। ये दोनों भेद आपस में शादी व्यवहार नहीं करते हैं। मैथिल ब्राह्मण इन दोनों के यहां पंडिताई करते हैं इन का जाति पद उत्तम है इस जाति में विद्या साधारण है खेती करने वाले घरबैठ कहीं २ धनाढ्य भी देखे गये हैं इन्हें उत्तम करने का अधिकार है यह जाति वैश्य वर्ण में है।

(३१) अम्मा कोदागा :—यह कुर्ग देश की ब्राह्मण जाति का नाम है इन का दूसरा नाम कावेरी ब्राह्मण भी है परन्तु ये खास किसी वेद को नहीं मानते हैं अतएव ये ब्राह्मण कैसे? यह जाति कुर्ग के दक्षिणी पश्चिमी किनारों में रहती है ये कावेरी को माता के तुल्य पूजते हैं ये लोग दूसरे कुर्गों के साथ परस्पर विवाह सम्बन्ध नहीं करते हैं ये लोग खान पान से शुद्ध हैं फलाहारी हैं मास शराब से घृणा करते हैं शेष ग्रन्थ में लिखेंगे।

(३२) अमेठिया :— यह एक क्षत्रिय वंशी जाति है परन्तु लोगों ने इन के क्षत्रियत्व पर शंका प्रकट की है लखनऊ के जिले में अमेठी एक कसबा है अतएव वहां से निकास होने के कारण यह जाति अमेठिया कहायी। यह जाति विशेष कर लखनऊ, बाराबंकी, रायबरेली, और गोरखपुर आदि जिलों में हैं; एक विद्वान ने इस जाति को चमरगौड़ राजपूतों में से लिखी है, कि ये विधवा राजपूत स्त्री की सन्तान हैं और इन के यहां चमारों की रांपी का पूजन होता है यह कहां तक ठीक है इस का निर्णय भी होना चाहिये क्योंकि उस विद्वान का कहना ऐसा है कि जब परशुरामजी पृथ्वी को निःक्षत्रिय कर रहे थे तब एक विधवा गर्भवती गौड़ रजपूतिनें डरकर किसी चमार के घर जा छिपी और तहां ही बच्चे का जन्म हुवा वह पुत्र चमरगौड़ कहाया क्योंकि यह

वंश चमार से रक्षा किया गया था अतएव उस याद में इस क्षत्रिय जाति में चमार की रांपी का पूजन होता है।

परन्तु किसी २ विद्वान ने इस जाति को चौहाण राजपूत मानी है और इन के क्षत्रियत्व विषयक तथा विरुद्ध भी कई प्रमाण मिले हैं उन सब का निर्णय करके विशेष विवर्ण निज की सम्मति सहित ग्रन्थ में लिखेंगे, देखें यह जाति अपने क्षत्रियत्व विषयक क्या २ प्रमाण इस मंडल को लिखती है तथा २५१ प्रश्नों द्वारा निर्णय कराती है या नहीं ?।

(३३) अपर अम्बष्ट– यह जाति दक्षिण प्रान्त में है ये लोग अपने को क्षत्रियवर्ण में मानते हैं। परन्तु इनकी उत्पत्ति विषय एक प्रसिद्ध विद्वान् का लेख है कि बाप ब्राह्मण और मां क्षत्रियाणी के व्यभिचार द्वारा पैदा हुयी सन्तान "अपरअम्बष्ट" कहायी ये लोग अथर्ववेद का कुछ भाग पढ़ सकते हैं।

एक अंग्रेज अफसर ने इस जाति को व्यास से भी नीच माना है और ६४ कलोंद्वारा जीविका करना बतलाया है शेष निर्णयान्तर निज सम्मति सहित इस जाति का विवर्ण ग्रन्थ में होगा।

(३४) अभ्यागत– यह अभि + आगत के योग से अभ्यागत बना है जिसका अर्थ सामने आने वाला ऐसा होता है यह एक नीच श्रेणी के साधुवों की जाति है प्रायः ऐसा देखने में आया है कि उच्च जातियों के यहां जब कोई मरजाता है तो मृतक के १२ वें दिन "सपिंडी" होती है, प्रथम मृतक का स्थान लीप पोतकर ठीक किया जाता है तत्पश्चात पंडित जी मृतक के पुत्रादि द्वारा पिंडदान व सपिंडी किया कराते हुये उस भूमि में किञ्चित हवन कराते हैं जिसे काटी देना कहते हैं तत्पश्चात् ब्राह्मण भोजन के लिये जो सामान तय्यार होता है उसको एक पत्तल में रखवाकर वह प्रपिता, वृद्ध प्रपिता वृद्ध प्रपितामहादि के पिंडों के अर्पण की जाकर उस समय चलते फिरते किसी भी साधू सन्यासी आदि को जो अभ्यागत मिलजाय उसे बुलालाते हैं और वहां ही मृतक भूमि
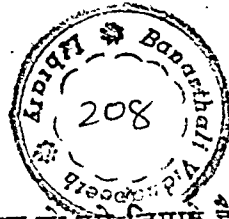
सपिंडी स्थान में उस बिठाकर उस पत्तल को उसे जिमाते हैं उस जीमने वाले को "अभ्यागत" कहते हैं जो उत्तम श्रेणी के साधू सन्यासी फकीर होते हैं वे तो ऐसे निषिद्ध स्थान में निषिद्ध भोजन को नहीं ग्रहण करते हैं परन्तु साधारण भुकड़ व नीच नाममात्र के साधू लोग वहां जीमजाते हैं वेही अभ्यागत कहाते हैं।

(३५) अभीर ब्राह्मण— यह खान्देश की ब्राह्मण जाति का भेद है ये लोग अपने को ब्राह्मण बतलाते हैं अभीर व आभीर एकही जाति है अतएव येही युक्तप्रदेश में अहीर कहाते हैं अतएव अहीर प्रायः क्षत्रिय वंश में माने जाते हैं इन अभीरों की मिश्राई व पाण्डिताई तथा पुरोहिताई आदि करने के कारण ब्राह्मण लोग अभीर ब्राह्मण कहाये।

एक दूसरे विद्वान की सम्मति ऐसी है कि इन ब्राह्मणों की उत्पत्ति अहीर जाति से है अतएव अभीर ब्राह्मण कहाते हैं। परन्तु हमें इस में सन्देह है अतएव सत्यासत्य का निर्णय करके ही विशेष विवर्ण ग्रन्थ में लिखेंगे देखें वे जाति मंडल को अपने उच्चत्व विषयक प्रमाण क्या भेजती हैं?

(३६) अद्वैत— जीव ब्रह्म को एक मानने वाली सम्प्रदाय का नाम है (२) तथा बंगाल प्रान्तर्गत सन्तीपुर के वारेन्द्र ब्राह्मण जो चैतन्य स्वामी के शिष्य हैं वे अद्वैत कहाते हैं।

(३७) अलखनामी :— यह एक जोगियों की जाति का नाम है इन को अलखगीर व अलखिया भी कहते हैं ये शैव सम्प्रदायी हैं मिस्टर क्रुक साहब ने अपनी तहकीकात में लिखा है कि इस मतका संस्थापक लालगिर नामक एक चमार था ये लोग भिक्षा माग कर खाया करते हैं जब भिक्षा मांगने जाते हैं तब दरवाजे पर ही जोर के साथ चिल्ला कर "अलख, अलख" कहते हैं इस का अभिप्राय ऐसा है कि अ = नहीं, लख = देखना अर्थात् जिस को कोई देख नहीं सकता वह अलख उस ही को भजो मानो और

इस ही का ध्यान करा यह अलख शब्द संस्कृत शब्द अलक्ष्य से बिगड़ कर अलख बन गया है इन का ऐसा नियम है कि इन के दरवाजे पर भिक्षार्थ आते व अलख के कहते ही जो किसी ने इन्हें भिक्षा डाल दी तो ले जावेंगे अन्यथा दूसरे द्वार पर चले जावेंगे, ये एक चोंचदार ऊंची टोपी ओढ़ते हैं और कम्मल का लबादा पहिनते हैं ये लोग अन्य जोगियों से सन्तोषी होते हैं। शेष ग्रन्थ में देखना।

(३८) अवधूत :—यह एक शैव साम्प्रदायिक सन्यासियों की जाति है कहीं २ कोई कोई यत्र तत्र देखने में आते हैं दक्षिण में यह जाति बहुत है इन का धर्म्म शैव है ये विभूती धारण करते, रुद्राक्ष की माला पहिनते और गेरुवे कपड़े पहिन्ते हैं तथा इधर उधर तीर्थ यात्रा करते हुये भिक्षाद्वारा निर्वाह करते रहते हैं इनमें जो अवधूत स्त्रियें होती हैं वे अवधूतानि कहती हैं ये स्त्रियें उपरोक्त साधनों को साधती हुयीं स्त्रियों को गुरुमन्त्र दे कर अपनी सम्प्रदाय में मिलाती रहती हैं।

(३९) अवस्थी :—यह एक कान्यकुब्ज ब्राह्मणों में कुल का नाम है पूर्व काल में इस कुल के लोग राजाओं के यहां व्यवस्थापक सभा यानि Legislative Council के सभासद हुवा करते थे उन्हें व्यवस्थी की पदवी मिली थी उस ही का अपभ्रंश रूप "अवस्थी" हो गया शेष ग्रन्थ में।

(४०) अष्टवंश :— यह सारस्वत ब्राह्मणों का एक भेद है एक पंडित ने अपने ग्रन्थ में ऐसा लिखा है कि विक्रम संवत १४९७ में सुनाम नगर में एक बड़ा भारी भोज था उस भोज में जिस समुदाय को किसी कारण विशेष से भ्रष्टवंश कहा गया था वेही लोग अपने को भ्रष्ट वंश शब्द के स्थान में अपने को अष्टवंश प्रसिद्ध करते हैं। यह सारस्वत ब्राह्मणों का अष्टवंश समुदाय आगरा, मथुरा, अलीगढ़, तथा राजपुताना प्रान्त में विशेष रूप से हैं

इन का विवर्ण ग्रन्थ में देंगे । तब तक निर्णय भी हो जायगा और तहां ही निज सम्मति भी देंगे ।

(४१) अष्ट सहस्त्र :—यह द्रविड़ ब्राह्मणों में स्मार्त ब्राह्मणों का एक मुख्य भेद है यह जाति ट्रिचनापोली तंजोर, आर्काट, तिन्नावेली और मदुरा आदि कई जिलों में विशेष रूप से पायी जाती है। ये लोग किनारी व तैलंगी दोनों भाषा बोलते हैं इस जाति में कुछ समुदाय तो शंकर स्वामी के शिष्य हैं और कुछ रामानुज और माधवाचार्य्य के शिष्य हैं परन्तु ये दोनों ही धर्म शास्त्रों की आज्ञायों के पालन करने में बड़े पक्के हैं यहां तक मांस मद्य से बिलकुल घृणा करने वाले हैं यह ही नहीं किन्तु स्पर्श मात्र से भी दोष मानने वाले हैं इन में शास्त्री व दीक्षित भी होते हैं अन्य द्रविण स्मार्तों की अपेक्षा ये लोग बड़े सुन्दर व मृदुभाषी होते हैं ये लोग बंगाल के शाक्तिकों की तरह अपनी आंखों की भौंहों पर चन्दन का या संदूर का एक गोला कार चिन्ह लगाते हैं शेष ग्रन्थ में लिखेंगे ।

(४२) अशूद्र प्रतिग्रही :—वे ब्राह्मण जो शूद्रों के यहां धान्य या दान पुण्य ग्रहण नहीं करते हैं ।

(४३) अहमदाबादी श्रीमाली —: अहमदाबाद के श्री मालियों का नाम अहमदाबादी श्रीमाली है यह श्रीमाली ब्राह्मणों का एक उपभेद है श्रीमाली ब्राह्मणों का निकास राजपुताना प्रान्तर्गत मारवाड़ देशस्थ श्रीमाल क्षेत्र से है जो आबू के समीप है इस का दूसरा नाम भीनमाल भी है इस जाति में वेद विद्या की स्थिती बहुत ही प्रशंसनीय है अर्थात् वेद पठन पाठन प्राचीन रीत्यानुसार चला जा रहा है ये लोग बड़े कर्म्म कांडी होते हैं । अतएव उच्च जातियों के अतिरिक्त सर्वोच्च ब्राह्मणों तक के यहां कर्म्म कांड कराने के गौरव का अधिकारी इस ही जाति के लोग हो सकते हैं । इस जाति के मुख्य श्रीमान् पं० दलपतराम शास्त्री

C.I.E. तथा ज्ञातिनिर्बंध के ग्रन्थकर्त्ता थे इनका विशेष विवर्ण इस ग्रन्थ के अन्य भाग में " श्रीमाली ,, प्रकरण में मिलेगा !

(४४) अहवन :—यह युक्तप्रदेशीय अवधप्रदेशान्तर्गत क्षत्रिय जाति का एक भेद है यह नाम अहि जिसका अर्थ सर्प, नाग और वन का अर्थ समुदाय अर्थात् नाग वंसी क्षत्रियों का जो समुदाय है वह अहिवंस कहाते कहाते अहिवन कहाया. और अहिवन से बिगड़ भाषा का प्रचलित शब्द अहवन हो गया ये लोग अपने को प्रसिद्ध सूर्य्यवंस में बतलाते हैं और कुछ इसमें प्रमाण भी मिले हैं पर विरुद्ध सम्मतियें व विरुद्ध प्रमाणों की भी कमी नहीं है अतएव इस जाति के विषय निर्णय करके ही पूर्ण विवर्ण जो संग्रह हुवा है उसे सप्तखंडी ग्रन्थ हिन्दूजाति वर्ण-व्यवस्था कल्पद्रुम में लिखेंगे देखें यह जाति जो क्षत्रिय बनती ह तो हमारे २५१ प्रश्नों के क्या २ उत्तर तथा अपनी जाति की उच्चता विषय क्या २ प्रमाण मंडल को भेजती है।

(४५) अहर :— यह एक युक्तप्रदेश की जाति है इनके ६७६ भेदों का पता हमने लगाकर विवर्ण संग्रह किया है लोगों ने इस जाति को गोपवंश में से बतलायी है किन्हीं विद्वानों का ऐसा मत है कि यह जाति अहेरिया जाति से बनी है और अहेरिया जातिका काम चिड़ियें मारकर निर्वाह करना है यह जाति रुहेलखंड में विशेष है ये लोग अपने को क्षत्रिय वर्ण में मानते हैं परन्तु सर्वसाधारण इसके बहुत ही विरुद्ध हैं, ये अपने को अहीरों से उच्च मानते हैं परन्तु अहीर अपने को इनसे उच्च मानते हैं ऐसा इन दोनों का परस्पर का विवाद है इनमें मच्छियों का खान पान है इस जाति में और भी कई बातें सन्देह जनक हैं उनपर विचार होना आवश्यक है वर्णव्यवस्था कमीशन निर्धारित २५१ प्रश्नों के उत्तर तथा मंडल के जनरल नोटिस के अनुसार इस जाति ने न तो उत्तर ही दिये और न अपनी उत्तमता विषयक कोई प्रमाण ही भेजे।

किसी २ विद्वान की यह सम्मति है कि यह जाति अहीरोंमें से निकली है और किसी का कहना है कि अहीर व अहर एकही जाति है देखें अब भी यह जाति अपने विषय मंडल को कुछ लि. खती है या नहीं ? मनुष्यगणना में भी यह जाति क्षत्रिय नहीं लि. खी गयी है । किसी २ विद्वान नें इस जाति को शूद्रवर्ण में बतलाया है पर ये अपने को अहीरों से उत्तम व क्षत्रियवंश में मानते हैं इन सब में सत्य क्या है इस का विवर्ण निर्णय करके ही हम अपने हिन्दू जाति वर्णव्यवस्था कल्पद्रुम नामक ग्रन्थ में लिखेंगे ।

(४६) अहिनरू :—यह उत्तम श्रेणी के कुलीन मरहाटों की जाति का एक भेद है तथा मरहटों का कुलनाम "अहिनरू" कहाता है मरहटों के ७ कुलों में से यह एक कुल है इसका विवर्ण मरहटा जाति के अन्तर्गत ग्रन्थ में लिखेंगे ।

(४७) अहिवासी :—यह जाति मथुरा व बदायुं तथा बरेली के जिले में विशेष रूप से है यह अहिवासी नाम दो शब्दों के योग से बना है अहि और वासी, अहि का अर्थ नाग तथा वासी का अर्थ बसने वाली, याने नाग के आश्रय बसने वाली जो जाति है वह अहिवासी कहायी कोई २ विद्वान ऐसा भी कहते हैं कि ये पहिले अहिवँशी कहाते थे दूसरा नाम इन का नागवंशी भी था, इस ही अहिवंशी शब्द का विगड़ा हुवा रूप अहिवासी कहा-या अतएव ये लोग अपने को नागवंशी क्षत्रिय कहते हैं परन्तु सर्व साधारण की सम्मति इस के विपरीत है, इन का धन्दा जमी-दारी व कृषी करना है ।

ऐसा भी लेख मिला है कि यह जाति साभरि ऋषि की सन्तान है इन महात्मा का आश्रम वृन्दावन के कालीमर्दान घाट के पास सुनरख नामक स्थान में था परन्तु जब सौभरि ऋषि वन को गये तब आश्रम की रक्षार्थ सर्पराज को छोड़ गये थे तिस से उस सुनरख का नाम अहिवास हुवा तिस हीं से ये अहिवासी

कहावें । यहां स्थानाऽभाव से बहुत ही सूक्ष्म लिखा है परन्तु उपरोक्त विचारों की सत्यता का निर्णय करके ही उचित व्यवस्था ग्रन्थ में लिखेंगे । देखें ये जाति भी अपने विषय संदल का क्या सूचना देती है ? ।

(४८) अहीर :— यह एक प्रसिद्ध हिन्दू जातियों में से है संस्कृत में इस को आभीर कहते हैं, इस अहीर शब्द के विषय भिन्न २ सम्मतियें हैं, एक विद्वान कहते हैं कि महि का अर्थ पृथिवी और ईर का अर्थ स्वामी है अर्थात् जो पृथिवी के स्वामी थे वे महीर कहाते २ भाषा में अहीर कहाने लग गये, एक दूसरे विद्वान का कहना है कि अभीर व आभीर ये संस्कृत में अहीर शब्द के समभाव वाचक शब्द हैं, एक तीसरे विद्वान ने इस जाति की उत्पत्ति ब्राह्मण पुरुष व अम्बष्ट कन्या द्वारा लिखी है, एक चौथे विद्वान इस जाति को संकरवर्ण में बतलाते हैं, एक पांचवें विद्वान इस जाति को शूद्र वर्ण में भी लिखते हैं एक छठा विद्वान इस जाति को वैश्य वर्ण में लिखते हैं, एक शास्त्रीय व्यवस्था द्वारा इस जाति को ब्राह्मण वर्ण में किसी विद्वान ने लिखा है, एक ग्रन्थ कर्त्ता ने इस जाति को महा शूद्र भी लिखा है, ऐसी ही सब तरह के अनेकों प्रमाण एकत्रित किये हैं इस जाति के मुखियावों से हमारा पत्र व्यवहार हुवा जिन्हों ने अपनी जाति विषय में क्षत्रित्व विषयक प्रमाण भेजने को हमें लिखा परन्तु केवल दसपट्टी की बातें रही, बड़ २ उद्योग करने पर भी कहीं से कोई प्रमाण इस जाति की ओर से नहीं आये , खैर !

यह जाति अपने को यादव वंशी क्षत्रिय मान्ती है जगह २ बड़ी २ सभायें करती है, आर्य्यसमाजियों की लटक से कहीं २ कोई २ यज्ञोपवीत पहिने भी देखे गये हैं, हिन्दू समुदाय इस जाति के क्षत्रियत्व के विरुद्ध है परन्तु कहीं २ कुछ समुदाय इनके क्षत्रित्व के पक्ष में भी हैं, इन के भेद उपभेदों पर विचार करने से इस जाति में कई वंश क्षत्रियों के हैं जो अहीर ही कहा रहे हैं

न तो अहीर मात्र क्षत्रिय ही हैं और न शूद्र ही हैं, परन्तु जैसा प्रायः हिन्दू समुदाय इस जाति के विरुद्ध भाव रखती है वैसी तो यह जाति किसी भी तरह से नहीं है।

प्राचीन राजवंशावलियों से मिलान करने से तथा अनेकों विद्वानों के लेखों पर ध्यान देने से प्रमाणित होता है कि इस जाति में कुछ समुदाय नन्दवंशी तथा यदुवंशी हैं और ५६ कोटि यादवों में इस जाति समुदाय के भी कुछ भेद थे, अद्यावधि सन् १८५७ तक रिवाड़ी में श्रीमान् स्वर्गवासी राजा तुलाराम जी का राज्य था तत्पौत्र रावसाहिब युधिष्टर जी तथा वर्तमान में रावसाहिब बलबीरसिंह जी यादव मौजूद हैं इन के राज्यवंश का परिचय विशेष रूप से सप्तखण्डी ग्रन्थ में देंगे।

इस जाति के विरुद्ध जहां कुछ सम्मतियें हैं तहां पक्ष में भी अनेकों प्रमाणों का संग्रह हुवा है इस जाति के १७६७ भेदों का पता लगा कर बहुत सूक्ष्म विवर्ण भी ६५ पत्रों में लिखा है अतएव विरुद्ध व समर्थन दोनों पक्षों को मण्डल में रख कर निर्णय होने पर ही हम अपनी निजसम्मति सहित इसजाति का विवर्ण अपने सप्तखंडी ग्रंथ में लिखेंगे। इस जाति ने वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों द्वारा अन्वेषण अभी तक नहीं कराया है।

(४६) **अहेरिया :—** यह एक हिन्दूजाति है अहेर नाम है 'शिकार,, का और जो शिकार द्वारा ही निर्वाह करे व निर्दयी जाति अहेरिया कहायी ऐसी एक विद्वान् की सम्मति है।

दूसरा विद्वान ने इस जाति को अहीरिया से बिगड़ कर अहेरिया बतलाया है अर्थात् ये जाति अहीर जाति की भाई बन्धु है और इन्हीं में से निकली है।

ये लोग अपने को राजपूतवंश में से बतलाते हैं परन्तु सर्वसाधारण की सम्मति इसके बिलकुल ही विरुद्ध है यह जाति अलीगढ़ के जिले में बहुत है अतएव इन्हें २५१ प्रश्नों के उत्तर वर्णव्यवस्था कमीशन को देने चाहिये।

किसी २ विद्वान की यह भी सम्मति है कि यह जाति कहीं पर जानवरों को मारकर खाती है, कहीं पर खेती व मजदूरी द्वारा निर्वाह करती है, कहीं पर पक्षियों को मारकर व चिड़ियावों को पकड़ तथा बेचकर जीविका करती है, कहीं कहीं पर यह शुद्ध अशुद्ध सबही तरह के जानवरों को मारकर खा जाती है और कहीं पर टोकरियें बनाकर गुज़ारा करती है।

अतएव इस में सत्याऽसत्य क्या है इसका निर्णय होने पर व २५१ प्रश्नों के उत्तर प्राप्त होने पर ही हम अपनी सम्मति प्रकट करेंगे विशेष विवर्ण ग्रन्थ में मिलेगा।

(५०) अर्कसाला :- यह माईसोर राज्य की एक सुनार जाति का भेद है इस का दूसरा नाम अगसाला भी है इसका विवर्ण " अगसाला " के साथ मिलेगा।

(५१) अर्कवंश :- यह एक युक्तप्रदेशीय कृषीकर्म करने वाली हिन्दुजाति है विशेषरूप से अवध में पायी जाती है परन्तु युक्तप्रदेश के पूर्वी व पश्चिमी भाग भी इस जाति से खाली नहीं हैं।

उत्पत्ति इस जाति की उत्पत्तिविषय खोज करने से भिन्न २ लेख मिले हैं। बाबू सांवलदास Dy. Collector डिपुटी कलेक्टर हरदोई के आधार पर मिस्टर क्रूक साहब ने अपने ग्रन्थ के पृष्ठ ८१ में ऐसा लिखा है कि तिलोकचन्द भाट कुल का आदि पुरुष था जो सूर्य्योपासक था क्योंकि अर्क नामसूर्य्य का है अतएव सूर्य्योपासक तिलोक चन्द का समुदाय "अर्कवन्स,, कहाया फिर वे ही अर्कवंशी कहाने लगे और महाभाष्य के पारिभाषिक सूत्र "अर्द्धमात्रा लाघवेन वैय्याकरणाः पुत्रोत्सव मन्यन्ते" के अनुसार "वन्स" का लोप होकर केवल अर्कशब्द रहगया, वही अर्क जाति प्रसिद्ध हुयी और फिर अर्क कहाते २ अरख कहाने लग गये अतएव ये लोग द्विजाती हैं याने क्षत्रिय हैं पर साधारण जनसमुदाय इनके क्षत्रित्व पर बड़ी भारी आपत्ति करती हैं।

इस जाति के अगुवों ने सन्डीला और मलिहाबाद बसाया था और सन् १४०८ ईसवी के लगभग इस जाति के चहुंओर खूब दौर दौरे थे तथा ये ही उस समय के राजाधिराज थे जिसका विस्तारपूर्वक विवर्ण तथा इस जाति के २० भेदों का पूरा २ विवर्ण हम अपने ग्रन्थ में देंगे इस जाति की विशेष बस्ती बांदा हर्दोई तथा सीतापुर में हैं हमने बहुत चाहा कि इस जाति के यहां से २५१ प्रश्नों के उत्तर आजाते व हमारे जनरल नोटिस के अनुसार कुछ प्रमाण आते तो और भी उत्तम होता क्योंकि एक विद्वान ने अपने कोष में लिखा है कि:—"

इक्ष्वाकु कुलोद्भव शाक्यवंशीयबुद्धः

अर्थात् ये इक्ष्वाकुवंश के अन्तर्गत शाक्यवंशी चत्रिय हैं। यह "अर्कवंश,, शब्द अर्कबन्धु का अपभ्रंश रूप है, शेष विवर्ण सप्तखण्डी ग्रन्थ में देंगे।

(५२)अराईन :-- ये पंजाब प्रान्त की खेती करनेवाली जातियों में से एक है पंजाब की मनुष्यगणना रिपोर्ट में इन्हें कृषी करने वालों की सूची में लिखा है परन्तु असल में तो ये लोग, बाग बगीचे में माली पने का काम करने वाली जाति है अतएव इनका पद युक्तप्रदेश की कोली व काछी तथा कोइरी के समान हो सकता है और कोली तथा कोरी व काछी चत्रियवंश से कुछ नजदीकी सम्बन्ध रखते हैं अतएव यह जाति भी चत्रियत्व के योग्य है परन्तु इस जाति का बहुत कुछ समुदाय मुसलमानी राज्य के समय इसलामी धर्म स्वीकार कर चुका है अतएव यह चत्रिय सन्तान आज गोभक्षक बनगयी इसकी शुद्धी देखे कौन माई का लाल भारतमाता का सुपूत करता है? इनकी आबादी पंजाब में ६ लाख से भी अधिक है इस जाति की विद्यास्थिती बहुत ही कम है विशेष विवर्ण ग्रन्थ में लिखेंगे।

(५३)अरवत्त वकालु :-- यह कर्णाटक देश के ब्राह्मणों का नाम है माधवाचार्य्य के शिष्यवर्गों का एक सम्प्रदाय का नाम है।

(५४) अरवेलु :—यह तैलंग देश के ब्राह्मणों का भेद है स्मार्त ब्राह्मणों की सम्प्रदाय में नियोगी ब्राह्मणों का एक उपभेद है इनका विवर्ण अन्य भाग में तैलंग ब्राह्मणों के साथ लिखेंगे । शेष ग्रन्थ में ।

(५५) अराढ्य :— इस का शब्दार्थ तो यह है कि " पूजने योग्य ,, यह एक जुदी जाति नहीं है क्योंकि स्मार्त ब्राह्मणों का और अराढ्य ब्राह्मणों के परस्पर विवाह सम्बन्ध होवे हैं यह तैलंग देश के ब्राह्मणों की एक जाति है ये लोग अपने को ब्राह्मण बतलाते हैं परन्तु भट्टाचार्य्य जी लिखते हैं कि:—

The Aradhyas of Telegu Country profess to be Brahmans but are infact Semi-converted Lingaits and are not regarded as good Brahmans.

अराढ्य लोग अपने को ब्राह्मण बतलाते हैं परन्तु असल में ये अर्द्धमुण्डित लिंगायत हैं और (इस ही से) उत्तम ब्राह्मण नहीं माने जाते हैं ।

परन्तु चूंकि इन का आचार विचार शुद्ध है ये ब्रह्म गायत्री धारण करते हैं अतएव ये उत्तम ब्राह्मण माने जाने चाहियें तो कोई हानि नहीं है शेष ग्रन्थ में ।

(५६) अरोड़ा :—यह खत्रियों की जाति का एक भेद है इन को कोई रोड़ा व अरोड़ा तथा अरर वंशी भी कहते हैं, परन्तु खत्रियों में जो अपने को मुख्य खत्री मानते हैं वे इन का खत्री वंश से कुछ सम्बन्ध नहीं बतलाते हैं इसही के आधारनुसार एक अन्य विद्वान ने भी ऐसा लिख मारा है यहां तक कि इन्हें खत्रियों में Bastard Caste. हरामज़ादों से मिले जुले से लिख दिया है कुछ तो इन के भेद शहरों के नाम से हैं जैसे लाहोरी, मुल्तानी, आदि २ फिर भी इनके दो भेद मुख्य हैं उत्तराधे तथा दक्खिनाधे जिस में भी उत्तराधों के ७० भेदों का तथा दक्खिनाधों के ६० भेदों का

पता लगाया है इस जाति के विरुद्ध जो उपरोक्त बातें खत्रियों ने लिखीं व वतलायी हैं वे कहां तक सच हैं इस का निर्णय करके विस्तार पूर्वक ग्रन्थ में लिखेंगे देखें ये जाति वर्ण व्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के द्वारा अन्वेषण कराती है या नहीं ? और उपरोक्त Bastard हरामजादे शब्द के विषय क्या क्या प्रमाण युक्त समाधान मंडल के निर्णयार्थ भेजती है ?

(५७) अन्तर्वेदी ब्राह्मण :– यह एक ब्राह्मण जाति का समुदाय है इस समुदाय के ब्राह्मण प्रायः थोड़े हैं इन की उत्पत्ति ब्रह्मा से है अर्थात् जब महादेव पार्वती जी का विवाह था तब ब्रह्मा जी पार्वती जी की सुन्दरता पर मोहित हो गये थे और येन केन प्रकार से पार्वती जी के मुख को देखना चाहा अन्त में विवाह मंडप में हवन के समय पार्वती जी के मुख का देख सकना निश्चय किया और उस समय उन्हों ने हवन में वड़ा धूंवा किया तिस से महादेव जी व पार्वती जी ने अपने नेत्र वंद कर लिये तव ब्रह्मा जी महादेव जी को नेत्र वंद देख कर पार्वती जी का मुख उघाड़ कर देख लिया परन्तु उस चन्द्रवत मुख को देखते ही ब्रह्मा का वीर्य स्खलित हो गया इस से ब्रह्मा वहुत शर्म्माये परन्तु महादेव जी अपने योग वल से जान गये तव महादेव जी ने ब्रह्मा जी से पूछा यह क्या हुआ ? तव ब्रह्मा जी लज्जित हो कर जैसा का तैसा सत्य २ कह सुनाया इस से महादेव जी प्रसन्न हो कर ब्रह्मा जी को वर दिया कि तुम ने सत्य वोला है अतएव जितने मृतिका के कण तुम्हारे वीर्य्य से भीजे हैं वे सव ऋषि हो जांय तदनुसार ।

अष्टाशीति सहस्राणि शतमेकमतः परम् ।
अष्टाविंशत्तथैवात्र वालखिल्या मुनीश्वराः ।५३।
वालुकाभ्यः समुत्पन्ना वालाखिल्याः अयोनिजा ॥

अर्थात् वालुका से पैदा हुये ८८१२८ ऋषि अयोनि सम्वन्ध द्वारा वालखिल्य कहाये ।

---

* नोटः यह पुराणों की कथा है सत्याऽसत्य की भगवान जाने ।

इन्हीं वालखिल्य अठासी हजार ऋषियों में से ६०००० वालखिल्य तो सूर्य्यलोक को चले गये और।

तेषांपञ्चशतान्येव ४६५ पञ्चन्यूनानिवैद्विजाः।
गंगा यमुनयोर्मध्ये तेपुस्ते परसंतपः।६२॥

(पांच कम पांच सौ) ४६५ ब्राह्मण गंगा यमुना के मध्य के देश में तप करने चले गये वे ही अन्तर्वेदी ब्राह्मण कहाये क्योंकि गंगा यमुना के बीच के देश को ही अन्तरवेद कहते हैं ब्राह्मण जाति में इस जाति का पद उच्च है अतएव उस में रहने वाले अंतरवेंदी उच्च हैं। इस जाति से २५१ प्रश्नों के उत्तर आने की दृढ़ आशा है अतएव इस जाति के गोत्रादि का सम्पूर्ण विवर्ण हम अपने सप्त खंडी ग्रन्थ में देंगे। यहां तो वहुत सूक्ष्म रूप से लिखा है।

(५८) अनन्त पंथी :—यह एक पान्थिक जाति है पंथ के कारण से यह नाम पड़ा है यह एक वैश्नव सम्प्रदाय का पंथ है इस पंथ के लोग रायबरेली व सीतापुर के जिले में विशेष रूप से हैं सन् १८६१ में इन की संख्या केवल १७० थी ये लोग अनन्त भगवान के उपासक हैं आज कल इनका विशेष प्रचार नहीं है वैश्नव धर्म के अनुसार सव कोई इन में सम्मलित हो सकते हैं। युक्त प्रदेश में इस पंथ के मनुष्य इक्के दुक्के कहीं २ हैं। शेष ग्रन्थ में देखना।

(५६) असोप :— यह एक दाहिमा ब्राह्मण जाति का भेद है यह जाति मारवाड़ में पायी जाती सुनी गयी है परन्तु ये लोग वहुत कम हैं इने गिने कहीं २ पाये जाते हैं कदाचित यह दधीच ब्राह्मण समुदाय का यह एक भेद है।

(६०) आकाशमुखी :- यह एक हिन्दूजाति है युक्तप्रदेश में इसका विशेष प्रसार नहीं है ये लोग शैव सम्प्रदायी हैं धार्मिक सिद्धान्त व मत के कारण से यदि यह जाति मानी जाय तो कोई

हानि नहीं है ये लोग अपने मुख को ऊर्ध्व आकाश की ओर रखते हैं यहां तक कि इस का अभ्यास बढ़ाते २ उन की गर्दन की नसें जकड़ जाती हैं और फिर इधर उधर मुड़ नहीं सकती हैं ये लोग ऐसा करने से अपनी मुक्ति मानते हैं ये अपने बाल बढ़ाते तथा गेरुवे वस्त्र धारण करते हैं। शरीर पर भस्मी लगाते और एकान्त में जप तप भी करते रहते हैं। शेष ग्रन्थ में।

(६१) आगरी :—यह जाति दक्षिण देश में है इसकी उत्पत्ति आगल ऋषि ने लिखी है ययातीराजा के वंश में एक बलीन्द्र नामक राजा था उसकी स्त्री का नाम आगलिका था उससे जो पुत्र हुवा वह आगल कहाया, फिर बलीन्द्र के पश्चात् यह लोग बिंबराजा के पास कोकनदेश में आये इनका मुख्य स्थान दक्षिण में 'मुर्गी' है परन्तु ये कोकन में रहने लगे ये लोग मीठा का व्यापार किया करते थे अतः इनका नाम मीठ आगरी हुवा ये लोग पहिले यज्ञोपवीत पहिन्ते थे परन्तु कोकन देश में आकर सब छोड़ दिया और मद्यमांस मच्छी के सेवन में रत होगये शाहपुर में ये लोग अब भी जनेऊ पहिन्ते हैं इस जाति के दो भेद हैं ? १ मीठ आगरी और २ ढोल आगरी, परन्तु इन दोनों में शरीर सम्बन्ध नहीं होता है परन्तु खान पान में प्रायः विशेष भेद नहीं है। यह दक्षिण देशीय जाति है युक्तप्रदेश की अपेक्षा राजपुताने में अधिक है ये लोग अपने को क्षत्रिय मानते हैं परन्तु सर्वसाधारण ने इन्हें शूद्र बतलाया है इस जाति के विषय में कोई सज्जन कुछ विशेषता रखते हों तो मंडल को सूचना देंगे तो उसे हम अपने ग्रन्थ में लिखेंगे क्योंकि किसी २ ने इस जाति को चौहाण राजपूतवंश में से बतलाया है हमारे संग्रह किये हुये प्रमाण भी ग्रन्थ में ही लिखे जावेंगे।

(६२) आचार्य्य :—प्रायः सर्वसाधारण लोगों ने इसे एक जाति मान लिया है परन्तु यथार्थ में यह जाति नहीं है किन्तु ब्राह्मण विद्वानों की एक पदवी है जैसे।

उपनीयेतु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद्द्विजः ।
सकल्पं सरहस्यञ्च तमाचार्य्यं प्रचक्षते ॥

मनु० अ० २ श्लो० १४२

अर्थः—जो ब्राह्मण शिष्य का उपनयन संस्कार कराके यज्ञ विधि से अथवा वेदान्तविधि से जो वेद को पढ़ाता है वह आचार्य्य कहाता है। यज्ञ का करने वाला भी आचार्य्य कहाता है, संस्कृत की एक परीक्षा का नाम भी आचार्य्य है कुलगुरु भी आचार्य्य कहाते हैं, कर्मकाण्ड का अधिष्ठाता भी आचार्य्य कहाता है, आजकल काशी में आचार्य्य परीक्षा भी पास होती है अतएव जो आचार्य्य परीक्षा पास कर लेता है वह भी आचार्य्य कहाने लगता है। पूर्वकाल में यह पद केवल ब्राह्मणवर्ण को मिलता था आजकल तो धुनहा जुलाहा कोई भी आचार्य्य बन सकता है परन्तु सच्चे आचार्य्य प्रातः स्मरणीय महर्षि द्रोणाचार्य्य जी ही हुये हैं।

आचार्य्य शब्द का स्त्रीलिंग आचार्य्या है इस का पर्य्याय वाची शब्द मन्त्रव्याख्याकर्त्री है अर्थात् वेद शास्त्राध्यापनकर्त्री ऐसा भी अर्थ होता है याने वह स्त्री जो यज्ञोपवीत कराके कन्या को यज्ञविधि से व वेदान्त विधि से जो वेद व शास्त्र पढ़ावे वह आचार्य्या कहाती है। जिनका यह कथन है कि स्त्रियों को वेद पढ़ने पढ़ाने व यज्ञोपवीत का अधिकार नहीं है उन्हें यहां लक्ष्य करना चाहिये शेष सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे।

(६३) आचारलू :—दक्षिण प्रान्त में श्रीवैष्णव ब्राह्मणों का एक कुल नाम है ये तैलंगी भाषा का एक शब्द है आचार्य्य शब्द का बहु वचन आचार्लु है यह आचार्य्य शब्द का अपभ्रंश रूप है आचार्लु और चार्लु एक ही से हैं इस जाति के शिरोमणि मिस्टर रंगा चार्लु हैं दिवान माईसोर, तथा मिस्टर आनन्दा चार्लु मदरास हाईकोर्ट के प्रसिद्ध अडवोकेट थे, शेष विवर्ण व इन की जाति तथा इनकी देशहितैषिताका विवरण ग्रन्थ में लिखेंगे।

(६४) **आचारी:**—यह रामानन्द स्वामी के सम्प्रदाय की एक भेद है यथाः—

१ आचारी   ३ वैरागी
२ सन्यासी   ४ खाकी

इन उपरोक्त चार भेदों में से आचारी एक पहिला भेद है यह रामानन्द स्वामी के शिष्यों का एक भेद है आचारी लोग ब्राह्मण वर्ण में होते हैं और ये लोग अपने शिष्य भी ब्राह्मणों ही को करते हैं परन्तु सन्यासी वैरागी और खाकी में कोई भी जाति का मनुष्य होसकता है आचारी और खाकी वैरागी सन्यासी आदिकों के वस्त्रों में एक बड़ा भेद रक्खा गया है याने आचारी लोग सदैव ऊनी व रेशमी वस्त्र तथा पीताम्बर पहिने रहते हैं परन्तु अन्य उपरोक्त तीनों को पीताम्बर आदि पहिनने का अधिकार नहीं है आचारी लोग प्रायः बड़े ही आचार विचार छूत छात के साथ रहते हैं और अपने ही हाथ का भोजन करते हैं हरेक किसी उत्तम मनुष्य के साथ भी स्पर्श नहीं करना चाहते हैं और यदि स्पर्श हो जाय तो सर्वस्त्र स्नान करते हैं यह मत, व सम्प्रदायिक जाति कही जा सकती है।

राजपूताना प्रान्तस्थ जेयपुर राज्य में आचारी एक नीच श्रेणी के ब्राह्मणों की जाति भी है जो मृतकों के वस्त्रादि शमसान में लेते हैं दूसरे शब्दों में ये महाब्राह्मण व कट्या कहे जा सकते हैं। शेष विवर्ण ग्रन्थ में लिखेंगे उपरोक्त आचारियों में से कोई महाशय अपनी विवर्ण कुछ उत्तम रखते हों तो मंडल को शीघ्र लिख भेजें उसपर मंडल विचार करेगा।

(६५) **आभीरगौड़;**—यह गौड़ ब्राह्मणसमुदाय में से गौड़ों का एक भेद है इसका विवर्ण एक विद्वान ने ऐसा लिखा है कि जिन गौड़ ब्राह्मणों के यहां आभीर व अहीर जाति की यजमान वृत्ति थी वे अभीर गौड़ कहाये कुछ विवर्णः इन का आभीर ब्राह्मण

से मिलता जुलता सा भी किसी ने लिखा है राजपुताना व युक्त प्रदेश में तो कोई भी उच्चतम कोटि के ब्राह्मण अहीर जाति के यहां अन्य द्विजों की तरह से सब तरह का कर्मकाण्ड करते कराते हैं और उन के जाति पद में तनिकसा भी भेदाऽभाव नहीं माना जाता है कदाचित खान्देश की दशा कुछ सन्देहजनक होगी अतएव मंडल के विद्वानों के परामर्श के पश्चात् ही विशेष विवरण ग्रन्थ में लिखेंगे।

(६६) आपा पंथी :- यह एक वैश्नव सम्प्रदाय के अन्तर्गत पन्थ का नाम है इस के चलाने वाले एक मुन्नादास जी सुनार थे जो खेड़ी के ज़िले के मुडवा गांव में रहते थे जो कि एक अद्भुत शक्ति रखने वाले थे इस कारण से साधारण जन-समुदाय उन का शिष्य हो गया और पंथ विशेष रूप से फैलने लगा यह पंथ अनुमान संवत १८३० के लग भग का है युक्तप्रदेश में इन की आबादी करीब ८००० मनुष्यों की है यदि इस सम्प्रदाय में किसी के पास मुन्नादास जी का फोटो हो तो मंडल को भेजदें ताकि वह ग्रन्थ में इस पंथ के विशेष विवर्ण के साथ छाप दी जावे। शेष ग्रन्थ में।

(६७) आदमखोर :-यह जाति इस देश में आज कल नहीं मिलती है इनका पेशा मनुष्य का मांस खाना है ये लोग पीरू, बुखारा, और समरकंद और असभ्य देशों में पाये जाते हैं। शेष ग्रन्थ में लिखेंगे।

(६८) आदि गौड़ ब्राह्मण :-यह गौड़ ब्राह्मण समुदाय के मुख्य मुख्य ३२ भेदों में से एक भेद है हम ने बत्तीस तरह के गौड़ों का पता लगा कर विवर्ण संग्रह किया है गौड़ों के १४४४ भेद जो माने जाते हैं वे उपभेद हैं उन का भी पता व विवर्ण एकत्रित किया है इन सब बातों का विवर्ण हिन्दू जाति व्यवस्था कल्पद्रुम नामक हमारे सहखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे अतएव वहां ही गौड़ों का विशेष विवर्ण मिलेगा।

जिस प्रकार गौड़ों के मुख्य भेद १ आदि गौड़ २ शुद्ध गौड़ ३ सनाढ्य गौड़ ४ श्री गौड़ ५ श्री श्री गौड़ ६ गुजर गौड़ व गुर्जर गौड़ ७ टेकावारा गौड़ ८ कुशर्वा गौड़ ९ चमर गौड़ १० हरियाणा गौड़ ११ किलोलिन गौड़ १२ शुक्लवाल गौड़, १३ जुगाद गौड़, १४ कांधिल गौड़ १५ धर्म गौड़, १६ खंडेलवाल गौड़, १७ डरोल्या श्री गौड़ १८ सिद्ध गौड़ १९ सिखवाल गौड़ २० पारीख गौड़ २१ सारस्वत गौड़ २२ कान्यकुब्ज गौड़ २३ गौड़ २४ उत्कल गौड़ २५ मैथिल गौड़ २६ दाधीच गौड़ २७ माथुर गौड़ २८ भट गौड़ २९ बागड़ा गौड़ ३० केवल गौड़ ३१ ओझा गौड़ ३२ आदि श्री गौड़।

आदि शब्दोपाधिदत्ता ब्रह्मणातु स्वयंभुवा।
वेदोपि दत्तस्तेनैवह्यादि गौडस्तुतोमतः॥

(जन्मेजय दिग्विजये)

अर्थात् जिन गौड़ ब्राह्मणों को ब्रह्मा जी ने आदि में वेद पढ़ाया वे आदि गौड़ ब्राह्मण कहाये प्राचीन काल से आज तक स्यमन्तपञ्चक तीर्थ जिसे रामहृद भी कहते हैं जो आज कल कुरुक्षेत्र में विद्यमान है उस तीर्थ के तीर्थ पुरोहित व अग्रवाल वैश्यों के महापूज्य आदि गौड़ ब्राह्मण ही चले आ रहे हैं इन का आदि निवास स्थान दिल्ली मंडलान्तर्गत कुरुक्षेत्र ही है अतएव दिल्ली मंडल के कुरुक्षेत्र वासी आदि गौड़ जो आजकल क़रीब २ भारत के सम्पूर्ण प्रान्तों में चले गये हैं उन का विवरण यहां स्थानाभाव से न लिख कर विस्तृत रूप से पूरा २ विवरण अपने उपरोक्त ग्रन्थ में देंगे। तहां पं० नाथूलाल जी सुपरिन्टेन्डेन्ट अजमेर कोर्ट का फोटो देंगे

(६९) आर्यः—इस हिन्दुस्थान देश का प्राचीनतम नाम ही आर्यावर्त था इस देश के निवासी आदि से आर्य कहते कहाते चले आये हैं क्योंकि आर्य नाम श्रेष्ठ, धर्मात्मा, महाकुल, कुलीन, सज्जन और साधुओं के हैं अतएव इस देश वासी श्रेष्ठतम माने जाकर आर्य कहे जाने लगे परन्तु जब मुसलमानों का राज्य इस देश में आया उन्हों ने मुसलमानी धर्म न स्वीकार करने वाले सम्पूर्ण

इस देश वासियों को हिन्दू कहा जिस का अर्थ उत्तम नहीं होने से हम नहीं लिखना चाहते *। अतएव जिस देश में हिन्दू रहे वह हिन्दुस्थान कहाया।

परन्तु आजकल ये दोनों ही शब्द प्रचलित प्रणाली के अनुकूल एक विशेष अर्थ के रखने व जतलाने वाले हैं अर्थात् आजकल आर्य्य वह कहाता है जो दो चार पैसा मासिक चन्दा आर्य्यसमाज को देकर परस्पर नमस्ते को निमित्त, भूर्भुवस्वः को भूरभूसर, अग्निहोत्र को अगनहोतर, सन्ध्या को सनधिया, कहता हुआ अपने नाम के अन्त में वर्मा, शर्मा, व गुप्त लगाकर बड़े २ आर्य्यसमाजी प्रसिद्ध विद्वानों से नमस्ते करवाने वाला जो है वही आर्य्य माना जाता है। दूसरे आजकल हिन्दू वह माना जाता है जो आंख मीचकर लीक का फकीर, बुद्धि का शत्रु, गौ, गधे, बकरे, ऊंट, घोड़े व मनुष्य को मारकर यज्ञ करने कराने का समर्थन करने वाला, पुराण व स्मृतियों की वेदविरुद्ध बातों को वेद के प्रतिकूल होने पर भी पुष्ट करने वाला, श्रीराम श्री लक्ष्मण श्री महारानी सीता तथा श्रीकृष्ण भगवान व मैया राधिका जी को अपने सामने नचा नचा कर विपक्षियों को हंसाने वाला, देश सुधार स्वदेशाऽभिमान स्वदेशप्रियता तथा स्वदेशानुराग को एक तरफ रखकर अपना ही पेट मोटा करने वाला जो है वह पक्का हिन्दू माना जाता है, इसही तरह जो श्रीराम कृष्ण को भरपेट गाली दे ऋषिदयानन्द के लेख पर ही जो हड़ताल फेरे हिन्दुओं के जी दुखाने के लिये मूर्ति पूजा व तीर्थादि की निन्दा करे वह पक्का आर्य्य है अतएव आजकल आर्य्य नाम एक विशेष अर्थ रखता है इन आर्य्यों की वर्त्तमान समुदाय का नाम है आर्य्यसमाज इस आर्य्यसमाज से जो देश का भला हुआ है उसके लिये हिन्दूसन्तान को ऋषिदयानन्द का कृतज्ञ होना चाहिये परन्तु उनके चेलों द्वारा देश में भ्रष्टाचार का भी बहुत प्रचार बढ़ गया है कारण यह है कि आजकल आर्य्यसमाज में पांच तरह के आर्य्य सम्मिलित हैं यथाः

---

* सप्तखंडी ग्रन्थ में हिन्दू शब्द के साथ बड़े २ प्रमाण लिखे जावेंगे।

महिला:-आर्य्य समाज में थोड़ा सा समुदाय उन आर्य्यों का है जो हिन्दुवों की बिना सिर पैर की बातों को देखकर आर्य्यसमाज में आ सरती हुये हैं।

दूसरा सबसे बड़ा समुदाय आर्य्यसमाज में उन आर्य्यों का है जिनकी उत्पत्ति शूद्रवर्णीय तथा वर्णसंकर, लोमज प्रतिलोमज व अनुलोमज तथा हरामजादे आदि लिखी होने के कारण हिन्दू जातियों में जो पैरों के नीचे कुचले जाकर घृणित दृष्टि से देखे जाते थे उन्हें आर्यसमाजों में मंत्रित्व, प्रधानत्व, पुस्तकाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष तथा अन्तरङ्ग सभा की प्रबंध कर्तृसभावों की मेम्बरी मिलगयी जिससे आर्यसमाज के बड़े २ उपदेष्टा विद्वान तथा आचार्य्यों की चोटी उनके एक मात्र कब्जे में होगयी और बड़े २ ब्राह्मण विद्वानों को उनके मुंह की ओर ताकना पड़ा, क्योंकि सम्मति का जो मान्य आर्य्यसमाज में काव्यतीर्थ जी, मनीषीजी, महात्मा जी लाला जी, वेदभाष्यकार, शास्त्री जी तथा अन्य विद्वानों का है वही मान्य इन घसीटे, पलीते, झुन्ना, मुन्ना, बाबूराम और कोचवान महाशय का भी है क्योंकि वे भी समाज के मेम्बर हैं तो वे भी समाज के मेम्बर हैं तिल और कपास में राई मात्र का भी भेद नहीं है।

तीसरा समुदाय आर्य्यसमाज में भुक्कड़ भैय्यावों का है कि जो नौकरी की खातिर आर्य्यसमाज में भरती होकर नमस्ते नमस्ते करके कोई पंडित, कोई हरिया प्रेस मैनेजर, कोई मैनेजर, कोई क्लार्क, कोई सुपरिन्टेंडेन्ट कोई उपदेशक व कोई प्रचारक बनबैठे और और जहां उन्हें दूसरी अच्छी सी नौकरी दूसरे डिपार्टमेन्ट में मिली कि चट आर्य्यसमाज को तिलाञ्जलि देकर चलदिये।

चौथा समुदाय आर्य्यसमाज में स्त्रियों के चाहने वाले आर्य्यों का है जिन्हें हिन्दू समाज में स्त्रियें न मिलसकीं व अधिक मूल्य पर मिलने लगीं वे चट आर्य्यसमाज में भरती होकर किसी भी अनाथालय की लड़की व विधवा रांड के साथ विवाह कर लिया और आनन्द मानने लगे।

इन सब का भोजन व्यवहार तो एक है परन्तु विवाह सम्बन्ध सब का एक नहीं है भूतपूर्व सर मुत्तस्वामी आयरजज़ मेडरास हाई कोर्ट भी तंजोर जिले के वर्मादेस ब्राह्मण थे इन के देहान्त के पश्चात् मिस्टर सुब्रह्मन्य आयर मद्रास हाईकोर्ट के जज नियत हुये।

आयर वंश के शिरोमणि सर मुत्तस्वामी आयर एक योग्य जज ही नहीं थे वरन यह एक देश के बड़े भारी शुभचिन्तक भी थे आप का जब स्वर्गवास हुवा तब शोक जनक सभा में चीफ जस्टिस साहब ने जो कुछ कहा था वह सब विषयी मासिक पत्र-द्वारा प्रकाशित होने वाले सप्तखण्डि ग्रन्थ में छपेगा।

(७३) आयंगर :— दक्षिण में श्री वैश्नव ब्राह्मणों का 'सरनेम, आयंगर है इस जाति की विद्या स्थिती बहुत ही प्रशंसनीय है इस जाति के शिरोमणि मिस्टर भश्याम आयंगर अडवोकेट मेडरास हाईकोर्ट हैं। शेष ग्रन्थ में लिखेंगे

(७४) आसिया :— यह एक क्षत्रिय जाति का भेद बताया गया है यह जाति राजपूताना में विशेष रूप से है ये लोग अपने को सरवैये राजपूत बताते हैं इन के आदि पुरुष आबू सूरजी एक राजपूत थे उन्हीं की ये सन्तान हैं इस जाति में काम प्रायः चारणपने का होता है हम ने इन के १७ भेदों का पता लगाया है राजपूताने में ये लोग परिहार क्षत्रियों के पौलपात थे परन्तु इन पौलपातों में से बारहट नामी पौलपात एक समय नाहडराव के बेटे धूमकुंवर के साथ चौपड़ खेल रहा था खेलते खेलते ही परस्पर में तकरार हो गयी जिस से बारहट पौलपात ने धूमकुंवर को मार डाला इस से इन की पौलपात छीनी जाकर सिंडायचों को दे दी गयी तब से यह दोहा प्रसिद्ध है कि:—

धूमकुंवर ने मारियो चौपड़ पासे चाल।
तिनदिन छोड़ी आसिया परिहारारीपौल॥

यह दोहा मारवाड में सर्वत्र प्रसिद्ध है। शेष ग्रन्थ में लिखेंगे।

(७५ इडिगा :— यह एक दक्षिण देशीय ताड़ी का काम करने वाली जाति है ।

(७६) इन्दोरिया :— यह एक गौड़ ब्राह्मणों के एक कुल का नाम है इस नाम से गौड़ों में सासनों का ग्रहण भी होता है इन्दर गढ़ से निकास होने के कारण इन्दोरिये कहाये अथवा इन्दौर से इन्दोरिये हुये । विशेष विवर्ण ग्रन्थ में लिखेंगे ।

(७७) इराकी :— इस जाति का नाम " राकी ,, भी है यह युक्त प्रदेश में पायी जाती है विशेषतया ये लोग कलवारों की सन्तान वताये जाते हैं कतिपय सज्जनों ने इस जाति को वैश्य वर्ण में वतलायी है परन्तु इन में कितने ही अपना निकास पारसियों से वताते हैं और कहते हैं कि पारिस में " इराक ,, एक प्रान्त है उस से निकास होने के कारण इराकी नाम पड़ा है परन्तु इराकी नाम " अर्क ,, से भी पड़ सकता है अर्थात् अर्क के निकालने वाले इराकी कहाये हों ये लोग प्रायः तम्बाकू का धन्दा करते हैं परन्तु गोरखपुर में बहुत से बड़े धनाढ्य व प्रतिष्टित हैं इन से २५१ प्रश्नों के उत्तर आने पर ही इन का विशेष विवर्ण हम अपने सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे ।

(७८) उड़िया :— उड़ीसा देश में एक साधारण जातिपद रखने वाली ब्राह्मण जाति है इस जाति के लोग जगन्नाथ पुरी में पुजारी सुने जाते हैं पुरी में इस जाति का समुदाय विशेष है उड़िया पुजारी प्रायः छोटी जाति माने जाते हैं, उस देश में सर्वसाधारण के पबलिक मन्दिरों में प्रायः छोटी जाति के मनुष्य नौकर रक्खे जाते हैं ऐसे ही प्रमाण व साधारण जन सम्म-ति है कदाचित इनका पद उच्च होगा परन्तु यहां स्थानाऽभाव से न लिखकर विशेष ग्रन्थ में लिखेंगे ।

(७९) उत्कल:— यह दस प्रकार के मुख्य ब्राह्मणों में से पञ्चगौड़ समुदाय के अन्तर्गत ब्राह्मण जाति है यह नाम देश भेद

के निवास के कारण से पड़ा है क्योंकि शास्त्रों में उत्कल देश की सीमा मिलती है आजकल का प्रसिद्ध देश जो उड़ीसा कहाता है वहां के रहने वाले ब्राह्मण उत्कल कहाते हैं यथा

उत्कलोहिनृपेन्द्रस्तु पुरा स्वविषये द्विजान् ।
गंगातटास्थितान् कांश्चि दानाय विषये स्वके॥
पुरुषोत्तम पुर्यां वै जगदीशस्य सेवने ।
यज्ञान्तेस्थापयामासस्वनाम्नातान्द्विजोत्तमान्
तेद्विजाश्चोत्कलाजाता जगदीशस्य सेवकाः
वेद वेदाङ्ग शास्त्रज्ञ मत्स्य भक्षण तत्पराः ॥

अर्थः-- उड़ीसा में पहिले एक उत्कल नाम का राजा था उसने वहां गौड़ ब्राह्मणों को बुलाकर भागीरथी के तट पर जगन्नाथ पुरी में यज्ञ करवाया और यज्ञ समाप्त होने पर उन ब्राह्मणों को श्री जगदीश जी की सेवा के अर्थ नियत किया और वे उत्कल कहाये ।

इस जाति के विषय बहुत से अच्छे व बुरे प्रमाण जो मिले हैं उनका निर्णय करके विशेष विवर्ण, ग्रन्थ में लिखेंगे ।

इन के विषय ऐसा भी विवर्ण मिला है कि मनु जी अपने बड़े पुत्र इलको राज्य सौंप कर आप तपस्यार्थ वनको चलेगये । इल ने सर्वत्र दिग्विजय किया संयोगवश आप ही पारवती जी के वनको जाकर स्त्री रूप होय बुध के वीर्य्य से चन्द्रवंशीयों को उत्पन्न किया फिर वह इल छोटे भाई इक्ष्वाकु के यत्न से एक मास स्त्री व एक मास पुरुष सुद्युम्न नाम किन्नर योनि में रहने लगा । जिसके तीन पुत्र गय, उत्कल व हरिताश्व हुये, गय ने गया बसायी, हरिताश्व ने हरिवर्ष (अफ्रिका) बसाया और उत्कल ने उड़ीसा बसाया तहां के रहने वाले गौड़ ब्राह्मण देश भेद के कारण उत्कल ब्राह्मण कहाये, मण्डल के निर्णयान्तर शेष ग्रन्थ में लिखेंगे

८० उनाया:— यह जाति वैश्यवर्ण में है प्रायः इस जाति में फारसी का बहुत प्रचार है अतएव कन्नौजिये ब्राह्मणों ने इनकी खुशामदी करते २ इन्हे " लाला जी " व " कायथ " पुकारने लगे जिससे लोग इन्हें कायस्थों का एक भेद मानने लगे परन्तु असल में ये लोग कायस्थ नहीं है फारसी के पढ़ने व फारसीदा आदमियों की संगति के कारण ये लोग भी मद्यमांस के प्रेमी हो गये। ऐसी ही सम्मति एक विद्वान की है परन्तु इसमें यथार्थ क्या है इस का निर्णय ग्रन्थ में करेंगे।

८१ उनेवाल ब्राह्मण:— यह एक दक्षिण प्रान्तर्गत गुजरात प्रदेशस्थ पञ्चद्रविडों में गुर्जर ब्राह्मणों का एक भेद है इनका निकास विद्वानों ने " उन्नतक्षेत्र " से लिखा है ये ब्राह्मण अपने को महर्षि समझते हैं परन्तु इनकी प्राचीन योग्यता की बात को एक तरफ रखकर वर्त्तमान स्थिती व योग्यता के कारण जितने ये पूर्व काल में उच्च थे उतने ही अब नीच कहे व सुने जाते हैं अतएव मंडल के निर्णयान्तर ही हम इनका विशेष विवर्ण ग्रन्थ में लिखेंगे।

८२ उदेन्य—: यह सनाढ्य ब्राह्मणों के २४ कुलों में से एक कुलनाम है इसका विवर्ण सनाढ्य ब्राह्मण प्रकर्ण में लिखा जाय गा। देखें ये लोग अपना विवर्ण क्या भेजते हैं ?

८३ उप पांचाल:— यह उप ब्राह्मण जातियों का एक समुहवाचक नाम है ऐसा लेख मिलता है कि ब्रह्मा से पांच ऋषि उत्पन्न हुये जिनकी उपपांचाल संज्ञा हुई इसही के आधारानुसार सुतार, लुहार, बढ़ई, खाती सिलावट, खेतेड़ कुम्हार, कसेरे तथा ग्रामणिये नार आदि ये सब जातियें अपने को ब्राह्मण बतलाती हैं और अन्य ब्राह्मणों की बराबर होने का दावा करती है नमस्कार करने को तय्यार हैं परन्तु साधारण जनसमुदाय इस के बहुत ही प्रतिकूल हैं अधिक सम्मतियें हमारी यात्रा में इनके विरुद्ध तथा थोड़ा

सम्मतियें इनके अनुकूल भी मिली हैं हमारे जनरल नोटिस के अनुसार उपरोक्त जातियों में से एक आध ने ही अपने प्रमाण भेजे हैं शेष गाढ़ निद्रा में सो रही हैं हमने इन जातियों का विवर्ण ब. हुत कुछ संग्रह किया है परन्तु निर्णय होने पर ही हमारी सम्मति सहित पूर्ण विवर्ण ग्रन्थ में लिखेंगे क्योंकि उपरोक्त जातियों में से किसी २ को लोगों ने दोगली, संकर शूद्र आदि आदि भी बतलायी हैं और बड़े बड़े प्रमाण भी बतलाये हैं उन सबका उल्लेख ग्रन्थ में मिलेगा।

८४ उपपर्वः— यह द्राविड़ देश की कृषी करने वाली जाति है इनकी स्थिति वहां साधारण है। शेष ग्रन्थ में।

८५ उप्पलः— यह पंजाब प्रान्तीय खत्री जाति का एक उपभेद है बाराह घर याने खत्रियों के बाराह कुलों में से प्रथम कुल है इस का विवर्ण ग्रन्थ में मिलेगा।

८६ उपाध्यायः— यह कोई जाति नहीं है किन्तु अज्ञानता से लोगों ने इसे एक जाति मान लियी है किन्तु ब्राह्मण जातिके विद्वानों का एक पद है अर्थात् जिस कुल में उपाध्यायगीरी का कार्य्य चला आरहा है वह कुल प्राय इसही नाम से पुकारा जाने लगा जिसे सर्वसाधारण ने एक जाति मान लियी है यह पद केवल ब्राह्मण वर्ण को ही राज्य की ओर से मिलता था यथा—

एक देशंतु वेदस्य वेदाङ्गान्यपि वा पुनः।
योऽध्यापयति वृत्यर्थ मुपाध्यायः सउच्यते॥

मनु अ० २ श्लो० १४१

अर्थात् जो विद्वान वेद के एक भाग को व वेद के अङ्ग शिक्षा कल्प, व्याकरण ज्योतिष आदि को आजीविकार्थ जो पढ़ाता है वह उपाध्याय कहाता है।

इस उपाध्याय शब्द का स्त्रीलिंग उपाध्याया ! होता है जिस

गर्म्मी सुल्फी यानि चिलम द्वारा जो खूब गांजा, चड्स आदि पीवे वह आज कल पक्का ऋषि माना जाता है प्राय: मूर्ख हिन्दू ऐसों का सत्कार करते हैं।

प्राचीन काल में ऋषि वे कहाते थे जिन्हों साङ्गोपाङ्ग ब्रह्मचर्य्य पालन करके उग्रतप द्वारा सिद्धि प्राप्त कियी थी तथा जो वेदों के मंत्र व सूक्तों के जो प्रचारक थे वे ऋषि कहाते थे। अतएव कोषकारों ने ऐसा अर्थ किया है कि "ऋषति प्राप्नोति सर्वान् मन्त्रान् ज्ञानेन पश्यति संसार पारंवाइति तथा ज्ञान संसारयोः पारगः... शास्त्र कृदादाचार्य्य:" इस का भावार्थ तो ऊपर दिया जा चुका है।

सृष्टि की आदि से आज तक जो ऋषि हुये हैं उन्हीं के स्मृत्यर्थ उन्हीं के नामों से गोत्र प्रकट हुये हैं और ये ही ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यों के गोत्र हैं यथा:—

सप्त ब्रह्मर्षि देवर्षि महर्षि परमर्षयः।
काण्डर्षिश्च श्रुतर्षिश्च राजर्षिश्च क्रमावराः॥

रत्नकोषे।

अर्थात् ऋषियों के भेद यह हैं; ब्रह्मर्षि, देवर्षि, महर्षि, परमर्षि, काण्डर्षि, श्रुतर्षि और राजर्षि ये सात भेद ऋषियों के हैं।

शास्त्रों में व्यास जी को महर्षि पदवी है, भेल ऋषि परमर्षि संज्ञक हैं, कण्वमुनि देवर्षि संज्ञक हैं, वसिष्ठ जी महाराज ब्रह्मर्षि कहाते हैं, सुश्रुत ऋषि श्रुतर्षि कहाते हैं, ऋतुपर्ण राजर्षि कहाते हैं और जैमिनी ऋषी काण्डर्षि कहाते हैं। परन्तु मन्वन्तरों के भेदों से शास्त्रों में भिन्न २ सप्तर्षि माने गये हैं जैसे:—

मरीचिरत्रिर्भगवानङ्गिराः पुलहः क्रतुः।
पुलस्त्यश्च वसिष्ठश्च सप्तैते ब्राह्मणा सुताः॥

हरिवंशे सर्ग ७ श्लो० ८

अर्थात् १ मरीचि २ अत्रि ३ अङ्गिरा ४ पुलह, ५ पुलस्त्य ६ क्रतु और ७ वसिष्ठ ये स्वायम्भू मन्वन्तर के सप्तर्षि हैं। पुनः—

ऊर्जस्तम्भस्तथा प्राणो दत्तोलि ऋषभस्तथा।
निश्चरश्चार्ववीराश्च तत्र सप्तर्षयोऽभवन् ॥

मार्कण्डेये । ६७।४

१ ऊर्जस्तम्भ २ प्राण ३ दत्तोलि ४ ऋषभ ५ निश्चर ६ चार्व और ७ वीर ये स्वारोचिष मन्वन्तर के सप्तर्षि हैं।

ज्योतिर्धामा पृथुः काव्यश्चैत्रोऽग्निर्वलकस्तथा।
पीवरश्च तथा ब्रह्मन्! सप्त सप्तर्षयोऽभवन् ॥

मार्कण्डेये ७४। ५९

भाषा — तामसमन्वन्तर में १ ज्योतिर्धाम २ पृथु ३ काव्य ४ अत्रि ५ अग्निवल ६ पीवर और ७ ब्रह्म ये सात ऋषि हुये हैं। पुनः—

हिरण्यरोमा वेदश्रीरूर्ध्वबाहुस्तथापरः।
वेदबाहुः सुधामा च पर्जन्यश्च महामुनिः ॥
वशिष्ठश्च महाभागो वेदवेदान्तपारगः।
एते सप्तर्षयश्चासन् रैवतस्यान्तरे मनोः ॥

मार्कण्डेये ७५। ७३-७४

अर्थात् १ हिरण्यरोमा २ वेदशिरा ३ ऊर्ध्वबाहु ४ वेदबाहुः ५ सुधामा ६ पर्जन्य और ७ वसिष्ठ ये सातों ऋषि रैवतमन्वन्तर में हुये पुनः—

सुमेधा विरजाश्चैव हविष्मानुन्नतो मधुः।
अतिनामा सहिष्णुश्च सप्तासन्निति चर्षयः ॥

अर्थात् चाक्षुष मन्वन्तर में १ सुमेध २ विरज ३ हविष्मान ४ उन्नत ५ मधु ६ अतिनामा और ७ सहिष्णु ये सप्तर्षि हैं पुनः—

अत्रिश्चैव वशिष्ठश्च कश्यपश्चमहानृषिः ।
गौतमश्च भरद्वाजो विश्वामित्रोऽथकौशिकः ॥

अर्थात् वैवस्वतमन्वन्तर के पश्चात् १ अत्रि २ वशिष्ठ ३ कश्यप ४ गौतम ५ भरद्वाज ६ विश्वामित्र और ७ कौशिक ये सप्तर्षि हैं। शेष विवर्ण सप्तखण्डी ग्रन्थ में देंगे।

(६४)एन्द:— यह एक कुलनाम है (१)बंगाल प्रान्तीय सामान्य दशा के दक्षिणी राढ़ड़ी कायस्थों का नाम है तथा (२) बंगाल के ताती व हिन्दु जुलाहों की जाति का भी "सरनेम" है। दक्षिणी राढ़ड़ी कायस्थों के ७२ कुलों में से एक मुख्य कुल का नाम भी है इस का विवर्ण बंगाल के दक्षिणी राढ़ड़ी "कायस्थों" में मिलेगा इस सब विवर्णको हम अपने ग्रन्थ में विशेपरूप से लिखेंगे।

(६५) ओझा:— यह एक मैथिल ब्राह्मणों का भेद है, यह शब्द उपाध्याय शब्द का अपभ्रंशरूप ओझा या झा होगया है। दूसरे अर्थ में ओझे वे कहाते हैं जो मन्त्र, तन्त्र, जादू, टोना व नाना प्रकार के यन्त्र जन्त्र द्वारा सिद्धि करके दिखा सकते हों, भूतनी प्रेतनी डाकिनी शाकिनी के सिद्धि कर्त्ता को भी ओझा कहते हैं अतएव यह एक प्रकार का लाभदायक धन्दा है इस लिये इस धन्दे को जो करे वह ही ओझा कहाया जा सकता है तदनुसार हमने ७७ तरह के ओझों का पता लगाया है करीब २ सब ही ब्राह्मणों में ओझे होते हैं परन्तु विशेपरूप से मैथिल ब्राह्मणों में ओझे बहुत हैं व होते हैं तथा वे अपने नाम के अन्त में ओझा शब्द लगाने में भी अपनी प्रतिष्ठा व कुलनाम का सङ्केत समझते हैं। जैसे पं० गौरीशंकर झा सुपरिन्टेन्डेन्ट म्युज़ियम अजमेर।

किसी विद्वान् की ऐसी सम्मति है कि इस धन्दे को एक लाभदायक धन्दा समझ कर प्रायः हर कोई जाति के लोग इसे करने लगगये हैं और अपने तई ब्राह्मण वर्ण के ओझे प्रकट करने लगे हैं। ऐसा विवाद प्रायः लुहार व बढ़ई जाति के साथ चल

रहा है अर्थात् भारत के लुहार सुनार वढ़ई खाती आदि जातियें अपने को ब्राह्मण वर्ण में वतलाती हैं परन्तु हिन्दू समुदाय की सम्मतियें इस पर एक सी नहीं हैं हां किसी २ विद्वान की सम्मति में ये जाति उपब्राह्मण संज्ञक मानी गयी है जिसका विवर्ण "वढ़ई" जाति के साथ पुष्ट प्रमाणों सहित मीमांसा करके लिखेंगे।

किसी २ अनुभवी विद्वान ने हमें अपनी जाति अन्वेषण की यात्रा में लेख दिखलाकर यह भी विश्वास दिलाया है कि कुछ ब्राह्मण समुदाय ऐसा है जो विपत्ति वश वढ़ई व लुहार पने का शिल्पकर्म करने लगगया था तिस से लोग उन्हें भी वढ़ई व लुहार ही समझने लगे है और उनकी देखा देखी सम्पूर्ण शिल्प कर्म्मीजातियें आज ब्राह्मण वनने का उद्योग कर रही हैं।

परन्तु कुछ खाती व लुहार समुदाय को विद्वानों ने संकर वर्ण में लिखा है। इसही तरह का झगड़ा "ब्रजस्थ मैथिलों" के साथ भी चल रहा है, मैंनपुरी आदि की ओर के मैथिलों के अगुवा पं० शिवनारायण झा तथा ब्रजस्थ मैथिलों के अग्रगन्ता पं० मेवालाल झा आदिकों के परस्पर विवाद के झगड़े के ट्रैक्ट व किताबें दोनों ओर से हमारे पास आयीं इनमें विवाद था कि "ब्रजस्थ मैथिल" समुदाय का कहना है कि हम ब्राह्मण हैं परन्तु पं० शिवनारायण झा का समुदाय इन "वृजस्थ मैथिलों" को ब्राह्मण न मानकर केवल लुहार वढ़इयों का समुदाय वतलाता है।

हमने दोनों ओर के ट्रैक्ट व पुस्तकादि देखे, पं० शिवनारायण झा ने अपने पक्ष की पुष्टि में काशी की व्यवस्था का उल्लेख किया है पर उस व्यवस्था को अविकल व उसकी असली कापी को अक्षरशः देखने का हमने वहुत उद्योग किया पर पं० शिवनारायण जी झा व पं० गेंदालाल झा उस व्यवस्था को नहीं दिखला सके, इसके विपरीत पं० मेवालाल झा ने हमें वड़े २ प्राचीन स्टाम्प, तमस्सुक, प्रतिज्ञापत्र, व दस्ताएवजें तथा अदालतों के फ़ैसले आदि २ प्रमाण पत्र दिखलाये जिनके आधार पर हमा-

रो जिनकी सम्मति में " व्रजस्थ मैथिल " समुदाय अवश्य ब्राह्मण वर्ण में है ऐसा प्रतीत होता है और केवल जीवकार्थ इस जाति में सर्वोपयोगी शिल्प कर्म की प्रवृति होगयी है सो कुछ बुरी नहीं है। हमारी सम्मति से मिलती जुलती सी और भी विद्वानों की सम्मतियें हैं उनको सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे, यह सब विषय पुष्ट प्रमाणों व तर्क वितर्कों सहित देखना हो तो मण्डल के निर्णयान्तर सप्तखण्डी ग्रन्थ में देखना वहां ही जैसा निर्णय होगा वैसा लिखा जायगा तथा प्रबल प्रमाण भी दिये जावेंगे।

६६ ओड़:- यह जाति कहीं पर ओड व कहीं पर ओढ़ कहाती है पर इसमें केवल नाम मात्र का भेद है यह जाति अपने को क्षत्रिय वर्ण में मानती है परन्तु इन लोगों की साधारणसी स्थिती को देखकर लोगों ने इस जाति को शूद्रवर्ण में बतलायी है कदाचित ऐसा हो ? पर हमें तो इस में सन्देह है इस जाति में लोगकहीं पर रेशमी कपड़ा बुनते हैं कहीं पर व्यापार में संलग्न है इस जाति की लोकसंख्या युक्तप्रदेश में हजारों हैं ये लोग बुलंद शहर अलीगढ़ आदि जिलों में बहुत हैं ये जाति काठियावाड़ में भी हैं तथा राजपुताना भी इस से खाली नहीं हैं इस जाति की विद्या स्थिती साधारणसी है हमारी जाति यात्रा में इस जाति का कोई मनुष्य ऐसा न मिला जिसे अपनी जात्युन्नति का विचार होता ! महावीर हनुमान जी का मंत्री इसही जाति का भूषण एक ओड़ हुआ है वह सब विवर्ण तथा इनके क्षत्रियत्व शूद्रत्व का विवाद व विस्तृत विवर्ण हम अपने सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे तब तक इस जाति के यहां से २५१ प्रश्नों के उत्तर आने की भी सम्भावना है।

किसी एक विद्वान की यह भी सम्मति है कि पुष्कर खोदने के कारण ओडों की पुष्करणे व पोहकरणे ब्राह्मण संज्ञा हुयी।

६७ ओसवाल:- यह भारतवर्ष के हिन्दू समुदाय में से एक व्यापार करने वाली जाति है प्रसिद्ध रूप से सब लोग इस जाति

को वैश्यवर्ण में मानते हैं और ये भी अपने को वैश्य ही मानते हैं परन्तु कुछ विवेकी मनुष्यों की सम्मतियें इसके प्रतिकूल भी हैं भारतवर्ष का आधा व्यापार एक ओर, और आधा व्यापार इस जाति के हाथ में है इस ही तरह भारत की आधी सम्पति एक ओर, और आधी सम्पति इनके हाथ में है यह जैन धर्मावलम्बिनी जाति है इनका निकास राजपुताना प्रान्तस्थ मारवाड़ राज्यान्तर्गत जोधपुर राज्य में जोधपुर से १६ कोस की दूरी पर "ओसिया" एक नगरी है वहां से इस जाति का निकास होनेसे ये लोग दूर देशों में जाकर ओसियावाल कहाये जिसका अर्थ ओसिया के रहने वाले ऐसा होता है, भिन्न २ स्थानों की भाषा तथा मारवाड़ी अक्षरों में मात्रावों का अभाव रहने से लिखने पढ़ने में ये लोग ओसियावाल व ओसावाल लिखने पढ़ने लगे जो धीरे २ बदलकर आजकल का प्रचलित ओसवाल शब्द हो गया पहिले छापेखाने नहीं थे अतएव यह शब्द लोगों की छोटी मोटी पोथियों में व अपनी २ योग्यता के अनुसार अपने हृदयों में था परन्तु अब पुस्तक प्रचार व देश में छापेखानों के कारण आजकल यह "ओसवाल" नाम, सर्वव्यापी होगया है।

यह एक धार्मिक संस्था का नाम होने से सम्प्रदाय का नाम है, इसको लोगों ने एक जाति मान लियी है अन्यथा जो प्रमाण मिले हैं उनसे इस सम्प्रदाय का वर्ण निश्चय होने में ही सन्देह होता है इस सम्प्रदाय की आयु आज संवत १९७१ में १७५९ वर्ष की हुई है।

इस सम्प्रदाय के आचार्य्य महात्मा श्री रत्न प्रभु सूरी जी थे जिन्हों ने अपने तप बल के अनेकों चमत्कार महाराजा ऊपल देव जी को दिखलाये थे तिनके प्रभाव से हजारों जातियें उनकी आज्ञानुवर्तिनी हो गयीं परन्तु किसी २ ऐतिहासिक विद्वान की यह भी सम्मति है तथा अनुभवी लोगों ने भी हमारी जातियात्रा में हमें यह बतलाया है कि श्री रत्नप्रभुसूर्य्य ने सब तरह की जातियों के मनुष्यों को अपने धर्म में करलिये थे अतएव इनके वर्ण पर विचार होना चाहिये।

इस जाति द्वारा देश में अहिंसा धर्म की वृद्धि हुयी है अतएव इन के साथ कृतज्ञता प्रकट की जानी चाहिये विद्या व हिन्दी साहित्य की उन्नति में भी यह जाति लग रही है। इस जाति के कुल नाम तो अनेकों हैं पर दास, दोषी, आदि हैं विद्वानों ने ऐसा कहा है कि जो शूद्र जातियें ओसवाल हो गयीं थीं उन के कुल का कुलनाम दास कहाया। जो पापिष्ट कुकर्मी ओसवाल हुये थे उन के कुल का नाम दोषी रक्खा गया था जो भाषा में दोसी भी कहाता है जो क्षत्रिय ओसिया नगरी में जैनी हुये उन का कुल नाम सिंह रक्खा गया सत्य क्या है ? निर्णयान्तर लिखेंगे।

इस जाति के मुख्य भेद ८४ बताये गये हैं उन में से कुछ एक के नाम यहां लिखते हैं बाकी ग्रन्थ में देखना।

१ छाजिया	९ लोकड़	१७ मिरच	२५ ठाठा
२ चुरलिया	१० खतेड़	१८ गंधी	२६ लोढा
३ चुर्टिया	११ दुधेरिया	१९ फोफरिया	२७ डग्गा
४ सिल	१२ पगेरिया	२० रांका	२८ मोहाटा
५ सोनी	१३ राये दासानी	२१ मारोरी	२९ धाजेर
६ कूकरा	१४ सेखावत	२२ सेखावत	३० धपग्या
७ कटारी	१५ वेद	२३ उलेचा	३१ दुग्गड
८ सिंगी	१६ पलेचा	२४ नाफड़ा	

पाठक ! इन भेदों का अर्थ कराने के लिये एक सरवरिये ब्राह्मण महाशय कानपुर में मुझ से अटके और प्रश्नोत्तर हुये यथा:
प्र० ओसवालों को आपने किस वर्ण में माना है ?

उत्तर:—वैश्यवर्ण में इस पर वह महाशय कहने लगे कि इन में तो कई तरह की छोटी २ जातियें सम्मलित हैं और वे उपरोक्त भेदों का अर्थ करने लगे यथा:—

१ छाज याने सूप बनाने वाली जो जाति ओसवाल हुयी थी वे छाजिया कहाये २ जो चोरी करने वाली जातियें थी वे ओसवाल होने पर चुरलिया कहायी ३ जो चुर्टियापने का काम करते

थे वे चुर्टिया कहाये ४ जो सिल बेचने वाले थे वे सिल कहाये ५ जो सुनार ओसवाल हो गये थे वे सोनी कहाये ६ जो कुत्ते पालने वाली जाति ओसवाल हो गयी थी वह कूकरा कहाये क्योंकि मारवाड़ में तथा ढूंढाड़ में कुत्ते को कूकरा कहते हैं ७ जो सींग का काम करने वाली जाति ओसवाल हो गयी थी वह सिंगी कहाये । जो चीरा फाड़ी का काम करने वाले वेद नाई ओसवाल हो गये थे वे वेद कहाये आदि आदि उपरोक्त प्रत्येक शब्द का अर्थ उस विद्वान ने ऐसा ही विचित्र किया था पर यहां हम सङ्केत मात्र के लिये जहां और सब बातें निर्णयार्थ लिखी हैं तहां ये भी लिख दिये हैं देखें धर्म व्यवस्था सभा व भारत के ओसवाल व अन्य विद्वान गण अपने ८४ भेदों का क्या अर्थ करते हैं ? क्योंकि वे सब ही नाम एक दूसरे से बढ़ कर विचित्र अर्थ रखने वाले हैं ये सब लिखते हुये हमें तो बड़ा दुःख हुवा पर क्या करें ? क्योंकि इन का अर्थ करने के लिये हमें भी उस विद्वान के साम्हने चुप होना पड़ा था भगवान करे उपरोक्त अर्थ असत्य सिद्ध हों तब ही हमें तो प्रसन्नता होगी हम ने कई स्थानों में कई ओसवाल महाशयों से भी उपरोक्त बातों का समाधान चाहा था पर न मिला ।

हमारी जाति यात्रा में भरतपुर में एक विद्वान ने हम से पूछा कि ओसवालों में फेरधिया, भुगड़ी, बलाई, तेलियां, चंडालिया और बांभी आदि २ जो प्रसिद्ध गोत्र हैं अतएव इन का अर्थ व भावार्थ क्या है ? तब हम ने उन महाशय से कहा कि कृपया आप ही अर्थ कीजिये ,, इस पर वह महाशय अर्थ करने लगा कि " जो बलाई, बांभी, चंडाल (भंगी) व तेली आदि जातियें जो ओसिया नगरी में ओसवाल हुयी थीं वे उन की जाति स्मरणार्थ उन की जाति ही के नामों की वही गोत्र संज्ञा हुयी अतएव यदि यह सत्य है तो ओसवालों को किस वर्ण में लिखें कुछ समझ में नहीं आता । इस जाति के अनेकों दानवीर जैन कुलभूषण तथा कई दीर्घदर्शी व देश हितैषी महानुभावों का विवर्ण, ओसवाल सम्प्रदाय से देश

का लाभाऽलाभ, तथा ओसवाल सम्प्रदाय के किसी एक प्रसिद्ध महात्मा का फोटो व उनकी सूक्ष्म तथा सारगर्भित जीवनी, व ओसवाल जाति का पूर्व तथा आद्योपान्त सूक्ष्म इतिहास आदि आदि उपयोगी विषयों का समावेश हमारे हिन्दू जातिवर्ग व्यवस्था कल्पद्रुम नामक सप्तखंडी ग्रन्थ में होगा। क्योंकि इस जाति से देश में अहिंसाधर्म की वृद्धि तथा साहित्य की उन्नति हुयी है अतएव विद्वान लोग इस जाति के गुणों पर दृष्टि दें ऐसी ही आशा है।

(९८) औदिच्च्य ब्राह्मण :— यह गुजरात देशीय ब्राह्मण जाति का एक भेद है ये लोग भारत वर्ष के करीब २ सब ही शहरों में थोड़े व बहुत सर्वत्र हैं परन्तु गुजरात से उतर कर राजपुताना में विशेष हैं इस जाति के २६० भेदों का पता लगा कर विवर्ण संग्रह किया है। इन के दो भेद हैं औदिच्च्य और सहस्रोदिच्च्य। इस जाति में वेद का बहुत प्रचार है अन्य ब्राह्मणों की अपेक्षा इस जाति के मनुष्य प्रायः छोटे व बड़े वेद के पढ़ने पढ़ाने वाले होते हैं तथा बात के सच्चे होते हैं इन की उत्पत्ति के विषय शास्त्र में ऐसा प्रमाण मिलता है कि;—

उदीच्यां स्थापयामास ते सुरा ननु मानुषाः।
उदीच्या ऋषयः सर्वे सदा स्वाचार वर्त्तिनः॥
श्रुति स्मृति पुराणेषु प्रोक्तमस्ति धरापते।
राज्ञः प्रतिगृहं घोर मुदीच्यास्ते विशेषमम्॥

ब्रह्मा जी सृष्टि की आदि में वेद की रक्षा के लिये ब्राह्मणों को उत्पन्न करके उत्तर दिशा में स्थापन किया अतएव उदीची में रहने से औदिच्च्य नाम कहाया सो मूलराजा को गुरू जी कहते हैं कि इनसर्वोंह्य औदीच्च्य ब्राह्मणों के मुख्य भेद ७ हैं।

१ टोलक्य   ३ सिहोरिया   ५ खिरवार   ७ घरिया
२ सिद्ध पुरिया ४ सहस्रोदिच्च्य ६ अनावार

सहस्रोदिच्च्य के मुख्य २ भेद हैं

१ झालावाड़ी २ गोहिलवाड़ी और ३ खराड़ी

इन उपरोक्त सातों भेदों में परस्पर विवाह सम्बन्ध ही नहीं होते हैं वरन सम्पूर्ण व्यवहारों में ये परस्पर एक दूसरे को अलग २ समझते हैं केवल खान पान में सम्मिलित हैं यदि विचार किया जाय तो प्रमाणित होता है कि ये सब भेद केवल देश भेद के कारण से हैं जैसे:— वड़ोदा राज्य में सिद्धपुर एक प्राचीन शहर है उस से निकास होने से सिद्धपुरिया कहाये, भाव नगर स्टेट में सीहोर एक कसबा है तहां के ब्राह्मण सीहोरिया कहाये, काठिया वाड़ में झालावाड़ एक कसबा है वहां के निकास के कारण झाला-बाड़ी कहाये, झालावाड़ में खेरल एक छोटा सा राज्य है वहां के निकास से खेरलवाल कहातेर खैरवार कहाये, जूनागढ़ रियासत में ऊना* एक प्राचीन शहर है वहां से निकासके कारणऊनावार कहाये, रीवाकान्ध गुजरात में गढ़ एक छोटा सा राज्य है तहां से घढ़िया कहावे कहाते घरिया कहाये, यहां स्थानाऽभाव से विशेष न लिख कर इन के २६ भेदों का विस्तार पूर्वक विवर्ण हिन्दू जाति वर्ण व्यवस्था कल्पद्रुम नामक सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे।

* इसका प्रचलित नाम दलावर है।
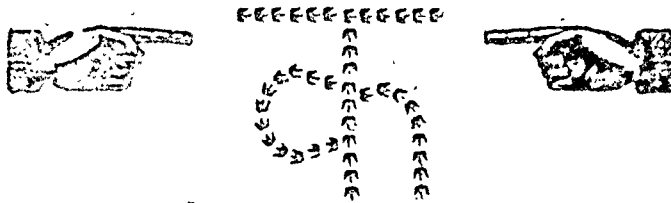
६६ कक्कड़:- यह खत्री जाति का एक भेद है इसके विषय एक विद्वान लिखते हैं कि एक कुमड़िया सारस्वत ब्राह्मण के यहां एक बड़ी ही सुन्दरी कन्या जो १५ व १६ वर्ष की उमर की कुंवारी थी उसकी सुन्दरता पर अकस्मात एक कन्दहार (गान्धार) सरदार की दृष्टि पड़ी जिससे वे उस पर आशक्त होगये और अपने दर्बार में पहुंचकर उस लड़कीका विवाह अपनेसाथ करने को कहाया इसपर उस लड़की का पिता राज़ी न हुवा तब सरदार ने बलात्कार से उस ब्राह्मण कन्या को पकड़वा मंगवायी परन्तु जब यह अन्याय कुमड़ियों के यजमान खत्रियों ने सुना तो उन से न रहा गया और सब लोग एकत्रित होकर उस सर्दार को युद्ध में पराजय करने के अतिरिक्त जलाकर खाक करडाला, तिससे ये खत्री खक्कर कहाये और इसही खक्कर से बिगड़ कर कक्कर व कक्कड़ होगया ।

एक दूसरे विद्वान की यह सम्मति है कि एक समय एक इनके भोजके समय भोजन के साथ मुंह में कुछ किर किर आगयी थी जिस से दांतों के नीचे करकर शब्द हुवा अतएव उस समुदाय का नाम कर कर से बिगड़कर कक्कड़ होगया

एक तीसरे विद्वान का ऐसा लेख मिलता है कि " करालाग्नि,, शब्द का अपभ्रंश शब्द कक्कड़ होगया ।

उपरोक्त सम्मतियों से मिलती जुलती ही कई अन्य ब्राह्मण विद्वान तथा खत्री विद्वानों की सम्मतियें भी हैं परन्तु ये सब मिथ्या प्रलाप व मनघड़ंत वार्तायें हैं, अतएव हमारी निज की सम्मति ऐसी है कि चन्द्रवंश में यदु के दूसरे पुत्र क्रोष्टु हुये तिसके श्रीकृष्ण व-

हृदेवं हुये तिनकी १५ वीं ऊपर की पीढ़ियों में अंशुराजा के पुत्र सत्वेरजा थे इनके पुत्र राजा सात्वत से कौशल्या के गर्भ में ५ पुत्र १ भजमान, २ अन्धक, ३ देवावृध, ४वृष्णि और ५ महाभोज हुये। इनही अन्धक महाराज के चार पुत्र कुकुर, भजमान, शमीक और वत्रगर्भित हुये अतएव इन्हीं महाराज कुकुर की सन्तान कौकुर कहायी जिसका अपभ्रंश कक्कड़ होगया।

इन सम्मतियों में जो सत्य सिद्ध होगा सो ही ग्रन्थ में विवर्ण सहित लिखा जायगा।

१०० कछवाहा:— यह प्रसिद्ध सूर्य्यवंशका एकभेदहै इनका निकास अयोध्या जी से है यह जाति अयोध्या से रोहिताश्व याने रोहतक, यहांसे नरवर को गयी और वहां से ,राजपुताना प्रदेशान्तर्गत ढूंढाड़ के आम्बेर नगर में अपना अधिकार किया जिस का प्रसिद्ध आजकल का नाम जयपुर है राजा जयसिंह ने अपने नाम पर यह जयपुर बसायाथा आजकल की जयपुर गद्दी इस जाति के आधीनहै जयपुर के वर्तमान महाराजा हिज़ हाइनेस सरमद राजाहाये हिन्दुस्तान राजराजेन्द्र श्रीमहाराजाधिराज सवाई सर माधवसिंह जी बहादुर जी० सी० एस० आई० ई० जयपुर के महाराजाधिराज हैं इस राज्य में दिवान भी बहुत से हो गये हैं पर देशहित के काम याने मुफ्तशिक्षाप्रचार महाराजाकालेज संस्कृत कालेज, आर्टस्कूल , आदि २ विद्या सम्बन्धी लोकोपकारी कार्य्य के खरच की उदारता की नींव भूतपूर्व रायबहादुर स्वर्गवासी बाबू कान्तीचन्द्र जीके समय मेंही लगीथी तब से आजतक चलाआरहाहै इसराज्य में प्रजा को क्या २ आराम हैं तथा प्रजा के हितके लिये राज्य प्रबंध व राज्यप्रणाली में क्या २ सुधार होने की आवश्यका है उसका विवर्ण समखण्डीग्रन्थ में देने का उद्योग करेंगे और वहां ही महाराज के सुप्रबंध तथा धर्मभाव व उदारता की मीमांसा होगी साथही में जयपुर राज्य का पूर्ण इतिहास तथा अठारहों कोटडियों का विवर्ण भी होगा और सब के वंशवृक्ष

यानें कुर्सीनामें भी देंगे । तथा महाराजाधिराज व कोटड़ियों के सर्दारों के फोटो व उनका विवर्ण भी देंगे ।

(१०१)कठियारा :— यह जाति चत्रिय वर्ण में बतलायी जाती है सनाढ्य ब्राह्मण इस जाति की पुरोहिताई करते हैं ये लोग श्री रामचन्द्र जी के पुत्र लव कुश की सन्तान कहाते हैं तिस ही की स्मृति में इन के यहां कुशा घास का पूजन होता है और ये अपने हाथों से कुशा (डाभ) को नहीं काटते हैं परन्तु इन के चत्रित्व विषय लोगों का सन्देह है अतएव इन का निर्णय ग्रन्थ में होगा ।

(१०२) कठेरिया :— यह जाति कहीं कथरिया व कहीं कठेरिया कहाती है सूरजवंशी चत्रिय हैं विद्वानों के प्रमाण भी मिले हैं परन्तु इन में कई कुरीतियें भी हैं उन को देख कर लोगों ने इन के विरुद्ध नाना भांति की बातें बतलायी हैं वे किसी २ अंश में माननीय भी हो सकती हैं अतएव उन पर लक्ष्य रखते हुये इस जाति के चत्रियत्व विषयक विवाद को मिटावेंगे यह जाति शाहजहांपुर, पीलीभीत, बदायुं, एटाह, फर्रुक्खाबाद; आदि आदि जिलों में है देखें इन में ये लोग अपने चत्रियत्व सम्बन्धी क्या २ प्रमाण व २५१ प्रश्नों के उत्तर मंडल को क्या भेजते हैं जिस से निर्णय में सुभीता होगा। इस जाति के १२ भेदों का विवर्ण ग्रन्थ में देंगे ।

(१०३) कछेरा :— इस का दूसरा नाम कहार भी है यह संस्कृत कृषीकार या कर्षकार का अपभ्रंश प्रतीति होता है इस जाति का सम्बन्ध मल्लाह जाति से जाना गया है परन्तु ये लोग आज कल मल्लाहगीरी न करके खेती करते हैं इन की उत्पत्ति के विषय बहुत कुछ पता लगाया है इन का जाति पद भी सामान्य है ये लोग युक्तप्रदेश में अनुमान ६० हजार के हैं । ये लोग बढ़इयों की तरह लकड़ी का काम भी करते हैं । और अपने को चत्रिय मानते हैं पर लोग इन्हें शूद्र बतलाते हैं सत्य क्या है सो विवर्ण ग्रन्थ में दिया जायगा ।

(१०४) कतकारी :— (कुदरोद पादक)यह जाति दक्षिण देश में की है इन को स्टील साहब ने शूद्र से नीच व चांडाल से ऊंच माना है इन का पेशा कत्था बनाना है शेष ग्रन्थ में लिखेंगे।

(१०५) कतुवा :—यह जाति आज़मगढ़ और पीलीभीत के जिले में विशेष रूप से है ये लोग अपने को क्षत्रिय वर्ण में मानते हैं इस जाति की ऐतिहासिक घटना व विवर्ण को देख कर यह जाति क्षत्रिय मानी जा भी सकती है पर इस में कुछ प्रचलित दशायें ऐसी हैं जिन से किस वर्ण में माना जाय? इस जाति की विद्या स्थिति साधारण है अतएव इन का विवर्ण विचार पूर्वक ग्रन्थ में देंगे।

(१०६) कथ वनिये :—यह बिहार प्रदेशस्थ बनिये हैं इन का पेशा दुकान्दारी तथा बहोरगत है कुछ खेती भी करते हैं इन के पुरोहित मैथिल ब्राह्मण हैं एक विद्वान लिखते हैं कि ये लोग अपनी विधवावों का पुनर्विवाह कर देते हैं परन्तु तल्लाक दियी हुयी स्त्रियों का नहीं ये लोग अपने मृतकों को जलाते हैं पर उन का श्राद्धादि ३१ वें दिन करते हैं। परन्तु यह उपरोक्त लेख किसी द्वेषी का मालुम होता है क्योंकि कुछ प्रमाण इस जाति के पक्ष में भी मिले हैं अतएव २५१ प्रश्नों का उत्तर आने व वर्णव्यवस्था कमीशन के अन्वेषण करने पर ही हम दृढ़ता के साथ निर्णय कर सकेंगे। देखें ये लोग अपने विषय में मंडल को क्या क्या प्रमाण भेजते हैं।

(१०७) कनफटा :— यह जाति राजपुताना में विशेष है और सामान्यतया युक्त प्रदेश में भी है कहीं ये गोरखनाथी, कहीं कालबेलिये कहीं पर जोगी कहाते हैं जो शुद्ध शब्द योगी का अपभ्रंश है, इस जाति के आचार्य्य गुरू गोरखनाथ जी महाराज एक बड़े योगी, सिद्ध व महात्मा थे इन्हीं का बसाया हुवा प्रसिद्ध गोरखपुर शहर है वहां इन का मन्दिर व पूज्यस्थान है गुरू गो-

रवनाथ जी का आदि स्थान वहां ही है इन के २४ भेदों का पता लगा है, इन्हीं का एक मन्दिर पशुपतिनाथ का नैपाल में है, तीसरा प्रसिद्ध मन्दिर इकलिङ्गी महादेव का मेवाड़ याने उदयपुर राज्य में है, चौथा मन्दिर बंगाल प्रान्त के हुगली के जिले में डमडम के इलाके में महानन्द स्वामी का है विशेष विवर्ण व निर्णय हिन्दू जाति वर्णव्यवस्था कल्पद्रुम में करेंगे।

(१०८) कनक्कन :—माइसोरराज्य और ब्रिटिश गवर्नमेन्ट के इलाकों में लिखा पढ़ी का काम करने वाली जाति कनक्कन है संयुक्त प्रदेश के कायस्थों की तरह इन का पद है अर्थात् ये लोग क्षत्रिय वर्ण में हैं और राज्यमें पढ़े लिखे पने के काम इस जाति के हाथ में है ये द्रविड़ क्षत्रिय कहाते हैं इन की मान मर्य्यादा वहां खूब चढ़ी बढ़ी है इस जाति ने राज्य के कामों को अपनी मुट्ठी में ले रक्खा है। इस जाति ने न अपनी जाति विषयक कोई प्रमाण ही भेजे और न वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों द्वारा अन्वेषण ही कराया। अतएव शेष सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे।

१०९ कनाराकामा :— यह कनारी ब्राह्मणों का एक भेद है जोकि तैलंग देश में विशेष हैं जहां तैलंगी (टेलेगु) भाषा बोली जाती है, यह स्मार्त ब्राह्मणों का एक भेद है स्मार्त भी दो प्रकार के होते हैं एक वैदिक और दूसरा नियोगी ये कनाराकामा ब्राह्मण वैदिक हैं ये तैलंगी ब्राह्मण भी कहाते हैं ये चार प्रकार के हैं १ कनाराकामे २ व भूरेकामे ३ उलचकामे और ४ हैसनगकामे शेष ग्रन्थ में लिखेंगे

११० कनीपा जोगी :— यह एक जोगियों की जाति है इनका रहन सहन खान पान भी कनफटावों से मिलता है ये लोग कनफटा जोगियों की तरह सांप दिखा कर अपनी आजीविका करते हैं परन्तु अपनेको कनीपा जोगी कहते हैं शेष ग्रन्थ में लिखेंगे।

१११ कनेत कनेट:– यह जाति कुनेत भी कहाती है ये लोग अपने को क्षत्रिय होने का दावा करते हैं परन्तु किन्हा २ विद्वानों ने इस जाति के विरुद्ध अनेकों प्रकार की सम्मतियें प्रकट कियी हैं एक विद्वान इस जाति को नीच श्रेणी के खेती करने वाले तथा अधार्मिक उत्पत्तिक्रम से पैदा हुई लिखा हैं परन्तु एक विद्वान इस जाति को प्राचीन राज्य वंशों में से भी वतलायी हैअतएव इसका निपटारा ग्रन्थ में करेंगे हमारी निजकी सम्मतिमें यह जाति सूर्य्यवंशी चत्रियों में से है परन्तु इस जाति के यहां से कुछ भी विवर्ण नहीं प्राप्त हुवा एक तीसरा विद्वान इस जाति को चत्रियवर्ण में लिखता है युक्तप्रदेश के उत्तरी भागों के प्राय: पहाड़ी भागों में यह जाति विशेषरूप से है ऐसा भी लेख मिला है कि ये लोग सूर्य्यवंशी चत्रिय हैं विपत्तिवश भगकर जीवरक्षार्थ इधर उधर चले गये और अपने चात्रियत्व को छिपाकर कृषि द्वारा निर्वाह करने लगे शेष सप्तखण्डी ग्रन्थ में निर्णयान्तरलिखेंगे ।

११२ कनोदिया:– यह आदि गौड़ ब्राह्मणों का कुलनाम है जो आजकल अल्ल व सासनें के नाम से प्रसिद्ध हैं विवाहादिके समय वर व कन्या वालों की ओर से गोत्र की तरह परस्पर सम्बन्ध के समय माका, नानी का, दादीका तथा अपना ये चार गोत्र व सासन टाले जाते हैं उन्हीं सासनें में से यह एक है ।

११३ कन्दू:– इस जाति के ६२ भेदों का पता लगा है यह जाति अपने को वैश्य वर्ण में मानती है परन्तु साधारण जनसमुदाय इस पर सन्देह करता हुवा विरुद्धता प्रकट करता है संस्कृत में कन्दूनाम भट्टा या भट्टी का है अतएव जो भट्टी पर मिठाई आदि बनाकर जीविका करे वह कन्दू कहाता है राजपुताना प्रदेशस्थ मारवाड़ में हलवाई को कन्दोई जी कहते हैं और इन की मिठाई पूरी आदि घी में पकी रसोई उच्चजातियें विना रोक टोक

कहाती है इस जाति के विरुद्ध अनेकों बातें किसी २ ने हमें कही हैं पर उन हेतुशून्य बातों को न मानकर इस जाति के वर्णत्व का विशेष अन्वेषण २५१ प्रश्नों द्वारा करके विस्तारपूर्वक विवर्ण अपने ग्रन्थ में लिखेंगे देखें यह जाति हमारे २५१ प्रश्नों के क्या उत्तर देती है ? यह ही जाति मारवाड़ में कन्दोई, युक्तप्रदेशीय बलिया के ज़िला में हलवाई तथा बिहार बंगाल में कन्दू कहाती है। मिर्जा-पुर व फयजाबाद में बड़ २ व्यापार करती है इस जाति ने हमारे जनरल नोटिस के अनुसार अपनी जाति का विवर्ण कुछ भी नहीं भेजा। परन्तु युक्तप्रदेशीय हलवाई जाति की मानमर्य्यादा व आ-चार विचार वैश्वरयों के जैसे हैं, हां कुछ कुरीतियें भी इस जा-ति में हैं जिनका विवर्ण सप्तखंडी ग्रन्थ में करेंगे। इस हलवाई जाति में बहुत सी बातें शास्त्रोक्त वैश्य वर्ण की सी भी हैं अतएव धर्म व्यवस्था सभा द्वारा यह जाति कृपा की पात्री है।

११४ कन्यूड़ीः-इस का दूसरा नाम कन्दूरी भी है यह एक पहाड़ी ब्राह्मणों की जातिहै चांदपुरके परगनेमें कन्यूड़ा एकगांव है उससे निकास होनेके कारण ये पहाड़ी ब्राह्मण कन्युड़ी कहाये उसही गांव में ब्रह्मवेता महर्षि शौनक का आश्रमहै यह जाति शौनकऋषि की सन्तान होने से इन ब्राह्मणोंका गोत्र भी शौनक है राजा साहब गढ़वाल इसही जातिके भूषण हैं इन लोगोंकी विद्यास्थिती सामान्य थी पर अबकुछ विद्या की चरचा चलपड़ीहै ये लोग छोटी कद के बड़े मज़बूत होते हैं इन को कोई ब्राह्मण व कोई क्षत्रिय बतातेहैं पर सत्य क्या है इसका विस्तृत निर्णय ग्रन्थ में करेंगे। तहांहीं राजा साह गढ़वाल का फोटो व उन की जीवनी भीदेंगे

११५ कपिलियन :-यह द्राविड़ देश की खेती करने वाली एक जातिका नामहै ये केनारियों में प्रतिष्टत जाति समझी जातिहै

११६ कमलाकरः- यह महाराष्ट प्रान्तकी एक ब्राह्मण जातिका भेदहै जो देशस्थ नाम से प्रसिद्ध है इसही जाति के महा

महाविद्वान " कमलाकर भट्ट " ने "शूद्रकमलाकर" नामक एक ग्रन्थ रचा है जिस में शूद्र जाति का विशेष वितर्ण है शेष विषय ग्रन्थ में लिखेंगे यह ग्रन्थ निर्णयसागर प्रेस मुम्बई में मिलेगा।

११७ कल्लातर:- द्रविड़ देश की कवराई जाति का उपभेद है, इनका दूसरा नाम तोतियार भी है इसके ६ उपभेद हैं जो प्रत्येक एक दूसरे से अलग ही प्रतीति होवे हैं यह जाति कृषी कर्म में व हाथ के काम में बड़ी योग्यता रखने वाली है तथा य लोग मदरास में बड़े २ उच्च पदस्थ हैं इस जाति के कुछ लोग मदरासमें भी हैं और अनुमान ४०० व ५०० वर्ष से ये वहां के ज़मीदार कहाते हैं ये लोग प्रायः मुर्गों की लड़ाई व शिकार के बड़े उत्सुक (शौकीन) होते हैं इस जाति के चाल चलन प्रशंसनीय नहीं हैं ये लोग विश्नु के बड़े उपासक होते हैं और ये लोग प्रायः जादूगरी को जानने का दावा किया करते हैं क्योंकि य लोग सांप काटे हुये को आराम करदेते हैं इस जाति के लोग सिर में चमकीले रंग की पगड़ी बांधते हैं और स्त्रियें अपने को गहने पहिन करके ही ढकती हैं अपने Upper Part ऊपर क भाग(छाती)को ढकने का भी कुछ ध्यान नहीं देती हैं इस जाति में विवाह की रीति एक आश्चर्य्य जनक है ये लोग, वरवधू के लिये ब्राह्मणों की सम्मतियें नहीं लेते हैं शेषग्रन्थ में लिखेंगे।

११८ कल्वोहा:- इस जाति के ८५ भेदों का पता लगाया है यह एक चत्रिय जाति का भेद है परन्तु भारत के हिन्दूजन समुदाय में इनके वर्णत्वविषय में मतभेद है यह जाति आदि से पंजाब निवासिनी है इनके भेद उपभेद भी उच्च चत्रियों से मिलते हैं इस जाति की पदवियें भी चत्रियों के तुल्य हैं किसी २ विद्वान ने इस जाति के विरुद्ध भी कुछ बातें बतलायी हैं ऐतिहासिक वार्तावों पर ध्यान देने से निश्चय होता है कि यह जाति उच्चवर्णा है परन्तु दोनों ही प्रकार के प्रमाण परस्पर मुटभेड़ ले रहे हैं अत.

एक अपनी ओर से अच्छा व बुरा कुछ न कहकर वर्णव्यवस्था मंडल के साथ परामर्श हो चुकने पर ही निर्णय करेंगे इस जाति को वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर देना चाहिये जिससे पक्षपूर्वक लिखा जाय ।

११९ कमाटी:-- यह एक तैलंग देशीय व्यापार करनेवाली जाति का नाम है इस जाति के दस भेदों का पता लगाया है तैलंग देश में व्यापार को इस जाति ने मुट्ठी में कर रक्खा है वहां ये उच्च श्रेणी के वैश्य माने जाते हैं इनका जातिपद युक्तप्रदेश के अ. ग्रवालों के बराबर है ये लोग कहीं लिंगायतन, कहीं भास्कराचारी और कहीं शङ्कराचार्य्य के अनुगामी हैं, मांस,शराब आदि अभक्ष्य वस्तुओं से बिलकुल घृणा रखते हैं परन्तु एक विद्वान ने लिखा है कि ये लोग Maternal uncles daughter नाना की लड़की के साथ विवाह करलेते हैं यदि यह सत्य है तो बड़ा घृणित कर्त्तव्य है इसके हम अनुसन्धान में हैं, २५१ प्रश्नों के उत्तर आने पर सभा से निर्णय कराकर ही विस्तारपूर्वक ग्रन्थ में लिखेंगे।

१२० कमानगर:-- यह एक पेशे के कारण नाम पड़कर जाति कहाने लगी इसका दूसरा नाम तीरगर भी है ये दो शब्दों के मेल से बनी है कमान+ गर अथवा तीर+गर जिसका अर्थ यह होता है कि कमान का मारने व चलाने वाला, तीरगर से बिगड़ कर ये लोग तिलंगढ़ कहाने लगे हैं जिन दिनों में तीर कमानों की लड़ाइयें होती थीं उनदिनों में इस जाति का धन्धा भी खूब चलता था और यह जातिउन्नतिदशा पर थी परन्तु आज कल तीर कमान की लड़ाइयों की कुछ भी प्रतिष्ठा नहीं है अतएव इनका धन्दा भी बहुत ही गिरगया है और ये नाम मात्र के कमानगर व तीरगर रहगये ये लोग अपने को मार्कण्डेय ऋषि की सन्तान कहलाते हैं क्योंकि तीरकमान की विद्या के आचार्य्य मार्कण्डेय ऋषि थे, इन ऋषि जी महाराज का आश्रम रायबरेली के जिले

(१२१) कमार :— बंगाल में लुहारों को "कर्म्मकार" कहते हैं और उस ही कर्म्मकार से बिगड़ कर कमार बन गया है क्योंकि ये लोग लोहा गलाना नहीं जानते हैं वरन विलायती ढले ढलाये लोहे पर काम करते हैं और कृषी के औज़ारों की मरम्मत आदि कर दिया करते हैं यह लोग बंगाल में सत्शूद्र श्रेणी में माने जाते हैं ये लोग चाकू कैंची आदि बहुत बढ़िया तय्यार करते हैं यह ही नहीं किन्तु विलायती तालों से टक्कर लेने वाले बढ़िया ताले भी तय्यार करते हैं इस जाति में बहुत से लोग सुनार का भी धन्दा करते हैं चाकू कैंची आदि के लिये बर्दवान के प्रेमचन्द कमार और ताला आदिकों के लिये "दास ब्रन्ड को" प्रशंसा के योग्य हैं इन का धर्म्म प्राय शाक्तिक है यह लोग काली व दुर्गादेवी आदि जीवभक्षक देवतावों के बलिदान रूप बकरों के गले काटने में प्रायः नौकरी करते हैं और उस के बदले में ये लोग बकरे का सिर लेते हैं अथवा चार छः आना दक्षिणा ले लेते हैं इस जाति में जिन लोगों ने इस तरह का काम त्याग कर सुनारपने का काम ग्रहण कर लिया है वे प्रतिष्ठित समझे जाते हैं इस जाति में विद्या का बड़ा अभाव है यह सब अन्य विद्वानों की सम्मत्याधार पर लिखा है शेष ग्रन्थ में लिखेंगे।

(१२२) कमारी :—यह एक तैलंग देश की लुहार जाति का नाम है जो "पंचनामवालु" जाति में का एक उपभेद है ये लोग सुनारपने का भी काम करते हैं शेष ग्रन्थ में लिखेंगे।

(१२३) कबीरपंथी :— यह एक जाति नहीं है परन्तु इस को हम एक पान्थिक समुदाय कह सकते हैं उस ही समुदाय के लोगोंने अपने को अज्ञान वश कबीर पंथी अपनी एक जाति मान ली है हमें अपनी Public inquiry पबलिक तहक़ीकात में कोई २ मनुष्य ऐसे भी मिले जिन से वार्तालाप होने से वे अपनी जाति

"कबीर पंथी" बतलाने लगे परन्तु जब वे समझाये गये तब बहुत कुछ वादानुवाद के पीछे उन्हों ने स्वीकार किया कि कबीरपन्थी कोई जाति नहीं है वरन कबीर जी महाराज के पंथ को जोकोई माने वह ही कबीरपंथी कहाया जा सकताहै।

आजकल प्रायः लोगों मे धर्म मत और पंथ इन तीनो शब्दों का एक ही अर्थ मान रक्खा है परन्तु यह ठीक नहीं क्योंकि ईश्वर की आज्ञावों के अनुकूल करना धरना "धर्म" कहावा है ईश्वर के परमभक्त ऋषि महर्षियों के सम्मति व लेखानुसार कर्तव्य कर्म करना व मानना "मत" कहाताहै साधारण पुरुषों की अपेक्षा किसी शुद्धान्तष्करण साधू सन्यासी महात्मा व विद्वान आदि की निज सम्मात्यानुकूल जो मार्ग है वह पंथ कहाता है जैसे दादूपंथ कबीरपंथ आदि। अतएव इस पंथ के चलाने वाले महाराज कबीर जी हुये हैं जिन की उत्पति के विषय भिन्न भिन्न विद्वानों के लेख मिलते हैं कोई उन्हें जाति से जुलाहा, कोई जाति से हिन्दू लिखता है अतएव इस सम्प्रदाय से कबीर जी महाराज का फोटो व विवर्ण आने पर हम इनकी जीवनी सप्त खण्डी ग्रन्थ में देंगे।

१२४. कर्कल:- यह दक्षिण प्रान्तीय ब्राह्मणों का एक भेद है एक विद्वान लिखते हैं कि ये लोग चितपांवन ब्राह्मण समुदाय में से हैं प्रायः निषिद्ध कर्मों के करने से यह नाम पड़ा है, मछलियों का खाने, कन्यावों का रुपैया लेने, विषयों में रत रहने आदि के कारण से ही इनका नाम करकल पड़ा है पर इन बुरे प्रमाणों के अतिरिक्त कुछ अच्छे प्रमाण भी मिले हैं पर यहां स्थान नहीं है अतएव ग्रन्थ में निर्णय करेंगे इस जाति से वर्ण व्यवस्था सभा के २५१ प्रश्नों के उत्तर आने की भी आवश्यक्ता है।

१२५ करण:- यह कायस्थ जाति का एक भेद है जो युक्त प्रदेश व विहार तथा उड़ीसा में पायी जाती है विशेषरूप से तिरहुत और विहार के उत्तरी भागों में यह जाति मिलती है जहां ये लोग पटवारीगीरी तथा कारिन्दा गीरी करते हैं। एक बंगाली महाविद्वान की सम्मत्यानुसार इनका पद श्रीवास्तव और अम्बष्ट कायस्थों से नीचा है बंगाल के उत्तर राढ़ी कायस्थ भी अपने को करण कायस्थ ही बतलाते हैं परन्तु उत्तरविहारी करण कायस्थ तथा उड़ीसा के करण कायस्थों में कुछ सम्बन्ध नहीं है इन सबकी परस्पर स्थिति कैसी भी हो पर कोषकार ऐसा लिखते हैं कि:—

शूद्रावैश्ययोर्जातो जातिविशेष:—

अर्थात् शूद्रा व वैश्यद्वारा पैदा हुई जाति का नाम करण है पुनः "शूद्राविशोस्तु करणः" अर्थ ऊपर के समान ही हैं पुनः—

नटश्च करणश्चैव खसो द्रविड़ एवच। मनु० १०-१२

अर्थात् व्रात्य संज्ञक क्षत्रिय की सन्तान करण हैं ऐसे ही प्रमाण मिले हैं परन्तु हमने अपनी सम्मति सर्वत्र ही स्वाधीन रक्खी है मंडल के निर्णयान्तर विशेष विवर्ण सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे। देखें यह जाति अपने पक्ष में क्या २ प्रमाण भेजती है?

१२६ कर्णाटक ब्राह्मण:- यह दस प्रकार के मुख्य ब्राह्मणों में से एक भेद है पञ्चद्रविड़ ब्राह्मण समुदाय के अन्तर्गत पहिला भेद है यथा:—

कर्णाटकाश्चैतलङ्गा द्राविड़ा महाराष्ट्रकाः।
गुर्जराश्चेति पञ्चैव पञ्चद्रविड़कथ्यते॥

अर्थ कर्णाटक तैलंग, द्रविड़, महाराष्ट्र और गुर्जर ये पांचों पञ्चद्रविड़ कहाते हैं शेष विवर्ण ग्रन्थ में लिखेंगे।

१२७ कर्ताभजा :- यह एक बंगाल प्रान्तीय मत व सम्प्रदाय के कारण से कदाचित जाति मानी जाती हो, अन्यथा यह तो जाति नहीं है यह शब्द बंगाली भाषा का है जिसका अर्थ यह होता है कि Adorers of the Headman or Guru (गुरू पूजक) याने गुरू की पूजा करने वाले बंगाल में यह मत गौरव की दृष्टि से नहीं देखा जाता है । इस मत के चलाने वाले सद्गोप वंशोद्भव रामसरनपाल थे जिनकी जन्मभूमि गोशापारा में थी जो कंचरापारा स्टेशन के समीप है उनका कथन व उपदेश था उनको अदृश्य गुरू से उपदेश प्राप्त हुवा है तथा उनका यह भी कथन था कि औलिया गुसांई द्वारा उनको विशेष शक्ति प्राप्ति हुयी है रामसरनपाल के मर्णान्तर उनकी विधवा सची मायी गद्दी की अधिकारिणी हुयी इस मायी के स्वर्गवास के पश्चात् गद्दी पर उनका लड़का ईश्वरपाल बैठा. रामसरनपाल बड़े बुद्धिमान व विचक्षण पुरुष थे उन्होंने अपने शिष्यवर्गों पर मनुष्य शरीरधारण करने का टेक्स लगाया और यह प्रख्यात किया कि मुझे यह टेक्स संग्रह करने का अधिकार है । इस मत में प्रायः स्त्रियों की अधिकता थी क्योंकि वे अपने पति पुत्र व भाई आदि की भविष्यरचार्थ व दीर्घायु के निमित्त टेक्स देकर गुरू महाराज का आशिर्वाद लेती थी, रामसरनपाल ने दक्षिणा इकट्ठा करनेके लिये अपनी ओर से अजेन्ट (संग्रह कर्त्ता) नियत किये थे और ये अजन्ट लोग पुत्र, मित्र विहीन विधवावों के साथ बड़ी सहानुभूति दिखलाते थे और कर्ता अंधों को आंखें, गूंगो को बोली तथा कोढ़ियों का कोढ़ भी दूर कर सकने को सर्वत्र प्रख्यात करते थे और अपनी शिष्यावों की एक गुप्त सभा किया करते थे जहां वे कृस्नलीला का पार्ट लेते थे यह एक मत है पर लोग इसे जाति मान बैठे हैं अतएव सूक्ष्म सा यहां वर्णन किया है । शेष महान ग्रन्थ हिन्दू जाति वर्णव्यवस्था कल्पद्रुम में लिखेंगे. तहां ही इस मत के आचार्य्य रामसरनपाल का फोटो व उनकी सूक्ष्म जीवनी भी देंगे ।

१२८ कर्नास:- यह दक्षिण देशीय क्षत्रिय जाति है पश्चिमो त्तर प्रदेश में प्राय: लिखा पढ़ी का कार्य्य कायस्थ जाति के हाथ में है तैसे ही मदरास प्रान्त व अन्ध देश में मुंशीगीरी का काम नियोगी ब्राह्मणों के हाथ में है वैसे ही द्रविड़ देश में वेलालर और वदुगा एक जाति है जो केवल लिखा पढ़ी का काम करती है इसही तरह माईसोर के पूर्वी दक्षिणी भागोंमें कर्नाम जाति ने लिखा पढ़ी का काम अपने हाथ में लेरक्खा है ये लोग उधर अच्छे २ पदों पर नियत हैं और विद्या में अच्छी उन्नति किर्या है परन्तु भारत का जाति अंहकार व जाति दम्भ सर्वत्र फैला हुवा है और एक जाति अपनी अपेक्षा दूसरी जाति को अपने से छोटी समझती है इसही तरह उस देश में कोई २ इन्हें शूद्र मानते हैं परन्तु जहां तक हमें पता लगा है इस जाति में शूद्रता के कोई काम वरीवि भांति प्रचलित नहीं हैं वरन इन लोगों में यज्ञोपवीत सं. स्कार की पृथा अच्छे प्रकार से प्रचलित है अतएव ये द्विजाति हैं इनका पद उच्च कायस्थों के वरावर है इनमें वहुत से लोगों ने अच्छी २ डिग्रियें प्राप्ति किर्या हैं इनका धर्म वैश्नव है ये लोग दयावान व शिवोपासक भी होते हैं। यह सब अन्य विद्वानों के लेखाधार पर है परन्तु विशेष विवर्ण २५१ प्रश्नों का उत्तर इस जाति के यहां से आने पर वर्णव्यवस्था मंडल द्वारा निर्णय करा कर लिखेंगे।

१२९ कर्म्मकार:- यह बंगाल प्रान्तीय लोहे का काम करने वाली जाति है लुहार को संस्कृत में कर्म्मकार कहते हैं युक्तप्रदेश में ये लुहार कहाते हैं विद्वानों ने इस जाति की स्थिति सर्वत्र एक सी नहीं वतलायी है युक्तप्रदेश के लुहार आजकल जनेऊ पहिन कर ब्राह्मण कहाते हैं, छुटियानागपुर और मध्यप्रदेश के लुहार Unclean Caste अपवित्र जाति मानी जाती है यह एक विद्वान की सम्मति है। पुराणों में लुहार जाति की उत्पत्ति ब्राह्मण पिता द्वारा लिखी है अतएव वीर्य्यप्रधानात से ये ब्राह्मण हो सकते हैं।

परन्तु इसका निर्णय २५१ प्रश्नों का उत्तर आने पर ही वर्णव्यवस्था मंडल में निश्चय किया जा सकेगा शेष विवर्ण निर्णय होने पर हिन्दूजाति वर्णव्यवस्थः कल्पद्रुम ग्रन्थ में देखना तथा लकार की जातियों के साथ लुहार प्रकरण में विशेष लिखेंगे ।

१३० कराढे ब्राह्मण :— यह महाराष्ट्र देशीय देशस्थ ब्राह्मण जाति का एक भेद है, सतारा से १५ मील की दूरी पर कृश्ना व कोइनानदी के संगम पर करहड़ एक कस्बा है वहां से निकास होने से कराढ़े व कहाढ़े कहाये यह काराष्ट्र देश एक बड़ा दुष्ट देश माना गया है इस देश के वासी कराढ़े ब्राह्मणो के लक्षण एक ग्रन्थकार ने ऐसे लिखे है कि—

सर्वे लोकाश्च कठिना दुर्जनाः पापकर्मिणः ।
तद्देशजाश्च विप्रास्तु काराष्ट्रा इति नामतः ॥
पापकर्मरता नष्टा व्यभिचारसमुद्भवाः ।
खरस्य ह्यस्थियोगेन रतक्षिप्तं विभावकं ॥

अर्थात् काराष्ट्र देश में ब्राह्मण कठोर दुर्जन व पाप कर्मी हैं उस देश के ब्राह्मण काराष्ट्र कहाये वे पाप कर्म में रत व व्याभिचार से पैदा हुये हैं और गधे की हड्डी द्वारा वीर्य्य प्रक्षेप किया गया है ।

तेषां संसर्गमात्रेण सचैलं स्नानमाचरेत् ।

इन कराढ़े ब्राह्मणों के संसर्ग मात्र से ही सचैल स्नान करे तब शुद्ध होता है ।

ये ब्राह्मण प्रति वर्ष देवी के यहां जीते जी ब्राह्मण को मार कर बलि चढ़ाया करते थे तदनुसार ही भानजे व जवांई को मार कर चढ़ाना भी यह सर्वोत्तम फल की प्राप्ति का कर्म मानत हैं । यह पुराणों के प्रमाणों के आधार से ही हम ने लिखा है इस नर

हत्या को सतारा के रेजीडेन्ट मिस्टर डन्कन साहिब ने लिखकर मुम्बई के गवर्नर मिस्टर बाकर साहब से सन् १८७६ में बन्द कराची थी।

हमें उपरोक्त प्रमाणों पर कुछ विशेषविचारकरना है देखें ये कराढे ब्राह्मण इस मंडल को अपनी जाति की उत्तमता विषय क्या क्या प्रमाण व सूचनायें देते हैं ? व २५१ प्रश्नों के उत्तर भेजते हैं या नहीं ? तब ही हम धर्म व्यवस्था मंडल के परामर्श द्वारा विस्तृत रूप से निर्णय करके हिन्दुजाति वर्ण व्यवस्था कल्पद्रुम नामक ग्रन्थ में लिखेंगे। वर्णव्यवस्था कमीशन द्वारा जांच होना भी अ. त्यावश्यक है।

(१३१) कल्लन :— यह दक्षिण देश में जुल्मी पेशा करने वाली एक जाति है इस के सम्बन्ध में मिस्टर नेलसन ने ऐसा लिखा है कि:—

कल्लन जाति के मनुष्यों का लड़कपन आरम्भ से ही चोरी व लुटेरापना में बीतता है यहां तक कि १५ वर्ष की ऊमर में ये चोरी के काम में पारंगत (फाज़िल) समझे जाते हैं तब से वे लोग स्वच्छन्दता पूर्वक कुछ दिन तक अपने बाल बढ़ाया करते हैं जब कि ये बड़े अनुभवी चोर हो जाते हैं तो उन की कोई रिश्तेदारिन उन्हें उस चौर्य्य अनुभविता के लिये उन्हें इनाम देती है—ये लोग शिव उपासक होते हैं पर इन में कुछ रीतियें मुसलमानों से मिलती हुयी हैं।

१३२ कलवार—: यह जाति युक्तप्रदेश. बिहार, बंगाल आदि आदि प्रान्तों की है इस जाति के ६३३ भेदों का पतालगा कर हमने इनका विवर्ण संग्रह किया है इनमें ६०९ भेद तो हिन्दू कलवारों के हैं और बाक़ी २४ भेद मुसलमान कलवारों के हैं परन्तु ये सब हिन्दू से ही विपत्तिवश मुसलमान होगये हैं इनकी रीति भांति भी हिन्दुवों से मिलती जुलती सी है। प्राय: ग्रन्थकारों ने इस जाति का आदि धन्दा शराब खैंचना व बेचना लिखा है,इस

जाति की उत्पत्ति विषय एक विद्वान ने क्षत्रिय पिता व बनियानी मा द्वारा लिखी है दूसरे विद्वान ने इस जाति का वर्ण क्षत्रिय लिखा है। एक तीसरे विद्वानने इस जाति कावर्ण वैश्य लिखा है, अन्य अन्य विद्वानों ने इस जाति की उत्पत्ति कई अन्य २ प्रकारों से लिखी हैं अतएव वे सब प्रमाण कलवार जाति के चित्तों को दुखानेवाले हैं अतएवइन्हें स्थानाऽभाव से यहां न लिखकर मंडल की वर्णव्यवस्था सभा में निर्णयार्थ पेश करेंगे यह जाति अपने को क्षत्रिय मानती है पर साधारण हिन्दू समुदाय इसे स्वीकार करने में आपत्ति प्रकट करती है। किसी २ विद्वान ने इस जाति को "महाजन" की पदवी दियी है जिसका अर्थ उत्तम जन के हैं यथाः— "महाजनो येन गतस्सपन्था" अर्थात् जिस मार्ग से श्रेष्ट धर्मात्मा जन चलें वही उत्तम मार्ग है अतएव महाजन शब्द का अर्थ श्रेष्ट मनुष्य के हैं, शाक्त सम्प्रदाय के सिद्धान्तों के अनुसार शराब खेंचना व पीना मुक्ति देने वाला सर्वोत्तम कर्म है अतएव कलवार कलाल व महाजन आदि २ समुदाय भी सर्वोच्च वैश्य जाति मानी जा सकती हैं ॐ। किसी समय में यह जाति शराब का काम करती होगी तो करती होगी परन्तु आज कल तो ये लोग बड़े २ विद्वान, व्यवसायी, सदाचारी तथा आजीविकार्थ उत्तम कर्म करने वाले हैं प्रायः यज्ञोपवीत धारी तथा मांसादि अभक्ष्य पदार्थों से बिलकुल घृणा करते हैं हमारी यात्रा में अनेकों स्थानों में गुप्त अन्वेषण करने पर अनेकों द्विज मण्डली ने इस जाति के विषय अनेकों विरुद्ध व समर्थन पक्ष के प्रमाण व हेतु दिये हैं उन सब को यहां न लिखकर वर्णव्यवस्था कमीशन की रिपोर्ट के भरोसे रुककर मंडल के निर्णयान्तर विशेष विवर्ण लिखेंगे। देखें यह जाति वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों द्वारा अन्वेषण कराती है या नहीं तब ही हम अपनी निजकी सम्मति भी देंगे।

युक्तप्रदेश के एटा फर्रुखाबाद आदि आदि जिलों में भी म.

ॐ विशेष देखना हो तो "कलाल" प्रकरण देखिये

होजन वैश्य बहुत हैं जिनके आचरण भी बड़े पवित्र हैं कासगंज अलीगंज, गंजडुंडवाड़ा, और अलीगढ़ आदि आदि स्थानों में हमने कई महाजनों को दोनों वक्त संध्या करने वाले व यज्ञोपवीत धारी तथा अग्निहोत्र करते देखा है और वे लोग प्रायः अनाज व कपड़े के व्यापारी हैं हमें तो उनमें कोई भी बात ऐसी नहीं मिली जो शास्त्र विरुद्ध हो, हमने कासगंज व गंजडुंडवारा आदि आदि स्थानों के द्विज समुदाय से भी महाजन जाति के विषय गुप्त अन्वेषण किया परन्तु किसी ने इनके विरुद्ध कुछ भी प्रामाणिक बात नहीं बतलायी परन्तु वहां का उच्च हिन्दू समुदाय इस जाति के साथ द्वेष व डाह बहुत रखता है तथा डुकरिया पुराण के अनुसार लोग उन्हें बुरा व नीच बतलाते हैं परन्तु यह सरासर इस महाजन जाति के साथ अन्याय है और उदार भावों वाले निष्पक्ष विद्वानों के योग्य कर्त्तव्य नहीं है इस जाति का विवर्ण भी बहुत, कुछ संग्रह किया है सो भविष्यत में मंकार की जातियों में महाजन प्रकर्ण के साथ प्रकाशितकिया जावेगा।

विद्वानों ने महाजन शब्द का अर्थ श्रेष्ठजन माना है अतएव वैश्य वर्ण में जो श्रेष्ट कर्म्मी समुदाय था उन्हें प्राचीन काल में विद्वानों की सभा ने " महाजन " की उपाधि दियी थी अतएव अन्य द्विज समुदाय इनके इस मान्य से डाह करके इनके प्रति द्वेष प्रः कट करते हुये अनेकों झूंठी २ कल्पनायें रचडाली और वे ही समय पाकर डुकरिया पुराण द्वारा प्रचालित होगयीं।

हमारी यात्रा में कई स्थानों में विद्वानों ने हमें यह बतलाया है कि इनका निकास व्रजस्थ महावन से है तदनुसार ये पहले महावनी वैश्य कहाते थे तिसही का बदलकर इनका नाम महाजन होगया इस जाति के १४ भेदों का पता लगाकर विवर्ण संग्रह किया है। जिनमें से मुख्य भेद १गुलहरे २तीनवारे ३सातवारे ४सोहारे ५बड़पतिया आदि हैं यहां स्थानाऽभाव से विशेष न लिखकर २५१ प्रश्नों द्वारा वर्णव्यवस्था कमीशन का अन्वेषण हो चुकने पर ही विशेष सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे।

१३३ कलहंस :— यह एक राजपूत वंश है अवध प्रदेश में विशेष रूप से है, गोंडा जिले का बभनीपाड़ कुल भी इस ही जाति के अन्तर्गत है एक विद्वान की सम्मति है कि इस क्षत्रिय जाति के किसी शौकीन बुजुर्ग ने कालहंस पलवाये थे तब से इन का नाम कालहंसी हुआ और कालहंसी से बिगड़ कर प्रचलित कलहंस हो गया यह जाति बस्ती, बाराहबंकी, गोंडा और बहराइच के जिले में बहुत है इन का जातिपद उत्तम है लोगों ने हमारी जातियात्रा में बहुत सी बातें इस जाति के विरुद्ध नोट कराई हैं इन जाति ने वर्णव्यवस्था कमीशन के ५५१ प्रश्नों के उत्तर नहीं दिये तथापि अच्छे व बुरे दोनों ही प्रकार के प्रमाणों पर लक्ष्य करते हुये वर्णव्यवस्था मंडल के परामर्श द्वारा निर्णय करके विस्तार पूर्वक ग्रन्थ में लिखेंगे देखें इस जाति के लोग अपनी पुष्टता विषय मंडल को क्या क्या प्रमाण भेजते हैं ?

१३४ कलंकी ब्राह्मण :—यह एक पतितश्रेणी के ब्राह्मणों की जाति है ये लोग मध्यप्रदेश व महाराष्ट्र देश में विशेष रूप से पाये जाते हैं वहां ये out Caste जाति च्युत याने जाति पतित माने जाते हैं, हुसैनी कुंडगोलक, रंडगोलक और ब्राह्मण जाई आदि इन सब ब्राह्मणों का तथा कलंकी ब्राह्मणों का पद एक सा विद्वानों ने माना है।

इन के पतित होने के सम्बन्ध में एक विद्वान ने निम्न लिखित हेतुओं में से सम्पूर्ण अथवा एक दो माने हैं यथा:—

१ मुसलमान से सन्तान पैदा होने के कारण
२ नीच जातियों के यहां भिक्षाई करने से
३ सम्पूर्ण प्रकार की जातियों का पवलिक पूज्यस्थानों में चढ़ावा लेने से
४ अप्रमाण अथवा शास्त्र वर्जित प्रतिग्रह लेने से
५ महा पाप युक्त कर्म करने से

६ जाति उत्पत्ति का सन्देह होने से व व्यभिचार द्वारा पैदा होने से।

७ निकृष्ट वस्तुओं की कृषी के करने से

८ नीच कामों की नौकरी करने से

कुछ प्रमाण इस जाति के पक्ष में हैं उन ही के द्वारा वर्ण व्यवस्था मंडल में इस जाति की वकालत करेंगे देखें क्या निर्णय होता है ? शेष ग्रन्थ में देखियेगा।

१३५ कलाद ब्राह्मण (ब्राह्मणिये सुनार) यह जाति युक्तप्रदेश, राजपुताना मध्यप्रदेश तथा दक्षिण प्रान्त में है देश भेद व देश भाषा के कारण यह जाति कहीं ब्राह्मणिये सुनार व बामणिये सुनार आदि आदि नामों से पुकारी जाती है इनकी विशेष बस्ती युक्त प्रदेश की अपेक्षा राजपुताना की रियासत बीकानेर जयपुर जोधपुर पाली ब्यावर तथा अहमदाबाद आदि २ स्थानों में है ये लोग राजपुताना में ब्राह्मणिये सुनार कहाते हैं यह " बामणिया "शब्द ब्राह्मणिया शुद्ध शब्द का विगड़ा हुवा रूप है जिसका भावार्थ ऐसा है कि जाति से ब्राह्मण होकर सुनार पने का काम करने वाला जो समुदाय है वह ब्राह्मणिया सुनार कहाता है, हमने राजपुताना में घूम २ कर विशेष रूप से अन्वेषण किया तो निश्चय हुवा कि इस जाति में अनेकों बातें उच्च ब्राह्मणों की तरह प्रचलित हैं आचार विचार से भी श्रेष्ठ हैं परन्तु इनमें कोई २ ऐसी रीतियें भी प्रचलित हैं जिन के आधार पर विद्वानों ने इनके ब्रह्मत्व पर आपत्ति प्रकट कियी है हमारे जनरल नोटिस के आधारानुसार इस जाति ने अपने उच्चत्व विषयक कोई प्रमाण मंडल को नहीं भेजे और न वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों द्वारा अन्वेषण ही कराया तथापि हमने इस जाति का विवर्ण ५५ पत्रों में संग्रह किया है वह सब विवर्ण मंडल के निर्णयान्तर सप्तखंडी ग्रन्थ में देंगे, यह जाति यथार्थ में उप ब्राह्मण है इन्हें दूसरे उप ब्राह्मणों के साथ समान भाव से नमस्कार करने का अधिकार

नहीं है ऐसा ही विद्वानों की सभा द्वारा निर्णय हुये की व्यवस्था है सरकारी आज्ञावों का पता लगा है।

१३६. **कलाल:** यह जाति राजपुताना व युक्तप्रदेश आदि करीब २ सर्वत्र ही है परन्तु नाम में देश भाषा के कारण भेद है कहीं कलाल, कहीं कलवार कहीं भंडारी, कहीं शुण्डी आदि नाम हैं इस जाति की स्थिति सर्वत्र एकसी नहीं है कहीं किसी प्रान्त में शराब खेंचने वाली जातियों से लोग स्पर्श दोष मानते हैं कहीं पर नहीं, कहीं पर इनके यहां का शुष्क अन्न खाते हैं कहीं पर इनके हाथ का पक्वान्न खा लेते हैं इनके वर्ण विषय इस जाति को कहीं कोई चत्रिय वर्ण में, कहीं वैश्यवर्ण में कहीं संकर वर्ण में विद्वानों ने माना है राजपुताना व युक्तप्रदेश के कलाल तथा अन्य प्रान्तों के कलालों में चत्रियत्व दर्शता है ये लोग शराब खिचवाने व बेचने आदि का धन्दा तो करते हैं परन्तु प्रायः खान पान से भ्रष्ट नहीं हैं यज्ञोपवीतादि पहिन्ते हैं इनके अनेकों भेदों का पता लगाया है इस जाति की उत्पति विषय एक विद्वान का कहना है कि आभीर याने अहीर की स्त्री व बेन जाति के पुरुष के संयोग से कलाल उत्पन्न हुये किसी ने वैश्य जाति के पुरुष तथा तीवर कन्या से कलाल जाति उत्पन्न हुई है इसही तरह तीसरे विद्वानने और भी बुरी तरहसे इस जाति की उत्पति लिखी है, और चौथे विद्वान की सम्मति इन सब से निराली ही है अतएव सत्य क्या है? इस विषय का हम ने बड़ा खोज किया है वह सब विवर्ण ग्रन्थ में लिखेंगे इस जाति को चाहिये कि वर्णव्यवस्था मंडल के २५१ प्रश्नों के उत्तर शीघ्र भेजें जिससे इनके निर्णय में सुभीता हो तब ही हम विशेष ज़ोर के साथ सिद्ध करेंगे कि यह जाति किस वर्ण के योग्य है ? हिन्दू धर्म में शाक्त सम्प्रदाय के सिद्धान्तों के अनुसार शराब खेंचना व पीना एक महापुण्य कर्म माना गया है अतएव कलाल, कलवार व महाजन प्रादि आदि जातियें भी सर्वोत्तम हैं * और निस्संदेह रूप से

---

* इस विषय पर कुछ कलवार प्रकरण में भी लिखा जा चुका है।

इन्हें वैश्य व क्षत्रिय वर्ण में मानना चाहिये और यदि हिन्दुवों की शाक्त सम्प्रदाय के मन्तव्य निरे झूठे व पापमयी हैं तो ये जातियें दोष की भागी मानी जांय अन्यथा नहीं।

१३७ कलावत :— यह जाति विशेषरूप से राजपुताना में मिलती है बादशाही जमाने में इन का खूब जोर शोर था आज कल भी राजा महाराजा व सरदार तथा अन्य अमीर उमरावों के पास कलावत मिलते हैं ये लोग पहिले हिन्दू थे मन्दिरों में ठाकुर के साम्हने गाया बजाया करते थे परन्तु मुसलमानी राज्य में ये लोग जबर्दस्ती मुसलमान कर लिये गये तबसे ये कलावत कहाने लगे इस जाति में सदा से गाने बजाने की रीति चली आती है इन में तानसैन सब से बड़ा व साङ्गीत शास्त्र का अद्वितीय विद्वान हुवा है अतएव सम्पूर्ण गवैये और कलावत लोग गाना आरम्भ करने के पूर्व तानसैन का ध्यान धर लेते हैं आज कल जहां साङ्गीत विद्या की शिक्षा कहीं पर लड़के व लड़कियों को दी जाती है तहां तानसैन के नाम की मिठाई रक्खी जाती है और मिठाई पर फातिहा पढ़ कर वह बांटदीजाती है जहां नामीर वेश्यावोंकी लड़कियों को तालीम दी जाती है वहां कलावन्त लोग ऐसा ही करते हैं। इस जाति के लोगों का धर्म्म सुन्नी है, ये लोग नमाज़ रोज़े के पाबंद सुने गये हैं और प्रायः इन के नामों के अन्त में तानसैन का अन्तिम "सैन" लगाया जाता है कहीं कहीं ये लोग हिन्दू भी हैं इन के भेद उपभेद क्षत्रियों से मिलते जुलते हैं आचरण भी हिन्दुओं के से हैं शेष ग्रन्थ में लिखेंगे।

१३८ कवर्ग :—यह माईसोर स्टेट की एक जाति है इस का विवर्ण ग्रन्थ में लिखेंगे एक समय इस जाति के बहिन भाई दोनों मिलकर कहीं से दान दक्षिणा यह कह कर लियाये थे कि हम दोनों स्त्री पुरुष हैं तदनुसार इस शब्द का अर्थ अपनी असलियत छिपाने वाले के हैं

१३९ कव्वाल :—यह एक गानविद्या जानने वाली जाती है इस जाति के लोग सितार बहुत ही बढ़िया बजा जानते हैं राजा महाराजाओं के यहां ये लोग प्रायः मिलते हैं कहते हैं कि बादशाह अमीर खुसरो के समय से ये लोग उत्तम प्रतिष्ठा को प्राप्त हुये थे जब ये लोग किसी को सितार सिखाते हैं तौ अमीर खुसरो के नाम की " नियाज " देते हैं क्योंकि सितार के निकालने वाले अमीर खुसरो माने जाते हैं। इन्हीं के नाम से कव्वाली एक सुन्दर रसीला राग गवैयों का भूषण है शेष ग्रन्थ में देखियेगा।

१४० कवराई :—यह द्रविड़ देश की खेती करने वाली जाति है हम ने इस जाति के १८ भेदों का पता लगाया है इन का वर्ण क्षत्रिय है पर लोग इस पर आपत्ति प्रकट करते हैं इस जाति में कई मनुष्य उच्च पदस्थ व रईस हैं कहीं लोगों ने इस जाति के विरुद्ध सम्मतियें दियी हैं बहुतसे लोगों ने इन्हें वैश्यवर्ण में बतलाया है, परन्तु किसी २ ने इस जाति को कृषी कर्म्मी देख कर सतशूद्र बतलाया है शास्त्र में इस का कहीं पता नहीं लगा अतएव इस जाति के यहां से २५१ प्रश्नों के उत्तर आने पर वर्णव्यवस्था मंडल द्वारा सच झूठ का निर्णय करेंगे।

१४२ कश्ता:—महाराष्ट्र प्रान्त में मध्य श्रेणी के नीचे ब्राह्मण जो पूना व खान्देश में बहुतायत के साथ हैं वहां ये कृषी कर्म्म करनेवाली जाति है इनका पद वहां बहुत नीच माना जाता है ऐसी ही एक विद्वानकी सम्मति है इसके विषय खानदेश के लोगों ने इस जाति के विरुद्ध हमें बहुत कुछ नोट कराया है पर उस की सत्यता में हमें सन्देह है अतएव देखें यह जाति हमारी वर्णव्यवस्था मंडल के २५१ प्रश्नों के क्या उत्तर भेजती और अपनी जाति महत्व सम्बन्ध में क्या २ लिखती है? तब ही निज सम्मति सहित विवर्ण ग्रन्थ में देंगे।

१४३ कश्मीरी ब्राह्मण :—ये इस देश के प्राचीन आर्य्य हैं, डौल डौल, गुण कर्म व सूरत शक्ल आदिके कारण आर्य्य

कहलाने के अधिकारी ये ही हैं भारत की अन्य ब्राह्मण जातियों में सब में कुछ न कुछ त्रुटियें अवश्य हैं अर्थात करीब २ सम्पूर्ण प्रकार के अन्य ब्राह्मण समुदाय ने अपने मुख्य ६ कर्मों में से १ अध्यापन २ अध्ययन ३ यजन ४ याजन आदि को छोड़कर केवल " दान ,, ले लेना को मुख्य जानकर भीख के टुकड़ों पर निर्वाह करलेने को ही ब्राह्मणत्व समझ लिया है तिसका फल यह हुआ कि धान्य कुधान्य खानेपीनेसे ब्राह्मण लोग आलसी, प्रमादी दरिद्री व निरत्तर भाटाचार्य्य रह गये जिससे भारत की सम्पूर्ण जातियों में ब्राह्मण समुदाय की दशा शोचनीय व अचल विचल होगयी यहां तक कि वे ब्राह्मण जिन के पूर्वज बड़े २ विद्यावाचस्पति व ऋषि मुनि होकर भूखंड में मान्य पाते थे उनकी सन्तान आज शूद्रों की तरह पानीपांडे, रसोइये, चौकीदार; चिलमची चपड़ासी, टहलुवे और अन्य चाकरी करती फिरती हैं यह ही नहीं भूख के कारण पेट की ज्वाला को बुझाने के अर्थ सदा के लिये गोभत्तक ईसाई व मुसलमान बन जाती हैं परन्तु इन सब ब्राह्मणों में यदि ब्राह्मण जाति का गौरव व मान मर्य्यादा किसी ब्राह्मण समुदाय ने रक्खी है तो सब से पहिले कहा जा सकता है कि वह समुदाय एक मात्र कश्मीरी ब्राह्मणों का है इन की उत्पत्ति शुद्ध व निर्मल तथा प्राचीन आर्य्यों की सन्तान ये ही हैं।

ईस जाति की प्रशंसा अनेकों देशी व विदेशी विद्वान व इतिहास वेत्ताओं ने लिखी है उन सब की सम्मतियें यदि संग्रह किये जांय तो यह प्रकरण बहुत बढ़ जायगा अतएव सूक्ष्म रूप से यहां दिग्दर्शन मात्र दिखाते हैं यथा :—

Sir George Campbell सर जार्ज केम्पबेल की पुस्तक के पृष्ठ ५७ से ५८ तक में का सारांश यह है :—

The Kashmiri Brahmins are quite High Aryans in the type of their features. very fair and handsome, with high chiselled features, and no trace of inter mixtures of the blood of any lower race.

The Kashmiri Pandits are known all over Northern India, as a very clever and energetic race of office workers, as a body they excel the same number of any other race with whom they come in contact.

E. of India page 57 to 59

भावार्थः— सर जार्ज केम्पबेल साहब लिखते हैं कि कश्मीरी ब्राह्मण अपनी शारीरिक दशा, रंग सुन्दरता व मनोहरता के कारण उच्चकोटि के आर्य्य हैं क्योंकि इन के रजवीर्य्य में किसी भी अन्यनीच जाति का संसर्ग नहीं है। ये लोग पश्चिमोत्तर प्रान्त में सर्वत्र अपनी विद्या बुद्धि कार्य्य कुशलता के लिये प्रसिद्ध और उच्चपदस्थ हैं और बड़े २ कार्य्यों को अपनी बुद्धि विचक्षणता के कारण बहुत ही सुप्रबंध के साथ कर डालते हैं।

भट्टाचार्य्य जी लिखते हैं किः—

The usual Surnames of the Kashmiri Brahmans is Pandit. (H.C. S. page. 54)

कश्मीरी ब्राह्मणों का मुख्य कुल नाम " पंडित " है।

भारत वर्ष में इस जाति के लोगों ने विदेशी विद्वानों को भी यह दिखला दिया है कि " भारत वर्षियों में भी उच्चतम कोटि की विद्या प्राप्त करने व राज्य कार्य्यों में सुप्रबंध के साथ कार्य्य चलाने की शक्ति विद्यमान है।

भारत वर्ष की पठित समाज में कोई ही ऐसा मनुष्य होगा जिस ने भारत माता के सुपूत National Congress भारत की जातीय महासभा के संचालक स्वर्गवासी आनरेबल पंडित अयोध्या नाथ वकील हाईकोर्ट अलाहाबाद का नाम न सुना हो वे महाशय भी कश्मीरी ब्राह्मण कुलोत्पन्न भारत भूषण थे।

इस ही तरह बंगाल हाईकोर्ट के जस्टिस स्वर्गवासी पंडित शम्भूनाथ भी कश्मीरी ब्राह्मण थे आप की न्याय व प्रजावत्सलता के कारण सारा बंगाल आज आप को याद कर रहा है जैसे कि आज कल भारत की पठित समाज मान्यवर बाबू सारदाचरण

मित्र जस्टिस बंगाल हाई कोर्ट कलकत्ता की महिमा गा रही हैं उस ही प्रकार आप की प्रशंसा भी सर्वत्र फैली हुयी है।

इस ही तरह बाबू गोविन्दप्रसाद पंडित का नाम कौन नहीं जानता होगा जिन्होंने बंगाल की कोयले की खान से इतना द्रव्य कमाया कि वे अपने जीते जी बंगाल के धन कुबेर कहे जाने लगे और उन की सन्तान को भारत गवर्नमेन्ट ने " महाराजा " की उपाधि से विभूषित किया था वे भी कश्मीरी ब्राह्मण थे। यह ही नहीं राजपुताने में पंडित सुखदेव प्रसाद जी Prime Minister जोधपुर का नाम भी बड़े गौरव के साथ लिया जाता है जिन्हों ने जोधपुर राज्य का प्रबंध बड़ी योग्यता से किया वे भी कश्मीरी ब्राह्मण हैं। शेष सप्तखण्डी ग्रन्थ मे लिखेंगे।

१४४ काष्टसंगी :—यह जैन धर्मानुयायी दिगम्बरी सम्प्रदाय में एक उप भेद है ये लोग लकड़ी की मूर्तियें पूजते हैं और याक की दुम का ब्रुप बांधते हैं। इस का विवरण जैनियों के संग लिखेंगे।

१४५ काष्ट श्रोत्रिय:— यह बंगाल प्रान्तीय राढ़ी व राढ़ीय ब्राह्मणों का एक भेद है इस जाति के अनेकों उपभेदों का पता लगाया है नवी शताब्दी में पूर्वबंगाल का राजा आदिसुर कन्नौज से यज्ञकराने को पांच विद्वान लिवा लेगया था यज्ञ दक्षिणा में महाराज आदिसुर ने इन पांचो को संतुष्ट करके सदा के लिये अपने ही देश में रखलिये तब से राढ़ी व वारेन्द्र ब्राह्मण इन्हीं पांचों के वंशज माने जाते हैं इस जाति में कई योग्य विद्वान व महात्मा तथा धन कुबेर हुये हैं इस जाति का विवर्ण बहुत बड़ा है, विवाह सम्बन्ध में कुलीन अकुलीनत्व का विवाद इनमें खूब बढ़ा हुवा है अर्थात् कोई कुलीन इस जाति की कन्या के साथ विवाह करले तो वह तत्काल नीचता को प्राप्त हो जाता है इस कुलीन अकुलीनत्व की दुर्दशा का विवर्ण " कुलीन " प्रकरण के साथ आगे को लिखा है तहां देखलेना।

१४६ कसलनाडू:- यह तैलंगी ब्राह्मणों का एक भेद है कोमल नाड़ शुद्ध शब्द से बिगड़कर कसलनाडू हुवा है इनका आदि स्थान ओडप्रदेशान्तर्गत कोशला नगरी है तहां से ये लोग तैलंगदेश में जाकर बसे तब से इनका नाम कोसलनाडू होगया विशेष विवर्ण ग्रन्थ में लिखेंगे।

१४७ कसाई;-यह जाति हिन्दू भी है तथा मुसलमान भी है इसकी उत्पत्ति के विषय एक विद्वान ने लिखा है कि भंगी केवीर्य्य व चमारिन के पेट से यह जाति पैदा हुयी है मुसलमान कसाइयों में कई ऐसे भी भेद हैं कि वे पूर्व उच्च क्षत्रियों के भेदों से मिलते हैं क्योंकि वे जबरदस्ती मुसलमान करलिये गये थे तब पुराने ढचरे के पंडितों ने उनसे घृणा किया और वे ही आज पक्के मुसलमान होकर गोवध करने लगे उनके भेद पवांर, चौहान आदि हैं विशेष विवर्ण ग्रन्थ में लिखेंगे।

१४८ कसेरा:- यह राजपुताना व युक्तप्रदेश की एक जाति है ये लोग कांसे पीतल के बर्तन बनाना तथा फूटे टूटे बर्तनों के दुरुस्त करने का काम करते हैं किसी विद्वान ने इस जाति को शूद्र स्त्री की सन्तान बतलाया है और उनकी सम्मति है कि इस जाति को उच्चकर्म द्विजत्व के नहीं करने चाहिये एक दूसरे अंगरेज विद्वान ने इस जाति को अपनी रिपोर्ट में इस जाति को छोटी २ जातियें, याने ढंगी कबड़िये, कूंजड़ों आदिकों के बराबर लिखी है परन्तु ये सब बातें कहां तक ठीक हैं इसकी छान बीन करके निर्णय करेंगे परन्तु आवश्यक्ता यह है कि यह जाति मंडल के २५१ प्रश्नों के उत्तर शीघ्र दे और यदि अपनी उत्तमता के कुछ प्रमाण रखती हो तो वे भी मंडल के अवलोकनार्थ शीघ्र भेजे अन्यथा हमतो इन कुतर्कों का मुहतोड़ उत्तर वृहद्ग्रन्थ में लिखते हुये निर्णय करके दिखलाही देंगे कि यह जाति ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य तथा शूद्र इन चारों में से किस वर्ण मे है ? इस

जाति को पैरों के बल खड़े हो जाना चाहिये हमारा मंडल भी जातियों के उद्धार के लिये ही खड़ा हुवा है शेष विस्तारपूर्वक ग्रन्थ में देखना क्योंकि एक विद्वान ने इस जाति को ब्राह्मण ऋषि द्वारा भी पैदा हुयी लिखी है पर वह सब विवर्ण स्थानाभाव से निर्णयान्तर सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे।

१४६ **कसन्धान:**—यह एक वैश्य जाति है इतिहास वेत्ता विद्वानों ने इनका आदिस्थान आगरा अगरोहा वतलाया है लोगों का कहना है कि ये अग्रवाल वैश्यों के भाई बंधु हैं पर किसी २ स्थान में किसी २ अनुभवी मनुष्य ने इस जाति के विरुद्ध कुछ घृणित वातें वतलाई और हमें विश्वास दिलाया है कि यह जाति वैश्य वर्ण के योग्य नहीं है हमें इस जाति के विषय जो प्रमाण मिले हैं उनसे इनका वैश्यत्व ही नहीं किन्तु क्षत्रियत्व भी मानें तो कुछ अत्युक्ति नहीं परन्तु कई बातें व प्रमाण इनके विरुद्ध भी मिले हैं जिससे लोगों को इस जाति के नीचत्व का सन्देह होता है परन्तु दोनों प्रकार के प्रमाण याने उच्चता व नीचता के विशेष रूप से संग्रह किये हैं हमारे दो मास के नोटिस देने पर भी अन्य कई एक जातियों की तरह इस जाति ने भी अपनी उत्तमता विषयक कोई प्रमाण पेश नहीं किये और न वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर ही इस जाति से प्राप्त हुये जिससे हम इस जाति के उच्चत्व व नीचत्व का विवेक करके लिखते तथापि धर्म-व्यवस्था सभा के विद्वानों से परामर्श करके पूरा २ विवर्ण अपने बृहत् ग्रन्थ में लिखकर निर्णय कर देंगे कि यह जाति किस वर्ण के योग्य है ? इस जाति का बहुत विवर्ण व हमारी निज सम्मति अभी गुप्त रक्खी गयी है।

१५० **कसरवानी बनिये:**—यह एक वैश्य वर्ण की जाति है इन के ८६ भेदों का पता लगाया है यह जाति अलाहावाद के जिले में विशेष रूप से तथा साधारणतया युक्तप्रदेश के अन्य जिलों में भी है द्वेष भाव से कहीं २ लोगों ने इस जाति को

छोटी व घृणित मान रक्खी है इन का पद अग्रवाल वैश्यों के बराबर सा ही है परन्तु किसी२ग्रन्थकारने यह भी लिखा है कि ब्राह्मण क्षत्रिय इस जातिके यहांकी बनी हुई कची व पक्की रसोई तक भी नहीं खाते हैं कदाचित ऐसा हो ? इस जाति ने अपनी उत्तमता विषयक कोई प्रमाण व २५१ प्रश्नों के उत्तर तक भी देने का प्रयत्न नहीं किया हम अपनी ओरसे अच्छा बुरा न कह कर विस्तार पूर्वक निर्णय ग्रन्थ में करेंगे ॥

१५१ कांसावणिक :—यह जाति कहीं कांसा वणिक व कहीं कसारी नामसे प्रसिद्ध है इस जातिकी दशा यथा नाम तथा गुणों के तुल्य अर्थात जैसे नाम वैसे गुण के समान यह जाति कांसावणिक कहाते २ कंसारी कहाने लगी युक्तप्रदेश में यह जाति बहुत कम है पर बंगाल प्रान्त में यह जाति विशेष रूप से है इस जाति के वर्ण विषय कोई वैश्य कोई सतशूद्र व कोई क्षत्रिय बतलाते हैं इस जाति ने वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर भेजने का कोई प्रयत्न ही नहीं किया तथापि सत्याऽसत्य का निर्णय करके हम तो इसका पूरा विवर्ण ग्रन्थ में लिखे ही गे यह जाति विशेष रूप से कांसा पीतल का व्यापार करती है इस कारण ही इनका नाम कांसावणिक हुआ है, यह वणिक जाति है पर एक विद्वान इनके विषय ऐसा लिखते हैं कि ये मांस खाते हैं ये लोग व्यापार में बड़े ही कुशल हैं और अपने व्यापार कौशल के कारण इस जाति में कोई २ धनकुबेर बन गये हैं परन्तु कोई २ इस जाति के लोग कहीं २ देवियो के मन्दिरों में बकरे काटने के काम में भी रक्खे गये सुने जाते हैं।

१५२ कहार :—इस जातिके कई नाम हैं, देश भेद के कारण कहीं ये कहार, कहीं कीर, कहीं धीमर, कहीं धीवर, कहीं गुड़िया कहीं भोई, और कहीं महरा कहाते हैं। यह कहार शब्द संस्कृत शुद्ध शब्द " स्कन्धकार " से विगड़ कर बना है जिस का अर्थ कन्धे पर ले जाने के हैं ये लोग प्रायः पानी की बैंगी, मटके, पा-

झकी, पिंजस और डोली उठा कर कन्धे पर ले जाते हैं अतएव उपरोक्त अर्थ भी सङ्गत है। इन के ८२३ भेदों का पता लगा कर प्रत्येक का विवर्ण संग्रह किया है मुसल्मान कहारों के भी चौवीस भेदों का पता लगाया है। जिन में श्रेष्ट वुद्धि थी वे धीवर कहाये, तथा जो कहार अपने आचरणों से पवित्र थे उन्हें संस्कृतज्ञों ने " महिला " कहा था अर्थात् महिला शब्द का अर्थ ह स्त्री, अतएव जो कहार वड़ी वड़ी पड़दायत उच्च कुलों की स्त्रियों के पास वाहिर भीतर के कामों के लिये विना रोक टोक जा आ सकते थे उन्हें उन के सच्चरित्र के पुरस्कार में महिला शब्द मिला था और वे महिला कहाते कहाते महला कहाये जाकर प्रसिद्ध नाम महरा कहाने लगे, हमारे वड़े ग्रन्थ में उपरोक्त शब्दों के और भी अनेकों अर्थ मिलेंगे। यह जाति अपने को क्षत्रिय वर्ण में मानती है परन्तु हिन्दू पवलिक ने इन को शूद्र वर्ण में वतलाया है। मनुष्यगणना में भी यह जाति क्षत्रियों में नहीं लिखी गयी है, एक विद्वान ने इस जाति को तेली व वनियानी के संयोग से पैदा हुयी वतलायी है, एक दूसरे विद्वान ने इन की उत्पत्ति में और ही विचित्रता दिखलायी है तीसरे विद्वान ने इस जाति को संकर (दोगले) वर्ण में लिखी है पर इन सब में सत्य क्या है ? उन सब का निर्णय वड़े २ प्रमाणों द्वारा अपने हिन्दू जाति वर्ण व्यवस्था कल्पद्रुम नामक ग्रन्थ में करेंगे यहां स्थानाऽभाव से लाचार हैं तव तक भारत की कहार सभावों से वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर भी आजावेंगे तथा उन से समक्ष में मिल कर कुछ वातों का प्रत्युत्तर भी लेना है हम ने कहार सभा अलीगढ़ को कहार जाति के उद्धारार्थ कुछ लिखा था और कहार जाति के उच्चत्व विषयक हम ने सभा से प्रमाण भी मांगे थे परन्तु कुछ न प्राप्त हुये। इस जाति के लोग कहीं २ जनेऊ पहिने भी देखे गये हैं परन्तु उन में यह आर्य्यसमाजी लटक का फल है इस जाति के कुछ भेद क्षत्रियों से भी मिलते हैं हमारे अन्वेषण में कई विद्वानों ने इस जाति के क्षत्रिय वर्ण विषय में सम्मति भी दियी है और

किसी २ ने इस जाति को राजा जरासिंध की सन्तान बतलाया है अतएव ये उत्तम कर्म्म कर सकते हैं ।

परन्तु इन के विषय विशेष विवर्ण सत्याऽसत्य का निर्णय होने पर निज सम्मति सहित अपने सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे ।

१५३ काकन :—यह जाति युक्तप्रदेश के पूर्वी भागों में पायी जाती है यह क्षत्रिय वंशीय जाती है मिस्टर C. S. W. C. ने भी इस जाति को राजपूत जाति लिखी है मिस्टर इलियट साहब ने भी इस जाति को राजपूत वंशी लिखा है इन के पूर्वजों का युक्तप्रदेश में आगमन मऊ अल्दामऊ से हुवा था जहां से गाजीपुर और फय-ज़ाबाद में जाकर बसे और भाड़ लोगों से युद्ध करके उन्हें भगादिया परन्तु आजमगढ़ के काकनों का कहना है कि " हम विन्दु कुल के मयूरभट्ट एक नामी वीर पुरुष की सन्तान हैं " इन का आदिस्थान कपड़ीकेदार है इनका युद्ध सूरियो के साथ हुवा था युक्त प्रदेश में इस जाति की स्थिती व जाति पद बड़ा नहीं माना जाता है क्योंकि इन की विद्या व धन की दशा बहुत ही साधारण है इन को कई लोगों ने शूद्रों मे बतलाया है पर हम अपनी तरफ से ऐसा नमानकर वर्णव्यवस्था मंडल द्वारा निर्णय न हो तब तक कुछ नहीं कहेंगे शेष ग्रन्थ मे लिखेंगे ।

१५४ काची श्रीमाली:— यह कच्छ देश के श्रीमाली ब्राह्मणों का एक भेद है असल में यह श्रीमाली ब्राह्मणों का एक उपभेद है इन श्रीमाली ब्राह्मणों का कुछ हाल "अहमदाबादी" श्रीमाली ब्राह्मणों के तुल्य जानना और विशेष "श्रीमाली ब्राह्मणों का विवर्ण इस पुस्तक के अन्यभाग के " श्रीमाली " स्थम्भ में मिलेगा

१५५ काछी:— यह एक युक्तप्रदेश की क्षत्रिय जाति है, ये लोग अपने को इक्ष्वाकुवंशी क्षत्रिय मानते हैं, कछवाहा प्रसिद्ध राजपूत वंश का लघुतम रूप काछी है, साधारण हिन्दू समुदाय

की सम्मतियें इन के क्षत्रियत्व विषयक विशेषरूप से पोषक व साधारणतया बाधक हैं इस जाति के ५६० भेदों का पता लगाकर विवर्ण संग्रह किया है। देश भेद व देशभाषा के कारण से यह जाति कहीं काछी, कहीं कछवाहा, कहीं मुराव, और कहीं कोइरी कहे जाते हैं यथार्थ में ये सब एक ही पेड़ की शाखायें हैं केवल नाम भेद है, वंश भेद नहीं– ये सब इक्ष्वाकुवंशी क्षत्रिय हैं परन्तु इन सब का विवर्ण हम ने अलग अलग लिखा है अतएव अक्षर क्रमानुकूल ये जातियें हमारे ग्रन्थों में मिलेंगी एक विद्वान का ऐसा मत है कि आपात्तिवश जब यह जाति कृषी कर्म में अपने निर्वाहार्थ प्रवृत हुयी थी तब संस्कृतज्ञ लोग इन्हें कार्षी कहते थे जिसका अर्थ खेती करने वाला ऐसा होता है. यह ही कार्षी शब्द भाषा में बदलकर काषी काषी कहाते कहाते काछी कहाने लग गया। इनके उपरोक्त सैकड़ों भेदों में से मुख्य १ कनौजिया २ सक्यसेनी ३ हरदिया ४मुराव ५कछवाहा ६ सल्लौड़ियां और ७ अन्वर आदि आदि हैं। भारत में इस जाति की लोक संख्या २०६२२०४ है।

वर्तमान काल के महाराज जयपुर कछवाहे वंश के हैं। सक्यसेनी का शुद्ध नाम शाक्यसैनी (इक्ष्वाकुवंशी) है शाक्य मुनि की सेना व सन्तान कहीं शाक्यसेनी, कहीं सकसेनी, कहीं सकसेना कहाने लगी। शाक्य वंशियों की राजधानी फरुखाबाद के जिले में संकीसा थी जो अभी तक प्रसिद्ध है फरुखाबाद से आठ कोस की दूरी पर ई० आई आर रेलवे के स्टेशन मोटा से तीन मील की दूरी पर काली नदी के किनारे यह प्राचीन नगर बसा है परन्तु समय के हेर फेर से वहां प्राचीन महल व किले के खंडहर पड़े हैं शाक्य राजा विरागी होकर यहां कुछ काल तपस्या किये थी अतएव ऐतिहासिक विद्वानोंने इसको शाक्य मुनिका आश्रम भी लिखा है* इस जाति का विशेष वृत्तान्त अनेकों पत्रों में संग्रह किया है यह

* इसका आजकल का प्रचलित नाम संकीसा हैं।

जाति विशेषरूप से अफीम की खेती करती व बड़े २ बाग बगीचों में मालीपने के काम पर नियत किये जाती है ये लोग युक्तप्रदेश के रायबरेली आगरा और फरुखाबाद आदि आदि जिलों में विशेषरूप से हैं इस जाति ने वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों द्वारा जाति अन्वेषण अभी तक नहीं कराया है अतएव वर्णव्यवस्था कमीशन की रिपोर्ट प्राप्त होने पर मंडल के निर्णयान्तर इस जाति का विशेष विवेण सप्तखंडी ग्रन्थ में निजसम्मति सहित लिखेंगे तहां ही शाक्यमुनि का फोटो व उनकी सूक्ष्म जीवनी भी देंगे।

१५६ **काठियावाड़ी श्रीमाली:—** यह श्रीमाली ब्राह्मणों का एक उपभेद है काठियावाड़ में निवास करने से काठियावाड़ी श्रीमाली कहाये इस श्रीमाली जाति का कुछ थोड़ा सा उल्लेख अहमदाबादी श्रीमाली प्रकरण के तुल्य जानना विशेष विवर्ण ग्रन्थ में लिखेंगे।

१५७ **काठी:—** यह जाति बुंदेलखंड में विशेष है तथा काठियावाड़ में भी है यह क्षत्रिय जाति का भेद है उच्चतम कोटि की क्षत्रिय जाति है परन्तु इनके क्षत्रियत्व पर लोगों ने आपत्तियें प्रकट कियी हैं हमें तो इनके क्षत्रियत्व के प्रमाण मिले हैं इस जाति का विवर्ण ग्रन्थ में देंगे। साधारण जनसमुदाय ने जो सम्मतियें दियी हैं वे कदाचित द्वेष मूलक होंगी क्योंकि कई इतिहास वेत्ता विद्वानों ने इस जाति को क्षत्रिय लिखा है वह सब विवर्ण ग्रन्थ में मिलेगा इस जाति में कुछ कुरीतियें भी हैं उनका भी सुधार होना चाहिये। इनके दस भेदों का पता लगा है।

१५८ **कामगर:—** यह युक्तप्रदेश की एक जाति है इसको लोग एक छोटी जाति याने शूद्र जाति समझते हैं उत्पत्ति आदि इस जातिकी क्षत्रियोंसे बतायी गयी है पर विद्या रहितता के कारण ये लोग छोटे २ धन्दों में टहलुवे का काम करते हैं,इनके २५ भेदों का पता लगाया है ये किसवर्ण में हैं ? यह निर्णय ग्रन्थ में होगा।

१५९ कासड़िया:— ये एक मंगतों की जाति है ये लोग वांभियों के यहां भीख मांगते हैं मर्द व औरत तंदूर पर गाती हैं इनकी स्त्रियों में एक बड़ी विचित्रता होती है अर्थात् इनकी स्त्रियें अपने शरीर में १३ जगह मंजीरे बांधकर सबको एक साथ बजाती हैं ये लोग भगवा कपड़ा पहिनते हैं इनकी स्त्रियें गुप्तरूप से खराब होती सुनी गयी हैं ये लोग गाने बजाने का धन्दा करते हैं इनका इष्टदेव रामदेव जी है ये लोग मुर्दों को गाड़ते हैं इनके यहां विवाहशादी गुरड़े कराते हैं ।

१६० कामावारू:— यह तैलंगदेश की कृषी करने वाली जाति है इस का विवर्ण कापू जाति के तुल्य जानना ।

१६१ कानड़े:— यह दक्षिण देशीय जाति है ये जनेऊ पहिनते हैं और ब्राह्मणों के से आचरण करते हैं परन्तु मद्य मांस व मछली खाने का कुछ परहेज नहीं है इन्हें ब्राह्मण लोगशूद्रों के बराबर मानते हैं यह सुनार जाति का एक भेद है यह लोग अपने को पांचाल सुनार कहते हैं और इसही तरह ब्राह्मण होने का दावा करते हैं परन्तु यह विषय बड़े २ पंडितों की सभा में व हाई कोर्ट तक में निबट कर निश्चय हो चुका है कि इनकी उत्पति ऐसी नहीं है इस विषय का सविस्तार विवर्ण दूसरे भाग में सुनार जाति के साथ लिखेंगे ।

१६२ कान्हपुरिया:— यह एक क्षत्रिय जाति है रायबरेली सुल्तानपुर, परतावगढ़, व अल्लाहाबाद जौनपुर आदि जिलों में यह जाति विशेष रूप से है इस जाति ने वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर तक भी नहीं दिये और न अपनी जाति विषय में कोई प्रमाण ही भेजे हमारे पबलिक अन्वेषण में थोड़ी सम्मतियें विरुद्ध मिलीं हमारे पास दोनों ही प्रकार के प्रमाण संग्रह है उनका निर्णय ग्रन्थ में करेंगे और विस्तारपूर्वक विवर्ण भी तहां ही होगा ।

१६३ कानोता:— यह राजपुताना प्रान्त की एक जाति है ऐसा सुनने में आता है कि ये लोग पहिले गौड़ ब्राह्मण थे बादशाही जमाने में इस जाति के लोग बीन बजाया करते थे ऐतिहासिक विद्वानों का ऐसा मत है कि कि भवानी खांप के पंचोलियों के बड़ेरे उस समय खजानची थे एक समय बादशाह उनपर क्रुद्ध होगये थे तब कुछ पंचोली मारे गये कुछ भाग निकले और कुछ कैद किये गये उनके छुड़ाने के अर्थ अन्य अनेकों सरदारों ने उद्योग किया पर सब निष्फल हुवा अन्त को कानोता जाति के चन्दन नामक एक वृद्ध सज्जन ने बीन बजाकर बादशाह को प्रसन्न किया और खजानचियों के छुटकारे के लिये अरज किथी तब बादशाह ने कहा कि इनके बदले तुम मुसलमान हो जावो तो इनको छोड़देवें तब चन्दन के मुसल्मान हो जाने पर वे सब छोड़ दिये गये शेष ग्रन्थ में लिखेंगे।

१६४ कान्यकुब्ज ब्राह्मण 'कन्नोजिये' — यह युक्तप्रदेश की ब्राह्मण जातियों में एक उच्चतम कोटि की ब्राह्मण जाति है शुद्ध नाम कान्यकुब्ज है, परन्तु भाषा भाषी लोग इन्हें कन्नौजिये कह कर पुकारते हैं इस जाति की विद्या स्थिति भी आजकल चमक चली है दूसरे प्रान्तों में ये पूर्बिये ब्राह्मण भी कहाते हैं शास्त्रोक्त दसों प्रकार के ब्राह्मणों में से पञ्चगौड़ समुदाय में दूसरे नम्बर पर हैं। युक्तप्रदेश के मनुष्यगणना सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब लिखते हैं कि —The highest of these (Panch Gaurs) is the Kanya-Kubja or Kanaujia. पञ्च गौड़ों में सर्वोच्च ब्राह्मण कान्यकुब्ज हैं इनके ८४ भेद उपभेदों का पता लगाकर हमने विवर्ण संग्रह किया है।

यह नाम कान्यकुब्ज देश में निवास करने के कारण पड़ा है आज कल कान्यकुब्ज देश कन्नौज को मानते हैं पर ऐसा

नहीं समझना कि कन्नौज के रहने वाले ही कन्नौजिये कहाये वरन इतिहासों से पता लगता है कि लार्ड वेलेजली के पूर्व कन्नौज एक बड़ा भारी सूबा था जिसके अन्तर्गत आधा अवध तथा युक्तप्रदेश के वर्तमान जिले पीलीभीत, बरेली, शाहजहांपुर फर्रुखाबाद कानपुर, फतेहपुर, हमीरपुर, बांदा और इलाहाबाद आदि २ थे अतएव इस देश के रहने वाले ब्राह्मण कान्यकुब्ज कन्नौजिये कहाये।

अन्य ब्राह्मणोंकी अपेक्षा हम देखते हैं कि इस ब्राह्मण जाति समुदाय में द्विवेदी; त्रिवेदी, चतुर्वेदी,त्रिपाठी;शुक्ल दीक्षित और वाजपेयी; अग्निहोत्री, पाठक, आदि २ पदवियें चली आरही हैं जिससे प्रमाणित होता है कि प्राचीन काल में इस जाति में वेद विद्या का प्रचार तथा यज्ञादि कर्मों की परिपाटी विशेष रूप से प्रचलित थी। परन्तु आज कल तो इन में विशेषतया नाम मात्र के उपाधिधारी रह गये हैं विद्या का भी विशेष अभाव है यह ही नहीं किन्तु ऐसा सुना जाता है कि इस जाति में मांसादि अभक्ष्य पदार्थों का खानपान तथा नौ कन्नौजिये अठारह चूल्हे आदि २ अनेकों कुरीतियों के अतिरिक्त लड़के वाले लड़की वाले से ठहरा करके रुपैया लेते हैं जिससे प्रायः रुपैये के अभाव से गरीबों की लड़कियें आजन्म कुंवारी मर जाती हैं कान्यकुब्ज जाति में सुधार हो इस ही इच्छा से यह संकेत है शेष विस्तृत विवर्ण ग्रन्थ में लिखेंगे।

किसी विद्वान ने कान्यकुब्ज का ऐसा समास किया है कि "कुब्जाःकन्याः सन्ति यस्मिन्देशे स कन्याकुब्जो देशः"; कान्य कुब्जे भवा कान्यकुब्जाः ;; अर्थात जिस देश में कुब्जा कन्यायें थीं वह कान्यकुब्ज देश कहाया और उस देश के रहनेवाले ब्राह्मण कान्यकुब्ज प्रसिद्ध हुये। यद्यपि इस जाति ने छतछात सखरे निखरे व कच्चे पक्के के नियम को उच्चतम कोटि तक पहुंचा दिया है तथापि इस जाति के मूर्ख समुदाय ने मांस मछली को धर्म की आंटमें ग्रहण करलियाहै तथा विशेष प्रेम किया है जिससे ब्राह्मण

मात्र को विपत्तियों के सन्मुख लज्जित होना पड़ता है ऐसी २ कुरीतियों को देखकर ही कान्यकुब्ज महामंडल याने कान्यकुब्जों की प्रान्तिक संस्था खड़ी है देखें इसका भविष्यत क्या होता है ?

१६५ **कार** :-- यह बंगाल प्रान्तीय वैद्य जाति के एक कुल का नाम है तथा बंगाल प्रान्तीय मध्य श्रेणी के दक्षिणी राढ़ी मलिकों का भी कुल नाम है ये लोग शाक्त हैं और काली व दुर्गा के बड़े उपासक होते हैं परन्तु इन के गुरू व आचार्य्य ब्राह्मण लोग होते हैं ये मांस शराब नहीं खाते पीते हैं परन्तु बकरा जो काली व दुर्गा के बलिदान में चढ़ता है उस का भोग ये लोग खाते हैं और इस में पुण्य समझते हैं परन्तु यह मांस खाने वालों ने मांस खाने की एक युक्ति निकाल लियी है इस जाति ने विद्या में बड़ी ही उन्नति कियी है बड़े २ सरकारी महकमों में इन लोगों ने अच्छे २ पद पाये हैं। यह नाम बंगाल देशीय बनगजा कायस्थों का भी कुल नाम है यह उपरोक्त सम्मति दूसरे विद्वानों की है हम अपनी निज की सम्मति अपने ग्रन्थ में देंगे देखें यह जाति समुदाय उपरोक्त लेख का क्या समाधान करते हैं तब ही हम भी निर्णय करके लिखेंगे।

१६६ **कार्तिक** :-- सौमिक-इस जाति के छूजाने मात्र से ही स्पर्श दोष लगता माना गया है इन का पेशा भेड़ आदि पशुवों को मार कर उन का मांस बेचना है यह एक सब से नीच जाति है जैसे " म्हार " आदि।

ये नीच जातियें गांव के बाहिर रहा करती हैं और इन के छूने से लोग अपवित्र हो जाते हैं। इस तरह का काम करने वाले मुसलमान "कसाई" कहाते हैं अतएव ये लोग हिन्दु कसाई हैं।

१६७ **कायस्थ** :--यह भारत की एक विद्या सम्पन्न जाति है प्रायः साधारण हिन्दू पब्लिक का यह कथन है कि इस जाति में मांस व शराब का बहुत प्रचार है परन्तु आज कल यह जाति इस निन्दनीय कर्म को छोड़ने के उद्योग में भी है और अपने को

क्षत्रिय वर्ण में बतलाती है, परन्तु हमारे भ्रमण में सर्वत्र हमें इन के क्षत्रियत्व के विरुद्ध सम्मतियें मिलीं किसी ने इन्हें क्षत्रियों में मिल गयी हुई, किसी ने शूद्र व किसी ने इस जाति को सत शूद्र लिखा है। सन् १९०१ में युक्तप्रदेश की २५ जिला कमेटियों ने इस जाति को क्षत्रियों में शामिली लिखी है परन्तु चार कमेटियों ने तो इन का वर्ण बहुत ही नीचा बतलाया है अतएव बहु सम्मत्यानुसार इस जाति को मनुष्यगणना सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब बहादुर ने चौथे वर्ग में लिख कर उस का विवर्ण "क्षत्रियों में शामिली" ऐसा दिया है और क्षत्रियों के प्रसिद्ध ४४ भेदों के साथ न लिख कर बैसवार आदि के साथ चौथे वर्ग में लिखी है। मेरे २० वर्ष के महान उद्योग और भिन्न २ स्थानों की जाति यात्रा में मुझे सर्वत्र १०० में से ७५ विद्वान व जाति विवेकी मनुष्य ऐसे मिले जिन का सब से प्रथम यह प्रश्न होता था कि " कायस्थ जाति को आप ने किस वर्ण में लिखी है " इस का उचित उत्तर मेरे दे देने पर प्रायः विद्वान लोग मेरे ग्रन्थ के अनेकों विषयों में से कायस्थ जाति का विवर्ण सुना करते थे और तर्कवितर्क से प्रायः इस विषय की धूम रहा करती थी मुझे प्रायः अनेकों विद्वानों ने यह भी कहा कि कायस्थ जाति ने प्रायः मुकद्दमेबाजी द्वारा ब्राह्मणों को सताया है अतएव इनके विषय समझ बूझ कर लेख लिखियेगा अतएव इस का ध्यान रखते हुये मेरी सैकड़ों जातियों के अनुसन्धान में सबसे अधिक संग्रह का बड़ा विषय कायस्थोंका द्वितीय कुर्मियों का और तीसरा अहीरों का है हिन्दू मात्र को हमारे जनरल नोटिस के अनुसार कई जगह से वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर व जाति विषयक प्रमाण आये परन्तु इस विद्या सम्पन्न जाति के यहां से किसी ने चूं तक नहीं किया खैर !

हमारी जाति यात्रा में प्रायः हमें इस जाति के विरुद्ध प्रमाण अधिक मिले अतएव सर्व साधारण व धर्मव्यवस्था मंडल के विद्वानों के अवलोकनार्थ व विचारार्थ तथा सम्मत्यर्थ कुछ यहां लिखा जाता है यथाः—

ब्रह्म पादांशतो जन्म चातः कायस्थ नाम भृत् ।

(जा० नि०)

(१) ब्रह्मा जी के पादंश नाम चरणों से जन्म ले कर कायस्थ नाम कहाया इस के आधारानुसार व अन्य प्रमाणों द्वारा चरणों से शूद्र वर्ण पैदा हुवा है (२) एक अंगरेज़ बहादुर लिखते हैं कि ब्राह्मण लोग चन्द्रसेनी कायस्थों को क्षत्रिय चन्द्रसेन राजा की सन्तान नहीं मानते परन्तु इन को शूद्रों से भी नीच मानते हैं कुणवी भी इन के साथ भोजन नहीं करते सुने गये हैं देखो हिन्दुला पृ० ६४ कायस्थों का एक भेद अम्बष्ट है उस के विषय मनुस्मृति धर्मशास्त्रा धारानुसार इस भेद की उत्पत्ति ब्राह्मण ने किसी वैश्य की कन्या के साथ विषय किया जिस की सन्तान अम्बष्ट कहायी । करण भी इस जातिका एक भेद है उसके विषय लिखा है "शूद्रा विशोस्तुकरणे" अर्थात् वैश्य व शूद्र की स्त्री की सन्तान करन व करण कहायी इनको विद्वानों ने संकरवर्ण में लिखा है विशेष विवर्ण इसही पुस्तक के पृष्ट १४६ में लिखा जा चुका है तहां देखलेना । एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक विद्वान अपने ग्रन्थ के पृष्ट ४५६ में ऐसा लिखते हैं कि The clean sudra castes such as the Kayasthas

अर्थात् साफ शूद्र जातियें जैसे कायस्थादि ।

पुनः एक विद्वान लिखते हैं ।

The majority of Kayasthas clan do not wear sacred thred and admit their status as sudras.

कायस्थ कुलमें विशेषता यज्ञोपवीत रहित समुदाय की है अतएव वे शूद्र माने जा सकते हैं ।

एक देशी प्रसिद्ध पंडित अपने ग्रन्थ के पृष्ट ६१ मे शास्त्रों का मत ऐसा प्रकाशित करते हैं कि " किसी लुहार ने किसी कायस्थिन से गुप्त व्यवहार की मैत्री करके गर्भस्थापन कर दिया जिस की पैदा हुयी सन्तान सिन्धुरी कायस्थ कहायी और इसका वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र न कहाया जाकर संकर वर्ण कहाया ।

चन्द्रसेन की स्त्री में जमदग्नि से वेवित हुवा और दालभ्य ऋषि से रक्षित होने से उत्पन्न पुत्र ने सिन्दुर कायस्थ की कन्या में विवाह किया इस कारण चन्द्रसेनी कायस्थ संकरवर्ण में कहाये।

पुनः एक विद्वान ऐसा लिखते हैं कि "चित्रगुप्तात्मजा सर्वे कायस्थाः शूद्र संज्ञका" अर्थात् चित्र गुप्तवंशी सम्पूर्ण कायस्थ शूद्र संज्ञक हैं। पुनः—

एक विद्वान की यह भी सम्मति है कि खारेया जाति धोबी की कन्या की सन्तान है। लिखा है:—

चाटतस्कर दुर्वृत्त महासाहसिकादिभिः।
पीड्यमानाः प्रजा रक्षेत्कायस्थैश्च विशेषतः॥

याज्ञ० मित० राज० प्र० श्लो० ३३६

भा०-ठग, चोर, इन्द्रजाली, डाकू, और विशेषतः कायस्थ इन से पीड़ित प्रजा की राजा रक्षा करे पुन:—

चाट चारण चौरेभ्यो वध वन्धभयादिभिः।
पीड्यमानाः प्रजारक्षेत् कायस्थेभ्यो विशेषतः॥

वन्हि पु० पाशुपतदानाध्याय०

अर्थः—ठग; चारण, चोर इन के द्वारा सतायी हुई प्रजा की राजा रक्षा करे और विशेष करके कायस्थों से प्रजा को बचावे।

पुनः—

आदौ प्रजापतेर्जाता मुखाद्विप्राः सदारकाः।
बाह्वोश्च क्षत्रियाजाता ऊर्वोर्वैश्या विजज्ञिरे॥
पादाच्छूद्रश्च सम्भूत स्त्रिवर्णस्यसेवकः।
होमनाम सुतस्तस्य प्रदीपस्तस्य पुत्रकः॥

कायस्थःतस्य पुत्रोऽभूद्बभूव लिपिकारकः ।
कायस्थस्य त्रयः पुत्राः विख्याता जगतीतले ॥
चित्रगुप्तश्चित्रसेनो विचित्रश्च तथैवच ॥
चित्रगुप्तो गतःस्वर्गे विचित्रो नाग सन्निधौ ।
चित्रसेनः पृथिव्यां वै इति शूद्रः प्रचक्षते ॥

शा० क० पृ० ६७

सृष्टि की उत्पत्ति के समय में ब्रह्माजी के मुख से स्त्रीसहित ब्राह्मण पैदा हुये, और भुजाओं से क्षत्रिय, जंघा से वैश्य और पैरों से शूद्र पैदा हुये।

शूद्र के एक होम नामक पुत्र के प्रदीप नामक पुत्र हुआ और उस प्रदीप के कायस्थ हुये जिनकी लेखन वृत्ति थी, कायस्थ के तीन पुत्र हुये जिन के नाम १ चित्रगुप्त २ चित्रसैन और ३ विचित्र थे, उन में से चित्रगुप्त स्वर्ग को चला गया, और विचित्र पाताल लोक में चला गया और चित्रसैन मृत्युलोक में आये वे शूद्र कहे जाते हैं।

पुनः—

कायस्थे नोदरस्थेन मातुर्मांसं खादितम् ।
तत्र नास्ति कृपातस्य दन्ता भावेन केवलम् ॥
स्वर्णकारः स्वर्णवणिक् कायस्थश्च व्रजेश्वरः ॥
नरेषु मध्ये ते धूर्ता कृपाहीना महीतले ॥
हृदयं क्षुरधाराभं तेषाञ्च नास्ति सादरम् ।
शतेषु सज्जनः कोऽपि कायस्थो नेतरौ चतौ ॥

ब्र० पु० कृष्ण० अ० ८५ तथा श० कल्प० द्वि० कां० पृ० ३१

भा० उदर में रहते बिना दांत वाला कायस्थ अपनी माता के मास को खाता है इस कारण उस में कृपा नहीं होती है।

२ इस पृथिवी पर सुनार, स्वर्णवाणिक कायस्थ और ब्रजेश्वर ये पुरुषों में कृपा रहित और धूर्त होते हैं, जिन के हृदयों की कान्ति छुरा की धार के समान है ऐसे कायस्थों का आदर नहीं होता है क्योंकि सैकड़ों कायस्थों में कोई एक आध ही सज्जन होता होगा।

किसी एक विद्वान ने इस कायस्थ जाति को क्षत्रिय वर्ण में भी बतलायी है अतएव इन की विद्या स्थिति व दीर्घदर्शिता को देखने से यह जाति क्षत्रियवर्ण में भी मान ली जाय तो कोई हानि नहीं है, क्योंकि समय द्वेष फैलाने का नहीं है अतएव मंडल इस जाति के साथ सहानुभूति दिखलावे ऐसी ही आशा की जाती है।
जब पुराण व स्मृतियें बनी थीं तब कदाचित कायस्थ जाति ऐसी होगी तो होगी पर आजकल की स्थिती को देखते हुये उपरोक्त प्रमाण अमाननीय हैं और कायस्थ जाति क्षत्रियवर्ण में ही मानी जानी चाहिये।

पाठक! यह सब नमूने मात्र को तथा आप सब के विचारार्थ व हमारी "धर्मव्यवस्था मंडल" के महाविद्वानों के सम्मत्यर्थ बानगी दिखलायी है पर निजकी कुछ सम्मति अभी हमने Reserve स्वाधीन रख कर भारत के प्रसिद्ध २ विद्वानों के मत पर छोड़ा है जैसा कुछ बहुसम्मत्यानुसार भविष्यत में निर्णय होगा अनेकों प्रमाणों के साथ वही विषय हिन्दुजाति वर्णव्यवस्था कल्पद्रुम में लिखा जाकर आप की सेवा कियी जायगी और वहां हमारी सन्मति भी होगी।

प्रायः देखा जाता है कि कायस्थ खत्री, अहीर व कुर्मी आदि २ जातियें जो सर्वोच्चविद्या सम्पन्न व लक्ष्मीवान हैं उन को छोटी जाति नहीं समझना चाहिये क्योंकि लक्ष्मी जी भगवान की स्त्री हैं और यह प्रत्यक्ष है कि मनुष्य भी अपनी स्त्री को इ

एक किसी के घर नहीं भेजकर केवल उस ही के घर भेजता है जिस के साथ उस का बहुत ही हार्दिक पवित्र प्रेम हो अतएव जब भगवान ने इन जातियों के यहां अपनी स्त्री लक्ष्मीजी को भेज कर इन के साथ प्रेम प्रकट किया है तो हम इनके साथ द्वेष क्यों करें ? यह हमारे समझ में तो नहीं आता है। परन्तु क्या करें पुराण व स्मृतियों में बड़े कड़े २ वाक्य इस जाति के विरुद्ध अनेकों मिले हैं उन में से कतिपय यहां लिख कर शेष सप्तखंडी ग्रन्थ में दिखावेंगे उचित यह है कि मंडल इन उपरोक्त जातियों को उच्च वर्ण की उपाधि दें तब ही देश का कल्याण होगा !

१६८ कालबेलिये:—इस जाति का शुद्ध नाम "काल बलि" था जिसका अर्थ ऐसा होता है कि काल को अपने शरीर की बलि देने वाले या काल को अपने सिर पर खिलाने वाले, यहां काल का अर्थ काला सांप, जिसके डसते ही मनुष्य छूमंतर हो कर सदा के लिये इस दुनिया से चला जाता है जिस सांप के देखते ही बड़े २ धीरों के प्राण पखेरू होकर उड़जाते हैं जिस बिच्छू के डंक के भय से रातों कल नहीं पड़ती है जिस गोहिरे के काटने से मनुष्य ही नहीं बल्कि पशु भी पानी नहीं मांगता है उनके पालने वाले उनको अपने वश में रखकर नाद बजाते हुये घूमते फिरते जीविका करने वाली यह हिन्दूजाति है ये लोग राजपुताने में कालबेलिये व युक्तप्रदेश में सपेरे कहाते हैं हाथ की सफाई के उस्ताद व मंत्र तंत्र जड़ी बूटी वाले होते हैं ये लोग पैसा कमाने के लिये गाते बजाते नाचते भी हैं भगवे कपड़े पहिन्ते हैं कानों में मुद्रा रखते हैं गुरू गोरखनाथ जी के सम्प्रदाय में होते हैं इनका कुछ हाल कनफटों व जोगियों से भी सम्बन्ध रखता है शेष विवर्ण ग्रन्थ में लिखेंगे।

१६९ कालू:— यह बंगाल प्रान्त की हिन्दू जाति है तेल निकालना इनका काम है तेल निकालने व बेचने वाले जाति को

युक्तप्रदेश व राजपुताने में तेली कहते हैं पर बंगाल में ये कालू कहाते हैं इस जाति में कोई २ विद्वान भी हैं इनके आचार विचार व रहन सहन का क्रम भी उत्तम है हमारी कलकत्ते की यात्रा में विद्वानों ने इस जाति के प्रति अपने उच्चभाव प्रकट किये हैं किसी ने इन्हें क्षत्रिय वर्ण में बतलाया तो किसी ने वैश्य वर्ण में तो किसी ने सतशूद्र वर्ण में बतलाया है इस जाति के अनेकों भेदों का पता लगाया है इनमें साधू, सेठ आदि २ कुल नाम याने उपाधियें हैं इस जाति में किसी ने २५१ प्रश्नों के उत्तर भेजने का साहस नहीं किया तथापि विशेष रूपसे ग्रन्थ में निर्णय करेंगे।

१७० कालूपन्थी:— यह एक पन्थ के कारण से जाती कही जाती है कालू नामी एक जाति कहार था उसने एक पन्थ चलाया जिसका नाम " कालू पन्थ " हुवा और उसकालूपन्थ में जो हुये वे कालूपन्थी कहाये इस पंथ में प्राय: चमार, सैनी, गड़रिये आदि जातियें सम्मिलित हैं युक्तप्रदेश के अन्य जिलों की अपेक्षा मेरठ के जिले में इनका ज़ोर हैं वहां ये अनुमान ३ लाख से अधिक नहीं है। इस जाति का विवर्ण ग्रन्थ में देखना।

१७१ कावड़ा:— यह बंगालदेशीय बुरा कर्म करने वाली एक Criminal जुल्मी पेशा करने वाली नीच जाति कहीगयी है इनका काम उस प्रान्त में चोरी जारी लूट खसोट आदि करना है परन्तु सम्पूर्ण समुदाय एकसा भी नहीं है इनमें बहुत से लोग खेती आदि करके भी अपना निर्वाह करते हैं जिनका विवर्ण ग्रन्थ में देंगे।

१७२ कास्त :— यह महाराष्ट्रदेशीय कृषी कर्म करने वाली ब्राह्मण जाति का भेद है ये लोग पूना और खानदेश में विशेष रूप से पाये जाते हैं इन का जाति पद अन्य ब्राह्मणों में सामान्य माना जाता हैं इस जाति में विद्या का प्रचार बहुत कम है कहीं २

कोई २ पढ़े लिखे मालदार भी हैं इन का धर्म्म वैश्नव है परन्तु अविद्या के कारण विशेष विचार व विवेक का अभाव है। यह शब्द फार्सी से निकला है फार्सी में "काश्त" खेती को कहते हैं अतएव खेती के करने से "काश्त" से दक्षिणी भाषा में कास्त हो गया ऐसा प्रतीति होता है।

ये अपने को ब्राह्मण वतलाते हैं परन्तु जा० भे० वि० सार में लिखा है कि इन की उत्पत्ति विषय कुछ पता नहीं लगता है ये लोग पूने आदि की ओर रहते हैं पूना में इन के करीब ५०० व ६०० घर हैं वहां ब्राह्मण लोग इन्हे अपनी पंक्ति में नहीं बिठाते हैं तथा इन्हें शूद्र समझते हैं यह जाति बहुत थोड़ी है इसके विषय एक अफसर लिखते हैं कि ब्राह्मण लोग इन्हें जीमने को अपनी पंक्ति में भी नहीं बिठाते हैं और पेशवा की गवर्नमेन्ट की आज्ञानुसार इन्हें दान पुण्य व दक्षिणा लेने का भी अधिकार नहीं है इन के आचार विचार व रीति भांति शूद्रों के तुल्य हैं अतएव अग्निहोत्रादि कर्म करने का भी अधिकार नहीं है इनका स्पर्श अन्य ब्राह्मणों के साथ हो जाने से ब्राह्मण लोग स्पर्श दोष मानते हैं। इन की उत्पत्ति का कहीं पता नहीं लगता है तब ये ब्राह्मण कैसे ? परन्तु हम तो इनका विवर्ण ग्रन्थ में देंगे।

१७३ कासिप :—यह राजपूत जाति का एक उपभेद है काश्यप शुद्ध संस्कृत शब्द का अपभ्रंश रूप है यह जाति समुदाय युक्त प्रदेश में बहुत थोड़ा है शाहजहांपुर व खेड़ी इन दो जिलों में ढाई हजार मनुष्यों से अधिक नहीं है बाकी जिलों में दो दो चार चार व पांच पांच हैं इन के गोत्राधार से ये कश्यपवंशीय क्षत्रिय ठहरते हैं परन्तु साधारण जन समुदाय इन्हें क्षत्रिय नहीं वतलाती है अतएव विवाद का निपटारा वर्णव्यवस्था सभा के परामर्श द्वारा निर्णय किया जाकर विस्तार पूर्वक लेख हिन्दू जाति वर्णव्यवस्था कल्पद्रुम में करेंगे।

१७४ कंजर :—इस जाति का शुद्ध नाम काननचर था जिस

का अर्थ वन में विचरने वाले ऐसा होता है इस जाति को किसी २ विद्वान ने अस्पर्शनीय लिखी है पर किसी २ विद्वान ने इसे क्षत्रिय भी लिख दिया है एक विद्वान ने लिखा है शूद्रवर्ण के बाप व नीच जाति की द्वारा उत्पन्न हुये हैं।

१७५ कंसारी :-- यह तैलंग देशस्थ पंच्चनामवालु सुनार जाति का एक भेद है ये लोग कांसे का काम करते हैं तथा बड़े २ घंटे व घंटियां (Bell) बनाते हैं इस का शब्दार्थ तो यह होता है कि जो कांसे का व्यापार करे वह ही कंसारी कहाता है इनका वर्ण वैश्य बताया गया है शेष ग्रन्थ में लिखेंगे।

१७६ कंसाली :-- यह पंच्चनामवालु नामक तैलंग देशीय सुनार जाती का एक भेद है जो सुनारपने ही का काम करते हैं। तैलंग देशीय कमारी वडरोंगा, कंसारी आदि सुनार व लुहारों की अपेक्षा कंसाली सुनारों की विद्यादशा अच्छी है क्योंकि अन्य ये सब लोग बिलकुल अन पढ़ होते हैं तो ये बड़े २ विद्वान होते हैं शेष सप्तखंडी ग्रन्थ में देखना।

१७७ कत्थक :-- यह एक सामान्य श्रेणी की ब्राह्मण जाति है ये कहीं कथिक व कहीं कत्थक ब्राह्मण कहाते हैं सर्वसाधारण उच्चब्राह्मण व इन ब्राह्मणों में मानमर्य्यादा तथा प्रतिष्ठा में भेद है तथापि ये ब्राह्मण हैं, विशेष सम्मतियें इस जाति के लिये ब्राह्मणत्व की प्राप्त हुयी हैं इनका मुख्य काम राजा, रईस, आदिकों के यहां व मन्दिर आदि स्थानों में भजन राग, रंग आदि करना व सुनाना है ये लोग गौड़ ब्राह्मण समुदाय के अन्तर्गत हैं पर गौड़ ब्राह्मण इन्हें अपने में कहीं २ मानते हैं और कहीं २ नहीं क्योंकि ये लोग गाना वजाना व नाचना भी करते हैं। इनके दो भेद हैं कत्थक गौड़ व कत्थिक मैथिल ये लोग वेश्यावों की लड़कियों को गाने वजाने की तालीम दिया करते हैं ये लोग राजपुताना तथा युक्तप्रदेश के बनारस, बस्ती आजमगढ़, बहराइच, सीतापुर और रायबरेली आदि जिलों में पाये जाते हैं।

इनके सम्बन्ध में जो विवाद है उसे हम विशेष विचार के साथ वर्णव्यवस्था सभा के परामर्श द्वारा बृहद्ग्रन्थ में निर्णय करेंगे और वहां ही बड़े २ प्रमाण भी दिये जावेंगे।

१७८ कपड़िया:— कहीं यह जाति कपड़िया कहीं कपरि-या कहीं खपरिया और कहीं खपड़िया कही जाती है कहीं ये लोग भिक्षावृत्ती करते हैं व कहीं छोटे २ व्यापार याने फिर २ के कपड़े की गांठ व घिसाइती गीरी का सामान लेकर बेचते फिरते हैं इस जाति के २७ भेदों का पता हमने लगाया है कहीं इस जाति को लोग वैश्य मानते हैं तो कहीं छोटी श्रेणी के ब्रा. ह्मण विशेष सम्मतियें इस जाति के लिये वैश्यत्व की मिली हैं परन्तु इस विवादास्पद विषय का निर्णय सप्रमाण अपने सप्तखंडी ग्रन्थ में करेंगे।

१७९ कपोला बनिया :— यह गुजरात प्रदेश के बनियों का एक भेद है उस देश में यह जाति व्यापार में संलग्न है आ-हार व्यवहार भी इनके शुद्ध व सदाचार युक्त हैं विशेष करके इन का धर्म वैश्नव सम्प्रदाय है ये लोग वल्लभाचार्य्य के शिष्य हैं। इस जाति का कुछ समुदाय जैन धर्म्मावलम्बी भी है। इस जाति में पंडिताई व मिश्राई करने वाले ब्राह्मण " कपोला ब्राह्मण" कहाते हैं।

कण्डव ऋषि की आज्ञा से गालव ऋषि सौराष्ट देश में आकर वहां स्वकर्मनिष्ट कुलीन शीलसम्पन्न दयावान ब्राह्मणभक्त ३६ हजार वैश्यों को कण्डवालय याने कण्डवऋषि के आश्रम को ले आया तहां ऋषि ने इन्हें कंडोल क्षेत्र में कंडोल ब्राह्मणों की सेवा के अर्थ स्थापित किये उनमें से ६ हजार वैश्यों का "गालव बनिये " ऐसा नाम प्रसिद्ध होगया और इन्हीं के कपोल याने गल्लस्थल के ऊपर कुंडल सुशोभित थे अतएव इनका नाम "क-पोले बनिया " प्रसिद्ध हुवा यह विवर्ण स्कन्द पुराण के आधार पर लिखा गया है शेष पूर्ण विवर्ण ग्रन्थ में देंगे।

१८० काप;– यह एक बंगाल प्रान्तीय ब्राह्मण जाति का भेद है यह वारीन्द्र समुदाय में का एक भेद है वारि कहिये जल और इन्द्र कहिये इन्द्रदेवता अतएव वारि और इन्द्र इन दोनों के मिलने से ये लोग वारीन्द्र हुये क्योंकि जिस प्रकार से वर्षा इन्द्र भगवान की कृपा से वर्षती है तैसे ही जब २ पूर्वकाल में वर्षा का अभाव होता था ये ब्राह्मण वेद मंत्रों द्वारा वर्षा बरसा दिया करते थे तब से इनको " वारीन्द्र " की पदवी मिली थी तब से ये लोग वारीन्द्र कहाते २ वारेन्द्र व बारेन्द्र कहाने लगे काप ब्राह्मण समुदाय के विषय विद्वानों ने ऐसा लेख किया है कि मधुमोइत्र नामक एक कुलीन ब्राह्मण था इसके कई विवाह हुये थे जैसा कि कुलीनों में हुवा करते हैं इसकी पहिली स्त्री से उत्पन्न हुये लोग काप ब्राह्मण कहाये यह मधुमुइत्रअतरई नदी जो बंगाल स्टेट रेलवे से मीलान करती है उसके किनारे के नए एक गांव का रहने वाला था जैसा कि हम "कुलीन" जाति प्रकरण में दिखला चुके हैं कुलीनों की तरह मधुमुइत्र के भी कई विवाह हुये थे परन्तु उनमें से पहिला विवाह जो हुवा उसके विषय एक अंगरेजी वेत्ता विद्वान ने ऐसा लिखा है कि एक समय एक अकुलीन ब्राह्मण कुलीन सम्प्रदाय में जीमने के निमित्त गया परन्तु वहां उसका अपमान हुवा अतएव उसने कुलीन होने का प्रयत्न किया तदनुसार अपनी कन्या किसी कुलीन को व्याहना निश्चय किया और तदर्थ एक नौका किराये करके अपनी कुमारी कन्या स्त्री और गउ इन तीनों को साथ ले वह नाव द्वारा उसही शहर के किनारे गया जहां मधुमोइत्र कुलीन वारेन्द्र ब्राह्मण रहता था ज्योंही वह नदी के किनारे पहुंचा वहां उस ने मधुमुइत्र नामक कुलीन ब्राह्मण का पता पूछा परन्तु जिस से उस ने पूछा था वह खुद ही मधुमोइत्र नामक ब्राह्मण था जो अति कर्मेष्टि होने क कारण स्नान करके सूर्य्य को अर्घ दे रहा था जब मधु ने स्वीकार किया कि मैं ही मधु हूं कहिये क्या आज्ञा है ? तब वह अकुलीन

ब्राह्मण कहने लगा कि या तो आप हमारी कन्या को ब्याह लें अन्यथा मैं नाव को डुबो कर अपने कुटुम्ब व गऊ सहित मर जाऊंगा इस पर मधु एक दयावान पुरुष था उस ने कई प्राणियों की हत्या से आर्द्रचित होकर हत्या को रोकने की इच्छा से उस कन्या के साथ विवाह कर लिया यद्यपि मधु बहुत बुड्ढा था पर इन तीनों चारों की हत्या का दोष न लगे उसने लाचारन उस के साथ विवाह किया परन्तु यह मधु का कृत्य उस के पुत्रों को बहुत अप्रियकर हुवा और उस ही दिन से वे अपने पिता से अलग हो गये उस वृद्ध मधु का पालन पोषण उस का एक कुलीन जीजा करता था तब पिता क्रोधित होकर अपने पुत्रों को " काप " कहा जिस का अर्थ कर्तव्य विहीन के कहे जाते हैं तब से ये ब्राह्मण " काप " कहाने लगे इन का पद श्रोत्रिय ब्राह्मणों से ऊंचा पर कुलीनों से नीचा है।

इन लोगों ने पिता का पालन पोषण भी त्याग दिया था अतएव ये काप याने कर्तव्य विहीन कहे गये सुने जाते हैं हमारी सम्मति में प्रथम तो इस आख्यायिका की सत्यता में ही सन्देह है क्योंकि उस अंगरेजी वेत्ता ने कहीं का हवाला नहीं दिया है दूसरे यदि यह सत्य भी हो तो मधुमोइत्र ने कुछ बुरा नहीं किया क्यों कि वह दया से आर्द्र होकर ब्राह्मण और गऊ की रक्षार्थ ऐसा किया भी तौ कोई पाप नहीं किया।

क्योंकि धर्मशास्त्र में लिखा है कि:—

ब्राह्मणार्थे वा गवार्थेवा प्राणांत्यक्त्वा परित्यजेत्। मनु०

अर्थात् ब्राह्मण व गऊ के लिये प्राण भी त्यागदें तौ कोई हानि नहीं है अतएव इस आज्ञा के अनुसार मधुमुइत्र ने गऊ, ब्राह्मण, ब्राह्मणी व कुमारी कन्या की हत्यायें रोकने के लिये उस अकुलीन ब्राह्मण की कन्या के साथ विवाह कर लिया तौ कुछ भी बुरा नहीं किया।

दूसरे आपत्ति धर्म्मानुसार भी मधुमुइत्र को उनकी जीवरक्षार्थ ऐसा ही करना चाहिये था क्योंकि:—

आपत्ति काले मर्य्यादा नास्ति

अर्थात् आपत्तिकाल आने पर कुलमर्य्यादा के बंधन में नहीं रहना चाहिये और काप संज्ञा भी नहीं होना चाहिये थी यह ही धर्म्म है अतएव मधुगुहन ने धर्म्म का अंग पालन किया ऐसी दशा में उसके कुलीनत्व में बट्टा नहीं लगना चाहिये और काप संज्ञा भी नहीं होना चाहिये थी अतएव इनको कुलीन ही मानना विचार संगत है ॥

१८१ कापू:- यह एक तैलंग देशीय खेती करने वाली जाति का भेद है इनके जाति पद विषय भिन्न २ सम्मतियें हैं कोई तो इन्हें उच्चशूद्र लिखता है और कोई इन्हें क्षत्रिय लिखता है परन्तु ये लोग खेती के अतिरिक्त फौजों में भी नौकरी करते हैं और शरीर के हृष्ट पुष्ट अच्छे जवान हैं इनमें रीति भांति भी सब क्षत्रियधर्म्मानुसार हैं मांस खाते हैं पर गोमांस को छूते भी नहीं हैं शराब भी पीते हैं इनकी मानमर्य्यादा भी अच्छी है किसी ने इनका वर्ण क्षत्रिय भी बतलाया है पर सत्य क्या है ? यह निर्णय ग्रन्थ में करेंगे ।

१८२ क्यामखानी :- यह जाति राजपूताने में विशेष है यह लोग पहिले चौहाण राजपूत थे फीरोज़शाह तुग़लक के समय जबर्दस्ती मुसलमान कर लिये गये आज सम्वत १९७० में इस जाति को मुसल्मान हुये ५३० वर्ष हुये हैं यह जाति एक समय हिसार तथा आस पास के देश की राज्याधिकारिणी थी यह जाति जोधपुर व जयपुर राज्यान्तर्गत झूंझनू, नारनौल तथा शेखावटी और हिसार में भी है यह जाति नाम मात्र की मुसलमान है क्योंकि इन की चाल ढाल रीति भांति आदि २ सब उच्च क्षत्रियों से मिलती हैं ये नाम को मुसलमान हैं, तो क्या किन्तु इनके खानपान, आचार, विचार, रीति भांति रहन सहन तथा कर्त्तव्य को देखकर कोई स्वप्न में भी इस जाति को मुसल्मान

ख्याल नही करता है क्योंकि मैं भी इन्हीं के देश नारनौल से १८ कोस की दूरी पर प्रागपुरे गांव का हूं और नारनौल से मेरी नातेदारी आदि का बहुत सम्बन्ध है अतएव इस जाति को शुद्ध करने की आवश्यकता है क्योंकि इनमें से कोई इक्का दुक्का ही मुसलमानी भी कराता है अन्यथा हिन्दुवों की परम्परा के अनुकूल चौहाण राजपूत हैं गोमांस का स्पर्श करना भी पाप समझते हैं इनका विशेष विवर्ण हम ग्रन्थ में लिखेंगे ।

१८३ किंगरिया:— यह जाति किंगरीहा भी कहाती है इन में कई भेद हैं यह जाति भिक्षावृत्ती करती रहती है इनके भीख मांगने का ढंग मुंहचोरों का जैसा होता है याने ये भीख लेने के लिये बांह काटने को, कान काटने को; खून निकालने को सिरमें चीरा लगाने को व सिर फोड़ने को तय्यार ही रहते हैं याते इन्हें राजी २ भीख देदी जाय अन्यथा मरने को भी तय्यार हो जाते है ये लोग युक्तप्रदेश के पूर्वी भागों में हैं इनका विशेष विवर्ण ग्रन्थ में लिखेंगे ।

१८४ किनवर:— यह एक युक्तप्रदेशीय जाति है इस जाति के लोग अपने को रघुंवशी क्षत्रिय मानते हैं परन्तु साधारण जन समुदाय की सम्मतियें विरुद्ध पायी जाती हैं इस जाति के २७ भेदों का पता लगा है ये लोग पड़िया; गोरखपुर व गोंडे के जिले में विशेष रूपसे हैं इस जाति के विरुद्ध बहुत से प्रमाण कई विद्वानों ने हमें संग्रह कराये हैं परन्तु हमने अपनी खोज से कई प्रमाण इस जाति के पक्ष में भी एकत्रित किये हैं, हमारी जातियात्रा के अनुसन्धान में एक पंडित ने हम से पूछा कि आप किनवर जाति को किस वर्ण में मानते हैं ? मैंने उत्तर दिया " क्षत्रिय " इस पर उस पंडित महाराज ने मुझे बहुत सी उलटी सुलटी बातें सुनायीं । दूसरे शहर में एक विद्वान ने इस जाति के विरुद्ध एक लेख दिखलाया अतएव इस जाति के पद व क्षत्रियत्व विषयक बड़ा विवाद है इस जाति ने २५१ प्रश्नों के उत्तर भी

यहाँ भेजें इस लिये देखें यह जाति मंडल को क्या क्या सूचनायें व उत्तर देती है तब ही विशेष रूप से निर्णय हम ग्रन्थ में करेंगे वहां ही अपनी सम्मति भी देंगे।

१८५ कीर:- यह एक कहार जाति का उपनाम है कहीं ये धीमर कहींकहार और कहीं कीर कहाते हैं सिंघाड़ा और खरबूजे की खेती करने में यह जाति प्रवीण है इसको लोग कहीं क्षत्रिय, कहीं वैश्य व कहीं शूद्र वर्ण में मानते हैं किसी २ ने इस जाति को वर्ण संकर वर्ण में भी बतलायी है पर Different persons and different opinions याने जितने मुंह उतनी बात " इस लोकोक्ति के आधार पर सन्देह होता है कि इसमें सत्य क्या है! इसका निवटारा धर्मव्यवस्था सभा से परामर्श किया जाकर ग्रन्थ में निर्णय करेंगे।

१८६ किरात:- यह एक क्षत्रिय जाति है इस जाति को ब्राह्मणादि न मिलने के कारण सदुपदेश के अभाव में कर्म भ्रष्ट होगयी ऐसा शास्त्रों में लेख मिलता है इस जाति के ७ भेद हैं इनको कहीं कहीं किरार भी कहते हैं। इस जाति को क्षत्रिय मानने में कुछ विशेष आपत्ति नहीं है कोई कोई विद्वान इस जाति को क्रिया लोप होने से शूद्र के समान समझते हैं पर इसमें इन का दोष नहीं है " आपत्ति काले मर्य्यादा नास्ति " विपत्तिकाल में मर्य्यादा रहे व न रहे कुछ बात नहीं अतएव इस जाति को क्षत्रिय वर्ण में मानना चाहिये शेष वर्णव्यवस्था सभा के विद्वानों के परामर्श किये जाने के पीछे निर्णय किया जायगा।

१८७ किरार- इस जाति के ९ भेदों का पता लगाया है युक्तप्रदेश के अलीगढ़ तथा मैनपुरी में विशेष हैं ये लोग अपनेको क्षत्रिय मानते हैं पर हिन्दू पबलिक इस जाति को क्षत्रिय नहीं मानती है, हमें जहां इस जाति के पक्ष में अनेकों प्रमाण मिले वहां विरुद्ध भी बहुत मिले पर हमारे जनरल नोटिस पर इसजाति

के सिर में जूं तक न रेंगी अन्यथा हमारे ९९१ प्रश्नों के उत्तर व इस जाति की ओर से कुछ विवर्ण आने पर हमें बहुत पहले साथ लिखने का सौभाग्य प्राप्त होता तथापि धर्मव्यवस्था मंडलद्वारा निर्णय कराकर ही हम भी विस्तार पूर्वक लेख करेंगे क्योंकिलोग चाहे जितने द्वेष के साथ इस जाति को छोटी बतलावें व माने पर हमें कई प्रमाण इस जाति की पुष्टता में भी मिले हैं जिससे ये क्षत्रिय हैं विशेष यहां स्थानाभाव से न लिखकर ग्रन्थ में लिखेंगे इनकी वीरता के विषय एक कहावत है:—

जंगल जाट ना छेड़िये हट्टी बीच किरार
भूखा तुर्क न छेड़िये होजाय जी का झाड़

अर्थात किरार लोग ऐसे बहादुर होते हैं कि हट्टी विच छेड़ते ही जान के लागू होजाते हैं अतएव और विवर्ण ग्रन्थ में मिलेगा।

१८८ किरवंत किलवंत— यह दक्षिण प्रान्तस्थ एक ब्राह्मण जाति है कोई इन्हें किलवंत कहते हैं तो कोई इन्हें किरवंत भी कहते हैं यह जाति चितपावन ब्राह्मणों के अन्तर्गत है एक लेखक की सम्मति है कि यह नाम कृमिवंत शुद्ध शब्द से बिगड़ कर किरवंत व किलवंत होगया कृमिवंत का अर्थ है कीड़े वाला अतएव जिनके द्वारा कीड़ों का नाश होता था वे कृमिवंत कहाकर किरवंत व किलवंत प्रसिद्ध होगये ऐसा मतलेखकों का है परन्तु ये सब बातें किसी द्वेषी की मन घड़ंत हैं आजकल इन ब्राह्मण के आचार विचार निन्दनीय नहीं है वरन यह एक प्रतिष्ठित समुदाय माना जाता है एक दूसरे दक्षिणी विद्वान की सम्मति उपरोक्त लेख के विरुद्ध है अतएव सत्य क्या है? इसका निर्णय निज सम्मति सहित विस्तारपूर्वक ग्रन्थ में करेंगे तब तक इस जाति के अगुवावों के यहां से हमारी धर्मव्यवस्था सभा के २५१ प्रश्नों के उत्तर तथा इस अपवाद का समाधान भी मंडल को आजायगा, पाठक तब ही आप विशेष विवर्ण देखेंगे।

१८९ छिकारी:— एक उच्चपदस्थ अंगरेज अफसर ने इन्हें शूद्रों से नीच व चांडाल से ऊप की श्रेणी में लिखा है इनका पेशा छलिया यानी टोकरियां तय्यार करना है ये लोग दक्षिण Tooree tree में तुरी वृक्ष के अनेकों तरह पात्र नाज रखने का बनाते हैं यह लोग करीब २ पेशे के कारण दक्षिण प्रान्तस्थ बरुड़ व राजपूताना के कहार आदि के बराबर माने जा सकते हैं शेष ग्रन्थ में।

१९० किसबिन:—इस का दूसरा नाम कसबिन या किबाई भी है प्रत्येक शहरों की गली कूंचलियों में व अड्डों में यह लोग रहा करती हैं किसबिन कहीं हिन्दु होती हैं और कहीं मुसलमान यह नाम किसब कमाने के कारण से पड़ा है अर्थात् ये नाचती गाती नहीं किन्तु दाम लिये और हराम कराना ही इन का मुख्य काम है प्राय: ये स्त्रियें बिमार रहती हैं और सैकड़ों में दो चार को छोड़ कर सब के गर्म्मी होती है जिस से उन के साथ विषय करने से पुरुषों को भी गर्मी व सुजाक की बिमारी लग जाती है प्राय: ये बड़ी मैली होती हैं इन के घर व वस्त्रों तक में बास आती रहती है परन्तु कामान्ध लोगों को कुछ भी नहीं सूझता है।

१९१ किसान:— इस जाति के ६ भेदों का पता लगाया है कुछ विद्वानो के लेख इस जाति के क्षत्रियत्व विषय मिले हैं पर साधारण जनसमुदाय इस जाति को क्षत्रिय नहीं बतलाता है यह जाति युक्तप्रदेश में मनुष्यगणना के अनुसार चार लाख के करीब है परन्तु इतनी बड़ी जाति में किसी ने भी इस जाति की स्थिती, जातिपद व मान मर्य्यादा सम्बन्धी वर्णव्यवस्था मंडल के २५१ प्रश्नों के उत्तर नहीं दिये निःसन्देह इस जाति की स्थिती सन्देह युक्त है अतएव इस जाति का विवर्ण तथा वर्ण विषयक विवाद का निपटारा २५१ प्रश्नों के उत्तरों को देखकर सभाद्वारा ग्रन्थ में करेंगे।

१६२ कुडालक ब्राह्मण:– यह कोकन देशस्थ ब्राह्मणों में पतित ब्राह्मण हैं इनका मान्य साधारण सा लिखा है।

कुडालकंच पादिकं सहिनागाग्निधं तथा।
रामेण निर्मिता विप्राः स्थिता ग्राम चतुष्टये॥
षटकर्मरहितायेतु राजन्ते भुवनेश्वरः।

अर्थात् श्रीरामचन्द्र जी के नियत किये कुडालक ब्राह्मण ब्रह्मत्व के छहों कर्मों से रहित हैं इसके अतिरिक्त अनेकों बातें इस जाति के विरुद्ध लोगों ने हमें बतलायीं हैं पर सब कुछ विवर्ण निर्णय करके ही ग्रन्थ में लिखेंगे।

१६३ कुण्डगोलक:– यह एक ब्राह्मण जाति का भेद है इनकी उत्पत्ति विषय एक विद्वान लिखते हैं कि जीवित पति की स्त्री ने परपुरुष से व्यभिचार करके पैदा हुयी सन्तान कुण्ड कहायी तथा विधवा ने परपुरुष द्वारा सन्तानोत्पत्ति की वह गोलक कहायी इस जाति को लोगों ने पतित ब्राह्मण बतलाया है परन्तु इस जाति पक्ष में भी प्रमाण संग्रह किये हैं उन सबको वर्णव्यवस्था सभाद्वारा परामर्श करके अपने हिन्दू जाति वर्णव्यवस्था कल्पद्रुम में निर्णय करके लिखेंगे।

परन्तु वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर इस जाति से मिलने बाकी हैं तब ही लिखा जायगा। देखें यह जाति अपनी उत्तमताविषय मंडल को क्या क्या सूचनायें व प्रमाण भेजती है।

१६४ कुनबी:– यह एक खेती करने वाली जाति है मध्यप्रदेश व गुजरात में यह जाति विशेष रूप से हैं कुर्मी, कुणबी, कुनबी और कुम्भी आदि ये नाम सब एकही "कुर्मी" जाति के हैं परन्तु देश भेद के कारण से कोई कुणबी, कोई कुनबी, कुर्मी और कोई कुम्भी बोलते हैं अतएव इसका विवर्ण "कुर्मी" शब्द के सदृश जानना।

१६५ कुनबी गौड़:— वे गौड़ ब्राह्मण जो कुर्मियों के यहां की पाधाई व पुरोहिताई करते हैं वे कुर्म्मी गौड़ व कुनबी गौड़ कहाते हैं ऐसी दूसरे विद्वानों की भी सम्मति है शेष ग्रन्थ में लिखेंगे।

१६६ कुन्डेडा:— इसका दूसरा नाम कुन्डेड़ा भी है यह संस्कृत कुंडकार से बिगड़कर बना है ये एक नाम धन्दे के कारण से पड़ा जान पड़ता है कुंडकार का अर्थ ऐसा होता है कि "यः कुंडं करोतीति स कुंडकारः,, अर्थात् जो कुंड बनाता है वह कुंडकार कहाता है इस जाति के लोगों का कहना है कि ये बैस राजपूत हैं और राजपुताने से भाग कर मिर्जापुर के जिले में जा बसे हैं और कुंड बनाने लगे उन दिनों भारतवर्ष में यज्ञादि का विशेष प्रचार था सो ये लोग कुंड बनाने लगे परन्तु जब मुसलमानों के समय यज्ञादि शुभ कर्म नष्ट होने लगे कुंडों की बिक्री जाती रही तब ये लोग खैर की लकड़ी के हुके व निगाली आदि बनाने लगे हैं। लोगों ने इस जाति का वर्ण शूद्र बतलाया है पर कुछ प्रमाण क्षत्रियत्व के भी मिले हैं अतएव इस जाति का निर्णय सभाद्वारा होकर ग्रन्थ में मिलेगा इसके ५ भेदों का पता लगा है।

कुमार:—यह राजपूताना प्रान्तर्गत जयपुर राज्य की एक जाति है विशेषतया राजपूताना तथा साधारणतया सम्पूर्ण भारत में यह जाति थोड़ी व बहुत सर्वत्र फैली हुयी है देशभेद व देश भाषा के कारण कहीं ये जाति कुमार, कहीं राज कहीं राजकुमार और कहीं २ कुम्हार भी कहाती क्योंकि विद्या के अभाव से शुद्ध शब्द "कुमार" का अपभ्रंशरूप कुम्हार हो गया इस जाति के पुरुषा एक समय भारत राज्याधिकारी थे परन्तु एक विद्वान ने ऐसा लिखा है कि परशुराम जी महाराज के २१ बार पृथिवी निःक्षत्रिय करने तथा मुसलमानी अत्याचारों की भरमार क्षत्रिय जाति पर

होने के कारण यह जातिने अपनी जीव रक्षार्थ कुमार के स्थानमें अपने को कुम्हार कह कर अपने प्राण बचाये थे क्योंकि बहुत कुछ अनुसन्धान करने पर भी इस जाति में कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं मिला जो गधे रखता हो, मिट्टी के बर्तन बनाता हो व अन्य कुम्हारों के से काम करता हो वरन इन में प्रायः लोग शिल्पाचार्य्य ब्राह्मण ऋषि विश्वकर्मा जी की तरह बड़े २ शिल्पकर्म करने वाले हैं कहीं ये लोग बड़े २ प्रासाद याने महल, बंगला तथा विशाल २ कोठियें बनाते हैं कहीं बड़े २ आर्टिस्ट याने दस्तकार हैं, बड़ी २ ड्राइंग करना फोटो ग्राफरी करना व ओवरसियरी इन्जिनियरी करना आदि आदि अनेकों शिल्पकर्म करना इस जाति के बायें हाथ का खेल है। इस जाति का कुछ विवर्ण "अट्टालिका कार" प्रकरण में भी लिखा जा चुका है। ये लोग महल व बड़े २ मकानात बनाने के कारण राज भी पुकारे जाते हैं। और इन की सन्तान राज कुमार कहाती है परन्तु विद्या का अभाव होने के कारण कोई २ लोग इन्हें कुम्हार बतलाते हैं परन्तु यह ठीक नहीं है इस जाति के लोग अनेकों स्थानों में बड़े २ ठेके ले कर ठेकेदार कहाते हैं कहीं ये अन्य व्यापार करते हैं और कहीं खेती करते हैं। अतः खेतेड़ कुमार कहाते कहाते खेतेड़ कुम्हार कहाने लगे जयपुर राज्य में इस जाति के मुख्य कार्य्य कर्तावों को "उस्ता" की पदवियें मिली हुयी हैं तथा जोधपुर राज्य में राज्य की ओर से इस जाति को गज मिलता है जिस से ये गजधर कहाते हैं जो एक प्रतिष्टित चिन्ह है गधेड़ कुम्हार व इन कुमारों में प्रायः सम्बन्ध भी नहीं होते हैं ये खान पान व आचार विचार युक्त हैं यह जाति क्षत्रिय वर्ण में है ऐसे प्रमाण मिलते हैं।

यथाः—अग्नेःपुत्रः कुमारस्तु श्रीमान् शाखणालयः।

तस्य शाखो विशाखश्च नैगमे यश्च पृष्टजः॥

कृत्तिका भ्युपपन्नेश्च कार्त्तिकेय इति स्मृतः।

महाभारते।

पुनः लिखा है:—

कुमार, युवराज और राजकुमार ये पर्य्यायवाची शब्द हैं इन श्लोकोंकी व्याख्या करने से बहुत कुछ लिखने की आवश्यकता होगी। अतएव वह सब उल्लेख्य मंडलके निर्णयान्तर अपने सप्त- खंडी ग्रन्थ में लिखेंगे वहां ही इस जाति के किसी महापुरुष की फोटो व सूक्ष्म जीवनी भी देंगे। इस जाति में यज्ञोपवीत का अभाव है और कई बातों के सुधार की भी आवश्यकता है शेष विवर्ण ग्रन्थ में मिलेगा।

९८कुम्हार:—इस हिन्दू जातिके ८२५ भेदों का पतालगा कर विवर्ण एकत्रित किया है इन में ७७३ भेद हिन्दू कुम्हारोंके व५२ भेद मुसल्मान कुम्हारों के हैं परन्तु ये मुसल्मान कुम्हार विपत्ति- वश नाम मात्र को मुसल्मान हो गये थे पर इन के आचार विचार रहन सहन तथा चाल व्यवहार खान पान हिन्दुओं के से हैं इन्हें दूर न समझ कर अपने भाई बना लेने की आवश्यकता है यह जाति अपने को क्षत्रिय वर्ण में मानती है पर साधारण जन समु- दाय इस जाति को क्षत्रिय नहीं मानता ये लोग अपने को कहीं राजावत, कहीं कुम्भावत कहीं पर राजकुमार कहीं पर क्षत्रिय और कहीं पर ठाकुर मानते हैं पर यह बाद विवादास्पद है क्यों- कि इस विषय के अन्वेषण में समर्थन पक्ष निर्बल व खंडन पक्ष सर्वत्र प्रबल रहा अतएव विपक्षियों ने बड़े २ हेतु भी पेश किये हैं जिन पर लक्ष्य करने से इस जाति को क्षत्रिय मान लेना दुस्तर प्रतीत होता है परन्तु साथ ही में कुछ हेतु इस जाति के पक्ष समर्थन में भी संग्रह हुये हैं अतएव जब तक विशेष निर्णय न हो जाय तब तक हम इस जाति को क्षत्रिय न कहेंगे और न शूद्र ही कहेंगे क्योंकि जो सम्पूर्ण विद्वानों की सम्मति होगी यह ही बहु सम्मत्यानुसार निर्णय होगा।

क्योंकि इन की उत्पत्ति के विषय नाना प्रकार की बातें लोगों ने लिख मारी हैं यथा: एक विद्वान इस जाति का माली बापका

सन् १६०१की मनुष्य गणनामें अनेकों मेमोरियल्स कुर्मियों की ओर से जाने पर भी यह जाति आठवें वर्ग में कूंजड़े, बराई, नाई आदिकों की श्रेणी में लिखी गयी है। यहां केवल दिगदर्शन मात्र दिखलाया है, आगरा फर्रुखाबाद आदि आदि कुर्मियों के प्रसिद्ध शहरों में हमारे नोटिस बटे व अनेकों व्याख्यानादि हुये और हम ने बहुत चाहा कि कुर्मी जाति जो क्षत्रिय होने का दावा करती है यदि वह अपने प्रमाण पेश करती तो हमें बड़ा आनन्द होता पर कुछ प्रमाण न मिले, हम ने अन्य क्षत्रियों से इस जाति के वर्णत्व व उच्चत्व विषयक पूछा तो सबों ने कटुवाक्यों के साथ इस जाति के क्षत्रिय वर्ण होने विषय में निषेध किया। जैसे जैसे विरुद्ध व बुरे प्रमाण हमें इस जाति के सम्बन्ध में मिले हैं उन सब को यहां लिखने से सम्भव है कि इस जाति का जी दुखता अतएव यहां दिग् दर्शन मात्र लिखा है शेष विवर्ण धर्म्म व्यवस्था सभा द्वारा निर्णयान्तर सम्पूर्ण संगृहीत प्रमाण सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे देखें यह जाति उपरोक्त विवादों का क्या क्या समाधान मंडल को भेजती है ? वर्ण व्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों द्वारा इस जाति ने अन्वेषण नहीं कराया है।

भारत वर्ष के जिस किसी विद्वान के पास इस जाति के विरुद्ध व पक्ष में जो जो प्रमाण हों उन्हें कृपया मंडल को लिख भेजेंगे तो उन का नाम धन्यवाद पूर्वक ग्रन्थ में लिखा जायगा।

१९९ कुसाटी
१ डंबारी } ये नट के बराबर होते हैं इन का पेशा नट की तरह कसरत व उछल कूद कर निर्वाह करना है-ये दोनों जातियें दक्षिण में पायी जाती हैं एक विद्वान ने इन्हें शूद्रों से नीच व चांडाल से ऊंच लिखी है पर सच क्या है इस का निर्णय ग्रन्थ में करेंगे।

२०० कुलीन :-यह बंगाल प्रान्तस्थ राढ़ीय ब्राह्मणों की एक जाति का सर्वोच्च भेद है राढ़ीय ब्राह्मणों के मुख्य भेद वंशज, श्रोत्रिय, कष्टश्रोत्रिय सुधाश्रेष्टी और कुलीन हैं इन सब से उच्चपद

उस देश में कुलीनों का माना जाता है जिस का प्रयोग प्राय: विवाह प्रणाली पर विशेष रूप से पड़ता है अर्थात् उस देश में ऐसे नियम हैं कि यदि कोई कुलीन अपनी कन्या किसी वंशज सुधाश्रेष्टी व कष्टाश्रोत्रिय समुदाय में से किसी के लड़के को व्याह दे तो तत्काल उस का कुलीनत्व सदैव के लिये नष्ट हो जाता है परन्तु इस के विपरीति यदि कोई वंशज, श्रोत्रिय, सुधाश्रोत्रिय व कष्टाश्रोत्रिय अपनी कन्या किसी कुलीन को व्याह दे तो वह भी कुलीन संज्ञक हो जाता है अतएव इस उच्चता नीचता के भावों के कारण उपरोक्त सम्पूर्ण प्रकार के राढ़ीय ब्राह्मणों को अपनी २ कन्या के लिये कुलीन सम्प्रदाय के लड़के को ढूंढना पड़ता है अतएव ऐसी दशा में उन्हें कितना घोरकष्ट व कुलीनों को कितना आनन्द मिलता है तथा देश में इस कुप्रथा के कारण कितना अधिक धर्म्म कष्ट उपस्थित हो जाता है इस हृदय विदारक पापमयी कर्तव्य का विवर्ण एक महाराष्ट्रीय भाषा के विद्वान ने अपने ग्रन्थ में इस प्रकार से लिखा है:—

इस कुलीन राढ़ीय ब्राह्मण जाति ने विद्या में एक अनुपम शक्ति प्राप्त किया है क्योंकि मिस्टर डवल्यु सी बेनर्जी अडवोकेट बंगाल हाईकोर्ट व भूतपूर्व प्रेसीडेन्ट नेशनल कांग्रेस, डाक्टर गुरूदास बेनर्जी जज बंगाल हाईकोर्ट, मिस्टर प्रमोदाचरन बेनर्जी जज युक्तप्रदेश हाईकोर्ट मिस्टर प्रतूलचन्द्र चटर्जी जज पंजाब चीफकोर्ट आदि सज्जनगण भी राढ़ीय कुलीन ब्राह्मण हैं भूतपूर्व जस्टिस मिस्टर अनुकूल चन्द्र मुकर्जी भी राढ़िया कुलीन ब्राह्मण थे अतएव ऐसे २ भारत सुपूतों के होते हुये भी यदि कुलीनता अकुलीनता का विवाद न निवटा तो भगवान जाने विचारी बंगालिन कुलीन स्त्रियों की क्या दशा होगी ?

जिन जातियों की लोक संख्या थोड़ी है उस जाति के वर के लिये कन्या के लिये वर का मिलना भी दुस्साध्य हो जाता है इस के सम्बन्ध में कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की दशा पूर्व दर्शाय आये हैं तथापि पाठक वृन्द ! यदि आप बंगाल * प्रान्त पर दृष्टि

* ज्ञा० मे० वि० सा० पृष्ठ ४ से ११७ तक।

डालेंगे तो मालुम होगा कि जाति भेद के कारण वहा क्या २ हो रहा है ? अर्थात् बंगाल प्रान्त में कुछ काल पूर्व एक वलसेन राजा था उस ने वहां के ब्राह्मणों में ब्राह्मण पन के गुणों की कमी पाकर उन के तीन भाग किये कुलीन, श्रोत्रिय और वंशज । जो नम्र, विद्वान, सदगुणी, सुशील व धार्मिक थे उन्हें कुलीन की उपाधि दियी थी, जो माता पिता से पैदा हुये और जिन के दसो संस्कार हुये हैं तथा जिन्हों ने वेद पढ़ा है उन्हें श्रोत्रिय की उपाधि दियी थी और जिन में ये दोनों ही गुण न थे उन्हें वंशज नाम की उपाधि दियी । इस प्रकार से इन विभागों की परंपारा इस जाति में चली और वलसेन राजा ने इन प्रत्येक को मान प्रतिष्टा व अधिकार देने के सम्बन्ध में प्रत्येक की योग्यतानुकूल अपने राज्य में नियम प्रचिलित किये तिन में से कुलीनों को अधिक मान मिला सो आज पर्य्यन्त बंगाल में कुलीन ब्राह्मण उच्च श्रेणी में माने जाते हैं सो यह कुलीन ब्राह्मण अभिमानी होकर अपनी लड़की कुलीन ब्राह्मणों के अतिरिक्त श्रोत्रिय तथा वंशज ब्राह्मणों को नहीं देते परन्तु वहुत सा धन लेकर वंशज तथा श्रोत्रिय ब्राह्मणों की लड़की ले लेते हैं और इन ब्राह्मणों को विवश वहुत सा धन कुलीनों को देना पड़ता है क्योंकि वंशज व श्रोत्रिय ब्राह्मण अपनी लड़की कुलीन ब्राह्मणों को देने में अपनी प्रशंसा समझते हैं और उनका यह भी विचार है कि " कुलीन के यहां लड़की जाने से उस से जो सन्तान होगी वह भी " कुलीन " ही कहावेगी । अतएव कुलीन लड़के के लिये स्त्रियों की यहां तक वहुतायत होती है कि जो विचार व कथन से वाहिर प्रतीत होती है अर्थात् कभी २ यहां तक होता है कि जहां कोई कुलीन स्त्री गर्भवती हुयी कि वंशज व श्रोत्रिय वंश वाले पूर्व से ही यह ठहराव कर लेते हैं कि "यदि ईश्वर की कृपा से तुम्हारे लड़का हो जाय तो हमारी लड़की के साथ पाणिग्रहण करना होगा " यह पृथा कहीं इस देश में भी है कि गर्भवती स्त्रियें प्रसव से पूर्व ही ऐसी प्रतिज्ञा परस्पर करलेती हैं कि

तुम्हारे हमारे उत्पन्न होने वाले लड़के लड़कियों का सम्बन्ध पक्का होगया है इस ही तरह श्रोत्रिय व वंशज लोग अपनी लड़कियें आग्रहपूर्वक कुलीनों को देते हैं अतएव एक कुलीन एक एक पुरुष पचीस पचास से सौ सौ तक स्त्रियें कर लेते हैं और इस तरह से अपने प्रत्येक श्वसुराल से वरदक्षिणा में बहुत धन व सामान लेते हैं और तिससे बड़े मालदार हो जाते हैं वे विवाहिता लड़कियें प्रायः अपने पिहर में ही रहती हैं जिस किसी पर वरका विशेष प्रेम हुवा व जिस श्वसुराल से समय २ पर इच्छित सत्कार होता रहता है उन्हीं लड़कियों को पति के घर विशेष रहने का अवकाश मिलता है अन्यथा सौ २ स्त्रियें होने की दशा में उन्हें अपनी आयु का विशेष भाग अपने पिता के घर ही काटना पड़ता है। वर समय पर पारी २ से इच्छानुकूल अपनी अपनी प्रत्येक श्वसुराल में दौरा किया करते हैं और इस तरह से अपनी श्वसुरालों से माल ताल लाकर खूब सुख चैन के साथ जीवन व्यतीत करते हैं और यह उनके लिये आजीविका का एक अच्छा उपाय निकल आता है जिसका प्रतिफल यह होता है कुलीन ब्राह्मणों की सन्तान आलसी विद्या हीन विशेष देखी गयी है यह जात्याभिमान की दशा है।

इस के अतिरिक्त उन एक २ पति के साथ सौ २ व पचास २ विवाहिता स्त्रियों में से अनेकों की यह दशा होती है कि विचारियों को अपने जन्म भर में एक दो बार ही अपने पति के साथ संभोग करने का सुअवसर प्राप्त होता है और तब तक उन्हें यह तक भी मालूम नहीं रहती है कि " उन का पति कौनसा व कितना बड़ा तथा कैसी सूरत का है ? क्योंकि बहुत ही छोटी २ अवस्था में गुड्डे गुड़ियों की तरह विवाह होकर वर अपने घर व वधू अपने पिता के घर रहते हैं केवल इस तरह उस कन्या का पाणिग्रहण मात्र हो कर सदैव के लिये उस का कुंआरपन उतर जाता है। परन्तु जब कभी कन्या के सौभाग्य वश पति जी

अपनी श्वसुराल पधारते हैं तब उस पत्नी की सहेली व बड़ी बूढ़ी कोई स्त्री उस को बतला देती हैं कि "आज जो अमुक अतिथि अपने यहां आये हैं वे तुम्हारे पति हैं" तब वह पत्नी अपने पति को पहिचानती है इस तरह वह पति दो चार दस दिन अपनी इच्छानुकूल श्वसुराल में रहकर दूसरी श्वसुराल को चला जाता है तब वह फिर सात आठ वर्ष तक की निश्चिन्तताई हुयी है तिस का फल यह होता है कि वह स्त्री पति के साथ किञ्चित काल के सहवास व दीर्घ काल के पश्चात सम्मेलन से पति को भूल तक जाती है और इसही तरह पति अपनी स्त्री को भी भूल जाता है यह सब दुर्दशा भारत को ग़ारत करने वाली जाति-बंधन के कारण ही से है।

यह ही नहीं परन्तु जिस समय कोई कुलीन ब्राह्मण मर जाता है तौ उस समय जितनी स्त्रियें उसके थीं वे सबकी सब एकदम विधवा हो जाती हैं तिस पर भी तुर्रा यह है कि इस देश में पुनर्विवाह की रीति न होने के कारण उन विचारियों को आयु भर महानदुःख भोगना पड़ता है। इस तरह अगणित तरुण स्त्रियों को वैधव्य दुःख भोगना पड़ता है। तिनमें जितेन्द्रिय धर्मात्मा पतिव्रता बहुत कम स्त्रियें निकलती हैं परन्तु व्यभिचार, बालहत्या आदि अनाचार करने वाली स्त्रियों की संख्या बहुत होती हैं। इस प्रकार की स्त्रियों को जब अपने देश व जाति में स्वतंत्रता प्राप्त नहीं होती है तौ अपना सर्वस्व लेकर मथुरा वृन्दावन काशी आदि स्थानों में अपनी दुरइच्छायें पूरी करने के लिये आविराजती हैं व अपने को गोपी व दूसरे पुरुष को कृष्ण मानकर कृष्णलीला करती रहती हैं और इसको वहां कोई बुरा भी नहीं समझता है यदि वहां की पुलिस रिपोर्ट देखी जाय तो विदित हो जायगा कि ऐसे मामलों के Cases केसेज़ प्रत्येक महिने में वहां कितने होते हैं? जो लोग मथुरा वृन्दावन गये होंगे उन्होंने देखा होगा कि वहां बंगालिन विधवाओं की कितनी बहुतायत है शेष ग्रन्थ में

२०१ कुर्वा :—यह एक युक्त प्रदेश की जाति है मिर्जापुर के जिले में विशेपरूप से है मिस्टर क्रुक साहब ने इस जाति को सब से छोटी और Misorable पीड़ित वतलाया है युक्तप्रदेश की मनुष्यगणना रिपोर्ट के अध्यक्ष ने इस जाति को १२ वें दरजे में लिखा है जहां भंगी चमार आदि जातियें लिखी हैं क्योंकि ये लोग गौ मांस तथा कीड़े मकोड़े खाते हुये सुने गये हैं अतएव लोग इन्हें अस्पर्शनीय मानते हैं इन की आवादी युक्तप्रदेश में ६१७ है जिस में २३८ पुरुप और ३७९ स्त्रियें हैं पुरुपों से अधिक स्त्रियें होने का गौरव इस ही जाति को है।

२०२ कुरुमार :—दक्षिण में ये कुरुमार तथा राजपुताना युक्तप्रदेश में सिकलीगर कहाते हैं दक्षिण देशीय कुरुमार जाति का पद छोटा है एक विद्वान ने इस जाति को शूद्रों से भी नीच व चांडाल से ऊंच की सूची में लिखा है परन्तु युक्तप्रदेश व राजपुताने में ऐसा नहीं माना जाता इनका काम चाकू, कैंची, छरी, तलवार आदि आदि अस्त्र सस्त्रों पर धार चढ़ाना व सान चढ़ाना है ये लोग अपने को क्षत्रिय वतलाते हैं पर सत्य क्या है ? इस का निपटारा ग्रन्थ में निर्णय करके लिखेंगे।

२०३ कुरुवार :—यह एक युक्तप्रदेशीय वैश्य जाति है एटा, वरेली, वदायूं, सीतापुर और मुरादावाद आदि जिलों में विशेष रूप से है यह जाति वदायूं के जिले में विशेप है इस जाति के जाति पद व जाति स्थिती के विपय विद्वानों ने हमें बड़ी घृणित व नीचत्व प्रकाश करने वाली वातें वतलायी हैं उन सव को अभी हम ने प्रकाशित करना उचित नहीं जान कर गुप्त रक्खी हैं क्योंकि इस जाति का विवर्ण सुनी सुनायी वातों पर खोलना नहीं चाहते इस जाति ने २५१ प्रश्नों के उत्तर भी नहीं दिये तथापि प्रश्नों के उत्तर ले कर तथा वर्णव्यवस्था सभा द्वारा निश्चय करके

ही वर्ण व्यवस्था विषयक पूर्ण व विस्तृत विवर्ण अपने बड़े ग्रन्थ में लिखेंगे। एक विद्वान की सम्मति है कि यह जाति प्रायः अपने जाति नियम व धार्मिक नियमों को तोड़कर कार्य्य क्रिया करती थी अतएव इन को लोग अपनी बोली में " कारवाहिर " कहते कहवाते थे यह जाति कहीं करवार कहीं कुरुवार व कहीं कुरुवार कही जाने लगी कदाचित यह सत्य हो या न हो पर कार वाहिर का अर्थ नियम विरुद्ध काम करने वाले के हैं अतएव देखें यह जाति वर्णव्यवस्था सभा के २५१ प्रश्नों के क्या उत्तर देती दिखाती है तब ही हम अपनी निज की सम्मति भी लिखेंगे क्योंकि किसी भी जाति के विरुद्ध लेखनीय उठा कर उसे हानि पहुंचाना हमारा कर्तव्य नहीं है।

२०४ नीच कुशाती } **शुशोर** इन का काम रेशम कातना व तय्यार करना है परन्तु ये कुशाती मोमिन से नहीं पहिचानी जाती है अर्थात् वे विशेष रूप से नहीं हैं यह दक्षिण प्रान्तीय जाति है। विवर्ण ग्रन्थ में लिखेंगे।

२०५ कूका:— यह एक नानकपंथी सम्प्रदाय का नाम है ये लोग सफेद कपड़े पहिन्ते हैं झूठ भी कम बोलते हैं दिनमें तीनवार स्नान करते हैं ऊन व सूत की माला रखते हैं जब इनकी मजलिस होती है तब गुरू नानक के शब्द पढ़कर लम्बी आवाज से कूकू पुकारते हैं जिससे इनका नाम कूका हुवा ये सब घरबारी हैं इनका विवाह सिक्ख धर्मानुसार होता है इनकी रीति भांति सब सिक्खों की सी हैं इनका आदि गुरू इनकी सम्प्रदाय का आचार्य्य एक रामसिंह खाती था इस जाति ने पटियाले और मालयर कोटले की रियासतों में दंगा फिसाद मचाया था अतएव सरकार अंग्रेज के हुकुम से कूकों के गुरू रामसिंह खाती को काले पानी की

सजा हुयी थी जहां वह सम्वत १६३० में मरगया कूकों का गुरुद्वारा गांव तहणी इलाके लुधियाने प्रान्त पंजाब में है यह एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक विद्वान की सम्मति है हम निज सम्मति विवर्ण ग्रन्थ में लिखेंगे।

२०६ कूंजड़ा :— यह एक हिन्दू जाति समुदाय है यह एक हिन्दू जाति है यह न समझना कि यह एक मुसलमान ही जाती है ये लोग पहिले राजपूत थे अजमेर की लड़ाई में क्षत्रिय पराजय और मीरा साहब की विजय हुयी इस से मीरा साहब ने उन लड़ने वाले वीरों के हाथों में वेड़ी जड़दी तब वे लोग कहने लगे " हुजूर हमें क्यों जड़ा, हुजूर हमें क्यों जड़ा " बस ये धुन उन्हें सवार होगयी और बादशाह ने इन्हें मुसलमान होने को कह कर छोड़ दिया तब जो उस वक्त क्षत्रिय मुसलमान हो गये वे साग तरकारी फलफलेरी मेवा आदि वेचने का व्योपार करने लगे परन्तु कुछ क्षत्रिय मुसलमान न होकर इधर उधर भाग छूटे और युक्तप्रदेश में वड़े २ सौदे व व्यापार करने लगे जो आजतक अपने क्षत्रियत्व को लिये हुये हैं इनका विशेष निवर्ण ग्रन्थ में लिखेंगे।

२०७ कूटा :— यह एक पेशे के कारण से नाम पड़ा है युक्तप्रदेश के बिजनौर मुरादाबाद गोरखपुर, वहराइच आदि जिलों में ये लोग चावलों के धान को कूटकर चावल निकालते हैं इसही लिये ये कूटा व कूटा माली भी कहाते हैं युक्तप्रदेश में इन की संख्या पांच हजार से अधिक नहीं है इस जाति का मुख्य काम चावल व धान में मजदूरी करना है इस जाति के कोई लोग कहीं हमसे नहीं मिले इनकी जाति स्थिती व वर्ण स्थिती लोगों ने बहुत छोटी बतलायी है पर ये लोग अपने को क्षत्रिय वर्णों में बतलाते हैं इस जाति के यहां की स्थिती बहुत ही गिरी हुयी है अतएव प्रश्नों के उत्तर

भी नहीं आये हैं इसका निर्णय हिन्दू जाति वर्णव्यवस्थाकल्पद्रुम में ही किया जायगा ।

२०८ कृश्नोरा :— यह गुजरात देश के नागर ब्राह्मणों का एक भेद है ये कृश्नपुरे भी कहाते हैं पूर्वकाल में ये त्रैविद्या के ज्ञाता विद्वान होते थे अब नाम मात्र को ऋगवेदी यजुर्वेदी और सामवेदी रह गये हैं इन में एक समुदाय भिक्षुक कहाता है ये बड़े नगेर ब्राह्मण समुदाय में हैं इन के विषय जहां हमें उत्तम व उच्च सम्मतियें मिली तहां निकृष्ट भी बहुत मिली अतएव यहां अपनी ओर से कुछ न कह कर २५१ प्रश्नों के उत्तर ले कर ग्रन्थ में निपटारा करेंगे।

२०९ केवट :— देश भाषा व देश भेद के कारण यह जाति कहीं केवट, कहीं कैवर्त, कहीं खेवट, कहीं मल्लाह, कहीं धीमर, कहीं धीवर, कहीं कहार, कहीं महरा और कहीं कीर आदि २ ये सब नाम नाव खेने के पेशा के कारण विद्वानों ने लिखे हैं पर यह ठीक नहीं, दक्षिण में इस जाति को किवस्त कहते हैं किसी विद्वान ने इस की उत्पत्ति भिन्नवर्णस्थ दो भिन्न स्त्री पुरुषों के संयोग से लिखी है इस ही के आधार पर एक विद्वान ने इस जाति को संकर वर्ण माना है कोई इस जाति को सुनार की सन्तान, और कोई इस जाति को क्षत्रिय की सन्तान बतलाते हैं परन्तु ये सब परस्पर विरुद्ध सम्मतियें हैं अतएव ऐसी दशा में हम इस जाति को क्षत्रिय, वैश्य, व शूद्र तथा संकर किसी भी वर्ण में नहीं ठहरावेंगे वरन इस जाति के विषय २५१ प्रश्नों द्वारा निर्णय करा कर ही विस्तार पूर्वक विवर्ण देंगे ।

हमारे भ्रमण में इस जाति का कोई मनुष्य हम से न मिला अतएव वर्ण व्यवस्था कमीशन के निर्धारित दो सौ इकावन प्रश्नों का उत्तर इस जाति से आना चाहिये यह जाति वह हा

है जिस की कथा रामायण में है अर्थात् श्री रामचन्द्र जी का भक्त केवट था जिस की नाव में बैठकर श्रीरामचन्द्र जी पार जाने वाले थे तब केवट बोला कि:—

जोप्रभुअवशिपारगाचहहू,मोहिंपदपद्मपखारकहहू।

हे प्रभु: यदि आप पार जाना चाहते हैं तो मुझे आप के चरण धो लेने दो। श्रीरामचन्द्र जी की केवट जाति भक्त है अतएव इस जाति को उच्च पद मिलना चाहिये इन की विशेष कथा रामायण में है हम भी विशेष विवर्ण सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे।

२१० कैकलर :— यह एक दक्षिण प्रान्तर्गत द्रविड़ देश की एक हिन्दु जुलाहा जाति का नाम है जो सूती कपड़ा बुनती है इस जाति में मद्य पीने का बड़ा प्रचार है इस जाति का एक भेद सालियार भी है जो यज्ञोपवीत पहिनते हैं इस जाति के पाधा शूद्र याजक ब्राह्मण होते हैं इस जाति में विद्या का बड़ा भारी अभाव है परन्तु यह सम्मति एक विद्वान के ग्रन्थ की है हम ने भी इस जाति के विषय खोज किया तो इस जाति के पक्ष में भी कुछ सम्मतियें मिलीं जिस से इन का उच्चत्व प्रमाणित हो सकता है पर ये दोनों ही प्रकार की बातें सन्देह जनक हैं अतएव इन का निर्णय विद्वानों के परामर्श द्वारा ग्रन्थ में करेंगे।

२११ कोकनस्थ ब्राह्मण :— यह एक ब्राह्मण जाति का भेद है दक्षिण देश में भड़ोंच शहर के उत्तर से लेकर रत्नागिरी तक के भाग को कोकन व कंकन देश कहते हैं उस देश के दक्षिणी ब्राह्मण कोकनस्थ ब्राह्मण कहाते हैं इस कोकन देश की लम्बाई चौड़ाई शास्त्रों में चार सौ कोस की लिखी है इन के प्रति एक विद्वान ने लिखा है कि अभार ब्राह्मण, काकन ब्राह्मण, यवन ब्राह्मण, हुसैनी ब्राह्मण और नाटा ब्राह्मण ये यद्यपि शिव सरीखे भी हों तौ भी श्राद्ध विवाहादि उत्तम कर्म्मों में इन को न बुलावे पर

यह किसी द्रोही का लेख है अतएव वर्ण व्यवस्था मंडल से परामर्श करके अपने हिन्दू जाति वर्ण व्यवस्था कल्पद्रुम नामक ग्रन्थ में विस्तार पूर्वक विवर्ण दे कर सच झूठ का निर्णय करेंगे ।

२१२ कोच :- यह एक युक्तप्रदेशीय जाति है किसी २ विद्वान ने इसकी आजकल की साधारण सी स्थिती देखकर इस जाति को एक बहुत छोटी जातियों में लिखी है यह जाति अपनी स्थिती से शून्य है हमारे भ्रमण में इस जाति के लोग हमसे कहीं मिले पर हमारे पूछने पर वे यह भी न बतला सके कि वे अपने को किस वर्ण में समझते हैं ? एक विद्वान की यह सम्मति है कि तीवर जाति के पुरुष का किसी कसाइन से संग हो कर यह कोच नाम प्रसिद्ध हुवा परन्तु असल में यह कहां तक सच है व कहां तक झूठ है ? तथा यह जाति किसी उच्चवर्ण में हो सकती है या नहीं यह विवर्ण २५१ प्रश्नों के उत्तर आने व धर्मव्यवस्था द्वारा परामर्श करके अन्य २ जातियों के विस्तारपूर्वक विवर्ण के साथ २ इस जाति का भी निर्णय करेंगे ।

२१३ कोचेड़:- यह खोचड़ शब्द का विगड़ा हुवा रूप है पंजाब में खत्री जाति का एक उपभेद है इस का विवर्ण खत्री जाति के अन्तर्गत मिलेगा ।

२१४ कोचर:- यह ओसवाल जाति का एक भेद याने वंक है अर्थात् एक कुलका कुल नाम " कोचर " है यह नाम पड़ने का कारण यह है कि इस कुल के आदि पुरुष जन्म समय " कोचर " कोचरी जिसे उल्लू चिड़िया भी कहते हैं वह बोलता था अतएव तब से लोगों ने इनका नाम हँसी हँसी में कोचर प्रसिद्ध किया और समय पाकर यह नाम पुराना पड़नें से जियादा प्रसिद्ध होगया और कहीं कोचर तथा कहीं कोचड़ कहाया जाने लगा ।

२१५ कोठारी:— यह भी एक ओसवाल जाति के वंश का कुल नाम है धाड़ी वालों में सबलदास नामक एक राजा कोठारी हुवा था तब से उसके वंश की वृद्धि होने से वह वंश कोठारी करके प्रसिद्ध हुवा।

२१६ कोड़ा:— यह युक्तप्रदेश की एक जाति है शोरा बनाना व नमक का काम करना इस जाति का मुख्य धन्धा है यह जाति वैश्य बतलायी जाती है परन्तु हम अपने सङ्गृहीत प्रमाण सहित ग्रन्थ में निर्णय करेंगे।

२१७ कोतवारे:— यह कोतवाल का अपभ्रंश रूप मालुम होता है युक्तप्रदेश में यह जाति केवल मिर्जापुर के जिले में है यह तो पेशे के कारण नाम पड़ा जान पड़ता है कदाचित कोत-वाल का ही विगड़कर कोतवार होगया होगा यह एक बड़ा भारी कुल कहा जा सकता है क्योंकि इसकी लोक संख्या अनुमान सौ मनुष्यों के ही है मध्यप्रदेश में कोतवार एक गोंडों का भेद भी है। विशेप ग्रन्थ में लिखेंगे।

२१८ कोमाठी:— यह एक गुजरात देश की जाति है व्यापार द्वारा आजीविका करती है इसकी स्थिती व जाति पद उत्तम है यह गुजरात प्रदेशान्तर्गत तैलंग देश में विशेपरूप से पायी जाती है प्राय: दक्षिण देश में यह जाति हलवायीगीरी का काम भी करती है इस जाति के हाथ की पक्की रसोई व जलपान वहां सब कोई करते हैं इसका वर्ण वैश्य है इनका व्यवहार शुद्ध व पवित्र है परन्तु साधारण जन समुदाय इस जाति के वर्ण विषय विवाद रखती है परन्तु हम तो शेप ग्रन्थ में निर्णय करेंगे।

२१९ कोइरी:— यह युक्तप्रदेश तथा बिहार की कृषी करने

वाली प्रसिद्ध जाति है यह अपने को क्षत्रिय वंश में मानती है परन्तु प्रायः हिन्दू समुदाय की सम्मतियें विशेष रूप से बाधक व साधारण रूप से पोषक मिली परन्तु विरुद्ध किसी ने कोई पुष्ट प्रमाण हमारे सन्मुख पेश नहीं किये अतएव इस जाति विषयक विरुद्ध पक्ष विचार कोटी योग्य है एक प्रसिद्ध विद्वान ने "कृषी कर्म्मी,, का बिगड़ा हुआ रूप कोइरी लिखा है परन्तु ऐसा उस सिविलियन अंगरेज अफसर का लेख माननीय नहीं है क्यों कि "कृषीकर्म्मी व "कोइरी" इन दोनों शब्दों में पृथिवी आकाश का सा भेद है अतएव यह अटकल पंजू सिद्धान्त माननीय नहीं हो सकता. एक दूसरे विद्वान ने लिखा है कि "कुर" नाम के एक ऋषि हुये हैं जिनके वंश का नाम "कुरी" प्रसिद्ध हुआ था वह ही "कुरी" शब्द भाषा में "कोइरी" होगया। एक तीसरे विद्वान का ऐसा मत है कि "कुरु" की सन्तान कुरी कहाते २ भाषा में कोइरी कहाने लगी, एक चौथे विद्वान की ऐसी सम्मति है कि यह कोइरी जाति "कछवाहा,, प्रसिद्ध क्षत्रिय कुल में से है; एक पांचवें विद्वान की ऐसी सम्मति है कि काछी मुराव और कोइरी ये सब एक ही इक्ष्वाकु प्रसिद्ध क्षत्रिय वंश की अलग २ नाम वाली अलग अलग शाखायें हैं। एक छठवें विद्वान ने लिखा है कि यह जाति प्राचीन काल की पवित्र आर्य जाति में से है। इन के सम्बन्ध में कुछ विवर्ण काछी जाति के साथ भी लिखा जाचुका है तहां देख लेना चाहिये।

इस जाति में कुलभेद तो देशभेद व निवास तथा निकास के कारण से हैं तथा :—

१ इलाहाबादी	६ सरवरिया
२ बृजवासी	७ कन्नौजिया
३ पूरबिया	८ बनारसिया
४ दखनाहा	९ मिर्जापुरिया
५ मघविहा } मघहिया }	१० अजुध्याबासी
	११ आजमगढ़िया—आदि२

कुछ भेद कारण विशेष से हैं यथा —

१ नाराइगन २ तोरी कोड़िया, ३ हरदिया, ४ शाक्तिया ५ भक्तिया ६ वरदवार आदि आदि—

कुछ भेद प्रचलित क्षत्रिय वंशों में से भी हैं यथाः—

१ कछवाहा २ वैसिया ३ राठौड़ ४ जैसवार और ५ सूर्य्य वंशी आदि आदि—

कहां तक लिखें हैं इस जाति के १४० भेदों का पता लगाया है उन का सब विवर्ण लिखनेसे ग्रन्थ बढ़ता देखकर रुकना पड़ा है।

इस जाति के आचार विचार व रीति भांति को देखकर एक अंग्रेज कलेक्टर साहब ने लिखा है किः—

They maintain a fairly high Standard Social Purity.

अर्थात् कोइरी जाति अपने आचार विचार के कारण से सामाजिक पद उच्च श्रेणी का रखती है।

हमारी "जाति यात्रा" के भ्रमण में हमें विश्वासनीय द्वार से निश्चय हुवा है कि यह जाति क्षत्रिय वंश में भी होते हुये स्वजाति सेवा में कुरीति निवारणार्थ भी लगी हुयी है इस जाति की दो सभायें हैं एक दानापुर में जिस के प्रधान मान्यवर बाबू सहदेव लाल जी हैं तथा दूसरी सभा चुनार में है जिस के मुख्य कार्य्य कर्ता बाबू माताप्रसाद जी आनरेरी मजिस्ट्रेट बनारस हैं ये दोनों महाशय प्रायः कोयरी जाति के हित साधन में तत्पर हैं। जिस प्रकार अग्रवाल वैश्य जाति का उपकार रायबहादुर रिटायर्ड जज बाबू बैजनाथ जी से हुवा है वैसे ही आप दोनों सज्जन भी कोइरी हित चिन्ता में लगे हैं।

इस जाति ने वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नोंद्वारा अन्वेषण नहीं कराया है अतएव इनके सम्बन्ध के विरुद्ध व समर्थन पक्ष के संगृहीत विवर्ण को मंडल की हिन्दू सार्वभौम प्रवन्धकर्तृ सभा तथा धर्मव्यवस्था सभा में रखकर ही मंडल के निर्णयान्तर इस जाति का विशेष विवर्ण सप्तखंडी ग्रन्थ हिन्दू जाति वर्णव्य-

वस्था कल्पद्रुम में निज सम्मति सहित लिखेंगे तहां ही किसी महानुभावी कोयरी सज्जन का फोटो व उनकी सूक्ष्म जीवनी भी देंगे।

२२० कोरवा:— यह द्रविड़देशीय एक जाति है युक्तप्रदेश में भी आ बसी है एक विद्वान का कहना है कि सूर्य वंशी क्षत्रिय कुरु की सन्तान कौरव प्रसिद्ध हुयी कदाचित् ऐसा हो यह जाति विशेषरूप से वन व पहाड़ों में रहती है एक दूसरे विद्वान की यह भी सम्मति है कि कोल की सन्तान कोलव कहायी और कोलव कहाते २ कोरव व कोरवा कहाने लग गयी यह लोग काले रंग के तथा बनैले होते हैं प्राय: नंगे रहते हैं ये तीर कमान को काम लाते हैं अपने गुप्ताङ्ग को ढकने के लिये कोई रुमाल व छोटी सी धोती चौतरफ लपट लेते हैं शेष ग्रन्थ में देखना।

२२१ कोरी:— यह कपड़े बुनने वाली जाति है इसके छोटे मोटे सब १०४० भेदों का पता लगा है इस जाति के वर्ण के विषय में अभी कुछ नहीं कहेंगे क्योंकि यहां मैदान नहीं है। ये लोग अपनी उत्पत्ति कुंवारी कन्या से मानते हैं निर्गुण ब्रह्म के आशीर्वाद से पैदा हुयी है ये अपने को क्षत्रिय मानते हैं हमभी निज सम्मति ग्रन्थ में देंगे।

२२२ कोल:— इस जाति के ७८५ भेद हैं ये प्राय: कोल भिल्ल कहाते हैं इनके भेद उपभेद क्षत्रियों से मिलते जुलते से हैं इस लिये यह जाति अपने को क्षत्रिय होने का दावा करती है दो एक अंग्रेज विद्वानों ने इस जाति को सूवरमार लिखा है, किसी ने इस जाति को नाव चलाने वालों कहारों व मल्लाहों के बराबर मानी है ये लोग अपने को सूर्यवंशी क्षत्रिय मानते हैं पर किसी विद्वान ने इस जाति को नीचवृत्ति करने वाली लिखी है उसही के आधार पर लोग इस जाति को नीच जाति समझते हैं सत्य क्या

है इस का हम को भी सन्देह है जिसप्रकार अन्य जाति वालों ने लिखा पढ़ी करके मंडल को अपनी २ जाति विषयक उत्तम प्रमाण भेजे तैसे इस जाति के यहां से किसी एक ने भी ऐसा नहीं किया जैसे अन्यसैकड़ों जातियों के उत्तम व मध्यम प्रमाण हमारे पास संग्रह हैं तैसे इस जाति के भी हैं इस जाति की विद्या स्थिती उत्तम नहीं है इसही से वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों का उत्तर देने दिलाने का भी किसी ने उद्योग नहीं किया अतएव अपने संग्रह किये हुये अच्छे व बुरे प्रमाणों के आधार पर तथा धर्म व्यवस्था सभा के विद्वानों से परामर्श करके ही विस्तार पूर्वक इस जाति का निर्णय हिन्दूजाति वर्ण व्यवस्था कल्पद्रुम ग्रन्थ में करेंगे ।

२२३ कोलटा:—यह मध्यप्रदेश की खेती करने वाली जातियों में से एक मुख्य जाति है यह मध्यप्रदेशान्तर्गत संभलपुर के जिले में विशेषतया निवास करती है उस प्रान्त में इस जाति की स्थिती अच्छी है । वर्ण के सम्बन्ध में यह जाति उत्तम वर्ण मानी जाती है ये अपने को क्षत्रिय वर्ण मानतेहैं पर साधारण जनसमुदाय में मतभेद है तिस का निर्णय ग्रन्थ में करेंगे ।

२२४ कोलाटी:— विद्वानों की सम्मति ऐसी है कि यह एक दक्षिण देशीय जाति है ये लोग फिरते रहते हैं और अपने साथ अपनी तरुण स्त्रियों को लेकर जगह २ उनकी कसरत दिखाते फिरते हैं और उस ही से आजीविका करते हैं राजपुताना में यह धंदा नट जाति करती है अर्थात नटनियें बड़ी २ कसरतें आम लोगों को दिखलाकर रुपैया कमाती रहती हैं तथा व्यभिचार भी कराती रहती हैं विशेष विवर्ण ग्रन्थ में लिखेंगे तहां ही निज सम्मीत भी देंगे ।

२२५ कोलटा :—यह आसाम व छुटिया नागपुर की एक

विद्या सम्पन्न जाति है जैसे कायस्थ युक्तप्रदेश व बंगाल में ये लोग अपने को शुद्ध क्षत्रिय मान्ते हैं परन्तु किसी विद्वान ने इस जाति को क्षत्रिय व किसी ने इसे पवित्र शूद्र लिखा है ये लोग ब्राह्मणों की कच्ची रसोई में बिना रोक टोक घुसजासकते हैं अतएव इन के विरुद्ध सम्मति कदाचित द्वेष युक्त हो इन में यज्ञोपवीत का प्रचार है इन की स्थिती भी उत्तम व उच्चपदस्थ है हम अपनी निजकी सम्मति सहित निर्णय हिन्दू जाति वर्णव्यवस्था कल्पद्रुम ग्रन्थ में करेंगे इस जाति से २५१ प्रश्नों के उत्तर आने की आवश्यकता है तब ही वर्णव्यवस्था सभा द्वारा निर्णय करेंगे

२२६ कोलीगौड़:—वे गौड़ब्राह्मण जो कोली व कोरी जाति के यहां की यजमान वृति करते हैं वे कोली गौड़ कहाये उन का पद साधारण गौड़ ब्राह्मणों से नीचा है उच्चगौड़ ब्राह्मण लोग इन के साथ विवाह सम्बन्ध तथा भोजन व्यवहार नहीं करते हैं किन्तु इनके विवाहसम्बन्ध आदि इन्हीं के वर्ग में होते हैं। यह अन्य विद्वानों की सम्मति है हम अपनी सम्मति यहां कुछ न देकर विशेष ग्रन्थ में लिखेंगे।

२२७ कोवर:— बंगाल प्रान्तीय अगूरी तथा सदगोप जाति का यह एक सरनाम है अगूरी जाति के दो भेद हैं १ सूता २ जना, जिनमें कुलीन और अकुलीन का भी रगड़ा है, सूता अगूरियों का यह कोवर एक कुलनाम है जिसे सरनेम भी कहते हैं इस जाति का विवर्ण अगूरी जाति के साथ मिलेगा विशेष देखना हो तो ग्रन्थ में लिखेंगे।

२२८ कौल:— यह एक पान्थिक जातिहै वाममार्ग सम्प्रदाय के अन्तर्गत है यह जाति पक्की पंचमकारी है अर्थात् मद्य, मांस मछली मुद्रा, और मैथुन करना ये पांचो इस जाति के धर्म के

मुख्य अंग हैं चाहे जितना मांस खावो, खूब ही शराब पीवो, माकी योनी छोड़कर चाहे जिसके साथ विषय करो आदि २ से यह ज़ाति मुक्ती मानती है इनका सिद्धान्त है कि शराब पीते २ इतनी पीवो कि जमीन पर औंध मुँह गिर पड़ो और उठकर फिर पीवो तो तुम पुनर्जन्म से अर्थात आवागमन से सदा के लिये छुटकर मोक्षधाम को चले जावोगे; इस जाति का मन्तव्य है कि रजस्वला स्त्री से भोग किया मानों पुष्कर यात्रा करलियी. भगिन के साथ भोग किया तो काशी धाम की यात्रा होगयी; चमारिन के साथ भोग किया प्रयाग जी की यात्रा व त्रिवेनी स्नान का महात्म्य प्राप्त होगया और धोबिन से विषय किया तो मथुरापुरी की यात्रा होगयी इस जाति के आचार्य्य महीधर बड़े विद्वान हुये हैं जिन्हों ने वेद का भाष्य करते हुये स्त्री की योनि में घोड़े का लिंग देना लिखा है। अतएव ऐसे सिद्धान्तों को लेकर हिंन्दू धर्म पर आक्षेप हुआ करते हैं अतएव धर्मव्यवस्था सभा के द्वारा निर्णय कराकर इस का विवर्ण हिन्दूजाति वर्णव्यवस्था कल्पद्रुम नामक ग्रन्थ में लिखेंगे।

२२६ कौशिकः— यह जाति युक्तप्रदेश के बलिया, बस्ती आजमगढ़ और गोरखपुर में बहुत है इस जाति की संज्ञा कौशिक ऋषि के नाम पर हुयी है अनपढ़ साधारण जन कौसिक भी इन्हें कहते हैं ये लोग अपने को क्षत्रियवर्ण में मानते हैं पर हिन्दू पब्लिक की सम्मतियें इन के विरुद्ध भी हैं कदाचित द्वेषभाव का कारण हो ? इनका आचार विचार तो उच्च बतलाया गया है परन्तु सर्वत्र ये लोग क्षत्रिय नहीं माने जाते हैं विद्वानों की सम्मतियें इस जाति के विरुद्ध भी हैं तथा समर्थन में भी कुछ प्रमाण मिले हैं वर्णव्यवस्था सभा के प्रश्नों के उत्तर इस जाति की ओर से आते तो दृढ़ता के साथ निर्णय किया जाता तथापि वृहद्ग्रन्थ में सभा से परामर्श करके निर्णय करेंगे।

२३० कंचन :— यह एक नाचने गानेवाली जाति की स्त्रियों की संज्ञा है ये स्त्रियें सर्वत्र नाचने गाने तथा अन्य गुप्त व्यवहारिक बुरे कर्म्म करती हैं देशभाषा व देश भेद के कारण

इस जाति के नाम हैं ये करीब २ एकसाती काम करती हैं उन
के नाम यह हैं ।

१ बृजवासी २ गंधर्व ३ कंचन ४ तवाइफ ५ नायका ६ नेग-
पतर ७ पतुरिया ८ रंडी ९ गगतन और १० पातर (देखो C. S.
पृष्ट ७) ।

२३१ कंचारा:— इस जाति का नाम कांचकर भी है ये
शीशे के सामान का व्यापार करते हैं राजपुताने में क्षात्रियवंश
में अपने को बतलाते हैं इनकी खांपे व भेदों पर दृष्टि देने से इन
का मन्तव्य सच्चा सिद्ध हो सकता हैं शेष ग्रन्थ में निर्णय
करेंगे ।

२३२ कंचारी:—दक्षिण प्रान्तस्थ शीशे के व्यापारद्वारा जीविका
करने वाली जाति है ये खान्देश व कोकनदेश में बहुत हैं वहां
की स्थिती के अनुसार एक विद्वान् ने इन्हें शूद्रों से नीच व
चांडाल से उत्तम माना है

२३३ कंचूगोरा:—यह दक्षिण देशीय एक जाति है इसका
दूसरा नाम " बोगड़ा " भी है ये लोग तांबे पीतल का काम
किया करते हैं तथा धातु का व्यापार भी करते हैं । ये अपने
को वैश्य बतलाते हैं परन्तु किसी २ ने इन्हें क्षत्रिय लिखा है और
किसी २ ने शूद्र भी लिखा है सत्य क्या है इसका निपटारा वर्ण-
व्यवस्था सभाद्वारा होने पर ग्रन्थ में लिखेंगे ।

२३४ कंडेलवाल:— यह एक भिन्न जाति नहीं है किन्तु
खंडेलवाल शुद्ध शब्द का अपभ्रंशरूप है अतएव इसका विवर्ण
खंडेलवाल जाति के साथ मिलेगा ।

२३५ कंडोल ब्राह्मण:— यह एक दक्षिण देशीय ब्राह्मण
जाति का भेद है कंडूल नामक पुण्यक्षेत्र के निकास के कारण
इस जाति का नाम कंडूल ब्राह्मण प्रसिद्ध हुवा इस कंडोल तीर्थ
का नाम कण्डवाश्रम भी है यह सौराष्ट्रदेशस्थ बड़वाणगांव से
वायुकोण में १२ कोस पर यह आश्रम विद्यमान है इनके अठारह
गोत्र हैं इनका विवर्ण हिन्दू जातिवर्णव्यवस्था कल्पद्रुम नामी
सप्तखण्डी ग्रन्थ में मिलेगा ।
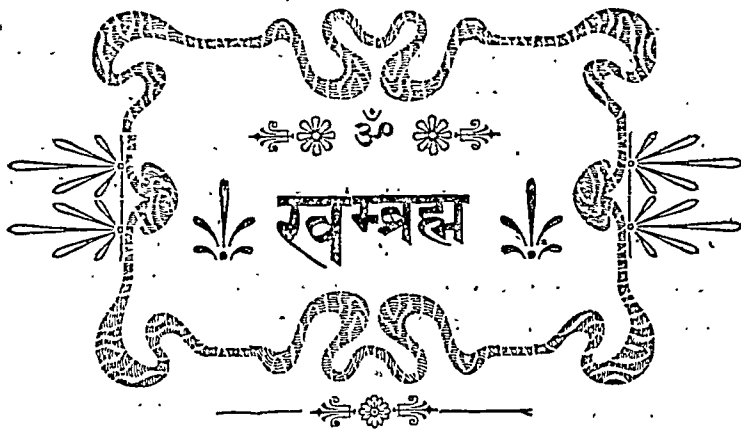
(२३६) खटदर्शन—यह एक तरह की पान्थिक जाति समुदाय है, इसमें हिन्दू, मुसलमान और जैन तथा ब्राह्मण व चारण आदिकों के साधू, फ़क़ीर आदि सम्मिलित हैं विशेष रूप से ये लोग राजपूताना प्रदेशस्थ मारवाड़ में हैं ये लोग प्रायः भिक्षावृत्ती करके निर्वाह करनेवाले हैं छोटे से अकेले मारवाड़ में उनकी संख्या डेढ़लाख के क़रीब है ये मारवाड़ का क्या उपकार करते होंगे? कुछ कहा नहीं जा सकता। इनकी अधिकता होने के कारण इनकी अदालत भी मारवाड़ में अलग ही थी जो खटदर्शन अदालत कहाती थी इस अदालत में प्रायः चारण लोग हाकिम हुआ करते थे सो क्यों?

इन लोगों का सिद्धान्त था कि परस्पर किसी में कुछ भेदभाव नहीं है। किसी विद्वान की ऐसी भी सम्मति है कि यह नाम "षटदर्शन" का अपभ्रंशरूप विगड़कर हुआ है अर्थात् पूर्वकाल में इस जाति सम्प्रदाय में वे लोग सम्मिलित हुआ करते थे जो छहों दर्शन शास्त्रों के ज्ञाता होते थे परन्तु समय के हेर फेर से यह नाममात्र की एक सम्प्रदाय रहगयी इनकी मान मर्य्यादा पूर्वकाल में बहुत चढ़ बढ़ कर थी, आज कल यह लोग विद्या रहित हैं; इनका विशेष विवर्ण अपनी सम्मति सहित हिन्दू जाति वर्ण व्यवस्था कल्पद्रुम नामक ग्रन्थ में लिखेंगे॥

(२३७) खटीक—यह एक हिन्दू जाति है। एक विद्वान का कहना है कि खट+ईक इन दो के योग से खटीक बना है अर्थात् ये लोग हिन्दू होते हुये खटदेसी जानवर मारडालते थे दूसरे शब्दों में ये लोग कसाई कहे जासकते हैं क्योंकि राजपूताने में एक कहावत है कि "छाली रोवे जीवने और खटीक रोवे मांसने" अर्थात् बकरी अपने काटेजाने के कारण ही रोया करती है तो खटीक मांस को रोया करते हैं॥

इस जाति के ८४ भेद राजपूताने में हैं और ८१६ भेद युक्तप्रदेश में हैं इनके भेदों में कोई २ भेद राजपूतों के सदृश हैं मुसलमान लोग दूसरों के हाथ का काटा हुआ मांस खाना हराम समझते हैं परन्तु हिन्दू तो हिन्दू ही हैं अतएव कायस्थ व राजपूत लोग कसाईखानों से खूब मांस खाते हैं इसही लिये आज कल मांस काटने का एक मात्र काम मुसलमान कसाइयों के हाथ में है॥

यह जाति अपने को राजपूत वंश में से मानती हुई अपनी खांप व भेदों के आधार पर आदि से क्षत्रिय वर्ण में बतलाती है परन्तु हिन्दू समुदाय इस जाति को अस्पर्शनीय सी मानता है आज कल ये विशेष रूप से ऊन का काम करते हैं। भेड़, बकरी पालना भी इनका मुख्य काम है॥

शेष निज सम्मति सहित विस्तार पूर्वक विवर्ण अपने सतखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे। इस जाति के पढ़े लिखे मनुष्य भी कहीं २ हमें मिले, उन्होंने अपना दुःख यहही प्रकाश किया यदि कोई भंगी भी ईसाई व मुसलमान होजाता है तो हिन्दू लोग उससे हाथ मिलालें, पास बिठालें और यदि उनका निरादर करें तो अदालतों से सज़ा पाजांय, पर हमारे हिन्दू रहते हुये श्रीराम व श्रीकृष्ण को मानते व गोमाता के पूजते हुये केवल यू० पी० के हमदो लक्ष मनुष्यों को हिन्दू कुत्ते की तरह दूर दूर करते हैं। शेष ग्रन्थ में॥

(२३८) खत्री—यह युक्तप्रदेश की और विशेषकर पंजाब की एक विद्यासम्पन्न व धन सम्पन्न जाति है राजपूताना भी इस जाति से खाली नहीं है; आगरा, दिल्ली, अजमेर, कानपुर, इलाहाबाद आदि

शहरों में ये यह लोग विशेषरूप से हैं, दक्षिण में भी ये हैं, विद्वानों ने इस जाति के स्त्री पुरुषों की सुन्दरता की बड़ी प्रशंसा लिखी है जैसा एक कवि लिखता है कि—

मैले होंय न गंगजल, उज्ज्वल होंय न धूम।
खत्री होंय न सांवरे, कायस्थ होंय न सूम॥

अर्थात् गंगाजल में कुछ भी पड़जाय पर वह मैला नहीं होता है, धूंवा सदा काला ही होता है, खत्री लोग कभी काले रंग के नहीं होते हैं और कायस्थ लोग सूम नहीं होते हैं अर्थात् दान पुण्य व खर्च करने में खूब उदार होते हैं॥

इस जाति के छोटे मोटे सब भेद मिलाकर हमने ७६१ भेदों का पता लगाकर विवर्ण संग्रह किया है। इनकी उत्पत्ति के विषय में एक विद्वान ने अपने ग्रन्थ के पृष्ठ ६५९ में इस जाति को Bastard Caste (हरामज़ादी) लिखी है, इसही के आधार पर किसी २ अंगरेज़ अफ़सर ने भी अपनी सरकारी रिपोर्टों में इसका कुछ उल्लेख्य किया है किसी २ विद्वान ने इसही की पुष्टि में मनुस्मृति का भी प्रमाण लिखा है, दूसरे विद्वान ने इस जाति की उत्पत्ति क्षत्रियाणी माता तथा शूद्र पिता द्वारा बतलाई है। यह सब लिखते दुःख तो बहुत होता है पर लिखना ही पड़ता है हम अपने पवलिक अन्वेषण में आगरे नगर में गलीकूचलियों में पता लगाते २ श्रवणलाल जी खत्री के मकान पर गये कि उनकी बनाई खत्री जात्युत्पत्ति पुस्तक लावें, परन्तु शोक! उन महाशय ने हमारा सब कुछ विवर्ण व हमें जाति अन्वेषण कर्त्ता जानकर भी अपना ग्रन्थ परोपकार की दृष्टि से तो क्या देते किन्तु मूल्य पर भी न दिया, और हमें बातों ही में टरका दिया हमारा अभिप्राय उनके पास जाने से यह ही था कि कदाचित उपरोक्त विरुद्ध प्रकरण झूठ व द्वेषभाव युक्त न हों ? ऐसा हमारा विवर्ण सुनकर किसी २ विद्वान ने अपनी सम्मति देते हुये हमसे कहा कि "उनके ग्रन्थ में आंय, शांय, बांय बातें भरी हैं और कोई बात विशेष महत्व की नहीं थी अतएव उन्होंने तुम्हें अपना ग्रन्थ देना उचित नहीं समझा कदाचित ऐसाही हो ?

सर्वत्र हमारे अन्वेषण में इस जाति के भद्रजनों ने अपने को क्षत्रियवर्ण में बतलाया और प्रायः ऐसा प्रमाणित करते थे कि क्षत्रिय का खत्री होगया अर्थात् "क्ष" ख में बदलगया परन्तु ऐसा होता तो "खत्रिय" ऐसा होना चाहिये था कदाचित ऐसा ही हुआ होगा ? ॥

परन्तु उपरोक्त प्रमाणों में से सत्य क्या माने ? यह सब सन्देह जनक है क्योंकि साधारण जन समुदाय की सम्मति इस जाति के क्षत्रियत्व के विरुद्ध तथा वैश्यत्व की पोषक प्राप्त हुई है, तथापि यहां विशेष लिखने के लिये स्थान न होने से क़लम रुकती है। यह जाति खान पान आचार विचार व रहन सहन से बड़ी पवित्र व उच्च वर्णीय बतलाई गई है प्रायः खत्रीमात्र यज्ञोपवीतधारी हैं तथा उच्च पदस्थ व लक्ष्मी सम्पन्न हैं।

इस जाति के मुख्य भेद मेहरा, कपूर, सेठ, कक्कर, महेन्द्र, खन्ना वोहरा, चोपड़ा, सूर, सेगल, धान, वही, सैनी, और टण्डन आदि आदि अनेकों हैं।

टंडन—का विवर्ण लिखते हुए एक विद्वान लिखते हैं कि "एक तंडन साहब की बहुत सुशील स्त्री किसी बीमारी से मरगयी तो इनको बड़ा रंज हुआ आखिर को अपना दूसरा विवाह करने की तज़वीज़ की गई इस अर्से में एक प्रोहित जी ने आकर कहा कि फलां ग़रीब खत्री अपनी मृगनैनी चन्द्रमुखी उमर की स्यानी लड़की आप से ब्याहने को कहता है परन्तु वह तुम्हारे अंग ऋषि गोत्र की है जो कहो तो ब्याह पक्का करि आऊं, इन्होंने कामकी उमंग के सिवाय रूप रंग की तारीफ़ सुन अपना ब्याह मंज़ूर करलिया और बाद ब्याह होजाने के जो लोगों ने सुना तो इनको बहिन चोद तंडन कहने लगे क्योंकि सगोत्र की कन्या बहिन कहावती है जो इन्होंने ब्याहली इससे बहिनचोद तंडन पुकारेगये"* यह पुस्तक जिससे यह विवर्ण उद्धृत किया गया है उस को प्रायः खत्री जाति प्रतिष्ठित दृष्टि से देखती है ॥

हमारी जाति यात्रा में प्रायः हमें इस जाति के विरुद्ध अनेकों प्रमाण व हेतु विद्वानों ने नोट कराये हैं उन सब को यहां लिखने से

* देखो ख० चं० पृष्ठ २३ ॥

ग्रन्थ बढ़जायगा जहां विरुद्ध पक्ष का संग्रह विशेष रूप से हुआ है तहां इन के क्षत्रियत्व विषयक प्रमाण भी थोड़े से मिले हैं परन्तु दोनों ही पक्षों के प्रमाणों को मण्डल की हिन्दू सार्वभौम प्रबंधकर्तृ सभा तथा धर्म व्यवस्था सभा द्वारा ही निर्णय कराकर विशेष विवर्ण सप्त खण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे, इस जाति ने वर्ण व्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नो द्वारा अन्वेषण नहीं कराया और न किसी प्रकार के प्रमाण ही भेजे हैं।

चूंकि समय द्वेष फैलाने का नहीं है अतः इस जाति की स्थिती को देखकर समयानुकूल इनको उच्चवर्ण की व्यवस्था दी जानी चाहिये ऐसी हमारी निज सम्मति है (शेष ग्रन्थ में) ॥

(२३९) खत्री ब्रह्म—यह एक हिन्दू जाति है इनको किसी २ ऐतिहासिक विद्वान ने ब्रह्मखत्री भी लिखा है जिसका अर्थ ऐसा होता है कि वे खत्री जो ब्राह्मण द्वारा पाले गये, ये लोग छीपी-पने का काम करते हैं, इनका समुदाय राजपूताने में है। इस जाति में क़रीब २ सब लोग जनेऊ पहिन्ते हैं। इनका बहुत कुछ नज़दीकी सम्बन्ध लोयाणा, व लवाखिया, भाटिया व अरोडा आदि क्षत्रियवंशों से मालूम हुआ है ॥

इनकी उत्पत्ति के विषय में एक विद्वान की सम्मति है कि यह क्षत्रिय जाति परशुराम जी के भय से सारासुर ऋषि के पास जा छिपी थी और परशुराम जी को यह विश्वास दिलाने के लिये कि यह ब्राह्मण हैं सारासुर ऋषि ने इनके साथ खालिया था तब से ये ब्रह्मखत्री कहाये, ये लोग अपने निर्वाहार्थ छापने रंगने व बांधने का काम करते हैं इनकी रीति भांति सारस्वत ब्राह्मणों से भी मिलती है॥

और २ विद्वानों ने भी इस जाति के क्षत्रिय वर्ण विषयक सम्मति प्रकट कियी हैं परन्तु वह समग्र वृत्तान्त निर्णय होने पर विस्तारपूर्वक निज सम्मति सहित ग्रंथ में लिखेंगे॥

(२४०) खन्ना—यह एक खत्री जाति का भेद है, बनजाई खत्रीसमुदाय के अढ़ाई घर व चार घर कुल में खन्ना एक कुलका नाम है, खत्रियों में अढ़ाई कुल सर्व श्रेष्ठ व सर्वोच्च माना जाता है, महा-

राजा वर्द्वान भी अढ़ाई घर समुदाय में से हैं। एक विद्वान ने लिखा है सफर मैना पल्टन को जिस वंश ने लड़कर नाश कर दिया वे खन्ने कहाये, एक दूसरे विद्वान का ऐसा कहना है कि चोटी उतरवाने से क्षत्रि हिन्दू होने के कारण खन्ने कहाये, तीसरे विद्वान का ऐसा लेख है कि "क्षत्रय" राजवंश का विकृत रूप खन्ना शब्द बन गया है शेष निर्णयान्तर ॥

(२४१) खरादी—इनको कोई खेरादी भी कहते हैं ये एक खातियों की जाति का भेद है, जो खाती खराद पर पाये, चिलम, सुल्फा कटोरदान, तमाखू के गट्टे, हुक्के आदि २ सामान तय्यार करते हैं वे खरादी कहाते हैं ये लोग भी कहीं २ जनेऊ पहिने देखे गये हैं इनका धर्म्म वैश्नव है खान पान से भी अच्छे व पवित्र होते हैं एक सरकारी अफ़सर ने इस जाति की बड़ी प्रशंसा लिखी है जिसका विवर्ण ग्रन्थ में लिखेंगे।

इनके दो भेद हैं हिन्दू खरादी और मुसलमान खरादी, यहां केवल हिन्दुओं का वर्णन है, इनके भेदों को देखने से यह क्षत्रिय वर्ण में रक्खे जासकते हैं ॥

ये लोग जहां लकड़ी की उत्तम २ वस्तुयें खराद पर बनाते हैं तहां उन पर नाना भांति के रंग भी चढ़ाते हैं इनके यहां की स्त्रियें भी लहरेदार नकशी काते अपने हाथों से लकड़ी के सामानों पर करती हैं पुरुष लोग खराद पर चपड़ी से रंग चढ़ाते हैं, राजपूताने में मुसल्मान खरादी भी हिन्दू खरादियों की तरह रहते हैं, गोभक्त भी हैं, शुद्ध करने योग्य हैं ॥

(२४२) खरोत—यह जाति विशेष रूप से युक्त प्रदेश के वस्ती ज़िले में है एक विद्वान की सम्मति है कि यह जाति कैवर्त्त व केवट जाति का एक भेद है इनको किसी २ ने बेलदार जाति के अन्तर्गत भी माना है, इनके तीन भेद हैं १ दखिनाहा, २ जड़ोत, और ३ माहोर शेष ग्रन्थ में ॥ इनका सम्बन्ध विशेष क्षत्रिय जातियों से विद्वानों ने माना है निर्णय होने पर ही हम भी निज की सम्मति देंगे तहां ही विस्तार पूर्वक विवर्ण होगा ॥

(२४३) खवास—यह एक हिन्दू जाति है राजपूताने में नाई का बड़ा नाम खवास जी है अर्थात् जब कभी नाई को प्रतिष्ठित नाम से पुकारा जाता है तो कहते हैं "आवो जी खवासजी" परन्तु विद्वानों का ऐसा भी मत है कि यह खवास शब्द खासशब्द का बहुवचन है जिसका अर्थ मुख्याधिपति का है अर्थात् जो अपने स्वामी की अति गुप्त बातों का जानकार है वह खास व खवास कहाता है जैसा प्रचलित हिन्दी भाषा में बोला जाता है कि अमुक मनुष्य तो अमुक स्थान में खास खास कर्ता धर्ता है अर्थात् जो कुछ वह करता है सोही होता है। इसही तरह आज कल जयपुर महाराज के मुख्य कर्ता धर्ता श्रीमान धर्मज्ञ बालजी खवास हैं आप जाति से सूचिकार हैं परन्तु अपनी बुद्धिबल व कार्य्य कुशलता के कारण आज आप जयपुर राज के एक मात्र मुख्य उच्चपदस्थ कर्त्ता धर्ता समझे जाते हैं आप की योग्यता व सहनशीलता तथा उदारता का विवरण आपके फ़ोटो सहित हम अपने सप्तखण्डी ग्रन्थ में देने का उद्योग करेंगे ॥

(२४४) खाकी—यह एक भीख के टुकड़े तोड़ने वाले साधुओं की जाति है, ये चारों सम्प्रदायों के होते हैं, ये लोग अपने बदन में खाक़ लगाते तथा कमर में मूंज बांधे रहते हैं। ये लोग प्रायः घूमते फिरतेही रहते हैं, जिन से महनत करके नहीं खाया जाता है वही आलसी अपने बदन पर खाक़ रमाकर बैठजाते हैं और बाबा जी २ कहे जाकर घर घर के नित नये माल उड़ाते हैं।

शिर में जटा मस्तक पर विभूत, बदन में खाक और कमर में मूंज बांधे हुये होते हैं कहीं धूनी तपते हैं और कहीं पर मुफ्त के ही नोट जा जाते हैं मूर्ख हिन्दू लोग ऐसे बाबाजियों का बहुत सत्कार करते हैं, शेष ग्रन्थ में लिखेंगे।

(२४५) खांगी—यह युक्त प्रदेशान्तर्गत रुहेलखण्ड में एक जाति है इसका मुख्य धन्धा खेती करना है। यह नाम खड्गी शुद्ध शब्द से बिगड़कर खांगी होगया जान पड़ता है। जो तलवार को रखता है वह खड्गी कहाता है अतएव पूर्वकाल में यह जाति तलवार

के बल पर ही सब कार्य्य करती थी अतः ये लोग खड्गी कहाने लगे होंगे। ये अपने को चौहान राजपूत मानते हैं परन्तु इनके छपी कर्मों को देख कर लोग आपत्ति भी प्रकट करते हैं।

एक विद्वान की सम्मति है कि सोलहवीं शताब्दी में यह क्षत्रिय वंश अकाल में अजमेर से निकल भागा और इस जाति के कांका और महेशा ये दोनों बदायूं के ज़िले के सहसवान में आकर रहे। ये लोग अपने बल से राज्याधिकारी होकर दिल्ली के बादशाह के आधीन थे और उपज की चौथ बादशाह को दिया करते थे आदि आदि आदि।

एक दूसरे विद्वान का कहना है कि ये लोग खड्गी कहाते २ खागी कहाने लग गये जिसका अर्थ तलवार वाला ऐसा है॥

एक तीसरा विद्वान कहता है कि राजासगर की आठवीं पीढ़ी में एक राजा खड्ग हुये हैं उनका वंश खड्गी कहाते २ खागी कहाने लग गया॥

इस जाति के १३५ भेदों का हमने पता लगालिया है और उपरोक्त विद्वानों की सम्मतियें भी यहां बहुत ही सूक्ष्म लिखी हैं विशेष विवर्ण सत्याऽसत्य का निर्णय करके निज सम्मति सहित ग्रन्थ में लिखेंगे। इस जाति के क्षत्रियत्व सम्बन्ध में समर्थन व विरुद्ध दोनों ही प्रकार के लेख तथा सम्मतियें प्राप्त हुई हैं। उनका विवर्ण निर्णय कराकर ग्रन्थ में लिखेंगे। वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर इस जाति के यहां से नहीं आये।

(२४६)खागर—यह युक्त प्रदेश में एक जाति है हमने इस जाति के ८४ भेदों का पता लगाया है विशेष रूप से यह जाति बुंदेलखण्ड में है, इनकी उत्पत्ति के बारे में एक विद्वान की सम्मति है कि यह नाम खंगढ से बना है जिसका अर्थ तलवार का गढ़ ऐसा होता है॥ यह जाति किसी काल में बड़ी वीर हुयी है तथा देश के एक भाग की स्वामिनी थी यह जाति अपने को क्षत्रिय वर्ण में बतलाती है परन्तु साधारण जन समुदाय में थोड़े मनुष्य तो इस जाति को क्षत्रिय वर्ण में बतलाते हैं पर अधिक इन्हें शूद्र कहते हैं कदाचित हों ? परन्तु

किसी २ अंग्रेज़ अफ़सर ने इस जाति को क्षत्रिय वंश में माना है पर ग़रीबी के कारण ये छोटे काम भी करने लग गये हैं। इन की लोक संख्या युक्तप्रदेश में अनुमान ४० हज़ार से अधिक नहीं है इस जाति का विशेष समुदाय युक्त प्रदेश के हमीरपुर, झांसी, जालौन और ललितपुर आदि ज़िलों में है इनका खान पान साधारण सी जातियों का सा है, कहीं २ ये लोग पक्की व कच्ची रसोई कुर्मियों के हाथ की खालेते हैं, कहीं पर केवल ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के हाथ कीही बनी कच्ची रसोई खालेते हैं लोगों का कहना है कि ये लोग नाई के साथ पक्का भोजन कर लेते हैं॥

इस जाति का मुख्य धन्धा चोरी तथा चौकीदारी करना है इस जाति का आदि स्थान काल्पी है तहां से यह लोग चलकर बुन्देले राजपूतों के यहां नौकर हुये, काल्पी से चलकर भीखमगढ़ रियासत के कुरारगढ़ में आकर बसे, और वहां का अधिकार बादशाह अकबर से प्राप्त करलिया परन्तु इक़रारनामे के अनुसार ये लोग हासिल का सरकारी रुपैया न दे सके अतएव अकबर के हुक्म से ये लोग नष्ट भ्रष्ट करदिये गये। कई विद्वानोंने अपनेर ग्रन्थोंमें इस जातिको क्षत्रियवर्ण में लिखी है अतएव इस जाति को क्षत्रिय वर्ण के अन्तर्गत माननी चाहिये, इस जाति के सम्बंध में विरुद्ध व समर्थन दोनों ही प्रकार के प्रमाण संगृहीत हैं उन्हें मण्डल की दोनों सभाओं यानी हिंदू सार्व भौम प्रबंध कर्तृ सभा तथा धर्म्म व्यवस्था सभा द्वारा निर्णय कराकर ही मंडल के निर्णयान्तर इस जाति का पूर्ण विवरण निज सम्मति सहित हिंदू जाति वर्णव्यवस्था कल्पद्रुम नामक सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे, तहां ही इस जाति के किसी सत्पुरुष का फ़ोटो व उन की सूक्ष्म जीवनी भी देंगे, इस जाति ने वर्ण व्यवस्था कमीशन के २५ प्रश्नों द्वारा अन्वेषण भी अभी नहीं कराया है।

(२४७) खांडायत — यह एक उड़ीसा प्रदेश की जाति है प्राचीन काल की भारत की वीरजातियों में से यह एक जाति है खांडा व खड्ग नाम तलवार का है अतएव जो तलवार को धारण करनेवाले थे खांडायत कहाये उस प्रान्त में यह क्षत्रिय वर्ण में हैं इनके

मुख्य दो भेद हैं महानायक याने श्रेष्ट क्षत्रिय तथा खास खांडायत याने कृषी क्षत्रिय, इनमें महानायक समुद्राय का जाति पद बहुत उच्च है क्योंकि पूर्वकाल में ये लोग फ़ौजों के (Commander) सर्वोच्च अधिकारी रहा करते थे दूसरा समुदाय कृषी द्वारा जीविका करता है परन्तु परस्पर सम्बन्ध होते हैं। इस जाति का जाति पद राजपूताना के क्षत्रिय समुदाय की तरह उच्च है सम्पूर्ण कर्म्म धर्म्म इनके यहां शास्त्र धारानुसार उच्च ब्राह्मणों द्वारा कराये जाते हैं इनमें यज्ञोपवीत की मर्य्यादा उच्चतम दशा की नहीं है, इनके २१ भेदों का पता लगाकर विवर्ण संग्रह किया है इस जाति ने वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर नहीं दिये और न अपने विषय में कोई प्रमाण ही भेजे तथापि जो कुछ हमने संग्रह किया है वह विवर्ण सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे।

यह एक गुजराती ब्राह्मणों का भी भेद है, खेदरा अहमदाबाद और भडोंच आदि में निवास करते हैं तहां ये लोग पुरोहिताई तथा गुरूपना भी करते हैं। ये वहां उच्च ब्राह्मणों में माने जाते हैं। इसही नामवाला गुजरात में एक वैश्य समुदाय भी है जो गुजराती वनिये कहाते हैं।

(२४८) खाती— यह भारतवर्ष की एक हिन्दू जाति है खान पान से यह लोग शुद्ध हैं इनका काम लकड़ी का सामान तय्यार करना है अर्थात् संदूक़, पेयी, पेटी, मेज़, कुरसी, किवाड़, अल्मारी, गाड़ी, रथ, व रेल आदि २ सम्पूर्ण प्रकार के सामान तय्यार करते हैं, पेसा करनेवाले राजपुताने में खाती, युक्तप्रदेश में वढ़ई और दक्षिण में सुतार कहाते हैं इन सबमें राजपूताना के खातियों का जाति पद ऊंचा है।

इनके यहां सम्पूर्ण काम उच्च ब्राह्मणों द्वारा कराये जाते हैं वड़े २ ब्राह्मण लोग इनके यहां का वनाया पका भोजन मिठाई पूरी वग़ैरः वे रोक टोक खाते हैं और इनके हाथ का जल पीते हैं।

इनके कई मुख्य भेद हैं यथा – १ खिसोतर २ मेवाड़ा ३ पूरविया ४ दिल्लीवाल ५ जांगड़ा ६ वढ़ई इनका विवर्ण अलग २ लिखेंगे क्योंकि खिसोतरों के १२० भेद, मेवाड़ों के ५६ भेद, पूरवियों के ५५ भेद, दिल्ली वालों के ५६ भेद, वढ़इयों के ६५६ भेद, औरजांगड़ों के १४४४ भेदों का पता लगाकर हमने विवर्ण संग्रह किया है।

किसी किसी विद्वान ने इस जाति को ब्राह्मणवंशीय ऋषि द्वारा मानी व अपने ग्रन्थों में लिखी भी है तिसही के आधार पर यह जाति भी अपने को ब्राह्मण मान्ती है। मनुष्यगणना रिपोर्ट में यह जाति अन्य छोटी छोटी जातियों की श्रेणी में लिखी गई है। हमने अपने भ्रमण में इस जाति के विषय बहुत कुछ पबलिक तहक़ीक़ात की पर विशेष सम्मतियें इस जाति के ब्रह्मत्व के विरुद्ध मिलीं, और थोड़ीसी सम्मतियें इनके क्षत्रिय वर्ण होने के विषय में मिली हैं ऐसा ही पता इनके गोत्र व भेदों पर दृष्टि देने से भी जान पड़ता है किसी २ ने इन्हें नीची श्रेणी के ब्राह्मण भी बतलाया है अतएव सत्य क्या है ? इसका निर्णय मंडल करेगा।

इस जाति में प्रायः लोग जनेऊ पहिनने वाले मिले हैं बड़े २ वृद्धे २ खातियों को हमने जनेऊधारी देखा है जिनका हमारा सहवास बहुकाल से है हमने अपनी बाल्यावस्था में भी इस जाति में जनेऊ का प्रचार देखा है इसलिये हमारी सम्मति में इनका पद सर्वोच्च अग्रवाल वैश्यों से ऊंचा मानाजाना चाहिये।

हमारे जनरल नोटिस के अनुसार इस जाति के सत्पुरुषों ने अपने २ प्रमाण भी नहीं भेजे। यह जाति आज कल उन्नति मार्ग पर है ऐसा करते २ कुछ काल में कदाचित ये लोग अपनी मनोकामना पूरी करसकें।

इस ग्रन्थ में स्थानऽभाव से हमने बहुतही थोड़ा लिखा है। और अपनी सम्मति रिज़र्व यानी स्वाधीन रक्खी है। इनका विशेष व विस्तृत-विवर्ण मंडल के निर्णय करने पर अपने सतखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे।

इस जाति ने वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर देने व अन्वेषण कराने का उद्योग नहीं किया है। इस जाति के सम्बन्ध में एक विद्वान ने यह लिखा है कि—

छोडा छोलण बूट उखेड़न पटपटियो और नाई।
इतराने मत मूंड़ ज्यों कुबध करेला कांई॥

इस आधारानुसार खाती, बूट उखेड़ने वाले, कुम्हार और नाई ये बड़े चालाक होते हैं इसलिये साधू लोग इन्हें चेला करते हिचकते हैं,

गे इन्हीं की कहावत विद्वानों ने लिखी है । परन्तु यह जाति प्रायः ब्राह्मण होने का दावा करती है परन्तु हिंदू मात्र कोई इनको ब्राह्मण नहीं मानता, किसी २ विद्वान ने इस को संकर वर्ण में लिखी है, हमें अच्छे व बुरे सब ही तरह के प्रमाण मिले हैं उन्हें मंडल द्वारा निर्णय करा कर ही विशेष रूप से सतखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे । इस जाति ने वर्णव्यवस्था कमीशन द्वारा अन्वेषण भी नहीं कराया है ॥

(२४९) खानज़ादा—यह युक्त प्रदेश की एक जाति है एक विद्वान लिखते हैं खां की सन्तान खान्ज़ादा कहायी दूसरे विद्वान का लेख यह है कि गुलामों की याने दासों की औलाद खान्ज़ादा कहायी तीसरे विद्वान की सम्मति है कि ये लोग पहिले जादों वंश के क्षत्रिय थे इन के पूर्वज महाराजा लखनपाल व सुमित्रपाल थे जिनको फ़ीरोज़शाह बादशाह ने सन् १३२८ से १३५१ के बीच में मुसलमान कर लिये थे और उनके नाम बदलकर लखनपाल की जगह नाहरखां और सुमित्रपाल की जगह बहादुरखां रक्खा और उच्चत्व प्रकाशनार्थ उनकी सन्तान का नाम खानज़ादा रक्खा और मेवात का इलाक़ा इन्हें दिया । एक चौथे विद्वान ने भी इस जाति को क्षत्रिय वंशी मेवात की स्वामिनी लिखी है ।

बादशाह बाबर के समय में यह जाति राज्याधिकारिणी थी इनके गोत्र भेद बड़गोती, बिशन, राजकुमार सोमवंसी, चौहाण, बैस आदि आदि हैं ये सर्वत्र मुसलमान नहीं हैं परन्तु कहीं हिन्दू व कहीं मुसलमान हैं जो मुसलमान हैं उनकी रीति भांति, रहन सहन, आचार विचार कई हिंदू जातियों से उत्तम हैं, शुद्ध किये जाने के योग्य हैं, खान पान भी अभीतक क्षत्रियों का सा चला जारहा है ।

इस जाति का शेष विस्तार पूर्वक विवरण सतखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे ।

(२५०) खारवार—यह एक द्राविड़देशीय जाति है परन्तु युक्तप्रदेश के मिर्ज़ापुर की ओर भी यह जाति बहुत है कहीं २ तो इस जाति में लोग जागीरदार व ज़मीदार भी हैं और कहीं साधारण धन्दे करके निर्वाह करते हैं आज कल यह जाति साधारण ग़रीब दशा में है परन्तु एक समय यह एक बड़ी प्रभावशालिनी उच्च जातियों में से

एक थी, हजारीवाग़ के ज़िले में खैरागढ़ एक अच्छा क़सवा है जिसे इसही जाति के राज्यवंश ने अपने नाम पर वसाया था ऐसी बड़े २ विद्वानों की सम्मति है, इस जाति का वहुत कुछ विवर्ण संग्रह हुआ है कई विद्वानों की सम्मति में यह जाति क्षत्रियवर्ण में है। परन्तु विशेष विवर्ण निर्णय होने पर निज सम्मति सहित ग्रन्थ में लिखेंगे।

(२५१) खाडरिया — यह जाति विशेपरूप से मारवाड़ में है इनको सोपविया भी कहते हैं इनके विषय में ऐसा पता लगा है कि यह जाति असल में क्षत्रिय थी परन्तु तुर्कों के भय से डरकर हथियार बांधना छोड़दिया और खेती करने लगगयी उस समय जालोर में राव कानड़देव राज्य करते थे अतः रावजीने इन्हें बहुतसी ज़मीन देकर नववां हिस्सा उपज का हासिल लेना स्वीकार करके इन्हें शरण दी, इनके भेदों व खांपों पर दृष्टिदेने से भी ये लोग क्षत्रियवर्ण में प्रतीति होते हैं। इनका विवर्ण शेष ग्रन्थ में लिखेंगे।

(२५२) खारवाल — इन्हें कोई २ खारोल भी कहते हैं यह जाति विशेपरूप से राजपुताने में है ये लोग मारवाड़ में खारी ज़मीन में नमक वनाया करते थे इसलिये खारी नमक बनाने के कारण ये लोग खारवाल कहाये जब से सरकार ने नमक का एक्ट पास करदिया है यह जाति खेती आदि का धन्दा करती है यह असल में कोई जाती नहीं है किंतु पेशे के कारण नाम पड़गया है।

बादशाह शाहबुद्दीन गोरी से सताये जाकर बहुत से क्षत्रियों ने अपने को खारवाल व खारीवालों में मिलाकर अपनी २ जीवरक्षा किंवी थी तब से उन क्षत्रियों की खांपें भी आजतक वही पुरानी क्षात्रिय वंश की चली आरही हैं जिस से उनका क्षत्रियत्व प्रमाणित होता है शेष ग्रन्थ में देखना।

(२५३) खासिया ब्राह्मण—यह पहाड़ी ब्राह्मणों का एक भेद है इस जाति के २५० भेदों का पता लगाया है इस जाति का मुख्य काम राजपूताना के वागड़ा व हरियाणा ब्राह्मणों की तरह खेती करना है इनके मुख्य भेद ये हैं-

१ धौवल २ घटियारी ३ कनयानी ४ गरवाल ५ सुनवाल ६ पपो-नोई ७ उपरेती ८ चौनाल ६ कुठारी १० घुसरी ११ दौर्वास १२ शन-वाल १३ घुनीला १४ पानड़ी १५ लैमडारी १६ चवनराल १७ फुला-रिया १८ ओलिया १६ ननियाल २० चौदासी २१ दलाकोटी २२ बुढ़ला-कोटी २३ घुलारी २४ घुराती २५ पंचोली २६ बलेरिया २७ गरमोला २८ वलौनिया २६ विरारिया और ३० बनारी आदि, इस पुस्तक में स्थानाभाव से यहां ही छोड़ते हैं शेष विवर्ण ग्रन्थ में लिखेंगे।

(२५४) खासिया क्षत्रिय — यह पहाड़ी राजपूतों का एक भेद है, इनकी कन्या खासा की सन्तान होने से खासिया कहाये इनका विवर्ण पुराणों में विशेषरूप से मिलता है परन्तु उस सब के लिखने को यहां स्थान नहीं है, इन की विशेष बस्ती नैपाल तथा कमाऊं और गढ़वाल आदि ज़िलों में है, ये लोग अपने को क्षत्रिय मानते हैं परन्तु इनमें जनेऊ का अभाव देखकर लोग इस जाति के क्षत्रियत्व पर संदेह प्रकट करते हैं, इस जाति के वीस भेदों का पता लगाकर हमने विवर्ण संग्रह किया है।

इस जाति में सब काम ब्राह्मणों द्वारा करायेजाते हैं, आचार व सदाचार के नियम इस जाति में साधारण हैं हमारेजनरल नोटिस के आधारा-नुसार इस जातिने अपने विषय में कुछ भी प्रमाण मंडल को नहीं भेजे, इनके क्षत्रियत्व विषयक प्रमाणों का विशेष संग्रह ग्रन्थ में किया है।

(२५५) खीची — यह एक क्षत्रिय जाति का भेद है, ये अपने को चौहाण कुल में मान्ते हैं इनका निकास लखनेऊ के ज़िले के खिचवाड़ा देश के रघुगढ़ से है तहां से यह क्षत्रिय जाति अजमेर दिल्ली होती हुई पंजाब में चली गई जिस से यह जाति खीची कहाने लगी शेष ग्रन्थ में देखना।

(२५६) खूमड़ा— यह एक युक्त प्रदेश की हिन्दू व मुसल्मान जाति है, पहिले ये हिन्दू थी परन्तु आज कल ये मुसलमान हैं, यह लोग प्रायः आज कल सर्वत्र पत्थर की चक्कियों का व्यापार करते हैं, वैलों की पीठों पर लादकर ये लोग इधर उधर बेचते फिरा करते हैं, इनके १३ भेद ये हैं – १ बाहमन २ दुल्हा ३ गोरी या गोड़

४ हटैवाले ५ कुरेशी ६ मुलतानी ७ नवाचार ८ पछवी ९ पठान १० नजूरी ११ सादिकी १२ तराई और १३ तमार।

रामपुर की रियासत में यह जाति चटाई व पंखे बनाती है इनका व इनकी स्त्रियों का पहिनावा अभी तक हिन्दुओं कासा चला जारहा है यह जाति विशेषरूप से बिजनौर मुरादाबाद में है। शेष विवर्ण ग्रन्थ में लिखेंगे। शुद्धी सभाओं को ध्यान देना चाहिये।

(२५७) खैरवा— यह एक हिन्दू जाति झांसी के आस पास विशेष रूप से है। इनका कहना है कि पन्नानरेश स्वर्गवासी छत्रपालसिंह जी के समय में यह जाति सन् १७०० ईस्वी के क़रीब झांसी में आयी थी विद्वानों ने इस जाति को क्षत्रियवर्ण में मानी है।

इस जाति में विवाह परिपाटी उत्तम जातियों की सी है अर्थात् ये गोत्र का गोत्र में विवाह नहीं करते हैं परन्तु तीन गोत्र टालकर विवाह करते हैं इस जाति में भंग गांजा और अफ़ीम का बहुत ही प्रचार है मछली खाते व शराब पीते भी सुने गये हैं। इनका मुख्य धन्दा खैर याने खदिर वृक्ष से सामान बनाकर बेचना है।

ये लोग परस्पर जब मिलते हैं तो राम राम, जय श्रीकृष्ण, जय राधाकृष्ण आदि करते रहते हैं, ये देवी के उपासक होते हैं हृदय के कुछ कठोर से होते हैं, देवी के नामपर चट बकरे चढ़ाकर बेचारों की जान ले डालते हैं। इस जाति का बहुत कुछ विवर्ण संग्रह किया है पर उसे ग्रन्थ में छापने का उद्योग करेंगे।

(२५८) खंडेलवाल ब्राह्मण— यह गौड़ समुदाय के अन्तर्गत एक ब्राह्मण जाति है विशेष कर इस जाति का निवास व लोक संख्या सब से अधिक जयपुर में है, हमारी यात्रा में हमने बहुत चाहा कि पब्लिक कमीशन द्वारा इस जाति का अन्वेषण करें पर किसी ने कुछ ध्यान नहीं दिया, यह ब्राह्मण जाति छन्याति भाई कच्ची पक्की में शामिल हैं जयपुर में इनका व छन्यातियों * का खान पान एक है पर बेटी व्यवहार अपनी २ न्यादरी में होता है।

---

* गौड़, खंडेवाल, दाहिमा, गूजरगौड़, पारीख और सिखवाल ये छहों तरह के ब्राह्मण छन्याति कहाते हैं॥

इनकी उत्पति के विषय शास्त्र मर्य्यादा द्वारा तो ऐसा लेख है कि ब्राह्मण मात्र की आदि उत्पति एक ही है, तथापि किसी २ विद्वान ने हमें सम्मतियें दियी हैं कि फुलेरे के पास खंडेल एक स्टेशन है यहां से निकास होने व सर्वत्र प्रसार होने के कारण गौड़ ब्राह्मण खंडेलवाल कहाये, जिसका अर्थ ऐसा होता है कि खंडेलवाले। एक दूसरे विद्वान का ऐसा मत है कि जयपुर राज्यान्तर्गत श्रीमाधोपुर स्टेशन से पांच कोस दूरीपर खंडेला एक अच्छी वस्ती की छोटीसी रियासत है जहां छोटे पाने के व बड़े पने के दो जागीरदार हैं जिन्हें लोग राजा जी राजा जी कहते हैं इसके पास ही खाटू एक बड़ी बस्ती है जहां श्याम जी का प्रसिद्ध मन्दिर है अतएव इस क़सबे को खाटू खंडेला भी बोलते हैं इसही खंडेले में पहिले ब्राह्मणों की वस्ती बहुत थी उनका निकास खंडेले से होने के कारण ये लोग सर्वत्र खंडेलावाले कहाते २ खंडेलवाल कहाने लग गये।

एक तीसरे विद्वान का लेख ऐसा मिलता है कि ये लोग खंडूऋषि की सन्तान हैं इसलिये खंडूलवाल कहाते २ खंडेलवाल प्रसिद्ध होगये। हमने खंडेलवाल ब्राह्मणोंके ८४ भेदों का पता लगाया है, किसी २ विद्वान ने इस जाति के ७२ भेद और किसी ने ५६ ही भेद लिखे हैं। हमारी यात्रा में बहुत से लोगों ने बहुत कुछ बातें इनके विरुद्ध भी वतलायी हैं उन सब को यहां न लिखकर इस जाति का सम्पूर्ण विवर्ण अच्छा व बुरा जो जो कुछ संग्रह किया है वह ग्रन्थ में लिखेंगे तहां ही समालोचना भी करेंगे। इस जाति ने हमारे जनरल नोटिस के अनुसार अपने कुछ भी प्रमाण नहीं भेजे और न वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों द्वारा इन्होंने अन्वेषण ही कराया देखें इस जाति की ओर से खंडल के निर्णयार्थ क्या क्या प्रमाण आते हैं। धर्म व्यवस्था सभा में व हिन्दू सार्व भौम प्रबंधकर्तृ सभा में इस जाति समुदाय में से अभी तक कोई भी मेम्बर नहीं हुआ है तथापि खंडल के निर्णयान्तर सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे तहां ही किसी योग्य महाशय का फ़ोटो व उन की जीवनी भी लिखेंगे।

(२५९) खंडेलवाल बनिये—यह एक वैश्य जाति है इस जाति के विषय में अनेकों तरह की उत्पत्ति का पता लगा है हमारी जाति यात्रा में कई विद्वानों ने हमें यह सम्मति दियी कि खंडेलवाल ब्राह्मणों से ही खंडेलवाल बनिये बने हैं अर्थात् वे खंडेलवाल ब्राह्मण जो ब्राह्मण होकर व्यौपार करने लगे वे खंडेलवाल बनिये कहाये ।

एक दूसरे विद्वान की यह सम्मति है कि खंडऋषि जिन का वर्णन महाभारत में आया है उनहीं से खंडेलवाल ब्राह्मण व खंडेलवाल बनिये पैदा हुए हैं ।

कहीं २ ऐसी सम्मति मिली हैं कि वे अग्रवाल वैश्य जो आदि में खंडेल* में रहते थे वे वहां से निकलकर जीविकार्थ इधर उधर चलेगये और वहां जाकर खंडेलवाल बनिये कहाने लगे । परन्तु किसी एक विद्वान की ऐसी सम्मति है कि आदि में ४ क्षत्रिय वीर परस्पर भाई थे वे आखेट के बड़े शौक़ीन थे अतएव एक दिवस उन्होंने वनमें अनजाने एक महात्मा जी के पालतू हिरन का शिकार करडाला, उससे महात्मा जी उन्हें श्राप देनेलगे तब महात्मा जी के उपदेश से उन्होंने क्षत्रियत्व त्याग कर वैश्यत्व स्वीकार किया उन्हीं की संतान खंडेलवाल बनिये हैं। किन्हीं किन्हीं स्थानों में विद्वानों ने ऐसा भी कहा है कि एक खंडेलवाल ब्राह्मणी की मैत्री किसी अग्रवाल वैश्य से होगयी उनके संसर्ग से जो सन्तान हुयी वे वीर्य्य प्रधानता के नियम से खंडेलवाल बनिये कहाये । कदाचित ऐसा हो ? परन्तु हम अपनी निज की सम्मति स्वाधीन रखते हुये यह सब विवर्ण सत्यऽसत्य के निर्णय के लिये मंडल के अर्थ छोड़ते हैं तब ही हम विस्तार पूर्वक विवर्ण अपने संतखंडी ग्रन्थों में लिखेंगे। हमारे जनरल नोटिस के अनुसार कई जातियों ने अपने २ प्रमाण मंडल के निर्णयार्थ भेजे परन्तु यह जाति तो सोती ही रही । तथा वर्णव्यवस्था कमीशन द्वारा २५१ प्रश्नों के उत्तर भी इस जाति से नहीं प्राप्त हुये इनका धर्म हिन्दु तथा जैन दोनों ही है। मथुरा के प्रसिद्ध लक्षन सेठ स्वर्गवासी लक्ष्मीचन्द जी भी इस जाति के भूषण थे ।

---

* खंडेल का पता खंडेल [illegible] प्रकरण में देखिये ।

इन खंडेलवाल बनियों के ७२ गोत्रों का तथा ३४ देवियों का पता लगाकर विवर्ण संग्रह किया है, इस जाति के पूज्यपाद गौड़ ब्राह्मण हैं। इनका धर्म विशेषतया हिन्दू तथा सूक्ष्मतया जैन धर्म है।

युक्त प्रदेश में केवल इनकी लोक संख्या दस हज़ार से अधिक नहीं है तथापि यह जाति सर्वत्र फैलगयी है। इनकी अधिक लोक संख्या जयपुर में है तहां ही उनका गुरु घराना भी हैं।

इस जाति में जो जैन सम्प्रदायी हैं उन्हें जैन धर्म में आये आज मिती चैत्र शुक्ला ७ संवत १९७१ को १९६९ वर्ष २ महीने तथा २ दिन हुये हैं, इनके ८४ गोत्रों का भी हमने पता लगाया हैं। जिनसेनाचार्य्य मुनि जी श्री अपराजित मुनीजी के सिंघाड़े में से थे उन्होंने अपने तप बल से खंडेले के राज्य के ८४ गावों को जैनधर्म्मी करलिये थे।

हमारी यात्रा में कुतर्कियों की शंका हमारे प्रति ऐसी थी कि ८४ गांवों की सम्पूर्ण जातियें जो जैनी हुये वे खंडेलवाल कहाये, सो तो ठीक पर वे सबके सब वैश्य ही वर्ण में कैसे हो सकते हैं?

क्योंकि कोई ब्राह्मणवर्ण में, कोई क्षत्रियवर्ण में, कोई वैश्यवर्ण में, कोई शूद्रवर्ण में, कोई सतशूद्रों में और कोई अन्त्यजों में होने चाहिये थे? इन शंकाओं का समाधान इस जाति से २५१ प्रश्नों के उत्तर वर्ण व्यवस्था कमीशन द्वारा लेकर ही मंडल के निर्णयान्तर निजसम्मति सहित इनका विस्तार पूर्वक विवर्ण सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे तहां ही इस जाति के किसी महामान्य धर्मज्ञ पुरुष का फ़ोटो व उनकी जीवनी तथा उदारता का परिचय भी देंगे।
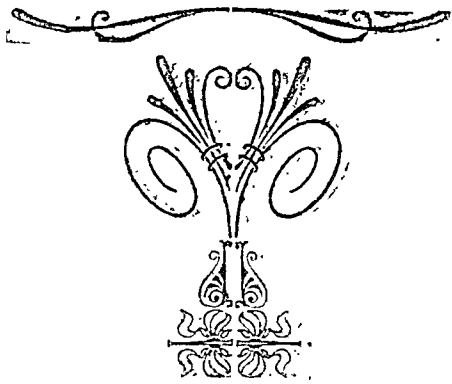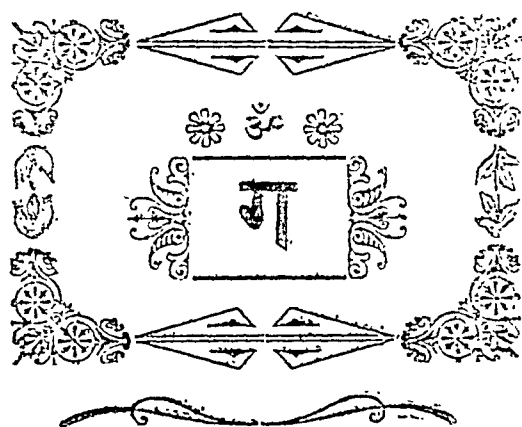
२६० गच्छ—यह जैन सम्प्रदाय के यतियों की श्रेणी है जैन यति व व्रती लोग आजन्म कुंवारे रहा करते हैं और अपने शिष्य वर्गों के यहां से बना बनाया किंचत २ भोजन मांग लाते हैं, ये लोग स्थायी रूप से कहीं नहीं रहते हैं वरन चलते फिरते रहा करते हैं जहां कहीं जाते हैं तहां जिस की धर्मशाला आश्रम व मंदिर व मठ आदि में ठहरते हैं तो उन के यहां का भोजन नहीं करते हैं, ये लोग प्रायः पैदल चलकर यात्रा किया करते हैं, ये लोग अन्य हिन्दू साधु सन्यासियों की तरह गाड़ी, घोड़ा, पालकी आदि में नहीं चलते हैं। इनके कई भेद होते हैं जिन का परस्पर भ्रातृत्व स्नेह है।

१ खरतर गच्छ, २ तप गच्छ ३ कमल गच्छ ४ लोक गच्छ, ५ पचनी गच्छ।

एक दूसरे विद्वान की ऐसी भी सम्मति है कि जैन यतियों ने अपने २ शिष्य वर्गों की समुदाय का नाम गच्छ रक्खा है। विस्तृत विवरण देखना हो तो सप्तखंडी ग्रन्थ में देखना।

२६१ गड़रिया—युक्त प्रदेश की भेड़ बकरी चराने, पालने व ऊन के कम्बल आदि बनाने वाली एक जाति का नाम है, यह जाति अपने को क्षत्रिय वर्ण में बतलाती है, परन्तु साधारण हिन्दू समुदाय इस

जाति को क्षत्रिय वर्ण में नहीं मानता है। इस जाति की स्थिती आगरे प्रान्त में बघेले ठाकुर, मुम्बई में अहीर व अभीर, नागपुर में गोलि, राजपूताने में गूजर, तथा मालवा प्रान्त में धनगर व डंगर कहाते हैं, इन के भेद धिंगर, भरारिया, वैखदा, निखर, जौनपुरी, इलाहाबादी और चिकवा आदि आदि हैं इस जाति के ११९२ भेदों का पता लगा कर हमने विवर्ण संग्रह किया है इस जाति की उत्पत्ति विषय कई एक सम्मतियें अच्छी व बुरी दोनों ही तरह की हैं अर्थात् एक विद्वान का लेख है कि इस जाति की उत्पत्ति जवाहिरात में छेद करनेवाली(वेधक) जाति की स्त्री व अहीर जाति के पुरुष के संयोग से गड़रिया जाति पैदा हुवी है, एक दूसरे विद्वान का लेख है कि जिस राज्य वंश का निवास किलों (गढ़ों) में था वे गड़रिया याने गढ़वाले Master of fort. कहाते कहाते गड़रिया कहाने लग गये, एक तीसरे विद्वान की सन्मति है कि हनुमानजी महाराज को हनुमान बली भी कहते हैं और उन का प्रसिद्ध अस्त्र शस्त्र गदा थी अतएव जिन क्षत्रियों ने गदा धारण करके दुष्टों का दमन किया वे गदारिये याने गदावाले कहाते२ गदरिये कहाने लग गये, एक चौथे विद्वान का ऐसा भी मत है कि गद नाम भेड़ का है अतएव भेड़ को रखने व पालने वाली जाति गदरिया कहाती २ गड़रिया कहाने लग गयी। इस वंश के शिरोमणि महाराजा बहादुर तुकाजीराव हुल्कर हैं जो यज्ञोपवीत पहिनते हैं और उन का धन धान्य उच्च ब्राह्मण समुदाय निधड़क रूप से ग्रहण करता है अतएव हमें अनेकों प्रमाण इस जाति के उच्चत्व व नीचत्व विषयक मिले हैं इस लिये मंडल के निर्णयान्तर विशेष विवर्ण स्वतंत्र ग्रन्थ में लिखेंगे. वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर भी इस जाति ने नहीं दिये हैं।

२६२ गढ़नायक—यह एक उड़ीसा प्रान्त की खंडाइत जाति का भेद है जिस समुदाय के हाथ में किले के अधिकार थे अर्थात् जो फ़ौज के उच्चतम अफ़सर थे उन का पद गढ़ नायक था, खंडाइत जाति विषय, ककार की जाति प्रसंग में लिखा जा चुका है।

(२६३) गणक—यह एक बंगाल प्रान्त तथा आसाम व उड़ीसा प्रान्त की एक ब्राह्मण जाति का भेद है शब्दार्थ तो ऐसा होता है कि गिननेवाला जो है वह गणक कहाता है अथवा गणित का जानने वाला गणक कहाता है गणित विद्या ज्योतिष शास्त्र का एक अंग है सूर्य्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनिश्चर, राहु तथा केतु आदि नवग्रहों व पृथिवी आदि की चाल व परिमाण तथा गति के ज्ञाताओं को बंगाल आदि में गणक कहते हैं परन्तु आज कल इस सर्वोच्च विद्या के धुरंधर ज्ञाताओं का अभाव होकर इसजाति में केवल ग्रहों के नाम पर दान लेना नाम मात्र रहगया है। इस प्रान्त में योतिष विद्या द्वारा उच्चतम कोटि के विद्वान जीविका करते हैं परन्तु ऐसी जीविका से उनके उच्चत्व में तनिकसा भी वट्टा नहीं लगता है ऐसी ही दशा व वर्ताव सर्वत्र होना व किया जाना शास्त्र सम्मत है पर ऐसा हम नहीं देखते क्योंकि आसाम व उड़ीसे में इस जाति को नीच श्रेणी के विद्वानों की गणना में एक विद्वान ने लिखा है पर ये सरासर भूल व द्वेष मात्र है।

ज्योतिष विद्या के जाननेवाले यू. पी० व राजपुताने में ज्योतिषी जिसका विगड़ा हुवा रूप जोषी है, बंगाल आसाम उड़ीसे में गणक व नक्षत्र ब्राह्मण, कहीं आचार्य्य ब्राह्मण, कहीं ग्रह विप्र, कहीं ग्रहाचार्य्य और कहीं दैवज्ञ कहाते हैं शेष सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे।

(२६४) गद्दी—यह एक युक्त प्रदेश की जाति है गोपालन करना इस जाति का मुख्य काम है यह जाति ज़बरदस्ती मुसल्मान करली गयी थी इनका समीपी सम्बन्ध घोषी तथा अहीर जाति से है पंजाब में कर्नाल व कांगड़ा तथा चम्बा की ओर यह जाति है तहां ये लोग आदि में खत्री थे इस जाति के २५५ भेदों का पता लगा कर विवर्ण संग्रह किया है, इन के मुख्य भेद १ अवधिया २ बहराइची ३ वालापुरिया ४ गोरखपुरिया ५ कन्नौजिया ६ पूरबिया ७ मथुरिया ८ सकसेना ९ सरवरिया १० शाहपुरी ११ अहरवाड़ १२ वाकर १३ वैस १४ भदौरिया १५ भंगी १६ भट्ठी १७ विशन १८ चन्देल १९ चौहान २० छत्री २१ तोमर २२ घोसी २३ गूजर २४ हरकिया २५ जाट

२६ कस्बोहा २७ राठी २८ टांक और तोमर आदि आदि हैं इस से यह जाति क्षत्रिय वंश में प्रमाणित होती है।

इस जाति में जो मुसलमान भी हैं वे आचार विचार से शुद्ध व नाम मात्र के मुसलमान हैं अतएव शुद्धि मंडल का ध्यान इस ओर होना चाहिये, मंडल के निर्णयान्तर इस जाति का विवर्ण सप्त खण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे।

(२६५) **गर्गवंशी**—युक्त प्रदेश में एक जाति ऐसी भी है जिस का कहना है कि वे गर्ग ऋषि की सन्तान हैं, इस ही लिये कहीं वे अपने को गर्ग व कहीं गर्गवंशी कहकर पुकारते हैं, विष्णुपुराण के तथा श्रीमद्भागवत के आधारानुसार गर्ग ऋषि क्षत्रिय थे जो अपने तप बल से ब्राह्मण होगये अतएव यदि गर्ग ऋषि ब्राह्मण माने जांय तब तो यह जाति ब्राह्मण वर्ण में मानी जानी चाहिये और यदि क्षत्रिय माने जांय तब यह जाति क्षत्रिय वर्ण में हो सकती है, इस जाति की लोक संख्या फैज़ाबाद, आज़मगढ़ और सुल्तानपुर में विशेष रूप से हैं हम अच्छा व बुरा कुछ भी न कहेंगे जब तक यह जाति वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर न देदे। अतएव विशेष विवर्ण सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे।

(२६६) **गरूरी** (अहितुन्दक)-स्टीलसाहब ने इस जाति को शूद्रों से नीच व चांडाल से उत्तम माना है, इन का पेशा सांपों को दिखाना है (H.E. 118) जैसे राजपूताना में कालबेलिये सांप दिखाते व तमाशे करते हैं।

(२६७) **ग्रहविप्र**—यह बंगाल के ब्राह्मणोंकी एक जाति है जो ग्रह गोचर दशा आदि बतलाकर जीविका करते हैं वे ग्रहविप्र व ग्रह आचार्य्य कहाते हैं इनका विवर्ण "गणक" प्रकरण में भी लिखा जा चुका है।

(२६८) **गर्सी**--सूदमार्गक इनका काम Beating tom-toms etc. का है।

इस जाति के लोग कभी २ पूने जाया करते हैं और पंढ़रपुर के ज़िले में विशेषरूप से हैं पूना में गुरवास और नायी भी ये धन्दा करते हैं ये दक्षिण प्रान्त की जाति हैं ये शूद्रों से नीचे व चांडाल से ऊंचे मानेगये हैं।

(२६९) गहोई-यह एक वैश्य जाति का उपभेद है यह जाति प्रायः बुन्देलखण्ड तथा मुरादावाद व झांसी, जालौन, ललितपुर आदि २ शहरों में विशेषरूप से है यहां ये बड़े व्यापारों के व्यौपारी हैं लेन देन व व्यापार ही इस जाति का मुख्य काम है इनका आदि स्थान बुन्देल-खण्ड है तहां ही से वे लोग व्यापारार्थ तथा विपत्ति वश इधर युक्त प्रदेश के अन्य ज़िलों में भी चलेगये हैं।

ऐतिहासिक विद्वानों ने ऐसा माना है कि यह जाति वैश्यवर्ण में है और पिंडारियों के हमलों से सतायी जाकर यू. पी व अवध में सर्वत्र फैलगयी और थोड़ी व बहुत युक्तप्रदेश के सम्पूर्ण ज़िलों में पायी जाती है।

इनका यह नाम पड़ने का कारण यह है कि ये लोग व्यापार कुशल होने के कारण अपने प्रत्येक विषयों को गुह्य रक्खा करते थे अतएव विद्वानों ने इन्हें "गुह्य ही" कहा अर्थात् निश्चय पूर्वक जो अपने भावों को गुह्य रखने वाले हैं वे गुह्य ही कहाते २ विद्या के अभाव से गुहोई व गहोई कहाने लगगये हैं।

विपत्ति काल में जब सर्वत्र अशान्ति फैली हुयी थी एक पानड़े ब्राह्मण ने इस जाति को बड़ी विपत्ति से बचाया और तबही से इनके १२ गोत्र तथा १०२ अल्ल होगयी हैं उस स्मृती के अर्थ इस जाति में अद्यावधि विवाह के पश्चात् उनका पूजन होता है।

गोत्र— १ वासिल २ गोइल ३ गंगल ४ चंदल ५ जेतल ६ कंथिल ७ काछिल ८ वाछिल ९ कश्यप १० भरल ११ पाटिया और १२ सिंगल।

इन गोत्रों पर विचार करने से प्रमाणित होता है कि यह सब गोत्र अग्रवालों के गोत्रों से मिलते जुलते से हैं अतएव ये आदि से अग्रवाल वैश्य ही होंगे ऐसा निश्चय होता है।

इस जाति में विवाह क्रम भी शास्त्रोक्त है अर्थात् ये लोग अपना

गोत्र व अल्ल बचाकर तथा अपने नाना का व अपनी मां की नानी आदि का गोत्र बचाकर विवाह करते हैं ॥ विधवा विवाह भी इस जाति में नहीं होता है इनका धर्म्म प्रायः वैश्नव धर्म है विशेषरूप से मांस व शराब का इस जाति में परहेज़ है परन्तु अवध प्रदेश में कहीं २ के गहोई वैश्य मांस खाते व शराब पीते भी सुने गये हैं। इस जाति का कुल देव बिहारीलाल है।

इनकी लोक संख्या युक्त प्रदेश में अनुमान ४० हज़ार है इस जाति में यज्ञोपवीत की प्रणाली भी प्रचलित है जिस प्रकार अग्रवाल वैश्यों में कोई यज्ञोपवीत धारण करते हैं और कोई नहीं वैसी ही दशा इस जाति की भी है।

इस जाति का खान पान रहन सहन व आचार विचार उच्च जातियों का सा है इनका पक्का भोजन व्यवहार अग्रवाल जाति के साथ बे रोक टोक है दोनों जातियें परस्पर एक दूसरे के यहां पक्का भोजन करती रहती हैं गौड़ व अन्य उच्च ब्राह्मण समुदाय भी इनके यहां पक्वान्न भोजन करते हैं विवाह शादी व अन्य संस्कार आदि भी अन्य उच्च द्विज समुदाय की तरह होते हैं।

पोरवार, पुरवार, पुरवार, खरौवा और पोरवाल वैश्यों के साथ भी इनका पक्वान्न भोजन है। बुंदेलखण्ड में पाटिये ब्राह्मणों का एक समुदाय है जो केवल इसही जाति के यहां का दान पुण्य लेते हैं और दूसरे के यहां से कुछ भी नहीं लेते हैं।

(२७०) गहरवार—यह एक प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित राजपूत वंश है एक विद्वान की सम्मति है कि यह नाम गुहलवाल व गुहरवार का अपभ्रंश है अर्थात् गुह का अर्थ गुफा व गुप्त स्थान तथा वाल व वार का अर्थ वाले का है याने वे क्षत्रिय वंश जो बड़ी २ कन्दरा व जंगलों में रहते थे वे गुहरवार कहाते २ गहरवार कहाने लग गये।

यह चन्द्रवंशी क्षत्रिय हैं इन्हें ययाती राजा ने श्राप दे दिया था कि भविष्यत में तुम राज्यधिकारी न होंगे इस ही वंश में यदु पैदा हुये थे इस ही वंश में देवदास काशी नगरी का राजा हुआ था जिस को "ग्रहवर" की पदवी मिली थी अर्थात् देवदास के ग्रह श्रेष्ठ हैं

जो राज्याधिकारी हुआ तब से इस वंश का नाम ग्रहवर से ग्रहरवर व गहरवार प्रसिद्ध होगया, यहां हमने बहुत ही सूक्ष्म लिखा है। यह ही वंश कन्नोज का राज्याधिकारी हुआ जिस ही वंश में प्रसिद्ध राजा जयचन्द राठौर हुये हैं इन के राज्य के विषय एक कवि लिखते हैं कि

दो०–करा काल्पी कमारु, कश्मीर लावा देश।
खुद काशी कन्नौज धनी, श्री जयचन्द्र नरेश॥

अर्थ तो सीधा ही है कि करा, काल्पी, कमारू, कश्मीर और लावा तथा काशी तक की हद्द के राजा श्रीजयचन्द्र नरेश थे।

एक विद्वान लिखते हैं कि जब शाहबुद्दीन गोरी ने कन्नौज फ़तेह किया तो राजा जयचन्द के लड़के राजपुताना में जोधपुर आदि की ओर आ गये और घर बाहिर कहाने लगे जिस ही से इन्हें गहरवार कहने लगगये। शेष हाल सप्तखराडी ग्रन्थ में लिखेंगे।

(२७१) **गहलोत**–यह एक बड़ा प्रतिष्ठित राजवंश है, यह शब्द गुहलोट शब्द का अपभ्रंश रूप है, जिस का अर्थ यह है कि गुफामें लेटनेवाले या गुफामें रहकर अपनी जीव रक्षा करनेवाला जो वंशहै वह गुहलोत व गुहलोट कहाते कहाते गहलोत कहाने लगे अर्थात् मेवाड़ के राना को जब गुजरात से देश निकाला मिला था उस समय पुष्पवती नाम की एक रानी गर्भवती थी जिसने मलयागिरी के ब्राह्मणों के यहां आश्रय लिया, उस ही मलयागिरी पर्वत में उस रानी के बालक उत्पन्न हुआ जिस का नाम गुहलोट याने गुफा में लोटकर पैदा हुआ रक्खा, तब से उस के वंश का नाम गहलोत प्रसिद्ध हुआ, इस ही वंश का नाम सीसोदिया तथा अहरिया भी है। एक विद्वान की ऐसी भी सम्मति है कि यह शब्द "ग्रहलोट" शब्द का अपभ्रंश रूप गहलोट व गहलोत है, इस जाति का इतिहास हम ने बहुत कुछ संग्रह किया है अतएव यहां इस पुस्तक में तो हरेक जाति का विवर्ण बहुत ही सूक्ष्म रूप से नमूने मात्र को लिखा है युक्त प्रदेश में इस ही वंश का एक भेद है जो चिरार व चिराड़ राजपूत कहाते हैं, इन की स्थिती व मान मर्य्यादा युक्त प्रदेश में बहुत अच्छी है, परन्तु किसी २ विद्वान ने चिराड़ों को गहलोत वंशी होने में सन्देह प्रकट किया है, अतएव इस

वंश से वर्ण व्यवस्था कमीशन को २५१ प्रश्नों द्वारा अन्वेषण करना है तब ही दृढ़ता के साथ कहा जासकेगा, शेष सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे।

(२७२) **गमल्ला**—यह एक तैलंग देश की जाति का नाम है, तैलंग देश में कलाल व कलवार नहीं होते हैं, वरन यह जाति शराब खिंचवाने व बिकवाने का धन्दा करती है, परन्तु बहुत से इस काम को न करके बड़े बड़े व्यापार में लगे हुये हैं आचार, विचार से शुद्ध हैं और उच्च वैश्य वर्ण में हैं।

(२७३) **गनिग**—यह एक माइसोर राज्य में तेल निकालने व बेचने वाली जाति है, इस धन्दा करनेवाली जाति के देश भेद के कारण कई नाम हैं, बंगाल में कालू, राजपुताना व युक्तप्रदेश में तेली, संस्कृत में तैल्यकार, उत्तरी भागों में घांची, तैलंगदेश में कूलू वालू द्रविड़ देश में वणिक, कर्णाटक देश में जोति नगोरा आदि आदि कहाते हैं। इन भिन्न २ प्रान्तीय तेली जाति की मान प्रतिष्ठा सर्वत्र एक सी नहीं है, राजपूताना व मालवा देश में तेली उच्चवर्णीय माने जाते हैं युक्त प्रदेश व बिहार में तेली जाति के साथ हिन्दू पबलिक का आन्तरीक द्वेष है, अतएव वहां इन्हें उच्चवर्ण मानना तो दूर रहा बल्कि इनके हाथ का जल स्पर्श किया भी पीने के लिये उच्चवर्ण तय्यार नहीं हैं अतएव इन लोगों ने ऐसे दुःख से दुखी होकर अपने को वैश्य बतलाना आरम्भ करदिया है और कुछ आर्य्यसमाजिक तेलियोंने मिलकर अपने को साहू वैश्य कहना आरम्भ करदिया है। तदनुसार साहू वैश्य महासभा के द्वितीय वार्षिकोत्सव पर फ़ैज़ाबाद हम व्याख्यानादि के निमित्त बुलाये गये थे वहां हमारे पहुंचने पर सभा के मंत्री बाबू कालीप्रसाद दास ने नोटिस छपवाया जिस में हिन्दू पबलिक को धोखा देने के लिये यह लिख मारा कि "तेली जाति को वैश्य वर्ण में महामण्डल ने बतलाया है" परन्तु हमने इस पर आपत्ति करके इन शब्दों को निकलवाये जिससे तेली सभा हमसे रुष्ट होगयी। इस जात की उत्पत्ति व विशेष विवर्ण तथा वर्णस्थिती व जाति पद व अधिकार आदि आदि विषय पूर्ण रीत्यानुसार सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे हां तकार की जातियों के साथ "तेली" जाति स्थम्भ में भी कुछ विवर्ण

देंगे। बंगाल प्रान्तस्थ कालू जाति का वर्णन ककार की जातियों के साथ कुछ लिखा जा चुका है।

भिन्न २ देशों की भिन्न २ स्थिती होने के कारण कहीं २ के तेली यज्ञोपवीत धारी उच्चवर्ण में मानेजाते हैं, तो कहीं २ के नीच व अधम वर्ण में अतएव यह सब निवटारा मंडल के निर्णयान्तर निज सम्मति सहित हिंदू जाति वर्णव्यवस्था कल्पद्रुम नामक ग्रन्थ में होगा।

(२७४) गनीगार—यह एक माइसोर राज्य की जाति है इनका धन्दा मोटे कपड़े टाट बोरी आदि का बुनना है, इनमें से बहुत से कृषी कर्म भी करते हैं और अपने को उच्च मानते हैं।

[२७५] गदाधर—बंगाल प्रान्त के नदिया के ज़िले में यह एक साम्प्रादायिक जाति है। असल में एक तरह से तो गदाधर नाम श्रीकृष्ण भगवान का है जिनके कि चरणों की स्थापना गया जी में होरही है और सम्पूर्ण हिन्दू यात्री जो वहां पिंड दान करने जाते हैं वे इस प्रसिद्ध व परम पवित्र स्थान के दर्शन अवश्य करने जाते हैं।

बंगाल प्रान्त के राढी व वारेन्द्र ब्राह्मण समुदायों में प्रसिद्ध न्यायरत्न रघुनाथ गदाधर, कुल्लुक और रघुनन्दन आदि हुये हैं सन् १७०० के लगभग नदिया में न्याय फ़िलासफ़ी के अद्वितीय विद्वान महामहोपाध्याय पंडित मधुसूदन स्मृति रत्न हुये हैं उन्हीं के कुल के व शिष्यवर्ग गदाधर नाम से कहे जाते हैं।

(२७६) गयावाल / गयाल } यह ब्राह्मणों की जाति है, गया जी के रहनेवाले गया जी के पंडे गयावाल व गयाल कहाते हैं तीर्थों में रहने व सब जाति का तीर्थस्थान पर दान लेने के कारण किसी २ विद्वान ने इन ब्राह्मणों का ब्राह्मण पद नीचा लिखा है। यह जाति प्रायः धनाढ्य, परन्तु विद्या रहित व लड़ने मारने मरने वाली होती है।

(२७७) गंवार / गंवारिया } यह जाति कहीं पर गंवार व कहीं पर गंवारिया कहाती है, राजपूताने में प्रायः गंवार उसको कहते हैं जो अक्ल का छोटा व बुद्धी का मन्द होता है, अकसर शहरवाले देहातियों

को गंवार कहा करते हैं, परन्तु राजपूताने में गंवार व गंवारिये एक खास जाति भी है, जिस का मुख्य काम मूंज कूट कर जेवड़ी भेजना, रस्सी बनाना, पानी, पूला व फरड़ा याने सरकंडे बेचना व सिरकियें तय्यार करना व सींग आदि की कंगियें व कंगे बनाना है, ये लोग प्रायः घूमते हुये ही रहा करते हैं और जहां कहीं टिकते हैं तहां शहर के बाहर अपना डेरा जमाते हैं, ये लोग अपने को राजपूत बतलाते हुये कहते हैं कि मुसल्मानी अत्याचार से हम लोग विपत्तिवश यह साधारण धन्दा करने लग गये हैं, इन की खांपे-सीवाण, खटाण, मालावत, धावड़िया, भूकिया, चौजलोत, धीसलोत, गोरामा, कूरटा और मूंकल आदि २ हैं। शेष विवर्ण सतखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे।

(२७८) गाड़ा—यह एक कृषी करने वाली युक्तप्रदेश की जाति है विशेष रूप से यह जाति युक्तप्रदेश के सहारनपुर और मुज़फ्फरपुर के ज़िलों में है इन में कुछ समुदाय मुसल्मानों का है जो जबर्दस्ती मुसल्मान कर लिये गये थे, अन्यथा असल में यह जाति चन्द्रवंशी क्षत्रिय हैं इन का आदि स्थान दिल्ली के आस पास है इस जाति के भेद व उपभेदों को देखने से विदित होता है कि इन में कई भेद राजपूत वंश के से हैं, विपत्ति वश कृषी करने से दीन होगये और राज्य न रहा तो क्या ? पर असल में हैं क्षत्रिय। इन में जो मुसल्मान हैं उन में भी चंदेल, राठौर, चौहाण और बड़गूजर आदि २ क्षत्रिय वंशी भेद चले आ रहे हैं, कोई २ कुरीतियें इस जाति में प्रचलित हैं उन का सुधार होने की आवश्यकता है। शेष विवर्ण सतखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे।

(२७९) ग्वाला—यह गोपाल शब्द का अपभ्रंश शब्द है, गौवों को पालने व चराने के कारण ग्वाल कहाये, गोपाल व ग्वाल एक ही से शब्द हैं, यह अहीर वंश का एक भेद है, विद्वानों ने इस जाति को यादववंशी माना है, किन्हीं २ विद्वानों ने इस जाति को कुछ काल पूर्व भारत की राज्याधिकारिणी बतलायी है, उज्जैन के पाल वंशी महाराज को ग्वालवंशी राजा ने पराजय किया था, यह जाति भी अपने को क्षत्रिय वंश मान्ती है, देश भेद व देश भाषा के

कारण कहीं ये गोप कहीं गोपाल, कहीं ग्वाल, कहीं ग्वाला, कहीं गोली और कहीं गोला आदि आदि कहाते हैं, शास्त्रकारों ने इस जाति की नवशायक संज्ञा भी किथी है, और नवशायकगण वैश्य वर्ण में माने जाते हैं, अतएव यह जाति या तो वैश्य वर्ण में अथवा क्षत्रिय वर्ण में हो सकती है।

परन्तु सम्पूर्ण भारत में इस जाति के विषय एक सी सम्मति नहीं है, बंगाल में इस जाति को शूद्र समझते हैं और उच्च ब्राह्मण, इनके यहां पुरोहिताई नहीं करते कराते हैं और यदि वे करें तो वे भी नीच माने जाते हैं, उपरोक्त बातों में सत्य क्या है इसका निर्णय होने में विशेष विवर्ण निज सम्मति सहित सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे, क्योंकि तब तक यह जाति भी वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों द्वारा अन्वेषण करालेगी ऐसी आशा है।

(२८०) गान्धर्व—यह युक्त प्रदेश की एक छोटी सी गान विद्या जानने वाली जाति है इस की छोटी सी लोक संख्या इलाहाबाद बनारस तथा गाजीपुर में है, वेद में गान्धर्व विद्या सामवेद में है जिस की एक श्रुति (मन्त्र) का गान तीन २ तरह से होता है याने १ गौतमम् २ पर्क्क सामम् और ३ कश्यपम्। किसी काल में जब इस देश में राजा भोज के ज़माने में सब लोग जब संस्कृत ही बोलते थे तब यह जाति सामवेद का गान जानने वाली थी परन्तु अबतो केवल नाम मात्र को राग, रागिनी, ग़ज़ल, ठुमरी, भैरवी, आदि आदि का गाना व नाचना इस जाति में रहगया है।

इनके गोत्र ये हैं १ अनरुख २ अरख ३ सीतल ४ रामसी ५ शाही-मल ६ हीवन ७ पचभैय्या ८ उधोमन ९ बहाजबन १० बनाल ११ बतु-रहा १२ भकवा १३ छत्री १४ गदवार १५ कन्नौजिया १६ कश्मीरी १७ खोदारी १८ मनहो १९ नमाहरिन २० नामिन २१ खीसी २२ राय-सन २३ रावत २४ सहमल २५ सलीयाली २६ शाही २७ सोमल आदि २

विशेष विवर्ण तथा रंडी होने की विधि आदि आदि विवर्ण अपने सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे।

(२८१) गान्धिल—यह एक व्योपारिक छोटीसी जाति है, ये लोग प्रायः सुगन्धित पदार्थों के बेचनेवाले हैं, यह जाति विशेष रूप से पंजाब में है युक्तप्रदेश में तो इस जाति की लोक संख्या इनी

गिनी सी है, अतएव आवश्यकता हुयी तो विशेष विवर्ण सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे।

(२८२) ग्रासिया—यह राजपूताना प्रान्त में जुलमी पेशा करने वाली एक जाति है अर्थात् लूट खसोट चोरी जारी करनेवाली जातियों की सूची में यह जाति लिखी गयी है।

(२८३) गिरी—यह गौड़ सम्प्रदाय के आचार्य्य पूज्यपाद शंकराचार्य्यजी महाराज के शिष्यों की मठ भेद के कारण सन्यासियों की एक जाति का नाम गिरी है, इन की दसनामी सम्प्रदाय कहाती हैं जिन के नाम ये हैं:—

१ सरस्वती २ भारती ३ पुरी ४ तीरथ ५ आश्रम ६ वन ७ गिरी ८ अरण्य ९ पर्वत और १० सागर। इन में सरस्वती भारती और पुरी इन का सम्बन्ध शृंगेरी मठ से है, तीरथ और आश्रम नामवाले सन्यासियों का सम्बन्ध द्वारकाजी के समीप शरोदा मठ से है, वन और अरण्य नामक सन्यासियों का सम्बन्ध जगन्नाथपुरी के गोवर्धन मठ से है गिरी पर्वत और सागर नाम वाले सन्यासियों का सम्बन्ध हिमालय पर्वत के जोषी मठ से है, परन्तु इन सब में केवल नाम मात्र का भेद है, सिद्धान्त भेद तनिकसा भी नहीं है शेष सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे।

(२८४) गिरधरोतव्यास—यह राजपूताना प्रदेशान्तर्गत मारवाड़ प्रदेश में पुष्करणे ब्राह्मणों में की एक जाति बतलायी गयी है, गिरधरजी राव व्यासों के एक बुजुर्ग थे जो अमरसिंहजी के यहां नौकर थे जिन्होंने अपनी स्वामी भक्ति दिखाते हुये आगरे की लड़ाई में प्राण त्याग दिये थे, वहां वे अशान्ति के कारण जलाये जाने की अपेक्षा गाड़े गये जिस से उनका नाम गिरधरपीर होगया इनके वंशवाले अब भी उनकी मान्ता करते हैं अर्थात् श्रावण शुक्ला तृतीया का दिन उनका स्मृति सूचक माना जाता है तिस दिन उनके वंशवाले कोई त्यौहार नहीं मनाते तथा पुरुष व स्त्रियें उस दिन कोई नया कपड़ा भी धारण नहीं करती हैं, मारवाड़ में दहिनी ओर

को चोंचदार पगड़ी वांधी जाती है परन्तु इनमें वाईं ओर को चोंच रख कर पगड़ी वांधी जाती है, ऐसा राज्य से उपाधि प्राप्त समुदाय ही कर सकता है न कि सर्व साधारण अतएव यह वंश वहां प्रतिष्ठित माना जाता है शेष विवर्ण ग्रन्थ में लिखेंगे।

[२८५] गिरनार—काठियावाड़ प्रान्त में जूनागढ़से दस मील की दूरी पर जैन सम्प्रदायका एक प्राचीन तीर्थ स्थान है जहां प्रति वर्ष हज़ारों जैन यात्री जाया करते हैं। यह एक गुजराती ब्राह्मणों के ८४ भेदों में से एक भेद है किसी २ विद्वान ने गुजराती ब्राह्मणों के १६० भेद वतलाये हैं उपरोक्त गिरनार पर्वत के नीचे गिरनारगढ़ एक कसवा है तहां से निकास होने के कारण गिरनार ब्राह्मण कहाये ये थोड़े व वहुत सर्वत्र ही पाये जाते हैं इन के दो भेद हैं १ जूनागढ़ गिरनार और २ चोरवदा गिरनार अर्थात् जो जूनागढ़ के आस पास के हैं वे जूनागढ़ गिरनार तथा जो चोर वद नामक कसवे के रहने वाले हैं चोरवद गिरनार कहाये यह चोरवद नगर पटन सोमनाथ तथा मंगरोल के वीच में है इनका तीसरा भेद अजक्य गिरनार भी है अजक ग्राम से निकास होने से अजक्य कहाये। इन तीनों का खान पान तो एक है परन्तु योनि सम्वन्ध एक नहीं. एक विद्वान ने इन को वहुत ही नीच लिखा है परन्तु हमारी सम्मति में यह ठीक नहीं क्योंकि ये लोग सदाचारी तथा साम व शुक्ल यजुर्वेद के मानने वाले उत्तम ब्राह्मण हैं शेष सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे।

[२८६] ग्रासिया—यह एक राजपूताना प्रान्त के पहाड़ों में रहनेवाली राजपूत जाति है आचरण भ्रष्टता तथा सदाचार विहीनता के कारण यह विगड़े हुये राजपूत कही गयीं हैं पहाड़ों में रहने के कारण विद्या ने तो इसे छूआ भी नहीं है विद्वानों की ऐसी सम्मति है कि गिर+आश्रिया मिलकर हुआ गिराश्रिया इसही का विगड़ना हुआ रूप भाषा में गिरासिया होगया जिसका अर्थ ऐसा होता है कि विपत्तिवश जिन क्षत्रियों ने अपने को पहाड़ों में छिपाकर जीव रक्षा कियी वे गिराश्रिये कहाते २ गिरासिये कहाने लगे, और वे ही पहाड़ों में निवास करते करते वहुकाल व्यतीत होने से उनकी सन्तान, उनकी सूरत शक्ल आदि २ सव वातें वदलगयीं और यह राजपूत जाति

अपनी असलियत को सदा के लिये तिलाञ्जलि दे बैठी, क्योंकि इनके खान पान व रहन सहन ने इनकी कायाही पलट दियी, भीलों की तरह तीरकमान रखना जानवरों को मार करखाना तथा पहाड़ों में से घास व लकड़ी काट कर आस पास के शहर व गावों में बेचने द्वारा निर्वाह करनाही इन्होंने अपना जीवनोद्देश्य मान रक्खा है, इनके यहां विवाहादि के उलट पलट नियम तथा इन में ब्राह्मणों द्वारा कोई कार्य्य नहीं कराया जाता है शेष विवर्ण सप्तखंडी ग्रन्थ में देखना।

[२८७] गुजराती ब्राह्मण—यह गुजरात प्रदेश की एक ब्राह्मण जाति है, यह जाति पंच द्रविड़ ब्राह्मण समुदाय में स है, ये शैव व वैश्नव सम्प्रदायी प्रायः होते हैं परन्तु एक विद्वान ने ऐसा लिखा है कि इन में अघोर शाक्त सम्प्रदायी भी हैं इन के कुल नाम ये हैं भट्ट, सुकुल, यानी उपाध्याय और व्यास। एक विद्वान ने इनके ८४ भेद तथा दूसरे ने १६० भेद लिखे हैं इनके नाम बाप बेटे के नाम सहित पुकारे जाते हैं जैसे महादेव गोविन्द शेष विवर्ण सप्तखण्डी में लिखेंगे।

(२८८) गुप्त--इसका शब्दार्थ यह होता है कि "छिपाहुवा" दूसरे यह वैश्य वर्ण बोधक एक सांकेतिक शब्द भी है यथाः—

शर्म्मेति ब्राह्मणस्योक्तम् वर्म्मेति क्षत्रसंश्रयम्।
गुप्त दासात्मकं नाम प्रशस्तं वैश्य शूद्रयोः॥

अर्थात् ब्राह्मण के नाम के अन्त में शर्म्मा शब्द, क्षत्रिय के नाम के अन्त में वर्म्मा शब्द, वैश्य के नाम के अन्त में गुप्त शब्द तथा शूद्र के नाम के अन्त में दास शब्द लगाना चाहिये। इस विषय के अनेकों प्रमाण युक्त विवर्ण शर्म्मा, शब्द के साथ लिखेंगे। ये शर्म्मा, वर्म्मा, व गुप्त शब्द आज कल आर्य्य समाज में भरती होते ही तत्काल मिल जाते हैं, शेष "आर्य्य" जाति स्थम्भ को पढ़ियेगा।

(२८९) गुड़िया—उड़ीसा प्रान्त में यह एक हलवाईगीरी करने वाली जाति है गुड़ का काम व गुड़ की मिठाई बनाने के कारण से गुड़िया नाम प्रसिद्ध हुआ यह जाति वैश्य वर्ण में है इन्हें वैश्य धर्मानुकूल वर्त्तना चाहिये।

(२१०) गुलाम कायस्थ—यह गुलाम शब्द प्रायः मुसलमानी शब्द है जिस का अर्थ मोल लिया हुआ दास ऐसा हो सकता है, वृटिश साम्राज्य के पूर्व इस देश में गुलाम रखने याने पैतृक दासानुदास रखनेकी प्रणाली थी, परन्तु वर्त्तमान वृटिश सरकारने इस अन्यायको उठादिया है, पूर्वी बंगाल में इस नामकी एक कायस्थ जाति है, बंगाल के कायस्थों के ६ मुख्य भेद हैं।

१ दक्षिणी राढी	४ वारेन्द्र
२ उत्तर राढ़ी	५ सिलहटी
३ वनगजा	६ गुलाम (Slave)

इन में गुलाम कायस्थ अभी तक बंगाल में ब्राह्मण वैद्य तथा अन्य अमीर कायस्थों के यहां घरेलू कामों के लिये सेवा करते रहते हैं, ये लोग वहां Clean caste उत्तम जाति माने जाते हैं, ऐसा ही लेख दूसरे विद्वानोंका मिला है, परन्तु जहां तक हमने सुना है यह जाति उच्च है और धन धान्य से पूरित है, अतएव द्वेपियों ने इस जाति से डाह कर के कुछ बुरा कहडाला है। शेप निर्णयान्तर सप्तखंडी ग्रन्थमें लिखेंगे।

(२११) गुरड़ा—यह एक राजपूताना प्रान्त की छोटी श्रेणी के ब्राह्मणों की एक जाति है। बांभी, वलाई, ढेड आदि अछूत जातियों के यहां की वृत्ति करना इस जाति का मुख्य काम है, ये लोग उनके यहां विवाह कराते तथा उनका दान पुण्य लेते रहते हैं। एक विद्वान की सम्मति है कि ब्रह्मा जी के पुत्र मेत्र ऋषि की संतान ये गुरड़े ब्राह्मण हैं। एक दूसरे विद्वानकी ऐसी सम्मति है कि इन ब्राह्मणों ने एक मरी हुयी गाय को उठाकर फेंक दियी थी, तब से ये पतित होगये और ब्राह्मणों में शामिल न रहे, एक तीसरे विद्वान की सम्मति है कि गर्गऋषिकी संतान इन वलाई वगैरः जातियोंका विवाह करानेको जाती थी, तब ब्रह्माजी ने उनसे केवल ब्याह कराने को कहा था और दक्षिणा न लेने की आज्ञा दियी थी, पर वे इसके विपरीत एक सूतकी कूकड़ी छिपा कर पगड़ी में धरलाये; जिस से ब्रह्मा जी ने उन से क्रोधित होकर इन्हें जाति च्युत करदिया, तब से वे गुरड़े कहाये।

एक चौथे विद्वान का ऐसा मत है कि यह ब्राह्मण जाति गुरु भक्त थी और एक समय इनके गुरू जी को किसी दुष्टने सताया उस कारण से ये लोग अपने गुरूजी को गुरूरे ! गुरूरे !! कहते थे तिसका अपभ्रंश रूप गुरुड़े होगया अर्थात् रकार बदल ड़कार होगया, शेष सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे।

(२९२) गुरु—यह एक उपाधि का नाम है, परन्तु लोगों ने इसे जाति भी मान लियी है, अर्थात् शिक्षक व उस्ताद को गुरू कहते हैं परन्तु यह शब्द कुछ विशेष अर्थ भी रखता है, याने [१] वेद पढ़ाने वाला गुरु कहाता है [२] यज्ञोपवीत संस्कार में कान में मंत्र सुनानेवाला गुरु कहाता है, वैश्नव सम्प्रदाय का आचार्य्य गुरू कहाता है [३] जो अपने से ज्ञान बल में अधिक हो वह भी गुरू कहाता है [४] तंत्र व शाक्त सम्प्रदाय का आचार्य्य मंत्र दाता भी गुरू कहाता है [५] वाम-मार्गी सम्प्रदाय का आचार्य्य स्त्री पुरुष के गुप्तांग की पूजा करने कराने वाला भी गुरू कहाता है [६] और अपने सिद्धांतों को समझाकर शिष्य करने वाला भी गुरू कहाता है। माननीय गुरुदास बेनर्जी कलकत्ता हाईकोर्ट के चीफ़ जास्टिस थे।

(२९३) गुरुवु--शैवी ब्राह्मण और शूद्र कलावतिन [गवैयी] द्वारा:—

स्टील साहब ने इस जाति को कुनबियों के बराबर मानी है और यह भी लिखा है कि:—

To be estimated below Soodras. H. L. (104)

अर्थात् इन्हें शूद्र से भी नीच मानना चाहिये इनको शिव की उपासना करना और भस्म धारण का अधिकार है तथा रुद्राक्ष की माला भी पहिन सकते हैं, जो शिव की पूजन में चढ़ावा आता है उसे ये लोग लेते हैं अतएव पुनः मिस्टर स्टील साहब लिखते हैं:—

On this last account the caste is to be held below than Soodras.

अतएव ये जाति शूद्रों से भी नीच मानी जासकती है, ये जाति दक्षिण प्रान्त की है और आज कल पुजारीपने का काम करती है। ये शिव,

मारुती और हनुमान के मन्दिरों के पुजारी होते हैं और वहां जो कुछ अन्न वस्त्र मिठाई आदि सेवकों से चढ़ावे में आता है ये लोग लेते हैं। इस प्रकार के दान पुण्य को "निवेदी" या नैवेद्य कहते हैं। ये पुजारी लोग सब जगह वेतनदार या गुमास्ते की तरह नहीं होते हैं ये लोग मास में चार बार अभिषेक उपाध्याय ब्राह्मण से कराया करते हैं जिस से उन्हें "वर्षासन" मिला करता है, इस अभिषेकोत्सव में गाजे बाजे बजते और भजन, कीर्तन होता है। उत्तरी हिन्दुस्तान व राजपूताने में पुजारियों का भी यह ही काम पाया जाता है वे प्रायः ब्राह्मण होते हैं।

(२९४) गुसांई—यह एक बंगाल प्रान्तस्थ साम्प्रदायिक जाति है युक्तप्रदेश में इस जाति की लोक संख्या थोड़ी सी ही है, यह वैश्नव सम्प्रदाय है, विद्वानों ने गोस्वामी का अपभ्रंशरूप गुसांई व गोसांई बतलाया है, इस सम्प्रदाय के आचार्य्य का नाम श्रीकृष्ण चैतन्य स्वामी था आप का प्राकृत नाम निमाई था आप न्याय के अद्वितीय विद्वान थे, बंगाल प्रान्तस्थ नदिया में आप का जन्म शकाब्द १४०७ तदनुसार सन् १४८५ ई० में हुआ था, आप के पिता का नाम पं० जगन्नाथ मिश्र था आप का विवाह वल्लभाचार्य्य की लड़की के साथ हुआ था, जब आप २४ वर्ष की उमर में पहुंचे आप को वैराग्य उत्पन्न हुआ और धार्मिक प्रचार की आकांक्षा उत्पन्न हुई तदनुसार आपने प्रचार आरम्भ किया और सम्पूर्ण गृहस्थ धर्म को एकदम त्याग दिया, छः वर्ष तक आप मथुरा व श्रीजगन्नाथजी के बीच के देशों में विचरते रहे और अन्त को श्रीजगन्नाथपुरी में स्थायी रूप से जा विराजे और योग मार्ग में प्रवृत होकर वेदान्त प्रचार करते रहे और ४२ वर्ष की उमर में याने सन् १५२७ ई० में एक दम अलोप हो गये, आप के सिद्धान्तों को संग्रह कर के आप के शिष्य कृष्णदास स्वामीने "चैतन्य चरितामृत" नामक ग्रन्थ को सन् १५६० में निर्माण किया जिसमें अपने स्वर्गवासी गुरू चैतन्य स्वामी के सिद्धान्त, शिक्षा तथा उनकी जीवन यात्रा का विवर्ण विशेष रूप से दिया हुआ है, वह सब विवर्ण सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे।

आपके सहपाठी अद्वैतानन्द तथा नित्यानन्दजी थे, वे उस समय

में महा प्रभु समझे जाते थे, वे बंगाल में महामान्य समझे जाने लगे दूसरे ६ महा पुरुष आकर वृन्दावन में बसे जिन ही से गुसांई सम्प्रदाय का प्रचार बढ़ा। और वे गोकुलिया गुसांई कहे जाने लगे, जिसका अर्थ यह होता है कि गोकुल के रहनेवाले गुसांई। वृन्दावन में ये लोग गोस्वामी कहाते हैं और कहते हैं कि गोसांई का बिगड़कर गुसांई हो गया जिस का अर्थ गौ का मालिक ऐसा होता है ये लोग श्रीकृष्ण भगवान के उपासक हैं और तदनुसार गोपालन करना इनका मुख्य कर्त्तव्य है तिस ही आधार से ये लोग गोसाईं कहाते कहाते आज कल अपने को गोस्वामी कहते व लिखते पढ़ते हैं जिस का अर्थ भी वही उपरोक्त गोसाईं के सदृश है। यह सम्प्रदाय आज सम्वत् १६७१ में २८६ वर्ष की है वल्लभाचार्य्य की सम्प्रदाय के अन्तर्गत यह एक शाखा मानी जाती है इन के आदि गुरू व आचार्य्य वल्लभाचार्य्य स्वामी हैं आप भट्ट जाति के एक तैलंग ब्राह्मण थे आप श्रीकृष्ण भगवान के बड़े उपासक व भक्त थे, अतएव आप दक्षिण से गोकुल में आविराजे और तब से उनकी सन्तान गोकुलिये गुसांई कही जाने लगी, विष्णु स्वामी सम्प्रदाय में जो बाल स्वरूप की उपासना थी उस मार्ग की कड़ाइयों को दूर कर के श्रीवल्लभाचार्य्यजी महाराजने "मैं कृष्ण व तू राधे" लोगों को ऐसा समझाकर शृंगार स्वरूप को उच्चतम कोटि तक पहुंचाया और राग भोग के आश्रय पर ही अपना अभ्युदय सुख की प्राप्ति समझी, जिसका प्रतिफल यह हुआ कि मथुरा वृन्दावन व गोकुल बर्साना राग भोग का एक अड्डा बन गया जिस से इस सम्प्रदाय की वृद्धि दिन दूनी व रात चौगुनी होती गयी और बड़े २ राजा बाबू सेठ साहूकार इस सम्प्रदाय के शिष्य होने लगे। इस शृंगार रस से धर्म के नाम पर मथुरा वृन्दावन में क्या क्या नहीं होता है, अर्थात् सब कुछ होता है। कुंजगलियों में नव योवना स्त्रियों के साथ क्या २ सुवर्त्ताव होते हैं उस को हम क्या लिखें, जिन्हें परीक्षा करनी हो वे अकेले स्वयं जाकर अथवा अपनी नवयुवतियों को लेजाकर अनुभव कर सकते हैं।

जब धनाढ्य लोग इन गुसाइयों के चेले हो गये तो भगवान के नाम पर बड़े २ विशाल मन्दिर निर्माण होने लगे और लाखों रुपैयों की

सम्पत्ति के मन्दिर व जीवकार्यें इन गुसाइयों के अर्पण होगई, तिससे लोग मुक्ति मानने लगे ॥

परन्तु विचारणीय विषय यह है कि आज से २८६ वर्ष पहिले जब श्री वल्लभाचार्य्य जी महाराज की सम्प्रदाय नहीं थी तब भी मुक्ति किसी तरह प्राप्त होती थी या नहीं ?

जहां वृन्दावन व मथुरा में गुसाइयों के ठाट बाट व गद्दियें थीं तहां राजपूताना भी खाली न रहा और उदयपुर राज्यान्तर्गत मेवाड़ प्रान्त में "नाथ द्वारा" नाम की एक प्रसिद्ध गद्दी है जहां हज़ारों रुपैये रोज़ का खर्चा है तथा जहां केशर व कस्तूरी भी चक्कियों से पिसती है, इस ही तरह मारवाड़ प्रान्तर्गत जोधपुर राज्य के गांव चोपसानी में भी गुसाइयों की एक प्रसिद्ध गद्दी है ॥

ये लोग अपने सम्बंध भट्टों के यहां करते हैं विवाह के पश्चात् वहू को उस के मां बाप के घर नहीं जाने देते हैं तथा बेटी को भी उसके सासरे न भेजकर अपने ही घरपर बेटी जंवाई को रखते हैं वह जमाई भट्ट कहाता है तथा अपनी विवाहता स्त्री से पैदा हुआ पुत्र गुसांई कहाता हैं, शेष विवर्ण सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे !, तहां ही किसी गोस्वामी जी महाराज का फ़ोटो व उनकी सूक्ष्म जीवनी भी देंगे ।

वल्लभाचारी सम्प्रदाय में प्रायः सम्पूर्ण जातियों के मनुष्य सम्मिलित हैं तब वह हिंदू धर्म्म कैसा ? और उस सम्प्रदाय की वर्ण व्यवस्था क्या होनी चाहिये ? जब वल्लभाचार्य्य की सम्प्रदाय में छोटी बड़ी सब जातियें सम्मिलित होकर गुरुदीक्षा द्वारा शुद्ध हो जाती हैं तो हिंदू मुसलमान क्यों नहीं शुद्ध करलिये जाते हैं ? यह मंडल के लिये विचारणीय विषय है, शेष ग्रन्थ में लिखेंगे ॥

(२९५) गुह—यह दक्षिणी राढ़ी ब्राह्मण तथा बन्गजा कायस्थों का भेद है ॥

(२९६) गूजर—यह भारतवर्ष की एक प्रसिद्ध व राज्याधिकारिणी जाति थी यह जाति अपने को क्षत्रिय वर्ण में मानती है परन्तु युक्तप्रदेश का साधारण जन समुदाय इस जाति को क्षत्रियवर्ण

में नहीं मानता है, वरन वहु सम्मत्यानुसार किसी २ सरकारी अफ़सर ने भी इस जाति को आठवीं श्रेणी में अन्य छोटी २ जातियों के साथ लिखी है, एक विद्वान ने इस जाति की उत्पत्ति राजपूत बाप व किसी नीच जाति की स्त्री के साथ संयोग होने से पैदा हुयी लिखी है, किसी २ विद्वान ने लिखा है कि यह जाति गायों को चुराया करती थीं इसलिये विद्वानों ने इस जाति को गोचोर कहा जिसका विगड़कर गोजर व गूजर होगया, इस जाति में कई ऐसी कुरीतियें प्रचलित हैं जिससे उच्च जाति समुदाय उन्हें उच्च माननेमें असमर्थ है हमारे मंडलका जनरल नोटिस छपतेही बाबू पतरामसिंहजी वर्मा गूजर ठिकाना फतेहचंदजी रईस महोल्ला हरनाथपुरा सहारनपुर से एक पत्र तारीख़ १२ जनवरी सन् १६१४ का लिखाहुवा आया जिस में आपने अपनी जाति के बारे में जोशीली बातें लिखी थीं उस के उत्तर में उन की सेवा में मंडल की ओर से पत्र नम्बर १५५ तारीख २२ जनवरी सन् १६१४ को भेजागया था और फिर भी दुबारा उन्हें याद दिलायी गयी परन्तु उत्तर एक का भी नहीं आया अतएव गूजर जाति के प्रकरणों में कई ग्रन्थकारोंने लिखा है कि "नाज़र गूजर मेर कुता। सोये पीछे सात मता" अर्थ तो इस का सीधाही है यदि आवश्यकता हुयी तो यह पत्रव्यवहार सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे।

जहां इस जाति के विरुद्ध हमें अनेकों प्रमाण मिले हैं तहां अनेकों प्रमाण इनके क्षत्रियत्व संबंध में भी मिले हैं क्योंकि यह नाम उपरोक्त लेखानुसार "गोचोर" शब्द का अपभ्रंश रूप नहीं है वरन "गोचार" शब्द का विगड़ा हुवा रूप है जिस का अर्थ "गायों को चराने वाला" ऐसा होता है। गायों को श्रीकृष्ण भगवान ने चरायी जो नन्दराय के यहां पले, वे यदुवंशी व नंदवंशी थे अतएव गूजरोंको किसी २ विद्वान ने क्षत्रिय वंश में माना है, एक दूसरे विद्वान ने इस जाति को यादव वंशी अहीरों की एक शाखा मानी है, एक तीसरे विद्वान ने इस जाति को भारत की राज्य करने वाली जातियों में से एक मुख्य जाति लिखी है; एक चौथे विद्वान ने लिखा है कि अहीर, जाट, गूजर आदि आदि एक ही वंश के हैं, एक पांचवें विद्वान ने लिखा है कि आज सम्वत् १६७१ में २०१३ वर्ष पहिले काबुल व भारत के बहुभागकी राज्याधि-

कारिणी जाति गूजर जाति थी, एक छठवें विद्वान ने इस जाति के भेद उपभेदों के आधार पर इस जाति को क्षत्रिय माना है। इस छोटी सी पुस्तक में अच्छे व बुरे प्रमाण कहां तक लिखे जांय क्योंकि जहां इस जाति के क्षत्रियत्व विषयक आनंद देनेवाले प्रमाण हैं तहां एक प्रतिष्ठित व उच्च पदस्थ विद्वान ने लिखा है कि कहीं कहीं गूजरों में Polyandry पोलियान्ड्री प्रचलित है अर्थात् घर में एक भाई का विवाह हो जाय तो अन्य दो चार भाइयों को फिर अपने २ विवाह करने की ज़रूरत नहीं रहती है ऐसी २ कई कुरीतियों का संग्रह हमने अपने जाति अनुसन्धान में किया है, हमने इनके ११७८ भेदों का पता लगाकर इस जाति का विवर्ण ४० पत्रों में लिखा है और चाहते हैं कि यदि यह जाति अपने पैरों के बल खड़ी होकर कुछ काम करे तो परमात्मा इस जाति का उद्धार करेगा। मंडल तो सब तरह की सहायता सम्पूर्ण जातियों को देने के लिये तय्यार है। हमारे जनरल नोटिस के अनुसार इस जाति ने अपने क्षत्रियत्व विषयक कोई भी प्रमाण मंडल को नहीं भेजे और न वर्ण व्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों द्वारा इस जाति ने पबलिक अन्वेषण ही कराया। देखें "गूजर क्षत्रिय सभा" भरतपुर तथा अन्य २ स्थानों की जाति सभायें इस ओर क्या ध्यान देती हैं ? इसही लिये बहुत से अच्छे व बुरे प्रमाणों को यहां न लिख कर निज सम्मति भी स्वाधीन रक्खी है, शेष विवर्ण सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे तहां ही किसी महानुभावी गूजर की फ़ोटो व उनकी सूक्ष्म जीवनी भी देंगे। देखें मंडल क्या निर्णय करता है !

(२१७) गूजर गौड़ ब्राह्मण—यह जाति राजपूताना की एक प्रसिद्ध गौड़ ब्राह्मण जाति का उपभेद है इस जाति की उत्पत्ति विषय भिन्न २ सम्मतियें हैं यथा-एक विद्वान लिखते हैं कि गौतम ऋषि की सन्तान गूजर गौड़ कहायी, दूसरे विद्वान का यह लेख है कि गजेन्द्र ऋषि की सन्तान गूजर गौड़ कहाये, एक तीसरे विद्वान ने हम से कहा है कि किसी गौड़ ब्राह्मण व गूजरीकी सन्तान गूजर गौड़ कहायी, चौथे विद्वान की सम्मति है कि गूजर जाति की वृती करने के कारण गौड़ ब्राह्मण गूजर गौड़ कहाये, पांचवे विद्वान की ऐसी सम्मति है कि

अफ़ग़ानिस्तान की ओर गुर्जी जाति राज्याधिकारिणी थी इस के यहां की यजमान वृती जिन जिन गौड़ों के यहां थी वे गुर्जर गौड़ कहाये, छठवें विद्वान की यह सम्मति है कि जो गौड़ ब्राह्मण गुर्जर देश आज कल का प्रसिद्ध गुजरात से निकसकर यत्रतत्र जा बसे वे गुर्जर गौड़ कहाये, जिसका बिगड़कर भाषा में गूजर गौड़ होगया, सातवें विद्वान का मत है कि "गूजर गौड़" शब्द "गोचार गौड़" का अपभ्रंश शब्द है अर्थात् वे गौड़ ब्राह्मण जो विपत्तिवश गौ चराकर निर्वाह करते थे वे गोचार गौड़ कहाते कहाते गूज़र गौड़ कहाने लग गये।

हमने इस जाति के १४७ भेदों का पता लगाया है इन के गोत्र भी गौड़ ब्राह्मणों के गोत्रों से मिलते जुलते हैं, जयपुर राज्य में ये छः न्याति भाई हैं अर्थात् कच्ची पक्की में गौड़, गूजर गौड़, दाहिमा, पारीख, सिखवाल और खंडेलवाल ये सम्मिलित हैं परन्तु सर्वत्र भारतवर्ष में नहीं। इस जाति का बहुत कुछ विवर्ण हम ने संग्रह किया है परन्तु निज सम्मति सहित मंडल के निर्णयान्तर अपने सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे।

(२१८) गूजर बनिया—यह गुर्जर बनिया का अपभ्रंश रूप है गुजरात प्रदेश के बनिये गुर्जर बनिये कहाते २ गूजर बनिये कहे जाने लगे, इन के मुख्य भेद ये हैं।

१ नागर	५ मोढ़	९ हरसोरा	१३ खदातिया
२ दिसवाल	६ लाड	१० कपोला	१४ वयादा
३ पोरवाल	७ झारोल्या	११ उर्वला	
४ गूजर	८ सरोथिया	१२ पदोलिया	

पोरवाल और नागरों में दस्सा बीसा भेद भी होता है इन वैश्यों के यहां पुरोहिताई मिश्राई व पाधाई करने वाले ब्राह्मण भी इन्हीं नामों से प्रसिद्ध हैं जैसे नागर वैश्यों के ब्राह्मण नागर ब्राह्मण कहाये, दिसवालों के दिसवाल, पोरवालों के पोरवाल और गूजरों के गूजर आदि आदि कहाते हैं। ये वैश्य प्रायः वैश्नव सम्प्रदायी व वल्लभाचारी होते हैं, आचार विचार व सदाचार से युक्त उदारभावों वाले होते हैं। शेष सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे।

(२९९) **गेजेगोरा**—यह दक्षिण देश की एक हिन्दू जाति है, इन का काम घंटी, घंटे व मंजीरे आदि तय्यार करके बेचना है। कोई २ विद्वान इस जाति को वैश्य वर्ण में लिखते हैं, युक्तप्रदेश के कसेरें ठटेरे के सदृश इस जाति का कार्य्य उस देश में है।

(३००) **गोत्र**—जब मानुषी सृष्टी बढ़ी तब ऋषियों ने विचारा कि विवाह शादियों में गड़बड़ न हो। उन्हों ने गोत्र प्रवर की परिपाटी नियत कियी कि जिस से सदा के लिये कुल व वंश के क्रम का पता लगता रहै। अतएव जो मनुष्य मानुषी सृष्टि में जिस ऋषि से उत्पन्न हुआ उस का उसही ऋषि के नाम से गोत्र प्रसिद्ध हुआ कि जिस से उसको अपने कुल का नाम सदा के लिये याद बना रहै क्योंकि हिन्दुओं के प्रत्येक कर्म कायड में गोत्र का नाम लिवाया जाता है ताकि उस की याद बनी रहे।

प्रोफ़ेसर मेक्समूलर ने गोत्र शब्द का अर्थ Cow-pen किया है अर्थात् जो पहिले जिस ऋषि से उत्पन्न हुये उनका गोत्र उस ही के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

गोत्र शब्द में दो शब्द हैं "गो+अत्र"=गोत्र हुआ जो बिगड़ कर हिन्दी भाषा में गोत कहा जाने लगा जिस का अर्थ "समुदाय" है अतएव गोत्र शब्द का अर्थ समुदाय होने से ऋषि वाचक हो गया अर्थात् जब किसी से पूछा गया कि तुम्हारा गोत्र क्या है? इस का अभिप्राय यह है, कि तुम किस ऋषि के वंश समुदाय में से हो, और परस्पर भाई बहिनों का विवाह न हो इसलिये हिन्दुओं के प्रत्येक संस्कारों में गोत्र का नाम लेने व याद रखने की परिपाटी ऋषियों ने चलायी है। शेष विवर्ण प्रमाणों सहित सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे।

(३०१) **गोलापूरब**—यह युक्त प्रदेश की एक ब्राह्मण खेती करने वाली जाति है विशेषरूप से यह जाति आगरे के ज़िले में है हम जाति अन्वेषण के लिये दो बार आगरे गये परन्तु इस जाति समुदाय का कोई भी मनुष्य ऐसा न मिला जिसे अपनी जाति सुधार का चिन्तवन हो, अतएव वर्ण व्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों द्वारा

इस जाति का अन्वेषण होने की आवश्यकता है, तब ही दृढ़ता के साथ सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखा जा सकेगा। आगरे के दक्खिनी भागों के विरथरा, चितोरा, इहतमादपुर आदि आदि क़स्बों में यह जाति बहुत है, एक विद्वान की सम्मति है कि गोलक पूर्व, का अपभ्रंश गोलापूरब है इस गोलक पूर्व" शब्द के अर्थ Bastard Brahman याने व्यभिचार से पैदा हुयी ब्राह्मण जाति का नाम है, गोला शब्द गोलक शब्द का अपभ्रंश रूप है दक्षिण में भी गोला नाम की एक जाति है, परन्तु ये लोग गोवध करते थे अतएव गोला याने नीच ब्राह्मण कहाये मनुष्य गणना के एक सुपरिण्टेण्डेण्ट ने इस जाति को Bastard castes की सूची में लिखी है।

हमने अपनी सम्मति इस जाति के साथ Reserve स्वाधीन रक्खी है अतएव विशेष विवर्ण मंडल के निर्णयान्तर अपने सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे, किसी २ विद्वान की ऐसी भी सम्मति है कि इस ब्राह्मण जाति का नज़दीकी सम्बन्ध सनाढ्य ब्राह्मणों से है क्योंकि सनाढ्यों के ग्राम तथा इनके ग्राम सब मिले जुले से हैं, गोत्र भी परस्पर कोई २ एक से ही हैं, रीति रस्म भी सनाढ्यों से मिलती जुलती सी हैं, इस जाति का कच्चा खान पान भी सनाढ्यों के शामिल है। इस जाति के ७६ भेदों का विवर्ण संग्रह किया है। इनके गोत्र १ विरथारयां २ पारिहा ३ खुसारिया ४ मथेरिया ५ बधिया आदि आदि हैं। इस जाति में जैसवार मथुरिया आदि आदि भेद भी हैं जिस से विद्वानों ने इस जाति के ब्राह्मणत्व विषय में ही सन्देह किया है इस जाति में वनियों की तरह दस्सा बीसा भेद भी होता है इस जाति के साथ सनाढ्य ब्राह्मणों का बहुत कुछ संसर्ग पाया जाता है, दीर्घदर्शिता के साथ निर्णय होना चाहिये॥

(३०२) गोला—यह जाति विशेषरूप से राजपूताने में पायी जाती है जिस प्रकार मुसल्मानों में ग़ुलाम व लौंडी होती हैं तैसे ही राजपूतों में गोला या गोली होते हैं, इनमें व उनमें किञ्चितसा ही भेद है राजपूतों में जो सदा से नौकर चाकर चले आते हैं वे कहीं पर गोला, गोली, कहीं पर चाकर चाकरिन, कहीं बांदा बांदी, कहीं पर

खवास व खवासिन और कहीं पर दरोग़ा दरोग़िन कहे जाते हैं, जैसा मुल्क, जैसी भाषा है वैसा ही इन घरेलू पैतृक नौकर चाकरों के नाम रक्खे जाते हैं, परन्तु यह गोला नाम चित्त को दुखाने वाला कठोरता का प्रयोग है, अतएव सभ्य समाज इस सत्य शब्द को अप्रिय शब्द समझकर प्रायः काम में कम लाती है। राजपूताने में जहां २ राजपूत राजे महाराजे अधिक हैं तहां २ यह जाति भी अधिक है और विशेप-रूप से दरोग़ा दरोग़िन कहाते हैं।

जो जागीर्दारों के ठिकाणे में होते हैं उनको कहीं दरोग़ा, कहीं खवास कहीं पासवान, कहीं चाकर कहीं चेला और कहीं वज़ीर कहते हैं ये लोग अपने को राजपूत बतलाते हैं इनकी उत्पत्ति के विषय में भिन्न २ मत हैं, एक विद्वान् ने हमें ऐसा बतलाया है कि वे राजपूत जिन्होंने किसी दूसरी याने अपने से किसी छोटी जाति को अपने घर में डाल लियी और उस से जो सन्तान पैदा हुयी वह गोला कहायी। एक दूसरे विद्वान ने यह सम्मति दियी है कि असल में ये लोग भी ठाकुर हैं परन्तु ज़मीदारी के न होनेसे ग़रीबी के कारण पड़दा की रीति कम होने तथा उच्च कुलों में संगपन न होने के कारण व दोनों स्त्री व पुरुप उच्च राज घरानों में पैतृक चाकरी करने के कारण गोला गोली कहाने लगे, एक तीसरे विद्वान ने यह बतलाया है कि पुराने ज़माने में स्त्री व पुरुप ग़ुलाम बनाने के लिये मोल लिये जाते थे अतएव वे ग़ुलामी करने वाले गोला कहाये एक चौथे विद्वान का ऐसा कहना है कि उन ग़ुलाम कियी हुयी स्त्री व राजपूत द्वारा जो सन्तान पैदा हुई वह गोला व दरोग़ा कहायी, एक पांचवें विद्वान ने अपना मत ऐसा बतलाया है कि दरोग़ा कोई जाति नहीं है बरन एक पद है अतएव जिस ठाकुर को व अन्य किसी को यह पद मिलगया वही दरोग़ा कहाने लगे तथा उनकी सन्तान भी दरोग़ा ही कही जाने लगी, इन भिन्न २ विद्वानों के भिन्न २ मतों में सत्य क्या है? इस का निर्णय मंडल की सम्मति पर छोड़ा जाता है, राजपूताना में गोला व दरोग़ा बहुत हैं अतएव उनके पास कोई प्रमाण हों तो मंडल के पास भेजदें।

इनके भेद व उपभेदों पर दृष्टि देने से जान पड़ता है कि इन में राठोड़, चौहाड़, बगेल, पंवार, कछवाहा, सोलंखी, गहलोत,

सीसोदिया, गोड़, गोयल, टांक, भाटी, तंवर और वड़गूजर आदि आदि हैं जिस से प्रमाणित होता है कि ये भी असल में राजपूत हैं। हमने प्रायः देखा है वड़े २ ठाकुर ठुकरों व जागीर्दारों के यहां कन्या के विवाह में गोला गोली, वांदा वांदी, चाकर चाकरिन, दरोगा दरोगिन आदि २ नाम वाले वेटीवाले की तरफ़ से वेटेवाले को दायजे में दिये जाते हैं, तथा इनकी स्त्रियों में से कोई वहुत ख़ूवसूरत होती है तो प्रायः जागीर्दार व रईस लोग उस को अपने घर में डाललेते हैं, और तव से वह कहीं पर पड़दायत जी, कहीं पर खवासिन जी कहीं पर वड़ारन जी और कहीं पर पासवान जी कहलाने लगती हैं, उसके पति का दूसरा विवाह करदिया जाता है और कहीं २ पर उनको राज्य में अच्छी २ नौकरियें व राज्य की ओर से आजीवकायें तथा उन्हें पहिनने को पांव में सोने का कड़ा भी मिल जाता है शेष विवर्ण सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे।

(३०३) गोरखा—यह राजपूताना प्रान्त की क्षत्रिय जाति का एक उपभेद है सीसोदिया व गहलोत वंश में यह जाति है। यह दो शब्दों के योग से वना है गो+रखा=गोरखा जिस का अर्थ गौ की रक्षा करने वाला ऐसा होता है, अतएव जिस गहलोत समुदाय ने गौ की रक्षार्थ लड़कर प्राण गमाये थे उन्हें "गो रक्ष" की उपाधि मिली थी वे ही भाषा भाषी लोगों द्वारा गोरखा कहे जाने लगे।

(३०४) गोरछा—यह युक्त प्रदेश की एक जाति है क्षत्रिय वर्णान्तर्गत राजपूत वंश का एक उपभेद है इन की लोक संख्या युक्त प्रदेश में ५०० से अधिक नहीं है।

(३०५) गोरत—यह राजपूताना की एक जाति है सन् १९०१ के गवर्नमेण्ट निर्धारित छठवें वर्ग में लिखी गयी है अतएव इनका वैश्य वर्ण है और इन्हें वैश्य धर्मानुसार सव काम करने चाहियें। इस जाति में एक हज़ार स्त्रियों पीछे सौ विधवा हैं।

(३०६) गोयल—यह राजपूताना प्रान्तस्थ गहलोत वंश का एक कुल भेद है, अग्रवाल वैश्यों में इस नाम का एक गोत्र भी है

राजपूताने में इन की लोक संख्या ७८१ है जिस में ४३२ पुरुष व ३४६ स्त्रियें हैं इन्हें क्षत्रिय धर्मानुसार सब कर्म करने चाहियें।

(३०७) गोरिया—यह युक्त प्रदेश की एक जाति का भेद है गौ आदि के पालन पोषण करने वाले गोरिया कहाये, जो गोरई का अपभ्रंश रूप है यह लोग राजपूताना में भी हैं, सरकारी मनुष्यगणना रिपोर्ट के अध्यक्ष ने इस जाति को मिश्रित श्रेणी के क्षत्रिय उपभेदों में लिखा है, इसलिये इस जाति को क्षत्रिय धर्मानुसार कर्म करने चाहियें।

(३०८) गोंड—यह एक मध्यप्रदेश की जाति है ये लोग अपने को हिन्दू कहते हुये भी गोमांस खाते पीते हैं अतएव ये प्रायः अपवित्र जाति मानी जाती है तौ भी ये लोग गृहस्थियों के स्पर्श दोष मुक्त कामों के लिये नौकर रक्खे जाते हैं।

(३०९) गोंड ब्राह्मण—यह एक मध्यप्रदेश की ब्राह्मण जाति का भेद है पहिले मध्यप्रदेश में गोंडों का राज्य था वर्त्तमान काल में भी जब्बलपुर से नागपुर प्रान्त के देश में गोंड ब्राह्मणों की बहुत बस्ती है इस ही से उस देश का नाम गोंडवाना भी है, और इस गोंडवाना के रहने वाले गोंड ब्राह्मण कहाये, परन्तु एक दूसरे विद्वान का ऐसा भी मत है कि इन का नाम झारा ब्राह्मण भी है क्योंकि इन का मुल्क एक विशाल जंगल से आच्छादित है। परन्तु हमें ऐसा निश्चय होता है कि ये लोग शुक्ल यजुर्वेद के मानने वाले हैं अतएव शुक्ल नाम है स्वच्छ, निर्मल, पवित्र, निर्दोष और गौर आदि आदि अतएव शुक्ल यजुर्वेद गौर यजुर्वेद ये दोनों शब्द पर्य्याय वाची हैं इस-लिये गौर यजुर्वेदी ब्राह्मण कहाते २ ये लोग गोर व गोड़ ब्राह्मण कहाने लगे, जिस का बदल कर गोंड ब्राह्मण हो गया है अतएव जो सर्वोच्च कर्म्मनिष्ठ ब्राह्मण थे वे गोंड ब्राह्मण कहाये इन की माध्यन्दिनी शाखा है, कन्वशिखा है और इन का आपस्तम्ब सूत्र है, इन में कोई २ ऋग-वेदी आश्वलायन शाखा के भी हैं ये लोग खान पान से पवित्र तथा शास्त्रधारानुसार सदाचारी ब्राह्मण समुदाय है, ये लोग वैश्नव हैं इन की विद्यास्थिती भी अच्छी है।

(३१०) गोदो—यह बंगाल प्रान्त की एक जाति है यह नाम गढ़ का अपभ्रंश है अर्थात् जो गढ़ Fort के स्वामी थे वे गोढो कहाते २ गोदो कहाये, एक दूसरे विद्वान का ऐसा कहना है कि गदा को जो धारण करते थे वह महावीर जाति गोदो कहायी और बहुत से अन्वेषण व प्रमाणों से जान पड़ता है कि यह जाति पूर्व काल में हिन्दू व मुसलमान राजा व बादशाहों के समय में बड़ी वीर जाति समझी जाती थी और फ़ौजों में भरती की जाती थी। पलासी के आस पास यह जाति आजकल ज़ुल्मी पेशा करने वाली मानी जाती है. सरकार बृटिश गवर्नमेण्ट के राज्य से पूर्व यह जाति लूट खसोट करने में प्रसिद्ध थी परन्तु ऐसी दशा इस जाति की सर्वत्र नहीं है क्योंकि बहुत से आजकल खेती व व्यापार करते हैं और मान प्रतिष्ठा भी बहुत कुछ बढ़ा लियी है इस जाति के लोग प्रायः बड़ी २ वीरता के चिन्ह प्रकट करते हैं, उच्चतम कोटि की जमनास्टिक (कसरत) करते हैं इन का वर्ण क्षत्रिय है, इन्हें क्षत्रिय धर्मानुसार कार्य्य करने चाहियें।

(३११) गौरुआ—यह एक क्षत्रिय जाति का भेद है परन्तु यह शब्द उन राजपूत जातियों को दिया गया है जिन में विधवा विवाह प्रणाली प्रचिलित है यह क्षत्रिय वंश युक्त प्रदेश के मथुरा आदि ज़िलों में भी है जो अनुमान ६०० वर्ष से जयपुर से आये हुये हैं इनके भेद कछवाहा, सीसोदिया तथा जासायत आदि आदि हैं, यह वंश दिल्ली आदि की ओर भी बहुत है, शेष विवर्ण सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखने का उद्योग करेंगे।

(३१२) गौड़ ब्राह्मण—इस नाम की दो जातियें हैं गौड़ ब्राह्मण व गौड़ क्षत्रिय अतएव यहां कुछ संक्षिप्त विवर्ण गौड़ ब्राह्मणों का लिखेंगे। गुड़ "संकोचने" इस धातु से "गौड़" शब्द बना है इस की व्युत्पत्ति ऐसी है कि "यो देहेन्द्रियादीनि स्वतपसा संकोचयति जड़ी करोतीति गुड़ः" अर्थात् जिसने अपने तपबल से देहादिक अपनी कर्मेन्द्रियों को अपने तप बल द्वारा पापाचरण से रोककर धर्माचरण में प्रवृत किर्यी, वह "गुड़" कहाया और—

गुड़स्यापत्यं गौड़ः

इस सूत्र से अपत्य अर्थ में गुड़ की सन्तान गौड़ कहायी अतएव तप वरिष्ठ ब्राह्मण गौड़ कहाये ऐसा सिद्ध होता है। परन्तु गौड़ शब्द पर अनेकों अर्थ व विद्वानों की सम्मतियें संग्रह हुयी हैं, एक विद्वान का लेख है कि गौड़ देश के रहने वाले ब्राह्मण गौड़ कहाये, दूसरे विद्वान की सम्मति है कि गोरखपुर के पास वाले गोंडा ज़िले से निकास होने के कारण गौड़ नाम हुवा, एक तीसरे विद्वान की सम्मति है किः—

वंगदेशं समारभ्य भुवने शान्तगं शिवे।
गौड़ देश समाख्यातः विंध्यस्योत्तर वासिनः॥

शक्ति संगम तन्त्रे सप्तम पटले

अर्थात् हे शिव वंगदेश से लेकर कन्या कुमारी तक तथा विन्ध्याचल पर्वत का उत्तर भाग सब देश गौड़देश कहाता है, जो सम्पूर्ण विद्याओंमें शिरोमणि था अतएव इस देश के रहने वाले ब्राह्मणों की गौड़ संज्ञा हुयी। एक चौथे विद्वान का ऐसा मत है कि बंगाल प्रान्तस्थ मालदा के ज़िले में लखनौत एक प्राचीन राजधानी थी जो आज कल एक क़सबासा रहगया है, अतएव वहां से निकास होने के कारण गौड़ संज्ञा हुयी, किसी २ विद्वान की ऐसी भी सम्मति है कि गौड़ ब्राह्मणों का प्राचीन आदि स्थान परम पवित्र कुरुक्षेत्र था तहां से निमंत्रण पाकर बंगाले को जाने से उनकी गौड़ संज्ञा हुयी।

इस प्रकार से भिन्न २ मतों का संग्रह किया है हमने गौड़ों के १४४४ भेदों का पता लगाया है जिन का उल्लेख्य सप्तखण्डी ग्रन्थ में करेंगे। गौड़ों के मुख्य भेद ये हैं। यथाः—

१ गौड़ २ गुर्जर गौड़ व गूजर गौड़ ३ दाहिमा गौड़ ४ खंडेलवाल गौड़ ५ पारीख गौड़ ६ आदि गौड़ ७ जुगाद गौड़ ८ केवल गौड़ ९ शुक्ल गौड़ १० ओझा गौड़ ११ जोषी गौड़ १२ सनाढ्य गौड़ १३ श्री गौड़ १४ आदि श्रीगौड़ १५ टेकचारा गौड़ १६ चमरगौड़ १७ हरियाना गौड़ १८ बागड़ा गौड़ १९ किरतानिया गौड़ २० सुखवाल

व सिखवाल गौड़ २१ कैथिल गौड़ २२ धर्म गौड़ २३ सिद्ध गौड़, सारस्वत गौड़ २४ कान्यकुब्ज गौड़ २५ मैथिल गौड़ २६ उत्कल गौड़ २७ कुणावी व कुन्वी गौड़ २८ चमर गौड़ २९ अभीर गौड़ ३० भट्ट गौड़ ३१ ब्राह्मण गौड़ ३२ श्रीश्री गौड़ ३३ कागजी गौड़ ३४ गन्धर्प गौड़ ३५ मोंची गौड़ ३६ दर्जी गौड़ ३७ कोली गौड़ इन सब का अन्तर क्रमानुकाल जातियों के साथ लिखेंगे। आदि गौड़ों का विवर्ण " जाति अन्वेषण " प्रथम भाग में दिया जा चुका है। मंडल के निर्णयान्तर हम निज सम्मति सहित गौड़ शब्द का विवर्ण सप्तखण्डी ग्रन्थमें लिखेंगे। एक प्रसिद्ध विद्वान की ऐसी सम्मति है कि यह उपरोक्त बातें कल्पित सी हैं क्योंकि यह गोड़ शब्द गौर शब्द से बना है अर्थात् गौर का अर्थ है श्वेत, निर्मल, स्वच्छ, शुक्ल अतएव वह ब्राह्मण समुदाय जो अपने आचरणों से महा पवित्र था वह गौर ब्राह्मण कहाते कहाते भाषा में गौड़ ब्राह्मण कहाया, एक अन्य प्रसिद्ध विद्वान का यह भी मत है कि यजुर्वेद दो तरह का है, कृष्ण यजुर्वेद व शुक्ल यजुर्वेद जो २ ब्राह्मण समुदाय अहिंसा धर्म के मानने वाले थे उन्हों ने शुक्ल यजुर्वेद द्वारा ही अपना सम्पूर्ण कर्म्म काण्ड करना कराना आरम्भ किया, वे शुक्ल यजुर्वेदी कहाते कहाते भाषा में गौर यजुर्वेदी कहाये जाकर प्रसिद्ध गौड़ कहाने लगगये, और जो शाक्त सम्प्रदायी थे उन्हों ने कृष्ण यजुर्वेद को स्वीकार कर लिया।

गौड़ों की एक गौड़ महा सभा भी है वह क़रीब १६ वर्ष से गौड़ों के चन्दे से ऊंघती हुयी काम करती है, हमने अपनी यात्रा में प्रसिद्ध २ स्थानों के गौड़ों से अनेकों बातें सभा के विरुद्ध सुनी हैं अतएव यदि वे सत्य हैं तो गौड़ महासभा को सचेत होजाकर कुम्भकर्ण की नींद त्यागनी चाहिये, गौड़ोत्पत्ति अनुसन्धान के लिये मैंने कहां २ फिर कर क्या क्या संग्रह किया है वह सब कतिपय प्रतिष्ठित गौड़ जानते ही हैं तथापि हमने गौड़ महा सभा के महा मंत्री पं० ज्योतिःप्रसाद जी एम. ए. जगाध्री को गौड़ों के विषय की कुछ बातें लिख कर उत्तर चाहा था पर महासभा की ओर से कुछ उत्तर ही नहीं आया अन्यथा हमारे गौड़ोत्पत्ति अनुसन्धान में एक बड़ी सहायता मिलती, जब उत्तर

नहीं आया तब यह ही विवर्ण बाबू नाथूलाल जी सुपरिंटेण्डेण्ट कमिश्नर्स कोर्ट अजमेर तथा पं० धनालाल जी मिश्र बी. ए. एल, एल. बी. वकील आगरा से भी कहा गया था पर आज तक गौड़ महा सभा से उत्तर नहीं आया। खैर!

मैं भी गौड़ ही हूं अतएव अपने बन्धु वर्गों की सेवा करना अपना मुख्य कर्त्तव्य जानकर पूर्ण विवर्ण मंडल के निर्णयान्तर सप्तखंडी ग्रन्थ में प्रकाशित करूंगा।

(२१३) गौड़ क्षात्रय—गौड़ शब्द के अर्थ जो ऊपर दिये जा चुके हैं उन में से क़रीब २ सब के सब अर्थ इस गौड़ शब्द के साथ भी संघटित हो सकते हैं और तैसे ही भिन्न २ सम्मतियें विद्वानों की हैं अतएव जैसा उपरोक्त गौड़ शब्द के साथ निर्णय होगा वैसा ही इस गौड़ शब्द के साथ समझना चाहिये, राजपूतों के प्रसिद्ध ३६ छत्तीस भेदों में से यह एक प्रतिष्ठित भेद है। एक समय बंगाल में इस वंश का राज्य था इस ही से बंगाल के विशेष भाग का नाम गौड़ देश व गौड़ बंगाला पड़ा। पृथिवीराज चौहाण के पीछे अजमेर का अधिकारी यह वंश भी हुआ है, सन् १८०६ में महाराज सिंधिया ने इस गौड़ वंश के राज्य को नष्ट भ्रष्ट करके अपने में "सुपार" का भाग मिला लिया।

युक्त प्रदेश के गौड़ राजपूतों के तीन भेद हैं १ भट्ट गौड़ २ बाह्मन गौड़ और ३ चमर गौड़, कोई २ विद्वान इनके चार भेद लिखते हैं और चौथे में कथेरिया गौड़ को बतलाते हैं। इन सब के विवर्ण के विषय अनेकों सम्मतियें प्राप्त हैं। शेष ग्रन्थ में देखना।

(२१४) गौतम ब्राह्मण—यह गौड़ ब्राह्मण समुदायान्तर्गत गौतम ऋषि की सन्तान गौतम ब्राह्मण हैं शास्त्रों में दो गौतमों का पता लगता है एक शृंगी ऋषि की सन्तान गौतम क्षत्रिय वंश है जिस का विवर्ण आगे को अलग लिखा गया है। परन्तु जो ब्राह्मण वर्ण के गौतम हैं वे ब्रह्मा के पुत्र हैं जिन का वर्णन शतपथ ब्राह्मण में भी आया है, शास्त्रों में इन गौतम जी का दूसरा नाम कृपाचार्य्य भी लिखा है, ऐसा भी लेख मिलता है कि शतानन्द के पुत्र गौतम ऋषि

थे. इन गौतम महाराज का विवर्ण महाभारत श्रीमद्भागवत तथा अन्य पुराणों में बहुत कुछ आया है तथा वैवस्वत मन्वन्तर के प्रसिद्ध सप्तर्षियों में से भी हैं। यथा—

अत्रिश्चैव वशिष्ठश्च कश्यपश्च महानृषिः ।
गौतमश्च भरद्वाजो विश्वामित्रोऽथ कौशिकः ॥

अर्थात् अत्रि, वशिष्ठ, कश्यप, गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र और कौशिक ये सप्तर्षि हैं इन्हीं गौतम जी महाराज की संतान भूमंडलस्थ गौतम ब्राह्मण हैं इस ब्राह्मण समुदाय में अनेकों सज्जन व सदाचारी ब्राह्मण हैं इनका बहुत कुछ विवर्ण संग्रह किया है अतएव स्थानाभाव से यहां न लिखकर विशेष विवर्ण समसंबंधी ग्रन्थ में लिखेंगे तहां ही पं० मुकन्द-राम जी फ़र्रुखाबाद व अन्य गौतम ब्राह्मण भूषणों में से दो एक सज्जनों के फ़ोटो व उनके जीवनादर्श का विवर्ण भी देंगे।

(२१५) गौतम क्षत्रिय—युक्तप्रदेश की एक क्षत्रिय जाति है ये लोग अपने को गौतम ऋषि के वंश में मानते हैं, शृंगी ऋषि गौतम ऋषि की छठवीं पीढ़ी में हुये हैं उस ही की सन्तान यह जाति है यह एक राजपूत वंश है. एक विद्वान की ऐसी सम्मति है कि शृंगी ऋषि को कन्नौज के गहरवार वंशी राजा अजयपाल की लड़की व्याही गयी थी जिस के दायजे में प्रयाग से हरद्वार तक का मुल्क इन्हें मिला था जिस से ये ब्राह्मण ऋषि द्वारा पैदा होकर राजपूत माने जाने लगे, इस विवाह से इस जाति को राजा की पदवी प्राप्त हुयी फ़तेहपुर के आस पास यह वंश "अर्गल के राजा" कहाते थे अर्गल फ़तेहपुर से पश्चिम की ओर १५ कोस की दूरी पर एक क़स्बा है परन्तु एक दूसरे विद्वान ने इस उपरोक्त लेख की सत्यता पर शंका प्रकट की है और इन का गहरवार वंशी राजा अजयपाल के यहां सम्बन्ध होना तथा शृंगी ऋषि की सन्तान होना आदि सब मिथ्या बतलाया है। अतएव मंडल के निर्णयार्थ यह एक विवादास्पद विषय है इसलिये यह जाति ब्राह्मण वर्ण में मानी जाय या क्षत्रिय वर्ण में मानी जाय अथवा दोनों

से विपरीति अन्य किसी वर्ण में, क्योंकि कहीं २ आजकल गूजर गौड़ ब्राह्मण भी अपने को गौतम ब्राह्मण बोलते हैं।?

इस जाति ने मंडल की वर्ण व्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों द्वारा अन्वेषण नहीं कराया इसलिये दृढ़ता के साथ हम भी इस जाति के विषय निज सम्मति प्रकाश करने में असमर्थ हैं क्योंकि मंडल के जनरल नोटिस के अनुसार इस जाति ने भी अपनी उत्पत्ति आदि के विषय में कोई प्रमाण मंडल को नहीं भेजे।

किसी २ विद्वान का यह भी कहना है कि इस जाति के सम्बन्ध कहीं २ अन्य क्षत्रिय वंशों में भी होते हैं इसलिये मंडल को विशेष ध्यान के साथ इस जाति का निर्णय करना चाहिये, इस जाति की सब से अधिक लोक संख्या फ़तेहपुर के ज़िले में है उस से उतर कर बलिया, गाज़ीपुर और आज़मगढ़ आदि ज़िलों में है परन्तु विशेष प्रमाण इस जाति के क्षत्रिय वर्ण विषयक मिले हैं अतएव ये उच्च क्षत्रिय वंशी हैं इस जाति का बहुत कुछ संग्रह किया है वह सब विवर्ण मंडल के निर्णयान्तर सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे तहां ही ठाकुर जगन्नाथ-सिंहजी गौतम रईस गंभीरी का फ़ोटो व उनकी जीवनी भी देंगे।

[३१६] गौंदला—यह दक्षिण देश की एक जाति है उस प्रान्त में इस जाति की लोक संख्या २३५६०२ है, इस जाति का धन्दा ताड़ी की शराब तय्यार करना व बेचना है परन्तु यह लोग इसे पीते व अपने काम में नहीं लेते हैं इन में बहुत से धनाढय पुरुष भी हैं जिन के यहां सब काम नौकर चाकर करते रहते हैं बहुत से मनुष्य अन्य अन्य बड़े २ व्यापारों में भी संलग्न हैं वर्त्तमान स्थिती के अनुसार ऐसे व्यापारी नीच जाति नहीं माने जा सकते अतएव इन का वैश्य वर्ण है इन्हें वैश्य धर्मानुसार कर्त्तव्य करना चाहिये।

[३१७] गौराहर—यह एक छोटासा राजपूत वंश है इन की आबादी रुहेलखंड तथा अलीगढ़ के ज़िले में विशेष है एक विद्वान की सम्मति है कि यह जाति चमर गौड़ क्षत्रिय वंश में से है। इस का

आदि-स्थान कन्पुड़ी है। चमर गौड़ राज वंश का विवरण कुछ थोड़ासा गौड़ राजपूत प्रकरण में लिखा जा चुका है वहां देख लेना। शेष लक्षखएडी ग्रन्थ में लिखेंगे।

[३१८] गौरी—यह तैलंग देश के व्यापारिक समुदाय में कमाठी जाति का एक भेद है यह जाति वहां सर्वोच्च समझी जाती है खान पान से बहुत ही शुद्ध तथा सदा चार युक्त हैं मान मर्य्यादा भी बहुत चढ़बढ़कर है कमाठी जाति में अन्य कोई २ लोग तो मांस शराब के खाने पीने वाले सुने गये हैं परन्तु यह समुदाय मांस शराब आदि से बिलकुल घृणा करता है अतएव ये लोग शुद्ध वैश्य हैं और इन्हें सम्पूर्ण कर्म वैश्य धर्मानुकूल करने चाहियें।

[३१९] गंगालावत पोता—यह राजपूताना की क्षत्रिय जाति में का एक कुल भेद है ये सोलंखी राजपूतों में से हैं इनकी लोक संख्या राजपूताना में बहुत कम है एक दो ठिकाणों में ही ये हैं।

[३२०] गंगोली—यह बंगाल प्रान्तस्थ राढ़ी ब्राह्मण समुदाय का एक कुल नाम है यह गंगोपाध्याय शब्द का अपभ्रंशरूप है जिस का अर्थ गंगा का सहायक पुरोहित ऐसा होता है यह कुल उस प्रान्त में प्रतिष्ठित व सदाचार युक्त कुल माना जाता है मान मर्य्यादा भी इन की वहां उच्च है महाराज बल्लालसेन ने जिन ब्राह्मणों को गंगा के आस पास के ज़िलों की उपाध्यायगीरी दियी थी वे गंगोपाध्याय कहाते २ गंगोली कहाने लगगये जिस अपभ्रंश शब्द का अर्थ गंगा के आस पास के ब्राह्मण ऐसा होता है कदाचित "गंगा अवलि" इन दो शब्दों से मिलकर गंगावलि कहाते २ भाषा में गंगोली कहाने लगगया गंगोपाध्याय का बिगड़कर गंगोली बना यह हमें तो उचित नहीं जानपड़ता है।

[३२१] गंगापुत्र—यह जाति गंगा जमुना के किनारे किनारे बसने वाली है इस का मुख्य काम नित्य प्रति स्नानार्थ आये हुये यात्रियों को अपने २ घाट पर ठहराना उन से दान पूजन व पिंड-

दान गौदान कराकर लेना, तथा चन्दन कंगा शीशा सुर्मा व तम्बाकू, चिलम आदि सामान प्रत्येक समय तय्यार रखने, इन में से जिस को जिस वस्तु की आवश्यकता हो वह वही गंगापुत्र से ले सकता है, किसी को छोड़कर, शीशा घिसा घिसाया चन्दन व सिर के बाल साफ़ करने को कंगा तथा आंखों में सुरमा आदि वस्तुओं को तो प्रायः सभी यात्री उन से प्रतिदिन लेते हैं और तम्बाकू पीनेवाले तम्बाकू तथा भंग पीनेवाले भंग उन्हीं के यहां पीया करते हैं, यात्री स्नानादि कर चुकने के उपरान्त चलते समय गंगापुत्र को यथा शक्ति दक्षिणा दे जाते हैं। ये लोग प्रायः अनपढ़ गंवार व लठैत होते हैं परन्तु ईमान्दार भी बड़े होते हैं अर्थात् इन के यहां आप कोई भी वस्तु किसी भी मूल्य की रख दीजिये फिर जैसी की तैसी सम्हाल लीजिये परन्तु सब एक से भी नहीं होते हैं, ये लोग जनेऊ पहिनते हैं और ब्राह्मण माने जाते हैं परन्तु इन की उत्पत्ति इस प्रकार से है :—

लेटाद्धीवर कन्यायां गंगातीरे च शौनकः ।
बभूव सद्योयो बालो गंगापुत्रः प्रकीर्तितः ॥

हे शौनक लेट के वीर्य्य से धीवर कन्या के साथ गंगा के किनारे सम्भोग होने से जो सन्तान पैदा हुयी वह गंगापुत्र कहायी परन्तु इस प्रमाण पर हमें तो ऐसा निश्चय होता है कि किसी द्वेषी की यह गढ़ंत है क्योंकि एक विद्वान की ऐसी सम्मति है कि भागीरथजी गंगाजी को आकाश से लेकर आये और ब्राह्मणों का पूजन किया अतएव उस समय जो सर्व श्रेष्ठ ब्राह्मण थे उन का पूजन भागीरथ ने किया और दक्षिणा में उन्हें गंगाजी की सेवा दियी और तब से वह ब्राह्मण जाति एक मात्र गंगाजी की स्वामिनी होगयी इन्हें घाटिया भी कहते हैं क्योंकि ये अपने २ घाट के मुख्य अधिकारी होते व माने जाते हैं।

असल में ये गंगापुत्र कहीं पर गौड़ ब्राह्मण, कहीं पर सरवरिये और कहीं पर कन्नौजिये होते हैं अतएव इन को छोटा नहीं मानना चाहिये, क्योंकि गंगाजी को सम्पूर्ण हिन्दू मात्र छोटी से छोटी व बड़ी से बड़ी जाति के लोग पूजते हैं तथा जिस गंगा जी का पूजन श्रीराम॰

चन्द्रजी महाराज ने किया उस परम पावनी गंगा के पुत्र छोटे माने जांय यह हमारे तो समझ में नहीं आता है, इस ही प्रकार का कार्य्य करने वाले कहीं पर गंगापुत्र कहीं पर प्रयागवाल कहींपर सार्वर्णि कहाते हैं उन सब का विवर्ण अक्षर क्रमानुकूल लिखेंगे तथा गंगापुत्रों का विशेष विवर्ण सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे।

[३२२] गंगारी—यह एक पहाड़ी ब्राह्मण जातिका भेद है ये लोग प्रायः गंगा जीके किनारे किनारे रहते हैं इन्हीं का एक भेद सारोला भी है परन्तु सारोला ब्राह्मणों का जाति पद इनकी अपेक्षा उच्च है चांदपुर और लोहाआ के रहनेवाले ब्राह्मण सारोला कहाते हैं इन में भी कुलीन अकुलीनत्व का झगड़ा है अर्थात् जो सारोले ब्राह्मण अपने से नीचे कुल के साथ विवाह करलेते हैं वे गंगारी कहाते हैं जिस का अभिप्रायएक विद्वानने ऐसा बतलाया है कि गंगा+अरि=गंगारी जिसका अर्थ यह होता है कि गंगा के दुष्मन याने जिन्हों ने उच्चत्व नीचत्व का विचार नहीं किया वे गंगारी कहाये।

सारोला ब्राह्मणों में एक भेद गेरोला भी है, सारोला ब्राह्मणों का लड़का लड़की जब किसी हराम के पैदा हुये लड़के लड़की के साथ व्याहा जाता है तब वह गंगारी गेरोला कहाते हैं और जब वे विवाहिता से पैदा हुये बालक बालिका के संग विवाह करते हैं तब वह सारोला गंगारी कही जाती है विद्वानों के ऐसे ही लेख मिले हैं तथा विद्वानों की यह भी राय है कि अलखनन्दा से परली ओर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सब ही गंगारी कहाते हैं।

इन में से विडियल लोग कंसमर्दनी देवी के पुजारी हैं और उनयाल समुदाय के लोग महिखमर्दनी, कालिका, राजराजेश्वरी आदि-आदि के पुजारी हैं।

इनके भेद, १ विड़ियल, २ दादाई, ३ उनयाल, ४ मलासी, ५ कोटयाल ६ सिमयल, ७ कन्पूड़ी, ८ नौतयाल, ९ थपलयाल, १० रातूरी, दोभाल, ११ चमोली, १२ हटवाल, १३ डवौंड़ी, १४ मालागुरी १५ कर

याल, १६ नौनी, १७ लोमाल्ली, १८ विजिलवार, १६ धुरानस, २० मनूरी, २१ भट्टावाली, २२ महीन्धा के जोषी और २३ डिमड़ी आदि आदि शेषग्रन्थ में लिखेंगे।

(३२३) गंदला—यह मुम्बई प्रान्तर्गत हैदराबाद की एक जाति है, इस जाति में मद्य खिचवाना व बिकवाने का धन्दा होता है परन्तु ये लोग उसे अपने निज के काम में नहीं लेते हैं बरन अपना आचार विचार उच्च वैश्य वर्ण कासा रखकर बहुत से उच्च वैश्य कोटि के योग्य हैं।

(३२४) गन्धरवाल—यह आदि गौड़ ब्राह्मणों का कुरुक्षेत्र में एक कुल नाम है ये वहां प्रतिष्ठित समझे जाते हैं।

(३२५) गन्धर्प गौड़—यह गुजरात प्रदेशस्थ गौड़ ब्राह्मण समुदाय का एक भेद है बाजा बजाने व गानेवालों के यहां की वृत्ति जिन गौड़ ब्राह्मणों ने करना स्वीकार कर लियी थी वे गन्धर्प गौड़ कहाये॥

(३२६) गंधी—गंध के वेचनेवाले को प्रायः गंधी कहते हैं आजकल प्रायः इस काम को करनेवाली मुसलमान जाति देखने में आती है परन्तु इतर व फुलेल के बड़े २ कारखाने आजकल कन्नौज में हैं जिनके अधिष्ठाता बड़े २ सेठ व महाजन लोग हैं, इस शब्द के कई नाम हैं जैसे इतरफ़रोश, खुशबूसाज़, इत्रसाज़, और अत्तार आदि २ नाम हैं यह जाति समुदाय युक्त प्रदेश में थोड़ासा है। अतएव इसका विवर्ण विशेष रूप से सप्तखंडी ग्रन्थ में देंगे॥

इनके पृष्ठ २१७ से २७२ तक यू० पी० आर्ट प्रिंटिंग वर्क्स
कासगंज में, मास्टर रघुनन्दनलाल जी द्वारा मुद्रित हुये।

सारांश

(निज सम्मति)

मण्डल के सभ्यविद्वानो ! आपके मण्डल में अनेकों जातियों ने विनीत आवेदन निवेदन पत्र भेजकर अपने दुखड़े का वीजक आप सब के विचारार्थ भेजा है और चाहा है कि " हमारी गर्दनों पर आरा चलते हुये बहुत वर्ष होगये हैं हम मरे नहीं हैं किन्तु खुसक रहे हैं, याने सर्वोच्च हिन्दू समुदाय ने हमें मनुष्य तो क्या ? किन्तु कुत्ते के बराबर भी नहीं समझा है, भारतवर्ष में कुत्ते की कदर है पर हमारी कदर नहीं, सर्वोच्च ब्राह्मण समुदाय हमारे यहां बेरोकटोक निमन्त्रण जीमजाँय, सम्पूर्ण संस्कार कराजाँय, दान दक्षिणा लेजाँय पर वर्णाश्रम परिपाटी में कोई हमें सङ्करवर्ण में (दोगले) कोई हमें शूद्र वर्ण में कोई हमें दासीपुत्र आदि आदि कटुवाक्यों द्वारा हमारे जी दुखाये जाते हैं परन्तु उन्हीं के समुदाय ब्राह्मण वर्ण में सैकड़ों मूर्खानन्द भाटाचार्य्य चपड़ासीगीरीकरें, पानी भरें, दूध, शराब, चमड़ा आदि की दुकान करें, रेल में गो माँस के पार्सल बुक करके लदवावें जहाजों में भक्ष्या भक्ष्य का विचार न रखकर माल उतारने चढ़ाने में नौकरी करें, रेलवे स्टेशनों पर पानी पाँडे का काम करें, बस्ता ढोवें, पास्वानी करें, दर्वानी व प्यादागीरी करें, खेती करें, मादक द्रव्यों का सेवन करें, मुसलमान ईसाइयों के यहाँ भी नौकरी करें, आदि २ अनेकों हेतु देते हुये लिखा है कि वे शूद्र क्यों नहीं मानेजाँय? उनके साथ शूद्रों का सा वर्ताव क्यों नहीं कियाजाता है ? और हमारे ही साथ इतना जोर जुलम क्यों ?" अतएव ऐसी दशा में मण्डलके प्रति

हमारा यह निवेदन है कि ज़रा आपकी समाज की दशा की ओर टुक विचारें उसकी उन्नति के साधन का चिन्तमन करें क्योंकि आजकल आए का देश अन्धकारमय है किसी को दिखाई नहीं पड़ता कि उनके चलने का कौनसा सुपथ है? सब के सब यथार्थपथ से विमुख दिखाई पड़ते हैं क्योंकि अब गुणियों की इस देश में मर्य्यादा नहीं रही है पण्डित व मूर्ख में ज़रासा भी अन्तर नहीं है क्योंकि बिना पढ़े लिखे लोग पण्डित कहाते हैं, बिना वेद के जाने ही द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी, यजुर्वेदी, ऋगवेदी, अथर्ववेदी, और सामवेदी बने बैठे हैं, नैनिक अग्निहोत्र भी नहीं जानते पर वाजपेयी बनेही बैठे हैं अतः जब बिना पढ़े ही ऐसी २ उपाधियें प्राप्त हों तब कहिये वेदविद्या कौन पढ़ेगा और कैसे ऋषियों की लाज रहेगी? इसलिये ऐसी दशा में मण्डल को निष्पक्ष भाव व उदारता के साथ हिन्दू जातियों के उद्धार पर विचार करना है क्योंकि हमें अपने जाति अन्वेषण में अनेकों ब्राह्मण विद्वानों ने यह सम्मति दी है कि कायस्थ, कुर्म्मी, अहीर, गूजर, जाट, माली, तेली, तम्बोली, कुम्हार, सुनार, लुहार, बढ़ई, कसेरे, ठठेरे, नाई, बारी आदि २ जातियें शूद्रवर्ण में हैं, परन्तु जब उनसे यह पूछागया कि क्या आप अपने इस कथन को उपरोक्त जातियोंके प्रतिष्ठित सभ्य समुदाय के सम्मुख प्रमाणित करसकते हैं? या आप हमें लिखकर देसकते हैं? पर वे विद्वान ऐसा करने को सन्नद्ध न हुये इस लिये प्रमाणित होता है कि कदाचित् यह उनका भ्रम ही हो? क्योंकि जिन ग्रन्थों के आधार पर हमें उत्पत्ति निश्चय करनी है उनमें परस्पर विरुद्ध लेखों का समावेश है जैसा कि " कुम्हार " जातिप्रकरण में इस पुस्तक के पृष्ठ १८५ से १८६ में दिग्दर्शन मात्र दिखाया है अतएव ऐसी स्थिती में देश स्थिती व राज्य स्थिती के अनुसार इन जातियों का उद्धार करना मण्डल का एक मुख्य कर्तव्य है क्योंकि। **कायस्थ** जाति भारत की एक पठित समाज व सर्वोच्च अधिकार प्राप्त जाति है, भारत का अन्य उच्च हिन्दू समुदाय इस जाति से द्वेष मानता है परन्तु हमें प्रत्यक्षरूप से इस जाति में कोई ऐसा प्रचलित कर्म नहीं दीखता है जिससे यह जाति शूद्र मानलीजाय **कुर्म्मी** जाति के विषय कोई उत्तम प्रमाण नहीं मिले जिससे यह जाति क्षत्रियवर्णं

मानलीजाय ये लोग तो अपने को क्षत्रिय बतलाते हैं। **अहीर** एक वीर व गोपालन करनेवाली जाति है इनमें के कई भेद उपभेदों से कुछेक इन में क्षत्रियवर्ण में हैं तो कुछ एक समुदाय को विद्वानों ने वैश्यवर्ण में भी लिखा है, गोपालन वैश्य का धर्म्म है अतः विद्वानों की सम्मति वैश्यत्व की भी मिलती है ऐसी दशा में इस जाति को द्विजत्व के अधिकार मिलने चाहियें क्योंकि इनमें के क्षत्रिय व वैश्य वंशज समुदाय को द्विजत्व के अधिकार दिये जानेपर भी मण्डल को विचार करना है। जैसा कि पृष्ठ १०६ व १०७ में लिखा जा चुका है तद्नुसार जहाँ तक हमें निश्चय हुवा है शूद्र व महा-शूद्रत्व का लेख ग्रन्थकार ने द्वेषभाव से लिखा है अतः अग्राह्य है क्योंकि लिखा है कि:—

चौंसठ गोत्र अहीर के, धुर गोकुल का निकास।
बेटे बाबा नन्द के, ये केल करें कैलास॥

अर्थात् अहीरों के चौंसठ गोत्र हैं और आदि में इन का गोकुल से निकास है और प्रसिद्ध नन्द वंशी क्षत्रिय हैं जो आनन्द मनाते हैं। अतः अहीर क्षत्रिय हैं ऐसा सिद्ध होता है, इन के गोत्र हुरड़ा, पचेरा, लूणवाल, पाल, गरड़, खातोल्या और लूणेरी आदि आदि। यह चौपाई भाँटों की प्राचीन पुस्तक से उद्धृत की है जिस का विवरण भविष्यत् में छपेगा। **गूजर** यह नाम भी अहीरों के अन्तर्गत क्षत्रिय वंशों में से है अतः थोड़े से दोषों व कुरीतियों के कारण यह जाति क्षत्रिय वंश से नहीं गिरायी जानी चाहिये क्योंकि इस जाति का इतिहास बहुत बड़ा व मण्डलके लक्ष्य करने योग्य है। **जाट** जाति के विषय लम्बा चौड़ा विवर्ण अन्य भाग में जकार की जातियों के साथ लिखेंगे परन्तु किन्हीं २ सङ्कीर्ण हृदय विद्वानों के लेख इस जाति के विरुद्ध मिलते हैं और कई विचित्र कुरीतियें इस जाति में प्रचलित देख कर हिन्दू समुदाय इन के क्षत्रियत्व पर सन्देह करती है परन्तु भविष्यत् में प्रमाणों द्वारा साबित किया जायगा कि यह वंश प्राचीन काल के यदुवंश के अन्तर्गत है क्योंकि प्राकृत व्या-करणानुसार ज व य परस्पर बदल जाते हैं तदनुसार यदु व यादु कहाते २ भाषा में जदु व जादु कहाने लग गये। ह्रस्व उकार की

भाषा का उच्चारण बहुत ही शीघ्रतम होता है अतएव जाद् जाद् कहाते २ भाषा भाषी लोग इस जाति को जादु जादु कहने लगे और फिर जाद् का द्कार ट्कार में बदल जाने से यह क्षत्रिय जाति "जाट" कही जाने लगी। जैसे प्रचलित भाषा में शुद्ध शब्द यश को लोग जस बोलते हैं और यज्ञद्वितीया को जमद्वितीया भी बोलते हैं इस ही तरह यमदग्नि व जमदग्नि तथा यमराज व जमराज आदि आदि अनेकों शब्द हैं। अतः मण्डल को इस जाति के उद्धार के लिये भी बहुत कुछ सुव्यवस्थायें निकालनी हैं। **माली** जाति का बहुत कुछ संसर्ग द्विजत्व के साथ मिलता है और इन में कई भेद क्षत्रियों के भी विद्यमान हैं यह जाति मथुरा के राजा कान्ह की सन्तान है इन में पँवार, फूलमाली, मथुरिया, कछवाहा, काछी आदि आदि प्रसिद्ध क्षत्रिय भेद उपभेद हैं अतः द्विजत्व के कौन २ से कर्म्मों की यह जाति अधिकारिणी है इस पर भी विचारपूर्वक व्यवस्था पास करनी है इन का विवर्ण मकार की जातियों के साथ मिलेगा। **तेली** जाति के साथ जो अन्याय हो रहा है उस का दिग्दर्शन मात्र इस पुस्तक के पृष्ठ ३८ से ४० तक में दर्शा आये हैं इस जाति में तिल व तेल का व्यापार होता है और तिल छोटे से छोटे व उच्च से उच्च यज्ञ में काम आते हैं और तेल व तिलों के पदार्थों को उच्चतम कोटि का ब्राह्मण समुदाय भी निधड़करूप से ग्रहण करता है सरकारी वस्तु तेल द्वारा बनने से पक्की आने निखरी समझी जाती है पर इतने पर भी इस जाति के हाथ का पक्का भोजन व स्पर्श किया जल ग्रहण किये जाने से भारत का पूर्वी प्रान्तस्थ द्विजसमुदाय परहेज व घृणा करता है, राजपूताना में तथा मालवा में इस जाति के हाथ का जल ही नहीं किन्तु पकान्न मिठाई पूरी आदि खायी जाती हैं अतएव मण्डल को इन की वर्णव्यवस्था पर विचार करते हुये इन के हाथ के छुये हुये जल व पूरी मिठाई खायी जानी चाहियें या नहीं इस का निर्णय करते हुये इस जाति के उद्धार की व्यवस्थाओं पर भी विचार करना है। **तम्बोली** जाति के हाथ के पान सर्वत्र सब कोई खाते हैं अतएव इस जाति को द्विजत्व की उपाधि मिलनी चाहिये और इन का व्यापर भी शुद्ध व पवित्र है इनके आचरण भी उत्तम हैं क्योंकि लिखा है कि They observe a high degree of Personal Purity. अर्थात् ये अपने आचार विचार से बहुत ही पवित्र और

उच्च हैं। यह एक निष्पक्ष कलेक्टर की राय है इन में कई भेद क्षत्रियों के से हैं और ये लोग अपने को क्षत्रिय मानते हैं अतः इस पर भी मण्डल को विचार करना है। **कुम्हार** जाति की उत्पत्ति लिख कर उन्हें शूद्र व नीच ठहराने के लिये ग्रन्थकारों ने जो विष उगल कर इस जाति को क्षति पहुंचायी है उस का सूक्ष्म सा विवर्ण इस पुस्तक के पृष्ठ १६५ में आ चुका है और इस जाति में कई क्षत्रिय वंशों का समुदाय सम्मिलित होना कई ग्रन्थकारों व अफसरों ने माना है और ऋषियों ने इस जाति को प्रजापति की पदवी भी दी है तथापि यह जाति ब्राह्मण ऋषि द्वारा उत्पन्न होने से द्विजत्व की अधिकारिणी है इस जाति के हाथ के मिट्टी के वर्तन सर्वत्र ग्रहण किये जाते हैं अतः इस जाति के द्विजत्व अधिकारों पर विचार करना होगा। **सुनार** जाति के विषय कदाचित् एक अलग ही पुस्तक होगी तथापि इस जाति के नाम के अन्तर्गत कई वर्ण के लोग हैं जो अपने पेशे व धन्दे के कारण सर्वत्र सुनार ही कहे जाते हैं अर्थात् एक समुदाय पतित, दासीपुत्र व संकरवर्णी सुनारों का है, दूसरा समुदाय उपब्राह्मण वर्ण का है जो कहीं कलार ब्राह्मण व कहीं ब्राह्मणिये सुनार कहाते हैं* तीसरा समुदाय क्षत्रिय अजमीढ़ याने मेड़ सुनारों का है† चौथा समुदाय वैश्य सुनारों का है जो स्वर्णवणिक कहाते हैं पाँचवाँ समुदाय ब्राह्मण ऋषि से उत्पन्न होने से उपब्राह्मण है इस तरह सुनार जातिमात्र को साधारणतया हिन्दू समुदाय ने अपने अज्ञान वश दासीपुत्र व संकरवर्णी तथा शूद्रवर्णी मान लिया है ऐसे ही सर्वत्र सुनार जातिमात्र भी अपने को क्षत्रिय वर्ण में मानने व समझने लगी जिस को देख कर व सुन कर हिन्दू समुदाय चौंकता है व स्वर्णकार जाति का द्विजत्व कहा जाना उन के लिये एक नई सी बात मालूम होती है हमारे अन्वेषण में हमें अनेकों नाम वाले सुनार मिले उन सब की अलग अलग मीमांसा भविष्यत् में होगी, क्योंकि यथार्थ में कई ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य समुदाय ऐसे हैं जो स्वर्णकारों के धन्दे को एक लाभकारी धन्दा समझ कर करने लग गये हैं और उन के धन्दे के कारण वे भी

---

* देखो इस पुस्तक के पृष्ठ १५७ में भी इन का विवरण आया है।

† देखो इस ही पुस्तक के पृष्ठ ६१ में लिख आये हैं।

सुनार ही कहे जाने लग गये हैं तथा कहीं कहीं वे भी विद्या के प्रभाव में अपने को सुनार ही मानने व समझने लगे हैं अतः ऐसी दशा में इन सब की यथार्थ स्थिती के आधारानुसार मण्डलको सुनारजाति के उद्धार के प्रयत्नों की मीमांसा करना है। **लुहार** जातिके विषयमें भी बड़ा विवाद है पर यह जाति विश्वकर्म वंशी उपब्राह्मण वर्ण में है ऐसे प्रमाण मिलते हैं क्योंकि इनके भेद विश्वकर्मवंशी, मथुरिया, ओझा, रावत, श्रीवास्तव, तुमरिया आदि २ अनेकों हैं याने कुल ७३६ भेद हैं जिन में से कोई समुदाय क्षत्रिय वर्णी कोई समुदाय उपब्राह्मण वर्णी कोई समुदाय शूद्र वर्णी ठहरता है प्रायः हमारे अन्वेषण में लोग इन्हें कहीं कहीं जनेऊधारी देखकर आश्चर्य्य किया करते थे और प्रमाणशून्यतारूप में इनकी निन्दा किया करते थे किसी २ विद्वान् ने इस जाति के विरुद्ध कुछ प्रमाण व हेतु भी दिये हैं अतः उन पर भी लक्ष्य करते हुये मण्डल को व्यवस्था निकालकर इस जाति के उद्धार के अर्थ भी नियम बनाने हैं। **बढ़ई** जाति के विषय में भी बहुत कुछ पुस्तकादि व आवेदन निवेदन आये हैं उन पर लक्ष्य करके इस जाति का उद्धार होना आवश्यक है क्योंकि यह जाति विश्वकर्मा ब्राह्मण ऋषि की सन्तान है लोग मिथला देश में निवास करने से अपने को मैथिल बढ़ई भी कहते हैं तथा वीर्य्य प्रधानता के नियम से ब्राह्मण ऋषि की सन्तान अपने को मानकर अपना वर्ण ब्राह्मण बतलाते हैं तद्वत् अपनी जाति को कार्य्य क्षेत्र में भी लाने के प्रयत्न में भी हैं यज्ञोपवीतादि धारण करते चले जारहे हैं, इनके विषय में कुछ थोड़ासा इस पुस्तक के पृष्ठ २२६ व २२७ में भी लिखा जाचुका है. जब विश्वकर्मा ऋषि से इस वंश की उत्पत्ति हुई तब सृष्टि में इतनी लोक संख्या नहीं थी और न मनुष्यों की आजतक की सी प्रबल वासनायेंही थीं वरन सब लोग सन्तोषी व निर्लोभी थे अतः उस समय थोड़े से शिल्पीही बस थे परन्तु धीरे धीरे मनुष्यों की इच्छायें व आवश्कतायें बढ़ने लगीं और मैथुनी सृष्टि की लोक संख्या भी बढ़ने लगी ऐसी अवस्था में थोड़े से विश्वकर्मा वंशी शिल्पीगण जातियें सुनार, बढ़ई, आदि २ मैथुनी सृष्टी के मनुष्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये पर्य्याप्त न थीं और उस समय इस काल में विश्वकर्म वंशी शिल्पियों को बड़ा लाभ होनेलगा अतः शिल्प कर्म को एक लाभदायक धन्दा समझ कर अन्य ब्राह्मण

क्षत्रिय, वैश्य शूद्र, और सङ्करवर्णी समुदाय ने भी इस धन्धे को ग्रहण करलिया जिससे काष्ठ का काम करने वाले समुदाय के छोटे मोटे मिलाकर सब भेद २६६० होगये और उन सबने ही अपने को ब्राह्मण कहना व मानना स्वीकार करलिया और भेड़िया धसान की तरह लगे जनेऊ पहिनने व तिलक छापे लगाने तथा खड़ाऊं पहिनकर परस्पर पंडितजी २ कहने व नमस्कार करने लगे यहां तकही नहीं किन्तु अन्य उच्च ब्राह्मणों के साथ भी ये लोग अन-ऽधिकारी पनसे नमस्कार करने लगे तद्वत् विवाद पड़कर मुकद्दमा हाईकोर्ट तक चला बड़े बड़े नामी संस्कृतज्ञ विद्वान् वादी प्रतिवादियों*तथा गवर्नमेन्ट की ओर से पञ्च सरपञ्च नियत किये जाकर निर्णयान्तर हुक्म निकला कि सुनारादि शिल्पियों को उच्च ब्राह्मणों के साथ नमस्कार करने का अधिकार नहीं है ‡ इसही तरह सम्पूर्ण उच्च हिन्दू समुदाय नेभी शिल्पी जातियों के साथ द्वेष व घृणा प्रकट करने में कुछ कसर न छोड़ी अर्थात् काष्ठ का काम करने वाले बढ़ई मात्र को शूद्र, संकर, पतित, दासीपुत्र आदि २ लिख मारा जिससे शिल्पी जाति की उन्नति में एक बड़ी भारी बाधा उत्पन्न होगई और बढ़इयों में का ब्राह्मण समुदाय भी जब अपने को लोगों के सामने ब्राह्मण बतलाता है तो यह लोगों को नईसी बात जचती है परन्तु निष्पक्ष भाव से विचारशक्ति को काम में लेने की आवश्यकता है क्योंकि कुछ मैथिल ब्राह्मण, कुछ गौड़ ब्राह्मण कुछ नागर ब्राह्मण और कुछ कन्नोजिये ब्राह्मण समुदाय भी हमें बढ़ईपने का काम करता हुआ मिला जिनके योनि सम्बन्ध अपने २ वर्ग में अद्यावधि चल भी रहे हैं. बहुत से चौहाण, टांग और जांगड़ा आदि २ प्रसिद्ध राजपूत वंश भी इस श्रेणी में सम्मिलित हैं, इसही तरह यथार्थ में कुछ समुदाय संकरवर्णस्थ, पतित व दासीपुत्र बढ़इयों का भी इस बढ़ई वर्ग में सम्मिलित है इसलिये सब धान बाईस पंसेरी न तोल कर इनका अलग २ निर्णय करना भी है अतः पूर्ण पर विचार करके निष्पक्ष व सत्योदार भाव से बढ़ई जाति के कल्याणार्थ भी मण्डल को बहुत कुछ निश्चय करना है। **नाई**जाति

---

* मुद्दई मुद्दाइलेह

‡ सरकारी हुक्म की असली नकल भविष्यत में देंगे। यह हुक्म सन् १७७६ जुलाई माह का है ॥

के विषय भी बहुत कुछ विचार करना है क्योंकि नाई जातिके विरुद्ध बहुत कुछ सम्मतियें मिली हैं इस जाति की उत्पत्ति एक विद्वान् ने क्षत्रिय बाप वा शूद्रा मा द्वारा लिखी है दूसरे एक आचार्य्य ने कुबेरी बाप व पट्टीकार मा द्वारा लिखी है तीसरे विद्वान् ने ब्राह्मण पिता व शूद्रा द्वारा लिखी है इसही तरह और भी दूसरे २ विद्वानों ने कुछ फेरफार करके भी लिखा है. प्राचीन काल में जो बड़े विद्वान् व तर्क शास्त्र के जानने वाले थे अतः उनका नाम न्यायी रक्खागया था जिसका बिगड़ा हुआ रूप नायी व नाई होगया इनकी विद्या बुद्धि के कारण लड़के लड़की का विवाह, शादी, सगाई व्याह आदि इन्हीं के सम्मति के अनुसार होते थे यह जाति प्रायः अभीतक इज्जतदार व प्रतिष्ठित समझी जाती है अकेली युवा बहू बेटियों को हजारों के जेवर सहित इनके साथ निधड़क रूप से भेज देते हैं प्राचीन कालमेंजितनी इस जातिकी स्थिती उत्तम थी उतनीही आज कल निकृष्ट है तथापि यह उच्चतम कोटि को पहुंचने के उद्योग में है और अपने को ब्राह्मण वर्ण में बतलाती है हिन्दू समुदाय इसके विरुद्ध है कोई इन्हें शूद्र वर्ण में. कोई सतशूद्र वर्ण में कोई संकर वर्ण में बतलाते हैं, शास्त्रीय एक नियम से यह जाति ब्राह्मण वर्ण तथा दूसरे मन्तव्य से क्षत्रिय वर्ण में ठहरती है परन्तु इनके मुख्य भेद ८८८ हैं अतएव प्रत्येक की अलग २ स्थिती को देखकर उनका वर्ण निश्चय करना है, इनमें कन्नोजिये, सरयूपारी, तथा नाई पांडे आदि भेदों का ब्राह्मणत्व से सम्बन्ध है या नहीं तथा उमर, राठोड़, गौड़, बैस और श्रीवास्तव आदि नाम वाले नाइयों का सम्बन्ध क्षत्रियत्व से है या नहीं यह मण्डल को निर्णय करना है इस जाति का विवर्ण जो संग्रह हुआ है बहुतही बड़ा है उसे भविष्यत में प्रकाशित करेंगे तथापि ग्रन्थकारों ने लिखा है कि:—

नाई दाई बैद कसाई । इनका सूतक कभी न जाई ॥

पुनः ऐसा भी पाठ मिलता है कि:– "नराणां नापितो धूर्तः स्त्रीणां वन मालिकः" इसही के भाव को लेकर भाषा का कवि लिखता है कि:–

नर में नाई पखेरू में काग।
पानी में का काछुवा तीनों दगाबाज ॥

अर्थ तो सीधाही है अतएव मण्डल से यह जाति आशा लगाये हुये है कि नाई जाति के कल्याणार्थ व्यवस्थायें निकलनी चाहियें ऐसी हमारी निजकी सम्मति जाननी चाहिये। युक्त प्रदेशीय आर्य्य सामाजिक गुरुकुल में नाइयों के लड़कों के यज्ञोपवीत करादिये गये हैं और प्रायः आर्य्यसामाजिक नायी ही जनेऊधारी हमें मिले भी हैं अतः भविष्यत के लिये इन का वर्ण निश्चय कर देना चाहिये जिससे बे रोक टोक ये लोग सुकार्य्य क्षेत्र में आजांय। **कसेरे** जातिके बारे में इस ही पुस्तक के पृष्ठ १६५ में भी लिखा जा चुका है यह जाति सर्वत्र यज्ञोपवीतधारी है, ब्राह्मण ऋषि की सन्तान होने के कारण ब्राह्मणत्व की अधिकारिणी है इन में विद्या का अभाव है अतः यह जाति अपनी असली स्थिती पर नहीं है तथापि कोई कुरीति ऐसी इस जाति में नहीं मिली कि जिस से ये द्विजत्व से सदा के लिये पतित करके गिरा दिये जांय, अतः इन पर भी विचार करना है। **दूसर** जाति के विषय में भी बहुत कुछ विचार करके निर्णय करना है इस जाति की विद्या स्थिती बहुत उन्नति मार्ग पर है अतः ये लोग अपनेको गौड़ ब्राह्मण बतलाते हैं परन्तु इनके ब्राह्मणत्व के कुछ प्रमाण हमें मिले हैं तहां वैश्यत्व के भी विशेष मिले हैं वह सब विवर्ण ढकार की जातियोंके साथ लिखेंगे तथापि यहजाति इनके आचार, विचार, रहन, सहन, कर्म्म, धर्म्म व वर्तमान स्थितीके कारण ब्राह्मणत्व की अधिकारिणी है, जैसा हम इस पुस्तक के पृष्ठ ४१ में लिख आये हैं हमें जयपुर आदि स्थानों के प्रसिद्ध दूसरों से मिलने पर भी कोई प्रमाण इस जाति के यहां से न मिले और लखनेउ की तरह हमारी जयपुर यात्रा भी निष्फल हुई, इस जाति के वैश्यत्व के पोषक जो लेख मिले हैं वे सबके सब करीब २ मुसलमान इतिहास लेखकों के हैं और उन्हींके आधारपर किन्हीं २ सरकारी अफसरोंने व ग्रन्थकारों ने भी इस जाति को वैश्यवर्ण में लिख दिया है परन्तु यह लेख द्वेष-पूर्ण-युक्त दशा का होने से अग्राह्य सा है जिस का विवर्ण इसजाति

के आद्योपान्त विवर्ण के साथ भविष्यत में प्रकाशित होगा क्योंकि यथार्थ में इसजाति की उत्पत्ति महातपस्वी च्यवन ऋषि व सुकन्या द्वारा हुई है, ऋषिजी का आश्रम गुड़गांव जिलेके रिवाड़ीसे १६ कोस की दूरी पर नारनौल से दो चार कोस पर ही कानौड़ (महेन्द्रगढ) के रास्ते में ढूसी व ढोसी एक पहाड़ी है वहां ही से इस जातिका निकासहै अतः रिवाड़ी,जयपुर,नारनौल, कानौड़, व दिल्ली आदि में ही इसजाति की विशेष लोक संख्या है युक्त प्रदेशके कई ज़िलों में भी यह जाति है पर सब यहां ही से गये हुये हैं यहां स्थानाभाव से इतना ही लिख कर विशेष विवर्ण भविष्यत में लिखेंगे। देखें मंडल इस जाति की वर्णव्यवस्था विषयक क्या निर्णय करता है? वीर्य्य प्रधानता के नियमानुसार तो यह जाति निःसंदेह ब्राह्मण वर्ण में है हमें तो ऐसाही प्रमाणित हुवा है। **माहोर** नाम की एक जाति है ये लोग अपने को वैश्य बतलाते हैं पर हमारे अन्वेषण में किसी ने इस जाति को वैश्य किसी ने क्षत्रिय तो किसी ने इन्हें द्विजत्व से गिरे हुये तथा किसी ने इस जाति को संकरवर्ण में बतलाई परन्तु अपने कथन की पुष्टि में उन लोगों ने कोई प्रमाण पेश नहीं किये जिन के आधार पर यह जाति द्विजत्व से गिराई जावे हां किसी २ ने यह युक्ति दियी कि यह शब्द "माओर" का अपभ्रंश है जिस का अर्थ मा और, बाप और होता है कदाचित् ऐसाहो या न हो? परन्तु हमारे अन्वेषण में प्रायः इस जाति के भद्रजन कहीं अपने को माहोर कहीं माहुर, कहीं महावर व कहीं मथुरिया वैश्य बतलाते थे एक योग्य विद्वान् ने हमें यह राय दियी कि यह जाति महुवार कहाते २ कहीं महुर, कहीं माहुर कहीं माहोर, कहीं माहौर,कहीं माओर,और कहीं महावर तथा कहीं मथुरिया कही जाने लगी, और महुवार का अर्थ भी उस विद्वान् ने ऐसा किया कि महुवा जिस की शराब बनती है उसके व्यापार करनेसे महुवार व महुवाल वैश्य कहाये और उस विद्वान् ने अपना नाम प्रकट कराना भी नहीं चाहा है, हमारे अन्वेषण में हम ने पता लगाया है कि यह माहोर व माहुर नाम कई जातियों में मिलता है यथाः—

माहोर कोली, माहोर सुनार, माहोर कहार, माहोर कुम्हार, माहोर

कलवार, माहोर किसान, और माहोर कोरी आदि आदि यह नाम अनेकों जातियों के साथ में मिला है अतः धर्म व्यवस्था सभा निर्णय करे कि आगरा प्रान्त के माहोर इन्ही में से कोई हैं या अन्य? क्योंकि मिस्टर C. S. W. C. सरकारी अफसरने लिखा है कि यह कलवार जाति का एक भेद है *पुनः वेही अफसर लिखतेहैं कि:—

In Agra we have the Mathuriya or "Those of Mathura," who are also called Mahajan and deal in corn, having given up the liquor trade altogether. अर्थात् आगरे में मथुरियों का पता भी लगता है जो महाजन भी कहाते हैं और अनाज का व्यवहार करते हैं जिन्हों ने शराब के धन्दे को बिल्कुल छोड़ दिया है, इस ही को पुष्ट करने के सम्बन्ध में हमारे पास शाहजहांपुर की ओर के महावर वैश्यों के भिजवाए हुए पत्र भी आये हैं जिन का मर्मांश इस प्रकार से है कि "आगरे प्रान्त के माहोरों से उच्च श्रेणी के मनुष्य परहेज करते हैं (बचाव) रखते हैं यहां तक कि उनके पात्रों से जल नहीं पीते, परन्तु यहां हमारी तरफ असद् व्यवहार कुछ नहीं है ब्राह्मणादि सब वरणों में हेल मेल खान पान यथोचित रीति से है" अतएव उपरोक्त आधारानुसार हम अपनी निज की सम्मति आगरे प्रान्त के माहोरों के प्रति कुछ न देकर मंडल के निर्णय तक स्वाधीन रखते हैं।

यह जाति सामान्यतया तो सर्वत्र ही है परन्तु विशेष रूप से इस जाति की लोक सख्या आगरा प्रान्त तथा शाहजहांपुर प्रान्त में है किन्तु इन दोनों प्रान्तों की स्थिती व जाति पद में बड़ा अन्तर है हमें विश्वासनीय श्रोतद्वारा ऐसा भी निश्चय हुवा है कि आगरा प्रान्त में जो वैश्य हैं वे महौर कहाते हैं और शाहजहांपुर तिलहर आदि ज़िलोंके आस पास रहनेवाला वैश्य समुदाय महावर कहाता है, आगरा प्रान्त के माहोरों का समीपी सम्बन्ध चौसेनी वैश्य समुदाय से बताया गया है, यह सब जो ऊपर कहा जाचुका है सर्वसाधारण का मत व सम्मतियों के आधार पर है परन्तु हमने बहुत दीर्घदर्शिता

---

* देखो C. & T. Page 107.

के साथ में अन्वेषण करने से परिणाम में उपरोक्त दोनों प्रान्तों की माहौर व महावर समुदायों में कोई कर्म्म ऐसा प्रचलित न देखा जिसके आधार पर इस जाति का नीचत्व प्रकट होकर यह जाति द्विजत्व से गिराई जाती, अतः हमारी निजकी सम्मति में यह जाति वैश्य वर्ण में नहीं है वरन क्षत्रिय वर्ण में है यद्यपि ये लोग अपने को वैश्य ही मानते व वतलाते हैं परन्तु यह ठीक नहीं क्योंकि क्षत्रिय वंश में महाउरु एक वड़े प्रतापी राजा हुये हैं उनका वंश उन्हीं के नाम पर महाउरु कहाते २ विद्या के अभाव से "माहुर" कहाने लगा। और उस माहुर का वदलते २ माहौर, महावर, माहोर, व माओर होगया जव इन नामों पर अन्य द्विज समुदाय सन्देह व संकल्प विकल्प उठाने लगी तव इन में का पठित समाज अपने को मथुरिया कहने व वताने लगा। हमारे जनरल नोटिस के अनुसार आगरा प्रान्त की इस जाति ने कोई प्रमाण नहीं दिये पर शाहजहांपुर प्रान्त वालों ने वहुतही किञ्चितसा सङ्केतमात्र वृत्तान्त लिखा है जिसका भावार्थ यहां लेलिया गया है हमें मंडल से इस जाति के कल्याणार्थ सुव्यवस्था निकाली जाने की दृढ़ आशा है विशेष विवर्ण भविष्यत में प्रकाशित किया जायगा। **पहाड़ी** ब्राह्मण नाम की एक जाति है इन की स्थिती व आचरणों की प्रायः लोगों ने प्रशंसा की है भारत के उत्तरी भाग से इस जाति का निकास है इन में गोत्र प्रणाली तथा द्विजत्व की कई रीतियें प्रचलित हैं परन्तु इस जाति में विद्या का अभाव होने से यह जाति अपनी असली दशा को भी भूले हुये है अतः इन्हें अपने को सम्हाल कर कुछ प्रचलित कुरीतियों को स्वजाति में से उठाना चाहिये मण्डल को विशेष रूप से इनका विचार करके सुव्यवस्था देना है। **भोजक** नाम की पुष्करक्षेत्र में एक जाति है यह जाति अपने को ब्राह्मण वतलाती है परन्तु अजमेर व पुष्कर क्षेत्र में प्रायः लोगों ने इनको ब्राह्मण नहीं वतलाया किसी ने इन के लिये गूजर समुदाय में से, किसी ने इन्हें मेर जाति में से वतलाया, किसी ने इनका वर्ण शूद्र वतलाया और किसी ने कुछ और किसी ने कुछ वतलाया परन्तु विशेष रूप से इन के ब्राह्मणत्व के विरुद्ध सम्मतियें मिलीं हम अन्वेषण के अर्थ पुष्करक्षेत्र में दो वार गये और अन्य जातियों के साथ २ इस जाति का अन्वेषण किया,

पुष्करक्षेत्र में दो वस्ती हैं। छोटी वस्ती व बड़ी वस्ती. अथवा छोटा वास व बड़ा वास इन दोनों छोटी बड़ी वस्तियों के लोगों में परस्पर विवाद है अर्थात् छोटी वस्ती जिसमें गौड़ व सनाढ्य ब्राह्मणों की ही अधिकता है उनका कहना है कि "बड़ी वस्ती के पण्डा लोग मेर जाति शूद्र जनेऊ डाल कर मुख से पाराशर ब्राह्मण बोल कर यात्रियों को धोका देके पाद पुजवाते हैं और उन्हें अन्न खिलाकर पापमस्तीति करते हैं, कोई शास्त्र में प्रमाण नहीं है कि ये लोग ब्राह्मण हैं अजमेर सरकारी वन्दोवस्त की तवारीख से प्रमाण पाया जाता है कि ये लोग भोपत के वंश में मेर हैं और वहुतही दलेल हैं, अतएव हम हिन्दू मात्र यात्रियों को सावधान करते हैं कि जब वे पुष्करजी के स्नान को आवें तो निर्णय करके जो ब्राह्मण सावितहो उसको पण्डा बनाना चाहिये"*हमने जहां छोटी वस्ती के मुखिया पटैलों से निश्चय किया तैसेही बड़ी वस्ती में जाकर शामलात जागीर की कमेटी के सेक्रेटरी मुन्शी अम्बालाल जी तथा भोजक जाति के महामान्य कई सज्जनों से भी पूछा पर शोक! उन्होंने अपनी पुष्टि में कोई प्रमाण पेश न किये बल्कि कहाकि "पण्डित श्रीधर के आजाने पर आपकी सेवा में मण्डल कार्य्यालय को प्रमाण भेज दिये जायेंगे" परन्तु आज अनुमान छः मास होगये कुछ भी प्रमाण नहीं आये, हां छोटी वस्ती के पटैल पं० सावित्रीप्रसादजी ने अनेकों प्रमाण व कागजात तथा इतिहासादिकों के लेख इन के ब्राह्मणत्व के विरुद्ध दिखलाये उन सब को मण्डल के निर्णयान्तर बृहद्सप्तखण्डी ग्रन्थ में देंगे तहांही निज सम्मति भी देंगे। **दर्जी** जाति के साथ भी प्रायः उच्चवर्णी समुदाय द्वेष बुद्धी रखता हुआ इस जाति को शूद्रवर्ण में बतलाई है परन्तु यह उचित नहीं है क्योंकि दर्जी जाति के सैकड़ों भेदों में से पीपावंशी और नामदेववंशी ये दो मुख्य भेद हैं ये दोनों ही क्षत्रिय ऋषियों के नाम होने से ये क्षत्रिय हैं इनका एक भेद वैश्यवर्णी दर्जियों का भी है किसी२ ग्रन्थकारने इस जाति को वैश्य वर्ण में मानी है अतः मण्डल से आशा की जाती है इनके भेदों के विवर्ण पर दृष्टि देकर निर्णय करे, क्योंकि परशुरामजी के भय से इस जाति ने अपने को द्विजत्व से छिपाया, यथाः—

---

* देखो ब्रह्मवासी २८ अगस्त सन् १८९१

क्षत्री सारि निक्षत्री कीधों; सूईले ओलो लेलीध्यों।

अर्थात् परशुरामजी के भय से अनेकों क्षत्रिय वीरों ने अपनी जीवरक्षा सूईका काम धारण करके की थी अतः मण्डल इस ओर दयायुक्त व्यवस्था दे। **धीमान्** जाति एक शिल्पकर्म करने वाली जाति है इनके कर्म धर्म व आचार अनाचार पर विचार करने से ये ब्राह्मण वर्ण में प्रतीति होते हैं। **लोहथम्ब** जाति क्षत्रिय वंश के अन्तर्गत है यह सूर्यवंशी क्षत्रिय हैं इस वंश के राजा बृहद्बल को कृष्ण भगवान ने लोहथम की पदवी दी थी यह विवर्ण महाभारत में मिलता है जिसे भविष्यत में लिखेंगे। **दाधीच** ब्राह्मण जाति के विषय में भी मण्डल को विचार करना है क्योंकि जयपुर के चौबे कृष्णचन्द्र ने गौड़ जातीय पं० मन्नालाल शिवनन्द महारवालोंके पश्चात् संवत् १९५८ के चैत्रमास के कृष्णपक्ष की तिथ्यादि के पत्रेपर टिप्पण की ठौर शिवपुराण के निम्नलिखित श्लोक को लिख दिया था किः—

दधीचि गौतमादीनां शापेनदग्ध चेतसाम्।
द्विजानां जायते श्रद्धा नैव वैदिक कर्म्मणि॥

शिवपु० विद्ये० सं० अ० २१ श्लो० ४३

चौबेजी का अर्थः—"दधीचि ऋषि के वंशजों को और गौतम के वंशजोंको वैदिक कर्म में याने वैदिक मन्त्र उच्चारण करने में अधिकार नहीं है क्योंकि ये शाप से शूद्र धर्मके अधिकारी होय के वैदिक मार्ग से विच्युत होगये हैं" परन्तु दाधीच ब्राह्मण समुदाय ने इस अर्थ को मान हानि जनक माना और तदनुसार जयपुर कौंसिल तक मुकद्दमें चले अन्त में चौबे कृष्णचन्द्र व मुन्नालाल आदिकों को मुवाफी मांगनी पड़ी अतः दोनों ही जातियों के यहाँ से पुस्तकादि हमारे पास आई हैं अतः मण्डल को सम्यक प्रकार से निर्णय करना है कि इस श्लोक का यथार्थ भावार्थ क्या है क्योंकि परस्पर लड़ना झगड़ना व द्वेष बढ़ाने से कोई लाभ नहीं। निज सम्मति सहित पूरा २ विवर्ण भविष्यत में प्रकाशित होगा। ये लोग उच्च ब्राह्मण समुदाय में से शुद्ध ब्राह्मण हैं छः न्याति भाई हैं जयपुर राज्य में गौड़ सनाढ्यों के साथ

कच्ची पक्की में सम्मिलित हैं अतः एक दूसरे के विरुद्ध मिथ्या कह कर परस्पर ब्रह्मक्लेश उत्पन्न करना उचित नहीं है हमारे अन्वेषण में लोगों ने इस श्लोक पर मण्डल द्वारा भी विचार होने की आवश्यक्ता बतलाई है। **हलवाई** जाति के विषय में थोड़ासा पृष्ठ १४३ में लिखा जाचुका है तथापि इस वैश्य जाति का उद्धार करना भी मण्डल का एक कर्तव्य है अनभिज्ञता से इसजाति के विरुद्ध किसी किसी विद्वान् ने लिखा है वह विवर्ण तथा उसका खण्डन धर्म व्यवस्था सभा में निर्णय के समय पेश किया जायगा अतः यह जाति शुद्ध वैश्य है और इन्हें वैश्य वर्णानुसार कर्म करने के अधिकार हैं। **महाजन** वैश्य जाति जिस के विषय में पृष्ठ १५५ में सङ्केत मात्र लिखा जा चुका है इस वैश्य जाति के कर्मेष्ठी व सदाचारी होते हुये भी प्रायः उच्च हिन्दू समुदाय इस से द्वेष व घृणा रखती है अतएव इस अन्याय को रुकवाने का उपाय मण्डल द्वारा आशा की जाती है क्योंकि यह जाति सुकर्म्मों में प्रवृत होने की इच्छुक है पर हिन्दू समुदाय उस में परस्पर के ईर्षा द्वेषके कारण बाधा डालता है यह शास्त्र कहता है किः—

"महाजनो येन गतस्सपन्थः"

अर्थात् जिस मार्ग से श्रेष्ठ धर्म्मात्मा व आप्त विद्वान् लोग चलें वहही पन्थ है अतएव वैश्य समुदाय में जो कर्मेष्ठी, सदाचारी समुदाय था उसे महाजन की पदवी दीगई थी। **लोधा—लोधी** यह जाति भी मण्डल से अपने उद्धार की आशा लगाये हुए हैं ये कहीं लोधा वकहीं लोधी कहाते हैं पूर्वकाल में पाप कर्मी हत्यारे समुदाय पर यह जाति रोष (क्रोध) करती थी अतः ऋषियोंने इन्हें "रोषी" कहा जिस का विगड़ा हुआ रूप लोधी होगया क्योंकि रकार व लकार दोनों सवर्गी हैं, परन्तु एक दूसरे विद्वान् का ऐसा भी मत है कि इस जाति की आर्द्रता पर कण्वाश्रम में ऋषिगण प्रसन्न होकर इन्हें "धी" (उत्तम बुद्धि) प्रदान की थी तिससे ये लोधी कहाने लगे, महाभारत में ऐसा लेख मिलता है किः—

शुद्धोसि रुद्धोसि निरञ्जनोसि संसारमाया परिवर्जनेति॥

अतः यह जाति क्रूरकर्मी जातियों से रुद्ध यानेः नाराज रहती थी

इसलिये इन्हें रुद्ध कहागया जिसका विगड़कर भाषा में रोध, लोध, रोधी, व लोधी, होगया है इस जाति का आदि स्थान नरवर है, यह क्षत्रियवंश है अनेकों स्थानों में येलोग अबतक "ठाकुर साहब" कहाते हैं, परन्तु कुछ कुर्म्मी भी कहीं २ इस जाति में आमिले हैं, और अपने को इनमें से बतलाते हैं पर इस जाति के लोग उन्हें अपने में नहीं मानते हैं राजा लछमनदास ने यह लिखकर बड़ी भूल की है कि आगरा के नीचे २ के भागों में यह जाति ऐसी नीची समझी जाती है कि इनके हाथ का छूवा जलभी कोई नहीं पीता है पर यह ठीक नहीं क्योंकि हमने गौड़ व सनाढ्य ब्राह्मणों को इनके यहां पक्की रसोई जीमते व विवाह शादी सम्पूर्ण कर्म निधड़क रूप से कराते अनेकों स्थानों में देखा है। शास्त्र व स्मृतियों में तथा अत्रिसंहिता से भी इसजाति की क्षत्रियत्वता सिद्ध है। विशेष भविष्यत में ॥

पहरी यह एक चौहाण वंशी क्षत्रिय जाति का भेद है इन का निकास जयपुर राज्यान्तर्गत खंडेला से है जो आर. पी. सी. रेलवे के श्रीमाधोपुर से ५ कोस की दूरीपर एक स्टेशन है ये क्षत्रिय पहिले राजावों के Body guard शरीर रक्षक रहा करते थे अतः ये पहरी कहे जाने लगे प्रायः शरीर संरक्षक यह ज़ाति समुदाय रक्खा जाता है जो स्वामी भक्त व सच्चे वीर होते थे अतः राजवंश के संरक्षकों को पूर्व काल में "पहरी" का पद मिला था एक कलेक्टर साहब का ऐसा लेख है कि The name is applied to a considerable sept of Rajputs etc., etc., अर्थात् यह नाम एक राजपूत वंश का है अतएव इस जाति को क्षत्रिय धर्म्मानुसार कर्म करने चाहियें इस पर व्यवस्था निकालना है क्योंकि जब परशुराम जी महाराज ने पृथिवी को २१ वार निःक्षत्रिय कियी तब इस जातिने भी उनके भय से राज्यस्थान छोड़कर पश्चिमोत्तर प्रान्त के देहरादून आदि जिलों में जा छिप कर अपनी रक्षा कियी, यथाः— ॥ सवैय्या ॥

क्षत्रिय समूल कपोत भये भृगुनायक छोपि लिये वहरी,
जेहि देश दुरे तहां वाहिमगे नृप नारि अधीर नहीं ठहरी।
तेहि नाम से वंश विख्यात भये मऊ आस प्रसिद्ध भयो पहरी ॥

अर्थ-तो इस का सीधाही है। इसका गोत्र पहाड्या खांप चौहाण निकास खंडेला तथा इनकी देवी चक्रेश्वरी माता है क्योंकि एक इतिहास वेत्ता विद्वान् लिखते हैं:-

॥ दोहा ॥

पहाड्या वंश चौहाण का, उत्पत्ति खंडेला ग्राम।
कुल देवी चक्रेश्वरी, जपे जो भगवत नाम ॥

इसका भावार्थ ऊपर आचुका है शेष विवर्ण भविष्यत में देंगे।

नोटः-इस सारांश नामक प्रकरण में हमने उन जातियों पर टिप्पणियें दी हैं जिन्होंने कि मण्डल को अपनी २ जाति विषय में प्रमाण व लेखादि भेजे हैं क्योंकि इस स्थम्भ की जातियों में से दो चार को छोड़कर सब के यहां से पुस्तक प्रमाण व लेखादि आये हैं अतः ये जातियें मण्डल की ओर टकटकी लगाये प्रतीक्षा कर रही हैं कि "देखें मण्डल इनके कल्याणार्थ क्या व्यवस्था देता है"! हम ने इन जातियों के विवर्ण को बहुत कुछ संग्रह किया है और इन जातियों ने भी यथा शक्ति कुछ न कुछ भेजाही है अतएव वह सब विवर्ण भविष्यत में अन्य भाग में प्रकाशित होगा यहां तो केवल दिग्दर्शन मात्र साङ्केतिक रूप से जातियों को आश्वासन दिया है और उनपर विशेष विचार होने की भी आवश्यकता है क्योंकि इन जातियों ने मण्डल के नियमानुसार वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर भी नहीं दिये हैं और न ये जातियें हिन्दू सार्वभौम प्रबंधकर्तृसभा की मेम्बर ही हुई है क्योंकि इनके यहां से आये हुये पुस्तक प्रमाणादि पर कई तरह की शङ्कायें व सन्देह है अतः निर्णय के समय तत्सम्बन्धी उत्तर देने के लिये इन्हें हिन्दू सार्वभौम प्रबन्धकर्तृसभा के सभासद् होकर मण्डल पर श्रद्धा व भक्ति बनाये रखना चाहिये क्योंकि मण्डल द्वारा इन जातियों के कल्याणार्थ उद्धार युक्त शास्त्रोक्त व्यवस्थायें निकलने की दृढ़ धारणा है।

किशनगढ़ राज्यवंश वृक्ष ।

१ किशनसिंह, विक्रम सम्वत १६५१ व ईस्वी सन् १५६४ में

२ सहीसमल — भारमल — ३ जगमल — ४ हरीसिंह

४ हरीसिंह
|
५ रूपसिंह
|
६ मानसिंह
|
७ राजसिंह

७ राजसिंह: सुखसिंह — फतेहसिंह — ८ सांवन्तसिंह — बहादुरसिंह — वीरसिंह

८ सांवन्तसिंह
|
९ सरदारसिंह
|
१० बहादुरसिंह

१० बहादुरसिंह: ११ विरदसिंह — बाघसिंह

११ विरदसिंह
|
१२ प्रतापसिंह
|
१३ कल्यानसिंह
|
१४ मोखमसिंह
|
१५ महाराजा पिरथीसिंह
|
१६ महाराजा शार्दूलसिंह
|
१७ कर्नल सर महाराजा मदनसिंह बहादुर
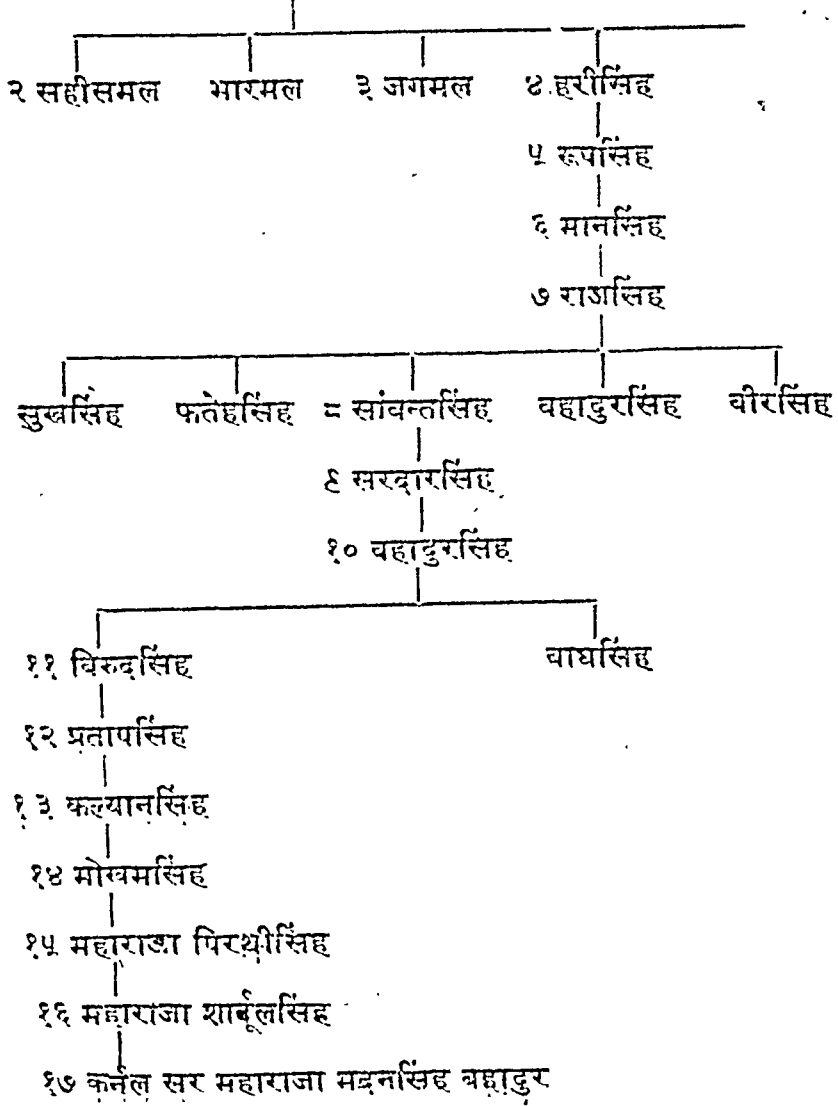
पाठक! यह अजमेर समीपस्थ किशनगढ़ रियासत की वंशावलि है इस राज्य की नींव जमाने वाले स्वर्गवासी महाराज किशनसिंह जी हुये हैं जो आदि में जोधपुर के स्वर्गवासी महाराज उदयसिंह जी के द्वितीय पुत्र थे। आप की योग्यता व वीरता तथा राजभक्ति से दिल्ली के शाहनशाह ने यह राज्य इन्हें प्रदान किया था। तब इन्होंने अपने नाम पर शहर बसा कर उस का नाम किशनगढ़ रक्खा, सन् १८१८ में इस राज्य की ट्रीटी वृटिश गवर्नमेंट के साथ हुई तदनुसार सन् १८५७ के गदर के समय भी यह राज्य सरकार का राज्य भक्त बना रहा था तब से अब तक अनेकों वार राज्यभक्ति का परिचय इस राज्य ने दिया है, यह क्षत्रियों के प्रसिद्ध राज्यवंशों में से राठाड़ राजपूत वंश का राज्यकुल है इस ही राज्य के वर्त्तमान महाराज हिज़ हाइनेस मदनसिंह जी बहादुर हैं आप ही के स्वर्गवासी महाराज ने सोमयज्ञ कराया था, इस ही तरह प्रायः इस ही राज्य में अनेकों वार बड़े २ शास्त्रयुक्त धर्म्म के कार्य्य हो चुके हैं। श्री महाराज के ही समय में इस राज्य में विद्या वृद्धि हुई है आप का हमारा परिचय श्रीमान् डाक्टर ओम्कारसिंह जी के समय का है इस से दृढ़ता के साथ कहा जा सकता है कि अन्य राजाओं की अपेक्षा धर्म्मप्रेमी धर्म्मानुरागी, सत्सङ्गी और उदारचित्त नीतिवान राजा हैं अतएव आप के फोटो सहित आप के राज्य का इतिहास व मुख्य २ घटनाओं का विवरण अलग पुस्तकाकार छपवावेंगे॥

चूंकि मण्डल का जन्म आप ही के राज्य की हद पर हुआ था अतएव कृतज्ञता रूप यह वंश वृक्ष इस पुस्तक द्वारा सेवा में सादर अर्पण किया जाता है आशा है कि यह तुच्छ भेंट स्वीकार होगी॥

मण्डल ने अपने रेज्युलेशन प्रस्ताव नम्बर ६ के अनुसार आप को मण्डल का संरक्षक माना है अतः सब प्रकार से मण्डल की सहायता होना आप ही की कृपा पर निर्भर है।

वर्त्तमान महाराज मदनसिंह जी के स्वर्गवासी पिता श्रीमान् शार्दूलसिंह जी के समय में जो धर्म्म की रक्षा व वृद्धि हुई उस का ही विवरण लिखा जाय तो बहुत कुछ स्थान चाहिये; आप के

समय में इस राज्य के दिवान बाबू श्यामसुन्दरलाल जी बी० ए० थे और वर्त्तमान महाराज मदनसिंह जी के समय में इस राज्य के दीवान पं० पोनास्कर जी एम० ए० हैं तथा प्राइवेट सेक्रेटरी बाबू रूपसिंह जी बी० ए० हैं अतएव इस समय के राज्य सुधारों की व्यवस्था का विवरण भी किशनगढ़ इतिहास के साथ भविष्यत् में प्रकाशित होगा ॥

श्रीमानों का शुभेच्छु

श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्मा

फुलेरा

॥ मण्डल के सहायकों की ॥ नामावलि ।

पं० नाथूलाल जी शर्माः—आप गौड़वंशोद्भव हैं अजमेर-मेरवाड़ा के कमिश्नर्स कोर्ट के सुपरिन्टेन्डेन्ट आप ही हैं, इतने बड़े उच्चपद पर सुशोभित होने पर भी घमण्ड व अहङ्कार ने इन्हें स्पर्श तक नहीं किया है । आप मण्डल के संरक्षक व बड़े भारी सहायक हैं अतः धन्यवाद सहित आप का फोटो व सूक्ष्म जीवनी सप्तखण्डी ग्रन्थ में देंगे ॥

पं० गोपीलाल जी रईस नदबई:—आप स्टेशन मास्टर व रामभक्त हैं अपने अमूल्य समय को मण्डल के कामों में लगा लगाते रहतेहैं, भारत की विधवाओं के उद्धार के लिये सदैव चिन्तित रहतेहैं, सरकारी सेवावृत्ती करनेके अतिरिक्त६हज़ार रामनाम नित्य जपते हैं आप सनाढ्य ब्राह्मण हैं, आपका भक्तिमार्ग अनुकरणीय है ।

पं० बृजवल्लभ जी रईस सलेमाबाद:—आप गौड़वंश शिरोमणि हैं, मण्डल के संरक्षक हैं, आप हिन्दीसाहित्यके बड़े प्रेमी हैं, संस्कृत पुस्तकों के पुस्तकालय के स्वामी हैं, मुम्बइस्थ स्वर्गवासी पं० हरिप्रसाद जी भागीरथ की प्रसिद्ध बुकडिपो के स्वामी आप ही हैं, उदार व निर्भिमानी हैं ॥

पं० छत्रपाल शर्माः—आप गौड़वंश शिरोमणि हैं साधारण सी अवस्था से बढ़कर सुखसञ्चारक कम्पनी मथुरा के स्वामी हैं, सत्यप्रिय व धर्मानुरागी हैं, आर्य्यसमाजी हैं पर उच्चकोटि के उदार विचार लिये हुये हैं, विद्यानुरागी व लोकहितैषी भी हैं तथा हिन्दीसाहित्य के प्रेमी हैं और वर्णाश्रम धर्म के पक्षी हैं ॥

पं० धर्नीराम जी मिश्र बी० ए० एल० एल० बी० वकील आगरा:—आप मण्डल की धर्म व्यवस्था सभा के सभासद् उदारभाव वाले सज्जन हैं तथा गौड़ ब्राह्मण सम्प्रदायके भूषण हैं ॥

पं० बटुकप्रसाद जी मिश्र बनारस सिटीः—आप सर्यूपारी ब्राह्मण हैं, स्वरचित ग्रन्थों से मण्डल की सहायता करते रहते हैं। आप मण्डल की धर्मव्यवस्था सभा के सभासद् हैं ॥

पं० भैरोंलाल जी वैद्य तिलोनियाः—आप दाधिमथ ब्राह्मण कुल भूषण हैं आपहां की कन्या के शुभ अवसर पर मण्डलकी स्थापना हुई था आप तन मन से मण्डल के सहायक हैं। तथा वैद्यक में अनुभवी हैं ॥

बा० गोपीलाल जी रईस तिलोनियाः— पं० भैरोंलाल जी की पुत्री के विवाहोत्सव पर मण्डल की स्थापना आप की ही हवेली में हुयी थी आप सदैव से गुणग्राही, विद्यानुरागी तथा उदार रईस हैं, और धर्मकार्य्यों में भाग लेते रहे हैं तदनुसार आप मण्डल के संरक्षक हैं ॥

बा० सोहनलाल जी गुप्त तिलोनियाः—आप वैश्य वंश भूषण हैं धर्मज्ञ व उदारचित्त भी हैं पूजन पाठ व हवनादि के बड़े प्रेमी हैं मण्डल के साथ आप की बड़ी सहानुभूति है ॥

पं० श्रीनारायणजी तिलोनियाः—आप सनाढ्यकुलोद्भव सज्जन हैं विचारवान तथा विवेकी हैं मण्डल की धर्मव्यवस्था सभा ने आप को गुणग्राही मनुष्य कहा है तथा आप हिन्दीसाहित्य के प्रेमी हैं ॥

बा० बटुकप्रसाद जी असिस्टेन्ट स्टेशन मास्टर कुचमनः—आप मण्डल के सहायक हैं, प्रायः सहायता करते रहते हैं आप क्षत्रिय कुल भूषण व नीतिज्ञ हैं।

श्रीमान् सेठ खेमराजजी श्रीकृष्णदासः—आप मारवाड़ी वैश्य हैं, श्रीवेङ्कटेश्वर स्टीम-प्रेस व श्रीवेङ्कटेश्वर समाचार के आप ही स्वामी हैं आप के चिरञ्जीव कुंवर रङ्गनाथ व श्रीनिवास बड़े अनुभवी व उदार हैं अतः सेठ जी को मण्डल ने अपना संरक्षक माना है। हिन्दी व संस्कृत साहित्य की आप ने कितनी सेवा की है

तथा आप किन २ गुणों से विभूषित हैं वह सब विवरण खण्डएडी ग्रन्थ में देंगे तहां ही आप सबोंके फोटो भी होंगे ॥

पण्डित मधुसूदनजी-भट्ट भरथपुरः—आप के धर्मानुराग व धर्म प्रियता से प्रायः वहां के सनातनी आप के कृतज्ञ हैं आप से प्रायः हमारे कार्यों में बड़ी सहायता मिलती रहती है। आप मंडलकी धर्मव्यवस्था सभा के सदस्य भी हैं।

शिल्पवत जात्युन्नति सभा जयपुरः—के सम्पूर्ण सज्जन महामान्य महाशयगण सदैव मण्डल की सहायता करते रहते हैं बाबू लक्ष्मीनारायणजी डस्ता. बाबू गोपीलालजी तथा बाबू लाल-चन्द्रजी प्रधान, उपप्रधान आदि २ महानुभावगण सबही तन, मन, धन, से मण्डल के सहायक हैं।

डाक्टर ओंकारसिंहजी वर्मा असिस्टेन्ट सर्जन भरथपुरः—आप गुणग्राही व हिन्दी साहित्य सम्मति के प्रधान हैं मण्डल से बड़ी भारी सहानुभूति रखते हैं तथा आलस्य छोड़ कर बिना फ़ीस ग़रीबों के इलाज में प्रत्येक समय उद्यत रहते हैं।

बाबू छोगालालजी रिलाविंग स्टेशनमास्टर अजमेरः—आप राजकुमार जाति के एक परोपकारी सज्जन है मंडलकी हिन्दू सार्वभौम प्रबंधकर्तृ सभा के सभासद् व एक बड़े सहायक हैं।

बाबू मेवालाल झा अजमेरः—आप व्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण समुदाय के हितेच्छुक हैं जाति हित के लिये कई बार आप हमारे पास रेल किराया खरच करके अपनी जाति विषय में प्रमाण पत्र दिखलानें आये थे और मण्डल के बड़े सहायकों में से आप एक हैं।

बाबू किशनलालजी स्टेशन मास्टर सांभरः—आप महेश्वरी वंश शिरोमणि हैं आप विचार शील व वेदान्त पक्षमें विवेकी हैं, जाति हित, जाति साधन, तथा लोकोपकार को लिये हुये मण्डल की स्थापना के उत्तेजक व मण्डल की हिन्दू सार्वभौम प्रबंधकर्तृ सभा के प्रधान आपही हैं।

डाक्टर किशोरीलालजी भरथपुरः—आप भरथपुर जेल अस्पताल के इन्चार्ज हैं आप कुमारवंश में से हैं मण्डल के सहायक व हिन्दू सार्वभौम प्रबंधकर्तृ सभा के मेम्बर हैं उदारभाव लिये हुये हैं॥

बाबू माताप्रसादजी वर्मा आनरेरी मजिस्ट्रेट बनारसः—आप इक्ष्वाकुवंशी क्षत्रिय हैं देशहित व स्वजातिहित के लिये आप तन, मन, से लगे हुये हैं मण्डल की सहायता तन, मन, व धन से करने का वचन आपने दिया है आपका विशेष परिचय भविष्यत में देंगे।

बाबू जानकीप्रसादजी गुप्त सेंथाल जिला बरेलीः—आप गहोई वैश्य हैं विचारशील व सज्जन हैं मण्डल के सहायक हैं सदैव जातिहित में चिंतित रहते हैं।

श्रीमान् राव बलबीरसिंहजी यादवः—आप रिवाड़ी अभीर वंश शिरोमणि हैं रिवाड़ी के स्वर्गवासी राव तुलारामजी के पौत्र व राव युधिष्ठरजी के पुत्र हैं सरकार गवर्नमेन्ट में भी आप का मान्य है आप मण्डल के संरक्षक हैं शेषविवर्ण भविष्यत में आपके पुरुषाओं की फोटो व जीवनी सहित लिखेंगे।

बाबू सहदेवलालजी डीघा ज़िला पटनाः—आप उस प्रान्त में महामान्य हैं स्वजाति सेवा तथा जाति हित में सदैव तत्पर रहते हैं आपने मण्डल की बहुत कुछ सेवा करने का वचन दियाहै।

बाबू अयोध्याप्रसादजी वर्मा चुनारः—आप को० हित-कारिणी सभा के कार्यकर्ता हैं स्वजाति सेवा में मग्न हैं आप के पत्र जो मण्डल को प्राप्त हुयेहैं उनमें लोकोपकार व मण्डल की सहायता का रस टपकता है आप क्षत्रिय वीर हैं॥

बाबू छेदालालजी महता फर्रुखाबादः—आप तो आपही हैं धार्मिक भाव, उदारता व लोकोपकार के गुणों से परिपूर्ण आर्द्र-हृदय हैं, जाति अन्वेषण का अङ्कुर आज से १५ वर्ष पहिले हमारे हृदय में पैदा कराने वाले आपही हैं, जात्युत्पत्त्यादि ग्रन्थों को प्रकाश करने की उत्तेजना देने वाले भी आपही हैं, काछी, मुराव, कोइरी

और कछुवाहा आदि २ समुदायों की हित चिन्ता में सदैव लगेरहते हैं, परोपकार दृष्टि से आप आंखों की सम्पूर्ण बिमारियों को दूर करने वाला सुरमा गरीबों को मुफ्त बांटते हैं आप मण्डल की हिन्दू सार्वभौम प्रबंधकर्तृ सभा के मेम्बर व मंडल के आप आनरेरी पुस्तक एजेन्ट हैं अतः मण्डलके पुस्तक भी आपके यहां मिलेंगे, आप का शेष परिचय आप के फोटो सहित भविष्यत में देंगे।

बाबू सङ्कटाप्रसादजी बनारसः—आप हलवाई सभा के मन्त्री हैं आप मंडल के सहायकों में से हैं हलवाई जाति की उन्नत्यर्थ आप हलवाई वैश्यहितैषी समाचार पत्र निकालते हैं हलवाई जाति का विवरण सूक्ष्म सा "कन्दू" जाति प्रकरण में लिख आये हैं क्यों-कि ये लोग असल में वैश्य हैं हलवाईपने का धन्धा करते हैं। इन के आचार विचार व प्रत्येक रीति भांति को देखने से ये वैश्य ही कहे जा सकते हैं "हम उच्च और सम्पूर्ण संसार नीच" आदि सङ्कीर्ण भावों को रखने वाले कतिपय विद्वानों ने इन के विरुद्ध कुछ का कुछ लिख मारा है उस सब विवरणकी मीमांसा भविष्यत् में करेंगे॥

बा० वंशीधर जी वर्मा स्वर्णकार जलालीः— आप वैदिक सनातन धर्म सभा के मन्त्री हैं, स्वजाति सेवा के उद्योग में रहते हैं, देशहित के भावों को लिये हुये हैं उद्योगी व स्वजाति-हितैषी भी हैं। मंडल से सहानुभूति रखते हैं॥

लाला वृन्दावन जी रईस दाल वाले कानपुरः— आप साहू वैश्य महासभा के एक प्रतिष्ठित मेम्बर हैं उदारचित्त व धर्मज्ञ हैं आप ने मंडल की सहायता का वचन दिया है॥

लाला चिरंजीलाल जी महाजन कासगंजः— आप स्वर्गवासी लाला तुलसीराम जी के चिरंजीव पुत्र हैं यथा नाम तथा गुण हैं, यज्ञोपवीतधारी व सन्ध्योपासन अग्निहोत्र के कर्त्ता हैं आप की जाति का विवरण इस पुस्तक के पृष्ठ १५५ में कुछ लिखा गया है, कलवार जाति के अन्तर्गत महाजन समुदाय व एटा फर्रु-खाबाद अलीगढ़ आदि आदि ज़िलों के महाजनों में पृथिवी आकाश का सा भेद है। अर्थात् ये लोग शुद्ध वैश्य हैं द्वेषभाव से लोग इस जाति के महत्व को देख कर इन के लाञ्छिन लगाते हैं॥

AN ARCHISM AND OUR DUTY.
अराजकता और हमारा कर्तव्य
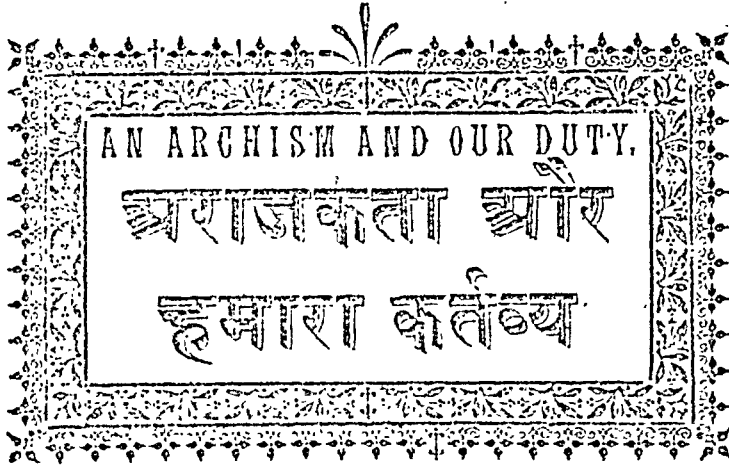
मण्डल के सभ्यजन ! आप को मण्डल के सभासद् होकर जहाँ "हिन्दूधर्म व वर्णव्यवस्था" पर मीमांसापूर्वक निर्णय करना है तहाँ सब से प्रथम आपका यह भी कर्तव्य है कि आप अपने मण्डलद्वारा छोटे २ ट्रेक्ट व पुस्तक प्रचार से ऐसा उद्योग करें कि जिससे भारत की प्रजा का प्रेम अपने राजकर्म्मचारियों के साथ बढ़े, नर-हत्या, दुष्कर्म एवम् घृणित कार्य्य देश में नहीं तथा राजा के प्रति घृणा व राजद्रोह अथवा घृणित कार्य्य करें जिस से आप के मण्डल की ओर से सरकार को एक बड़ी भारी सहायता मिले, क्योंकि जिस देश में सदा कलह व राजद्रोह तथा अशान्ति फैली रहती है वह देश कभी भी उन्नति को प्राप्त नहीं हो सकता है. अतएव देश में सदा शान्ति रहे ऐसा उद्योग मण्डलद्वारा होना चाहिये। क्योंकि सन् १६०५ से भारत के कुछ अदूरदर्शी, अविचारी नवयुवकों के चित्तों में अराजकता व बम आदि द्वारा नरहत्या के चिन्ह दृष्टि पड़ते हैं अतएव इन कुभाव व दुरेच्छाओं को भारत से समूल नष्ट करना करवाना एक मात्र मण्डल का मुख्य उद्देश्य जानना चाहिये तथा मण्डल के उद्योगद्वारा उन अविचारी नवयुवकों को यह समझादेना अत्यावश्यक है कि:—

नहिं कर्म्माणि क्षीयन्ते कल्प कोटि शतैरपि ।
अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाऽशुभम् ॥

अर्थात् तुम्हारे शुभ व अशुभ किये हुये कर्म्मों का फल क्रोड़ों कल्प वर्ष बीतने पर भी बिना भोगे नहीं रहेगा, और तुम उस पाप के फल को बिना भोगे नहीं बच सकोगे अतएव कतिपय अदूरदर्शी कुविचारी नवयुवक जो आजकल कहीं २ पर अंग्रेजों के प्रति हत्या-काण्ड में लगे देखे जाते हैं उन्हें यह समझ लेना चाहिये कि वे परमात्मा के न्याय से अपने कुकर्मों के लिये अवश्य दण्डित होंगे और यदि बम आदि के चलाने व अंग्रेज़ों के सङ्ग द्रोह करके अंग्रेज़ों के राज्य को वे उखेड़ डालने के प्रयत्न में हों तो ऐसा करना सरासर भूल व बालू पर भीत बनाना है क्योंकि भारत का राज्य जो अंग्रेज़ जाति के हाथ में है वह हमा तुम्हा का दिया हुआ नहीं है वरन सम्पूर्ण पृथिवी मात्र के राजा धिराज भगवान का दिया हुआ है. अतएव जब तक अंग्रेज़ों पर भगवान का अनुग्रह है तब तक हम लाखों ही बम क्यों न चलावें अंग्रेज़ोंका एक बालभी बांका नहीं होसकेगा इस लिये हमारे देशवासियोंका यह कर्त्तव्य है कि यथा शक्ति तन मन धन से हम सदैव सरकार अंग्रेज़ के सहायक व शुभेच्छु बने रहें इस ही में हमारा कल्याण है ॥

अतएव हमारे देश के नेता व नव युवकों को देशोन्नति के लिये बम चलाना, राजद्रोह, अराजकता और हत्याकांड को त्याग कर देशहित के लिये विद्याप्रचार, गोरक्षा, देश में प्राथमिक-शिक्षा (Primary free education) तथा भारतवर्ष के स्त्री समुदाय की जड़ता को दूर करने में लगना चाहिये यह ही नहीं भारतवर्ष के लाखों अनाथ बच्चे बच्ची स्त्री पुरुष जो अकाल के समय मृत्यु के ग्रास हो जाते हैं उन की सहायता के लिये एक बृहत् फन्ड इकट्ठा करना चाहिये, भारतवर्ष की देशी लाखों विधवाओं के पातिव्रत-धर्म्म की रक्षार्थ समुचित प्रबन्ध करना आवश्यक है, देश के ग़रीब कृषकों में प्राथमिक-शिक्षा के साथ साथ कृषि शिक्षा का प्रचार कर नवीन पद्धति सिखलायी जावे, देश में सम्पूर्ण प्रकार के आर्ट्स् लाने का उद्योग होना चाहिये दूर देशों में जाकर नाना प्रकार की डिग्रियें प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को बड़ी बड़ी स्कालरशिप देने के लिये समुचित प्रबन्ध करना, देश के लाखों क्रोड़ों बीमार जो पूरी पूरी सहायता व औषधि के अभाव में इस लोक से सदा के लिये पयान

कर जाते हैं उन की सहायतार्थ आयुर्वैदिक जड़ी बूटियों की सस्ती व प्राचीन औषधालय स्थापित करना, देश में कला-कौशल व वाणिज्य का प्रचार करना, देश में Vegetarian & Temper--ance Societies फलाहार करने व मादक द्रव्यों से बचाने वाली संस्थायें खोलनी चाहियें ॥

अतएव हत्याकांड, राजद्रोह, अंग्रेज़ों के प्रति घृणा व बम प्रयोगादि निन्दनीय व कुकर्मों को त्याग कर जहां अंग्रेज़ों के शत्रुओं के समक्ष जहाँ अंग्रेज़ों का पसीना गिरे तहां अंग्रेज़ सरकार की रक्षार्थ हमें खून बहा देना चाहिये तब ही देश का कल्याण होगा, क्योंकि प्रजा सम्पूर्ण धर्म कर्म व सुख चैन राजा की कृपा पर निर्भर हैं क्योंकि लिखा है कि **राजा ही धर्म्मस्य कारणम्** अर्थात् राजा ही धर्म का एक मुख्य कारण है अतएव राजा को अप्रसन्न करना मानो भगवान को अप्रसन्न कर देना है इसलिये राजा के दुख में हमें दुखी और राजा के सुख में हमें सुखी होना चाहिये ॥

सरकार का नम्र सेवक

श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्मा

महामन्त्री हिं० ध० व० व्य० मण्डल

फुलेरा—जयपुर

नोटः—प्रेस के कर्म्मचारियों की असावधानी के कारण कई जगह कई भद्दी अशुद्धियें रह गयी हैं अतः पाठक "शुद्धाऽशुद्ध" पत्र को देख कर पढ़ें ॥

शुद्धाऽशुद्ध पत्रम् ॥

अशुद्ध	शुद्ध	पंक्ति	पृष्ठाङ्क
विपयक	विपयक	४	१
Regulation	Resolution	६	१
अनाधिकारपिन	अनधिकारीपन	२०	३
स	से	,,	,,
हां	हों	१	४
ऋपिया	ऋपियों	२४	७
Rint	Print	२५	१३
शाक	शोक	१	६१
जात अन्वपरण	जाति अन्वेपरण	२८	१८
अन्येपरणार्थ	अन्वेपरणार्थ	२६	१६
या	आया	३	२२
प	पर	३	,,
माथर	माथुर	२४	,,
सनार	सुनार	२७	,,
श्रामान् कामेश्वर	श्रीमन्कामेश्वर	२५	२४
वतपाड़ा	रावतपाड़ा	,,	,,
स	से	२३	,,
ऽहृतवान	ऽकृतवान	२६	२७
मच्छपा	चचुपा	२४	३०
नवनैतिक	अवैतनिक	१४	३१
jelous	Zelous	२७	३२
वहुपरिश्रम	वहुपरिश्रमं	१५	३४
साय	साथ	११	३६
विपत्तिवश	विपत्तिवश	७	४०
वहीखाते	वहीखाते	१२	४८
ह	है	१५	४६
विपय	विषयक	३	५०
रचियता	रचयिता	८	५०
नाइव	नाइव	३	५१
Ibbctson	Ibbetson	२३	५१
वनिया	वनिया	३	५८
एकसौ	ग्यारसौ	४	६०
नवीन	नवीन नवीन	१५	,,
अविष्कार	आविष्कार	,,	,,
विपत्तियों	विपत्तियों	१८	,,
वनानी	वनानी	१०	६१
के	की	२८	,,
जाये	जावे	,,	,,
गोभक्ति	गोभक्त	५	६२

अशुद्ध	शुद्ध	पङ्क्ति	पृष्ठाङ्क
वरमा	वरुना	२०	६५
देशस्तिथी	देशस्थिति	४	६८
विमार	विमार	६	७०
मेहतर याने भंगी करते-जाति भेद रहितता से होते		१०	७०
मंगी	भंगी	२७	७०
नातियें	जातियें	२१	७०
सा	सो	६	७१
तथा	...	१६	७१
चाहिये	चाहियें	१२	७१
वाल	बाल	५	७३
वालिकाश्रों	बालिकाओं	११	,,
२४००५	२४·५	४	,,
का	की	१०	,,
सेवह	संख्या	११	,,
द्वारा	द्वार	१८	,,
व्यवस्थों	व्यवस्थाओं	२३	,,
विलयती	विलायती	४	७५
सप्तदूपखडी	सप्तखण्डी	२	७६
जयगा	जायगा	३	,,
कल्पद्रम	कल्पद्रुम	७	,,
वाकी	बाकी	१७	,,
करने	करना	७	७७
पर	......	१५	,,
वश्य	वैश्य	३	७९
गोविन्दजी	गोविन्दसिंहजी	२८	८०
वाधी	बांधी	४	८१
भटका	झटका	१३	८१
पञ्चद्वविड़	पञ्चद्रविड़	८	८२
पुरुप	पुरुष	८	८३
प्रातष्ठत	प्रतिष्ठित	१	८७
यहां	वहां	१४	,,
श्रथ	अर्थ	९	८९
नपश्र	अपना	२०	८९
सरुप	रूप	२	९१
दुख	दुख को	१४	९२
प्रतिष्ठा	प्रतिष्ठा है	७	९४
वेदान्तशास्त्रवेन्ता	वेदान्तशास्त्रवेत्ता	१५	९६
पैद	पैदा	१६	९८
द्राविड़	द्रविड़	२१	,,
राज्य	राज्य की	२५	,,
श्रार	और	१	९९
वे	ये	१५	१०१

अशुद्ध	शुद्ध	पंक्ति	पृष्ठाङ्क
अलखगीर	अलखगिरि	२१	,,
माग	मांग	२४	,,
दरवाजे	दरवाजे	३	१०२
उन्ह	उन्हें	१८	,,
आञ्चार्यो	आञ्चार्यों	६	१०३
द्रविण	द्रविड़	१२	,,
मृदुभासी	मृदुभाषी	१३	,,
गौरव का	गौरव के	२६	,,
वंस	वंश	२	१०४
सामरि	सौभरि	२३	१०५
लागे	लोग	२५	१०८
का	की	२८	१०६
सम्मलित	सम्मिलित	१७	११२
लिया है	लियी है	२७	११३
मिलत	मिलता	११	११४
यहा	यहां	२०	११४
जिन्हों	जिन्होंने	५	१२८
मैथिलों	विश्वकर्मवंशीमैथिलों	१४	१३१
उनका	उनकी	२५	१३३
गयी	गयीं	२६	,,
यद	यह	२५	१३५
हागा	होगा	५	१३६
विवण	विवर्ण	२	१४५
मुर्गो	मुर्गों	१०	,,
आर	और	१२	,,
य	ये	१३	,,
क	के	१५	,,
का	को	२१	१४८
११५	१५२	०	१५२
Lower	Lower race	२६	१६१
ह	है	६	१६७
कायस्य	कायस्थ	३	१७६
इस जाति	इन जातियों	६	१८०
जाति की	जाति की मा	४	१८३
इनक	इनके	१	१८४
था	थे	३	१८६
उसने	उन्होंने	,,	,,
तरह	तरह के	४	१६१
रखमे का	रखने के	५	,,
कियाई	टिकियाई	८	,,
कहाती	कहाती है	२३	१६३
यह जाति	इस जाति	१	१६४

अशुद्ध	शुद्ध	पंक्ति	पृष्ठाङ्क
घड़े २	चड़े २	१३	”
जाति का	जाति को	२८	१९५
में	में नहीं	२६	१९६
Park	Pork	२४	१९७
कन्या के	व कन्या के	२७	१९९
यलसेन	मलसैन	१	२००
परंपारा	परंपरा	१०	”
खेलनीय	खेलनों	१८	२०४
फुर्कों	कूर्कों	२५	”
चड़े नगरे	बड़नगरे	७	२०६
पखार	पखारन	४	२०७
भी	……..	१६	२११
सत्रिय	क्षत्रिय	२	२१४
एक साती	एक साही	१	२१६
गगतम	भगतम	४	”
खाये	खांयें	७	”
सारभौम	सार्वभौम	१	२२१
काते	……	१८	२२२
ऐसा है	ऐसा होता है.	१०	२२४
उनका	इनका	२३	२२६
रच की	दक्ष की	९	२३०
निज से	जिससे	२३	”
सकाचार	सदाचार	२२	२४७
बिगड़ना	बिगड़ा हुआ	२५	”
विपत्तिवश	विपत्तिवश	२६	”
स	से	९	२४८
स्थापी	स्थायी	२१	२५१
कन्पूड़ी	कन्यूड़ी	१	२६८
मिलकुर	मिलकर	२२	”
जोर	ज़ोर	२०	२७३
जुलम	ज़ुलम	”	”
श्रयात्म्य	श्रयाल्य	१०	२७५
कलार	कलाद	१६	२७७
वश	वंश	२३	२७८
राठाड़	राठोड़		२९१
जा	जी		२९३
शमा	शर्मा		”
घत्रपाल	क्षेत्रपाल		”
था	थी		२९४
रिलावींग	रिलीविंग		२९५
मजिस्ट्रट	मजिस्ट्रेट		२९६

❁ इति ❁

पृष्ठ ६७ से आगे ।

२५–अधिकारी विद्यारत्न पं० जगन्नाथदास जी जनरल सेक्रेटरी आल इण्डिया वैश्नव महा सभा तथा सम्पादक वैदिक सर्वस्व भरतपुर ।

२६–पं० वदरीनाथ जी शास्त्री बी. ए, अध्यापक महाराजा कालेज जयपुर ।

२७–पं. गंगाप्रसाद जी शास्त्री राजकीय संस्कृत पाठशालाध्यापक भरतपुर ।

२८–पं० मधुसूदन जी भट्ट सेक्रेटरी सनातन धर्म्म सभा भरतपुर ।

२९–पं० काशीनाथ शर्म्मा ग्रन्थकर्त्ता 'शिवा जी का आत्मदान' फ़र्रुख़ाबाद ।

नोट—अनेकों अन्य विद्वानों से पत्र व्यवहार हो रहा है निश्चय होने पर नामावली प्रकाशित होगी । S.

His Majesty George V, The Emperor of India.

मा० रघुनन्दनलाल के प्रवन्ध से यू० पी० आर्ट प्रिंटिंग वर्क्स कासगंज में छपा।

आवश्यकता

प्रत्येक शहर में मंडल की पुस्तक प्रचार के लिये एजेन्ट चाहियें अतएव बुकसेलर व अन्य महाशयों को इस बारे में मंडल से पत्र व्यवहार करना चाहिये उन के लिये विशेष सुविधे व अधिक कमीशन के नियम निश्चय किये जा सकेंगे जिन जिन जातियों ने मंडल के जनरल नोटिस पर भी अपनी २ जाति विषय में प्रमाण नहीं भेजे हैं उन्हें इस पुस्तक में मुद्रित विरुद्ध पक्ष का डिफेन्स याने समाधान जाति निर्णय होने से पहिले पहिले भेज देना चाहियें जिस से सम्बंधी ग्रन्थ में कोई बात किसी की मान मर्य्यादा भंग करने वाली न छप जाय अन्यथा मंडल व ग्रन्थकर्त्ता दोष का भागी न होगा।

ह: श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्म्मा

ग्रन्थ सम्बन्धी सुभीते

१ जो सज्जन एक साथ दो पुस्तकें मंगवावेंगे उन्हें फी पुस्तक =) कमीशन, तीन पुस्तकों पर =)॥ फी पुस्तक, चार पुस्तकों पर ≡)। फी पुस्तक, पांच पुस्तकों पर ।) फी पुस्तक कमीशन काट कर पुस्तकें भेजी जावेंगी।

सात पुस्तकें एक साथ मंगवाने वाले को ।)॥ फी पुस्तक आठ से दस तक एक साथ मंगवाने वाले को ।-) फी पुस्तक कमीशन काट कर पुस्तकें भेजी जा सकेंगी। दस से अधिक के खरीददारों को कमीशन के नियम पत्र द्वारा निश्चय करने चाहियें।

निवेदक श्रोमदत्तशर्म्मा

मैनेजर श्रोत्रिय पुस्तकालय

फुलेरा (जयपुर)

विज्ञापन

हिन्दू मात्र को सूचना दियी जाती है कि इस पुस्तक के पृष्ट ६४ में मुद्रित नियम ८ के नीचे के पारे के अनुसार सम्पूर्ण शिखाधारी मात्र को मंडल की हिन्दू सार्वभौम प्रबंध कर्तृसभा के सभासद होना चाहिये क्योंकि इस मंडल में जातिनिर्णय के समय प्रत्येक जाति का विषय प्र थम हिन्दू सार्वभौम प्रबंधकर्तृसभा में पेश हु करेगा तहां मेम्बरों को अपनी व अन्य जाति के निर्णय में सम्मति देनी होगी ऐसी दशा उन मेम्बरों को अपनी व अन्य जातियों की ओ से वकालत करने का समय मिलेगा और वे मह शय भले प्रकार से जान सकेंगे कि जाति नि र्णय में किसी के साथ कोई पक्षपात व अन्याय नहीं किया गया है अन्यथा भविष्यत में मंडल दोष का भागी न होगा मेम्बरी के छपे हुये फार्म)॥ टिकिट भेजने से मंडल से मुफ्त प्राप्त होंगे।

निवेदक

श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्म्मा महामन्त्री

हि० ध० व० व्यवस्था मंडल-

फुलेरा—जयपुर